मुनिश्री अन्तकीर्ति दिगम्बर जैनग्रंथमालाका तृतीय पुष्प।

श्रीवीतरागाय नमः।

प्रमेयरत्नमाला।

अर्थात्

श्री माणिक्यनन्दि प्रणीत परीक्षामुख सूत्रकी श्रीमदनन्तवीर्य

सूरिकृत संस्कृत टीकाकी

जयपुरनिवासी पंडितप्रवर जयचन्द्रजीकृत

भाषा वचनिका।
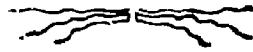
प्रकाशक—

मुनि अनंतकीर्तिग्रन्थमाला समिति।

प्रथमावृत्ति] [

प्रकाशक—
राजमल बडजात्या मंत्री,
मुनि अनंत कीर्तिग्रंथमाला
कालबादेवी रोड **बम्बई।**

मुद्रक—
मंगेश नारायण कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रेस, ४३४,
ठाकुरद्वार, **बम्बई।**

श्री वीतरागायनमः

नियमावली ।

मुनि श्री अनन्तकीर्ति ग्रंथमाला ।

१ यह ग्रन्थमाला श्री अनन्तकीर्ति मुनिकी स्मृतिमें स्थापित हुई है जो दक्षिण कनड़ाके निवासी दिगम्बर साधु चारित्रके तत्व ज्ञानपूर्वक पालनेवाले थे और जिनका देहत्याग श्री गो० दि० जैन सिद्धान्त विद्यालय मुरैना (गवालियर) हुआ था ।

२ इस ग्रन्थमाला द्वारा दिगम्बर जैन संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थ भाषाटीका सहित तथा भाषाके ग्रन्थ प्रबंधकारिणी कमेटीकी सम्मतिसे प्रकाशित होंगे ।

३ इस ग्रन्थमालामें जितने ग्रन्थ प्रकाशित होंगे उनका मूल्य लागत मात्र रक्खा जायगा लागतमें ग्रन्थ सम्पादन कराई संशोधन कराई छपाई जिल्द बधाई आदिके सिवाय आफिस खर्च भाड़ा और कमीशन भी सामिल समझा जायगा ।

४ जो कोई इस ग्रन्थमालामें रु. १००) व अधिक एकदम प्रदान करेंगे उनको ग्रन्थमालाके सब ग्रन्थ विनान्योछावरके भेट किये जायगे यदि कोई धर्मात्मा किसी ग्रन्थकी तैयारी कराईमें जो खर्च परे वह सब देवेंगे तो ग्रन्थके साथ उनका जीवन चरित्र तथा फोटो भी उनकी इच्छानुसार प्रकाशित किया जायगा यदि कमती सहायता देगे तो उनका नाम अवश्य सहायकोंमें प्रगट किया जायगा इस ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित सब ग्रन्थ भारतके प्रान्तीय सरकारी पुस्तकालयोंमें व म्यूजियमोंकी लायब्रेरियोंमें व प्रसिद्ध २ विद्वानों व त्यागियोंको भेटस्वरूप भेजे जायंगे जिन विद्वानोंकी संख्या २५ से अधिक न होगी ।

५ परदेशकी भी प्रसिद्ध लायब्रेरियों व विद्वानोंको भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ मंत्री भेट स्वरूपमें भेज सकेंगे जिनकी संख्या २५ से अधिक न होगी ।

६ इस ग्रन्थमालाका सर्व कार्य एक प्रबंधकारिणी सभा करेगी जिसके सभासद ११ व कोरम ५ का रहेगा इसमें एक सभापति एक कोषाध्यक्ष एक मंत्री तथा एक उपमंत्री रहेंगे ।

७ इस कमेटीके प्रस्ताव मंत्री यथा संभव प्रत्यक्ष व परोक्ष रूपसे स्वीकृत करावेंगे ।

८ इस ग्रन्थमालाके वार्षिक खर्चका बजट बन जायगा उससे अधिक केवल १००) मंत्री सभापतिकी सम्मतिसे खर्च कर सकेंगे ।

९ इस ग्रन्थमालाका वर्ष वीर सम्वत्से प्रारम्भ होगा तथा दिवाली तककी रिपोर्ट व हिसाब आडीटरका जचा हुआ मुद्रित कराके प्रति वर्ष प्रगट किया जायगा ।

१० इस नियमावलीमें नियम नं. १-२-३ के सिवाय शेषके परिवर्तनादि पर विचार करते समय कमसे कम ९ महाशयोंकी उपस्थिति आवश्यक होगी ।

श्री दि० जैन मुनि अनंतकीर्तिग्रंथमालाके मुख्यसहायक महाशय ।

२२०२) सेठ गुरुमुखरायजी सुखानंदजी बम्बई.

 ११०१) मुनिमहाराजके आहार दान समय.

 ११०१) यात्रार्थ आये हुए दिल्लीके संघके समय.

११०१) से. हुकमचंदजी जगाधरमलजी-दिल्ली.

११०१) से. उम्मेदसिंहजी मुसद्दीलालजी-अमृतसर.

५०१) श्री जैनग्रंथरत्नाकरकार्यालय-बम्बई.

४११) श्री धर्मपत्नी लाला रायबहादुर हजारीलालजी-दानापुर.

२५१) से. नाथारंगजी वाले-बम्बई.

२०१) से. चुन्नीलाल हेमचंदजी-बम्बई.

१०१) साहु सुमतिप्रसादजी-नजीबाबाद.

१०१) लाला जुगलकिशोरजी-हिसार.

१०१) श्री जैनधर्मवर्धिनी सभा बम्बई ।

१०१) राजमलजी बड़जात्या बम्बई ।

१०१) से. बैजनाथजी सरावगी हाथरस ।

१०१) से. कस्तूरचंद वेचरदासजी बम्बई ।

१०१) लाला जैनेन्द्रकिशोरजी ।

ठि:—उत्तमचंद भरोसालाल-आगरा ।

भूमिका ।
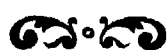
ग्रंथपरिचय ।

श्रीमत्सकलतार्किकचक्रचूड़ामणिमाणिकनंदिजी आचार्यका **परीक्षामुख** ग्रंथ सूत्र रूपसे समुपलब्ध है। जो कि यह सूत्र ग्रंथ यथा नाम तथा गुणकी कहावतको चरितार्थ कर रहा है क्योंकि परीक्ष्य पदार्थोंकी परीक्षाका यह मुख्य कारण है। अथवा जिनके द्वारा हेयोपादेयारूप समस्त पदार्थोंकी परीक्षा होती है उन प्रमाण लक्षण फल वगैरःका स्वरूप दिखानेके लिये यह ग्रंथ दर्पणके समान है। इसी विषयको स्पष्ट करनेके लिये खुद ग्रंथकर्ता ही इस ग्रंथकी प्रशस्तिमें इस प्रकार लिखते हैं।

परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्त्वयोः
संविदे मादृशोबालः परीक्षादक्षवद्व्यधाम् ॥ १ ॥

तथा यह ग्रंथ समस्त न्याय वचनका सारभूत अमृत है क्योंकि इसकी शानी (मुकाबिले) का सारभूत न्यायका सूत्र ग्रंथ ऐसा कोई भी अभी तक देखनेमें नहीं आया है। वास्तविक दृष्टिसे विचार किया जाय तो यह अन्य न्याय शास्त्रोंकी पूंजी है। क्योंकि इसकी उत्पत्ति श्री १००८ भगवान् जिनेन्द्रदेव तथा उनकी शिष्य परंपराके प्रशिष्य तार्किक सिद्धान्त प्रधान श्रीमत् अकलंकदेवजीके वचन रूप समद्रसे सुधा सदृश हुई है।

इस विषयमें श्री अनंतवीर्यजी महाराज इस प्रकार लिखते हैं

अकलंकवचोम्भोधेरुदध्रे येन धीमता ।
न्यायविद्यामृतं तस्मै नमो माणिक्यनन्दने ॥ २ ॥

इस ग्रंथके ऊपर श्रीप्रभाचंद्राचार्यजीकी बड़ी प्रमेय कमलमार्तंड, और छोटी श्रीअनंतवीर्यजीकृत प्रमेयरत्नमाला टीका है। प्रभाचंद्राचार्यजी तथा उनके ग्रंथका अनंतवीर्यजीने बड़ेही महत्वसूचक शब्दोंसे स्तुतिरूप गान किया है और इस प्रमेय रत्नमालाकी रचना प्रमेय कमल मार्तंडके आधारपर सारवचनोंमें हुई है इस विषयको दिखाते हुए ग्रंथकारने अपनेमें कृतज्ञता तथा लघुताके साथ अपने ग्रंथमें प्रमाणीकता सूचित की है जैसे कि—

प्रभेन्दु वचनोदारचंद्रिकाप्रसरे सति
मादृशा क्व नु गण्यन्ते ज्योतिरिंगणसन्निभा ॥ १ ॥
तथापि तद् वचो पूर्वरचना रुचिरं सताम्।
चेतोहरं भृतं यद्वन्नद्या नवघटे जलम् ॥ २ ॥

इस कथनसे यह स्पष्ट सिद्ध है कि इस ग्रंथके पठन तथा मननरूप अवलंबनसे प्रमेय कमलमार्तंड, तथा प्रमेय कुमुदचंद्रोदय सरीखे शास्त्रसमुद्रमें प्रवेश कर समस्त न्याय विषयमें पारंगत हो सकता है। अर्थात् न्याय विषयमें प्रवेश करनेके लिये यह ग्रंथ मुखद्वारही सिर्फ नहीं है किंतु इसके पढ़नेसे जितनी विद्वत्ता तथा जानकारी होनी चाहिये उससे कई अंशमें अधिक यह ग्रंथ जानकारी तथा विद्वत्ताका विशेष साधन है।

अन्यधर्ममें कारिकावलीकी टीका एक मुक्तावली है और वह उस मतके विशेष शास्त्रोंमें प्रवेश करानेके लिये मुखद्वार माना जाता है। परंतु प्रमेय रत्नमालामें इससे भी अधिक यह विलक्षणता है कि यह स्वमत परमतसंबंधीं समस्त विशेष शास्त्रोंमें प्रवेशमार्ग प्राप्त करानेके अलावा कुछ विशेष विद्वत्ता व दक्षताको भी हासिल करा सकती है। क्योंकि इसका मूल पाया जो परीक्षामुख है वह उस शैलीसे सूत्रित किया गया है कि जिसमें प्रायः सर्वही विषय परमत निराकरणके साथ स्वमतकी स्थापनास्वरूप हैं जैसे दृष्टान्तमें '**स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम्**, इस सूत्रमें प्रमाणका लक्षण जो ज्ञान कहा है वह साथहीमें ऐसे विशेषणसे विशिष्ट है कि जिस विशेषणमें अन्य मतावलंबियोंद्वारा माने गये प्रमाणके लक्षण हैं उन सबका उसमें खंडन विशेष है इसी शैली पर इस समस्त ग्रंथकी रचना है। और उसका विशेष खुलासा स्वरूप यह प्रमेयरत्नमाला टीका है वह योग्य दक्षतापूर्वक विद्वत्ता तथा समस्त दर्शन प्रवेशिताका मुख्य कारण है। क्योंकि इस ग्रंथके विना उच्च कोटिके प्रमेयकमल मार्तण्डादि ग्रंथोंमें प्रवेश होना अति दुःस्सह है इसी हेतुसे दयाशील श्रीमदनंत वीर्याचार्यजीनें शांतिषेण नामके किसी शिष्यके लिये वैजेयके पुत्र हीरपके आग्रहसे इसका निर्माण किया—इस विषयको ग्रंथमें स्वतः आपनेही प्रदर्शित किया है;

वैजेयप्रियपुत्रस्य हीरपस्योपरोधतः।
शान्तिषेणार्थमारब्धा परीक्षामुखपंचिका।

---

१ ऐसीही प्रख्याति कारिकावली मुक्तावलीके विषयमें भी है।

इस ग्रंथका दूसरा नाम **परीक्षामुखपंचिका** भी है। पदोंके जुदे २ कर अर्थ करनेको पंचिका कहते हैं क्योंकि कहा भी है **पंचिका पदभंजिका** इसी अर्थको पंडित जयचंद्रजी छावड़ाने भी कहा है ' सूत्रनिके पद न्यारे करि तिनका न्यारा न्यारा अर्थ कहिये ताकूं पंचिका कहिये है ' इत्यादि। इस टीकामें विशेषताके साथ अर्थकी ऐसीही रचना है इस लिये इसका—परीक्षामुख पंचिका नाम भी वास्तविक है। इस टीकाका प्रमेय रत्नमाला जो नाम है वह यथा नाम तथा गुणसे खाली नहीं है। क्योंकि रत्नचीज जिस तरह स्वपरप्रकाशक होती है उसी तरह प्रत्यक्ष परोक्षादि रूप अनेक प्रकारके प्रमाण स्वरूप प्रमेयकी माला अर्थात् पंक्ति स्वरूप यह ग्रंथ है।

तथा इस नामसे यह सूचित किया है कि भाग्यशालियोंके हृदयको यह भूषित करनेवाली है और भाग्यहीनोंको दुर्लभ है। जैसे रत्नमाला भाग्यशालियोंको ही प्राप्त होकर उनके हृदयको भूषित करती है भाग्यहीनोंको उसकी प्राप्ति होना ही दुर्लभ है इसी प्रकार भाग्यशील विशिष्ट क्षयोपशमके धारक ही इसको धारण कर सकते हैं भाग्यहीन मंदक्षयोपशमी इसको धारण नहीं कर सकते, इसी अर्थको श्री वीरनंदिस्वामिजीनें भी सूचित किया है।

गुणान्विता निर्मलवृत्तमौक्तिका
नरोत्तमैः कंठविभूषिणीकृता।
न हारयष्टिः परमेव दुर्लभा
समंतभद्रादिभवा च भारती॥ १॥

यह ग्रंथ भी परीक्षामुख सूत्र ग्रंथके समान छह समुद्देशोंमें विभक्त है उनमेंसे छहोंके ही नाम विषय प्रतिपादनकी अपेक्षासे रखे गये हैं। वे इस प्रकार हैं। प्रमाण स्वरूप समुद्देश १ प्रत्यक्षसमुद्देश २ परोक्षसमुद्देश ३ विषय समुद्देश ४ फलसमुद्देश ५ आभास समुद्देश। ६। इन छहों समुद्देशोंमेंसे प्रत्येक २ समुद्देशमें क्या २ विषय है यह यद्यपि इन समुद्देशोंके नामसे ही प्रतीत होता है तथापि इनमें विशेष २ विषय कोन २ से है इस बातकी बहुत आवश्यकता है। इसी हेतुसे मैने पाठकोंके संतोषके लिये कुछ विषयसूचि और सूत्र सूची बनाकर ग्रंथके साथ लगादी है उससे इस ग्रंथके पाठक ग्रंथका कुछ ज्ञान तथा महत्व समझ सकेंगे।

इस ग्रंथकी देशभाषा वचनिकामें टीका श्रीमत् पंडित जयचंद्रजी छावड़ाने की है जिसमें सूत्र तथा प्रमेय रत्नमालाके पदार्थ तथा भावार्थ बहुतही मनोज्ञता

---

१ जैन धर्ममें ज्ञानको स्वपरप्रकाशत्व माना है।

तथा विद्वत्तासे लिखे गये हैं कि जिसके पठनेसे सामान्यबुद्धि भी प्रमेय रत्नमाला सरीखे पदार्थोंको बखूबी समझ सकता है तथा कहीं कहीं विशेष स्पष्टी करनके लिये ग्रंथमें कुछ २ विशेष विषय भी संगठित किये गये हैं। वे इस ग्रंथके स्वाध्याय करनेवालोंको स्वतःही प्रतीत हो सकते हैं।

ग्रन्थकर्ताओंका परिचय।

माणिक्यनंदिजी।

मूल सूत्र ग्रंथ (परीक्षामुख) के कर्ता श्रीमन्माणिकक्यनन्दीजी एक बडेही प्रतिभाशाली विद्वान् हुए हैं क्योंकि उनने समस्त न्याय समुद्रको मथन कर यह अमृत सरीखा ग्रंथराज बनाया है। इस ग्रंथके शिवाय इनका कोई दूसरा ग्रंथ अभीतक देखनेमें नहीं आया है तथा इस विषयमें इनके पीछेके किसी भी आचार्यने ऐसा उल्लेख किया हो ऐसा भी देखनेमें अभीतक नहीं आया। और अपने विषयकी इस ग्रंथमें भी आपने कुछ भी प्रशस्ति नहीं दी है इससे हम निश्चित रूपसे आपके विषयमें कुछ भी लिख नहीं सकते तथापि इतना निश्चय हो जाता है कि ये या तो अकलंक देवके समयके तथा उनके कुछ पीछेके और प्रभाचंद्रजीके कुछ समय पहलेके तथा उनकेही समयके विद्वान् हैं। क्योंकि प्रभाचंद्राचार्यजीने प्रमेय कमल मार्तंडकी प्रशस्तिमें—उनको गुरु शब्दसे स्मरण किया है। और गुरु शब्दके ऊपर जो टिप्पणी दीहै उसमें 'स्वस्य' लिखा है इससे स्पष्ट हो जाता है कि ये आचार्य प्रभाचंद्राचार्यजीके गुरु थे। फिर अखीरके पद्यमें अपनेको इस प्रकार लिखते हैं।

श्रीपद्मनंदिसैद्धान्तशिष्योऽनेकगुणालयः
प्रभाचंद्रश्चिरंजीयाद्रत्ननन्दिपदे रतः ॥ १ ॥

इस पद्यमें–पद्मनंदि आचार्यका सिद्धान्तविषयका शिष्य और–माणिक्यनंदिके चरणोंमें रत ऐसे दो विशेषण दिये हैं। उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सिद्धान्त विषयके शिवाय अन्य विषयके गुरु प्रभाचंद्रजीके माणिक्य नंदिजीही थे। इससे यह निश्चय हो जाता है कि श्रीमाणिक्यनंदीजी तथा प्रभाचंद्रजीका समय एकही है।

परंतु वंशीधरजी शास्त्रीनें प्रमेयकमल मार्तंडके उपोद्घातमें माणिक्यनंदिजीके परीक्षामुखसूत्र बननेका समय विक्रमसंवत् ५६९ दिया है और प्रभाचंद्रजीका

---

१ निर्णय-सागर प्रेसकी छपी हुई प्रतिमें।

१०६० से ११९५ तक विक्रम संवत् दिया है और **विद्याभूषण तथा ए. एम्.** आदि पदधारक **श्रीसतीश्चद्रजी**ने अकलंक स्वामीजीको ईसवी ८ वी शताब्दीके विद्वान् स्वीकृत किया है।

प्रभाचंद्रजीने प्रमेयकमल मार्तंडकी समाप्ति भोजदेवराज्यके समयमें की तथा अपनेको धारा नगरीका निवासी लिखा है। परंतु कई भोजराज्योंके होनेसे प्रभाचंद्रजीका समय भोजराज्यपरही निर्भरित नहीं रह सकता है। परंतु प्रमेय-कमल मार्तंडके अंतिम पद्यसे यह अवश्यही निश्चय हो सकता है-अकलंक देवके-पीछे या अकलंक देवके समयमें। ये दोनों (माणिक्यनंदि-प्रभाचंद्र) आचार्य एकही समयके हैं। इस विषयके विशेष विचारमें हम विद्वानोंके ऊपरही निर्भ-रित हैं।

अनंतजीवीर्याचार्य

इन आचार्यके विषयमें हम कुछ भी नहीं लिख सकते क्योंकि इनका जो प्रमेय रत्नमाला नामक ग्रंथ है उसकी प्रशस्तिमें आपने अपने ग्रंथ निर्माणका समय तथा निवास वगैरःका कुछ भी उल्लेख नहीं किया है। तथा आपके सम-यादिके विषयमें हमें अन्यत्र भी इस समय तक कुछ भी विषय उपलब्ध नहीं हुआ है इस लिये इनके विषयमें मैं इस समय विशेष परिचय देनेके लिये अस-मर्थ हूं। सामन्य परिचयमें भी सिर्फ इतनाही है कि ये आचार्य उच्च कोटिके विद्वान् थे इस विषयका ज्ञान आपके प्रमेयरत्नमाला नामक ग्रंथके अवलोकनसे ही हो जाता है। आपने अपनी जो प्रशस्ति दी है वह अर्थसहित इस ग्रंथके अंतमें लगी हुई है उससे पाठकोंको इनके विषयमें जितना ज्ञान हो सकेगा वस उतनाही ज्ञान हमको है। ग्रंथोंके विषयमें भी इस समय आपका एक प्रमेय रत्नमालाही ग्रंथ उपलब्ध है जो कि मुद्रित हो चुका है।

पं. जयचंद्रजी छावडा

ढुंढाहरदेशके विशाल जयपुर नगरमें पं. जयचंद्रजी छावड़ाका जन्म तथा निवासस्थान था। आप विक्रम उन्हींसवीं १९०० शताब्दिके एक गण्य तथा मान्य विद्वान् थे। आपके ग्रंथोंका अनुवाद पढ़नेसे मालूम होता है कि आप न्याय अध्यात्म साहित्य वगैर सर्वही विषयके अच्छे विद्वान तथा परोपकारी और उद्यमशील पुरुष थे। इस शताब्दीके विद्वानोंमेंसे पं. टोडरमल्लजीके समान आपही गणना योग्य तथा माननीय व्यक्ति हो सकते हैं। आपने १३ तेरह ग्रंथोंपर

भाषा वचनिकायें लिखी हैं। इन सब वचनिका ग्रंथोंकी श्लोकसंख्याका प्रमाण ६० हजारके करीब है। वे १३ ग्रन्थ विक्रम सम्वत्के साथ नीचे लिखे प्रमाण हैं।

१ सर्वार्थसिद्धि	१८६१ वि	
२ प्रमेयरत्नमाला (न्याय)	१८६३ ,,	
३ द्रव्यसंग्रह वचनिका	१८६३ ,,	
४ आत्मख्यातिसमयसार	१८६४ ,,	
५ स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा	१८६६ ,,	
६ अष्टपाहुड़	१८६७	यह इस ग्रंथमालामें जल्दी निकलनेवाला है।
७ ज्ञानार्णव	१८६५	
८ भक्तामरस्तोत्र	१८७०	
९ आप्तमीमांसा (देवागमन्याय)	१८८६	यह ग्रंथ इस ग्रंथ मालामें तैयार हो चुका है;
१० सामायिकपाठ		समय लिखा नही.
११ पत्रपरीक्षा (न्याय)		
१२ मतसमुच्चय (न्याय)		
१३ चंद्रप्रभद्वितीयसर्गका न्यायभाग,		समय मालूम नहीं.

ये सर्व ग्रंथ बड़ेही कठिन गंभीराशयके हैं तथा बड़ेही महत्वके संस्कृत प्राकृत भाषाके हैं। इनमेंसे पांच ग्रंथ तो केवल न्यायके हैं और सभी ग्रंथ उच्च कोटिके तात्विक विषयके हैं तथा धर्ममें दृढ़ता और भक्ति पैदा करनेवाले हैं। आप देशभाषाके पद्य रचना करनेमें भी सिद्ध हस्त थे आपने फुटकर विनतियां वगैरः लिखी हैं उनकी श्लोक संख्या ११०० के करीब होगी तथा द्रव्य संग्रहको भी अपने पद्यमें लिखा है। आपकी १८७० की लिखी हुई एक पद्यात्मक चिट्ठी वृन्दावन विलासमें प्रकाशित हो चुकी है। इन सबसे यह निश्चित होता है कि आप गद्य पद्य बनानेमें बहुतही सिद्ध हस्त थे। तथा संस्कृत और प्राकृतमें आपका ज्ञान खूबही चढ़ा बढ़ा था इस विषयका ज्ञान आपके ग्रंथोंका अवलोकन करनेसे सभीको हो सकता है।

तथा चार प्रकारके कवियोंमेंसे आपमें गमकंकवि शक्ति भी श्रेष्ठ थी क्योंकि आपने **नतामर**—इत्यादि प्रमेयरत्नमालाके प्रथम श्लोकके अर्थको '**मोक्षमार्गस्य-नेतारं**' इत्यादि श्लोकके भावमें प्रदर्शित कर बड़ेही महत्व भरे पांडित्यको प्रदर्शित किया है। इससे आपने यह दर्शित कर दिया है कि जिस प्रकार तत्वार्थ मोक्ष शास्त्रके ऊपर सर्वार्थ सिद्धि छोटी तथा गंभीराशयवाली टीका है उसी प्रकार इस न्यायकी पूंजी स्वरूप—**परीक्षामुखसूत्र** पर यह प्रमेय रत्नमाला टीका है। क्योंकि (मोक्षमार्गस्य नेतारं-) यह श्लोक सर्वार्थ सिद्धिका मंगलाचरण माना जाता है। तथा सूत्र ग्रंथके ऊपर छोटी और गंभीराशयकी सर्वार्थ सिद्धि टीका है उसी प्रकार इस ग्रन्थमें भी यह सर्व समानता मौजूद है इत्यादि। आपने अपनी सर्वही टीकाओमें ग्रंथोंके आशयको कहीं २ बढ़ाकर भी बहुत खूब सूरतीके साथ समझाया है।

जैसे कि इस प्रमेय रत्नमालाहीमें—विशेष लिखिये है इस प्रकारसे ग्रंथके विषयको समझानमें विशेष खूबी की है उसी प्रकार सर्व ही (अपने टीका किये हुए) ग्रंथोंको समझानेमें बहुतही मनोज्ञ शैली व शक्तिको भरकस रूपसे काममें लाये हैं सर्वार्थसिद्धि तथा आप्त मीमांसा वगैरः ग्रंथोंमें आपने मूल ग्रंथके आशयको अच्छी तरह समझानेके हेतुसे उनके बड़े २ टीकाग्रंथ राजवार्तिक श्लोकवार्तिक अष्ट सहस्री वगैरःको भी देशभाषामें उद्धृत करके ग्रंथोंके आशयको बहुतही भव्य बना दिया है। इस प्रकारके आपके प्रयत्नसे सामान्य भाषा जाननेवाले भी इन बड़े ग्रंथोंके अभिप्रायोंको समझ सकते है। आपकी इन सर्व कृतियोंसे मालूम होता है कि आप बड़ेही परोपकारी महात्मापुरुष थे। तथा प्रायः सर्वही बड़े २ न्याय अध्यात्म आदि ग्रंथोंके मर्मज्ञ रूपसे जानकार थे। अर्थात् आप सर्वांगसुन्दर एक अद्वितीय विद्वान थे तथापि आपने अपनी लघुताही दिखाई है जैसा कि प्रमेयरत्नमालाके अंतमें आपने अपने विषयमें लिखी है।

बालबुद्धिलखि संतजन हसैं न कोप कराय
इहैरीति पंडितगहैं धर्मबुद्धि इमभाय ॥

इस परसे यह पता चलता है कि आप पूर्ण विद्वान् होकर भी अहंकार रहित थे। अहंकारताका अभाव विद्वत्तामें सोनेको सुगंधिकी कहावतको चरितार्थ करता है।

---

१ कविके गूढ़ तथा गंभीर आशयको स्पष्ट करनेवाला गमक कवि होता है।

विद्वान होकर जो अहंकार रहित होगा वही अपने वचनादि प्रयत्नों द्वारा प्राणियोंका उपकार कर सकता है तथा वही प्रमाणताका पात्र हो सकता है। खंडेलवाल जातिभूषण—पं. जयचंद्रजी छाबड़ामें ये सर्व गुण मौजूद थे इसी कारण इनकी समाजमें विशेष प्रतिष्ठा रही तथा आगे भी कायम रहेगी।

उक्त पंडितजीके विषयमें जो कुछ हमने लिखा है वह बहुत ही थोडा संक्षेपतासे लिखा है यदि विशेष लिखते तो एक ग्रंथका ग्रंथही बन जाता। पंडितजीने अपने थोडेसे जीवन कालमें इतने टीका तथा विनतीस्वरूप ग्रंथोंका निर्माण कर अपनी बुद्धिकी बहुत ही विचक्षण विलक्षणताका परिचय दिया है। हमने सुना है कि उक्त पंडितजी साहेबने इन ग्रंथोंके अलावा अन्य भी कई ग्रंथोंपर टीका की है। यदि यह बात सर्वांग सत्य है तो कहना पड़ेगा कि पंडितजीमें कोई विलक्षण शक्ति थी। पाठकगण पंडितजीके विषयमें विशेष जाननेकी इच्छा रखते हों तो उनके निर्माण ग्रंथोंमें उनके हाथकी लिखी हुई प्रशस्तिसे अपनी इच्छाकी पूर्ण पूर्ति करें।

विनीत

रामप्रसाद् जैन-बम्बई।

विषय सूची ।

प्रथम समुद्देश १

	पत्र.
पं. जयचंद्रजी विरचित मंगल और प्रतिज्ञा—तथा भाषाटीका बनानेका प्रयोजन ।	१
पं. जयचंद्रजी विरचित मूल ग्रंथ रचनाके संबंधमें कुछ हेत्वात्मक वाक्य ।	२
संस्कृत टीकाकारका मंगलाचरण ।	३
माणिक्यनंदिजीको नमस्कार तथा परीक्षामुख और प्रमेयरत्नमालाकी प्रमाणीकता विषयक कथन ।	४
टीका बननेका संबंध और टीकाके द्वितीय नामका निरुक्त्यक अर्थ । तथा परीक्षामुख बननेका प्रयोजन ।	५
न्याय तथा प्रमेयरत्नमाला शब्दका निरुक्तिपूर्वक अर्थ ।	६
प्रमाण प्रमाणाभासरूप प्रतिज्ञा ।	७
ग्रंथकी उपादेयताके कारण अभिधेयादिका निरूपण ।	८
मंगलाचरणविषयक शंका और उसका समाधान ।	९
प्रमाणका लक्षण तथा तद्विषयक अन्य प्रमाण कल्पनाओंका परिहार ।	११
ज्ञानही प्रमाण है इस विषयको दिखानेमें सहेतुकताका निरूपण ।	१५
बोद्धकल्पित ज्ञान प्रमाणविषयक अनध्यवसायताका खंडन और अध्यवसायताका मंडन ।	१७
दो प्रकारसे अपूर्वार्थका निरूपण ।	१९
परपदार्थके समान ज्ञान अपनाभी निश्चय करानेवाला है । इत्यादि विषयका कर्मकर्तृकरणादि द्वारा सोदाहरण निरूपण ।	२०
ज्ञानके स्वप्रकाशकहेतुका विशेषतासे निरूपण ।	२३
ज्ञानके स्वप्रकाशकत्वमें दीपकका दृष्टान्त ।	२४
अभ्यस्तदशामें ज्ञान स्वतः प्रमाण है और अनभ्यस्त दशामें परतः प्रमाण है इस विषयका निरूपण तथा मीमांसक मतका खंडन ।	२५

द्वितीय समुद्देश २

	पत्र.
प्रमाणके प्रत्यक्ष और परोक्ष दो भेदका वर्णन तथा अन्य वादियों कर मानी गई जो प्रमाण संख्या है उसमें समस्त प्रमाणके भेदोंका अंतर्भाव नहीं होता ऐसा वर्णन।	३४
क्रमपूर्वक सब संख्या वादियोंका मत प्रदर्शन पूर्वक खंडन।	३५
प्रत्यक्षका लक्षण।	४६
मुख्य तथा सांव्यवहारिकरूप प्रत्यक्षके भेद और सांव्यवहारिकका स्वरूप और भेद।	४८
नैयायिक परिकल्पित अर्थ और आलोककी कारणताका खंडन।	५१
बौद्ध द्वारा माने गये जो अर्थ विषयक ताद्रूप और तदुत्पत्ति ज्ञानकारण हैं उनके इस मतका खंडन और स्वमतविषयक कारणताका प्रतिपादन।	५३
मुख्य प्रत्यक्षका लक्षण तथा उसमें आवरण सहितत्व और करणजन्यत्वका निषेध।	५६
मुख्य प्रत्यक्ष तथा सर्वज्ञ विषयक अन्यवादि स्वीकृत अन्यथा मतोंका परिहार और अपने मतका स्थापन।	५७

तृतीय समुद्देश.

	पत्र.
परोक्षका लक्षण और उसके भेद।	८५
सोदाहरण स्मृतिका लक्षण, आकारनिर्देशपूर्वक प्रत्यभिज्ञानका लक्षण।	८६
अन्यवादिकृत उपमान प्रमाणका खंडन।	८७
प्रत्यभिज्ञानके उदाहरण	८८
आकारसहित तर्क प्रमाणका लक्षण तथा उदाहरण।	९०
अनुमानका लक्षण, हेतुका लक्षण तथा अन्यवादिस्वीकृत हेतु लक्षणका परिहार।	९१
अविनाभावका लक्षण तथा सहभावका लक्षण।	९४
क्रमभावका लक्षण, अविनाभावका तर्कसे निर्णय होता है ऐसाकथन तथा साध्यका लक्षण।	९५
धर्मी (पक्ष) का लक्षण।	९८
धर्मी प्रसिद्ध होता है ऐसा कथन और उसके भेदका वर्णन	९९
पक्षके वचनकी आवश्यकता।	१०३
पक्ष और हेतु ये दोही अनुमानके अंग हैं उदाहरण नहीं इत्यादि समर्थन।	१०६
बालव्युत्पत्तिके निमित्त शास्त्रमें ही उदाहरणादिका उपयोग है इत्यादि।	११०
दृष्टान्तके भेद और अन्वयव्यतिरेक दृष्टान्तका लक्षण।	१११

	पत्र.
उपनयनिगमनका लक्षण।	११२
अनुमानके स्वार्थ और परार्थ भेद तथा उनके लक्षण ।	११३
हेतुके भेद प्रभेदोंका सोदाहरण वर्णन ।	११५
आगमका लक्षण, मीमांसित कल्पित वेदके अपौरुषेयत्वका खंडन ।	१३३
नामजाति गुण क्रिया आदि स्वरूप शब्दका अर्थ नहीं है क्योंकि शब्द और अर्थके संबंधका अभाव है फिर शब्दमें प्राप्तप्रणीत पना होनेपर भी सत्यार्थ ज्ञान किस प्रकार हो सकता है इस प्रकारकी शंकाका उत्तर तथा उसमें दृष्टान्त ।	१५०
बौद्ध अन्यापोह ज्ञानरूप आगमको प्रमाण मानता है तथा कोई अन्य प्रकार भी मानता है उन सबका निराकरण ।	१५१

चतुर्थ समुद्देश.

	पत्र.
विषयका लक्षण तथा अन्य वादिकल्पित सत्ता प्रधान आदि विषयके लक्षणका खंडन ।	१५७
अनेकान्तात्म वस्तुके समर्थनके हेतु तथा समान्य विषयके भेद और तिर्यक् सामान्यका उदाहरण सहित लक्षण।	१७९
उर्द्धता सामान्यका दृष्टान्त सहित लक्षण तथा विशेष विषयके भेद ।	१८०
पर्याय विशेषका उदाहरण सहित लक्षण ।	१८१
व्यतिरेक विशेषका उदाहरण सहित लक्षण ।	१८५

पंचम समुद्देश.

	पत्र.
फलका लक्षण तथा फलके भेद।	१८७

छट्ठा समुद्देश.

	पत्र.
आभास सामान्यका लक्षण स्वरूपाभास सामान्यका लक्षण ।	१९०
प्रत्यक्षाभासका उदाहरण सहित लक्षण ।	१९५
परोक्षाभासका लक्षण, उदाहरण सहित स्मरणाभास, प्रत्यभिज्ञानाभासका लक्षण ।	१९६
तर्काभास, अनुमानाभास तथा अनुमानके अवयवाभासमें पक्षाभासका लक्षण ।	१९७
भेदसहित हेत्वाभासका लक्षण ।	२००
भेदपुरस्सर दृष्टान्ताभासका लक्षण ।	२०५
बालप्रयोगाभासका लक्षण ।	२०७
आगमाभासका उदाहरणसहित लक्षण ।	२०९
संख्याभासका लक्षण सोदाहरण ।	२१०
विषयाभास ।	२१२
फलाभास ।	२१४
नय तथा नयाभास ।	२१७
मूलग्रंथकर्ताकी प्रशस्ति ।	२१८
संस्कृतटीका कर्ताकी प्रशस्ति ।	२१९
भाषाटीका कर्ताकी प्रशस्ति ।	२२१

इति ।

परीक्षामुखसूत्रसूची ।

मंगलाचरण ।

प्रमाणादर्थसंसिद्धिस्तदाभासाद्विपर्ययः ।
इति वक्ष्ये तयोर्लक्ष्म सिद्धमल्पं लघीयसः ॥ १ ॥

प्रथम समुद्देश.

सूत्र.		पृष्ठ.
१	स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम्.	१०
२	हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थं हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत्.	१५
३	तन्निश्चयात्मकं समारोपविरुद्धत्वादनुमानवत्.	१७
४	अनिश्चितोऽपूर्वार्थः.	१९
५	दृष्टोऽपि समारोपात्तादृक्	१९
६	स्वोन्मुखतया प्रतिभासनं स्वस्य व्यवसायः	२०
७	अर्थस्येव तदुन्मुखतया	२०
८	घटमहमात्मना वेद्मि.	२१
९	कर्मवत्कर्तृकरणक्रियाप्रतीतेः	२१
१०	शब्दानुच्चारणेपि स्वस्यानुभवनमर्थवत्	२२
११	कोवा तत्प्रतिभासनमर्थमध्यक्षमिच्छंस्तदेव नेच्छेत्	२३
१२	प्रदीपवत्	२४
१३	तत्प्रामाण्यं स्वतः परतश्च	२५

द्वितीयसमुद्देश.

१	तद्द्वेधा	३४
२	प्रत्यक्षेतरभेदात्	३४
३	विशदं प्रत्यक्षम्	४६
४	प्रतीत्यन्तराव्यवधानेन विशेषवत्तया वा प्रतिभासनं वैशद्यम्	४८
५	इन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तं देशतः सांव्यवहारिकम्	४९
६	नार्थालोकौ कारणं परिच्छेद्यत्वात्तमोवत्	५१
७	तदन्वयव्यतिरेकानुविधानाभावाच्च केशोण्डुकज्ञानवन्नक्तंचरज्ञानवच्च	५१

८ अतज्जन्यमपि तत्प्रकाशकं प्रदीपवत् — ५३
९ स्वावरणक्षयोपशमलक्षणयोग्यता हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति — ५३
१० कारणस्यच परिच्छेद्यत्वे करणादिना व्यभिचारः — ५५
११ सामिग्रीविशेषविश्लेषिताखिलावरणमतीन्द्रियमशेषतो मुख्यम् — ५६
१२ सावरणत्वे करणजन्यत्वे च प्रतिबन्धसंभवात् — ५६

तृतीयसमुद्देश.

१ परोक्षमितरत् — ८५
२ प्रत्यक्षादिनिमित्तं स्मृतिप्रत्यभिज्ञानतर्कानुमानागमभेदम् — ८५
३ संस्कारोद्बोधनिबन्धना तदित्याकारा स्मृतिः — ८६
४ सदेवदत्तो यथा — ८६
५ दर्शनस्मरणकारणकं सङ्कलनं प्रत्यभिज्ञानं तदेवेदं तत्सदृशं तद्विलक्षणं तत्प्रतियोगीत्यादि. — ८६
६ यथा स एवायं देवदत्तः, — ८८
गो सदृशो गवयः,
गो विलक्षणो महिषः,
इदमस्माद्दूरम्,
वृक्षोयमित्यादिः,
७ उपलम्भानुपलम्भनिमित्तं व्याप्तिज्ञानमूहः इदमस्मिन्सत्येव भवत्यसति न भवत्येवेति च — ९०
८ यथाग्नावेव धूमस्तदाभावे न भवत्येवेतिच — ९०
९ साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानम् — ९१
१० साध्याविनाभावित्वेन निश्चितो हेतुः — ९१
११ सहक्रमभावनियमोऽविनाभावः — ९४
१२ सहचारिणोर्व्याप्यव्यापकयोश्च सहभावः — ९४
१३ पूर्वोत्तरचारिणोः कार्यकारणयोश्चक्रमभावः — ९५
१४ तर्कात्तन्निर्णयः — ९५
१५ इष्टमबाधितमसिद्धं साध्यम् — ९५
१६ संदिग्धविपर्यस्ताव्युत्पन्नानां साध्यत्वं यथास्यादित्यसिद्धपदम् — ९६
१७ अनिष्टाध्यक्षादिबाधितयोः साध्यत्वं माभूदितीष्टाबाधितवचनम् — ९७

१८ नचासिद्धवदिष्टं प्रतिवादिनः ९७

१९ प्रत्यायनाय हीच्छा वक्तुरेव ९७

२० साध्यं धर्मः क्वचित्तद्विशिष्टोवा धर्मी ९८

२१ पक्षइति यावत् ९८

२२ प्रसिद्धो धर्मी ९९

२३ विकल्पसिद्धे तस्मिन्सत्तेतरे साध्ये १००

२४ अस्ति सर्वज्ञो नास्ति खरविषाणम् १००

२५ प्रमाणोभयसिद्धे तु साध्यधर्मविशिष्टता १०१

२६ अग्निमानयं देशः परिणामी शब्द इति यथा १०२

२७ व्याप्तौ तु साध्यं धर्मएव १०३

२८ अन्यथा तदघटनात् १०३

२९ साध्यधर्माधारसंदेहापनोदाय गम्यमानस्यापि पक्षस्य वचनम् १०३

३० साध्यधर्मिणि साधनधर्मावबोधनाय पक्षधर्मोपसंहारवत् १०४

३१ को वा त्रिधा हेतुमुक्त्वा समर्थयमानो न पक्षयति १०५

३२ एतद्द्वयमेवानुमानाङ्गं नोदाहरणम् १०६

३३ न हि तत्साध्यप्रतिपत्यङ्गं तत्र यथोक्तहेतोरेव व्यापारात् १०७

३४ तदविनाभावनिश्चयार्थं वा विपक्षे बाधकादेव तत्सिद्धेः ,,

३५ व्यक्तिरूपं च निदर्शनं सामान्येन तु व्याप्तिस्तत्रापि तद्विप्रतिपत्तावनवस्थानं स्यात् दृष्टान्तरापेक्षणात् १०८

३६ नापि व्याप्तिस्मरणार्थं तथाविधहेतुप्रयोगादेव तत्स्मृतेः १०८

३७ तत्परमभिधीयमानं साध्यधर्मिणि साध्यसाधने सन्देहयति १०८

३८ कुतोन्यथोपनयनिगमने १०९

३९ न च ते तदङ्गे साध्यधर्मिणि हेतुसाध्ययोवचनादेवासंशयात् १०९

४० समर्थनं वा वरं हेतुरूपमनुमानावयवो वास्तु साध्ये तदुपयोगात् ११०

४१ वालव्युत्पत्यर्थं तत्रयोपगमे शास्त्र एवासौ न वादेऽनुपयोगात् ११०

४२ दृष्टान्तो द्वेधाऽन्वयव्यतिरेकभेदात् १११

४३ साध्यव्याप्तं साधनं यत्र प्रदर्श्यते सोऽन्वयदृष्टान्तः १११

४४ साध्याभावे साधनाभावो यत्र कथ्यते स व्यतिरेकदृष्टान्तः १११

४५ हेतोरुपसंहार उपनयः ११२

४६ प्रतिज्ञायास्तु निगमनम् ११२

४७ तदनुमानं द्वेधा १९३
४८ स्वार्थपरार्थभेदात् ११३
४९ स्वार्थमुक्तलक्षणम् ११३
५० परार्थंतु तदर्थपरामर्शिवचनाज्जातम् ११३
५१ तद्वचनमपितद्धेतुत्वात् ११४
५२ सहेतुर्द्वेधोपलब्ध्यनुपलब्धिभेदात् ११५
५३ उपलब्धिर्विधिप्रतिषेधयोरनुपलब्धिश्च ११५
५४ अविरुद्धोपलब्धिर्विधौ षोढा व्याप्य कार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरभेदात् ११५
५५ रसादेकसामग्र्यनुमानेन रूपानुमानमिच्छद्भिरिष्टमेव किंचित्कारणं हेतुर्यत्र सामर्थ्याप्रतिबंधकारणान्तरवैकल्ये ११६
५६ नच पूर्वोत्तरचारिणोस्तादात्म्यं तदुत्पत्तिर्वा कालव्यवधाने तदनुपलब्धेः ११८
५७ भाव्यतीतयोर्मरणजागृद्बोधयोरपि नारिष्टोद्बोधौ प्रति हेतुत्वम् ११९
५८ तद्व्यापाराश्रितं हि तद्भावभावित्वम् ११९
५९ सहचारिणोरपि परस्परपरिहारेणावस्थानात् सहोत्पादाच्च. १२०
६० परिणामीशब्दः कृतकत्वात्, य एवं स एवं दृष्टो यथा घटः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामीति यस्तु न परिणामी स न कृतको दृष्टो यथा वन्ध्यास्तनंधयः, कृतकश्चायं तस्मात् परिणामी १२१
६१ अस्त्यत्र देहिनि बुद्धिर्व्याहारादेः १२२
६२ अस्त्यत्र छाया छत्रात् १२२
६३ उदेश्यति शकटं कृतिकोदयात्
६४ उदगाद्भरणिः प्राक्त एव १२३
६५ अत्यत्र मातुलिंगेरूपं रसात् १२३
६६ विरुद्धतदुपलब्धिः प्रतिषेधे तथा १२४
६७ नास्त्यत्र शीतस्पर्श औष्ण्यात् १२४
६८ नास्त्यत्र शीतस्पर्शो धूमात् १२४
६९ नास्मिन् शरीरिणि सुखमस्ति हृदयशल्यात् १२४
७० नोदेष्यति मुहूर्तान्ते शकटं रेवत्मुदयात् १२५
७१ नोदगाद्भरणिर्मुहूर्तात्पूर्वं पुष्योदयात् १२५
७२ नास्त्यत्र भित्तौ परभागाभावोऽर्वाग्भागदर्शनात् १२५
७३ अविरुद्धानुपलब्धिः प्रतिषेधे सप्तधा स्वभावव्यापककार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरानुपलंभभेदात् १२५

७४ नास्त्यत्र भूतले घटोऽनुपलब्धेः १२६
७५ नास्त्यत्र शिंशपा वृक्षानुपलब्धेः १२६
७६ नास्त्यत्र प्रतिबद्धसामर्थ्योऽग्निर्धूमानुपलब्धेः १२६
७७ नास्त्यत्र धूमोऽनग्नेः १२७
७८ न भविष्यति मुहूर्त्तान्ते शकटं कृत्तिकोदयानुपलब्धेः १२७
७९ नोदगाद्भरणिर्मुहूर्त्तात् प्राक्तएव १२७
८० नास्त्यत्र समतुलायामुन्नामो नामानुपलब्धेः १२७
८१ विरुद्धानुपलब्धिर्विधौत्रेधा विरुद्धकार्यकारणस्वभावानुपलब्धिभेदात् १२८
८२ यथास्मिन् प्राणिनि व्याधिविशेषोस्ति निरामयचेष्टानुपलब्धेः १२८
८३ अस्त्यत्रदेहिनिदुःखमिष्टसंयोगाभावात् १२८
८४ अनेकान्तात्मकं वस्त्वेकान्तस्वरूपानुलब्धेः १२९
८५ परंपरया संभवत्साधनमत्रैवान्तर्भावनीयम् १२९
८६ अभूदत्र चक्रे शिवकः स्थासात् १२९
८७ कार्यकार्यमविरुद्धकार्योपलब्धौ १३०
८८ नास्त्यत्रगुहायां मृगक्रीडनं मृगारिसंशब्दनात् कारणविरुद्धकार्य विरुद्धकार्योपलब्धौ यथा १३०
८९ व्युत्पन्नप्रयोगस्तुतथोपपत्यान्यथानुपपत्यैव १३१
९० अग्निमानयं प्रदेशस्तथैवधूमवत्वोपपत्तेर्धूम–वत्वान्यथानुपपत्तेर्वा १३१
९१ हेतुप्रयोगो हि यथा व्याप्तिग्रहणं विधीयते सा च तावन्मात्रेण व्युत्पन्नैरवधार्यते १३१
९२ तावता च साध्यसिद्धिः १३२
९३ तेन पक्षस्तदाधारसूचनायोक्तः १३२
९४ आप्तवाक्यदिनिबंधनमर्थज्ञानमागमः १३३

चतुर्थसमुद्देश

१ सामान्यविशेषात्मा तदर्थोविषयः १५७
२ अनुवृत्तव्यावृत्तप्रत्ययगोचरत्वात् पूर्वोत्तराकारपरिहारावाप्तिस्थिति लक्षणपरिणामेनार्थक्रियोपपत्तेश्च १७८
३ सामान्यं द्वेधा तिर्यगूर्द्धताभेदात् १७९
४ सदृशपरिणामस्तिर्यक् खण्डमुण्डादिषु गोत्ववत् १७९

५ परापरविवर्तव्यापि द्रव्यमूर्द्धता मृदिव स्थासादिषु १८०

६ विशेषश्च १८०

७ पर्याय व्यतिरेकभेदात् १८१

८ एकस्मिन्द्रव्ये क्रमभाविनः परिणामाः पर्याया आत्मनि हर्ष विषादादिवत् १८१

९ अर्थान्तरगतो विसदृशपरिणामो व्यतिरेको गोमहिषादिवत् १८५

पंचम समुद्देश.

१ अज्ञाननिवृत्तिर्हानोपादानोपेक्षाश्च फलम् १८७

२ प्रमाणादभिन्नं भिन्नं च

३ यः प्रमिमीते सएव निवृत्ताज्ञानो जहात्यादत्ते उपेक्षा चेति प्रतीतेः १८८

छठा समुद्देश.

१ ततोऽन्यत्तदाभासम् १९०

२ अस्वसंविदितगृहीतार्थदर्शनसंशयादयः प्रमाणाभासाः १९०

३ स्वविषयोपदर्शकत्वाभावात् १९३

४ पुरुषान्तरपूर्वार्थगच्छतृणस्पर्शस्थाणुपुरुषादिज्ञानवत् १९३

५ चक्षूरसयोर्द्रव्ये संयुक्तसमवायवच्च १९४

६ अवैशद्ये प्रत्यक्षं तदाभासम् बौद्धस्याकस्माद्धूमदर्शनाद्वह्निविज्ञानवत् १९५

७ वैशद्येपि परोक्षं तदाभासं मीमांसकस्य करणज्ञानवत् १९६

८ अतस्मिँस्तदिति ज्ञानं स्मरणाभासं जिनदत्ते स देवदत्तो यथा १९६

९ सदृशे तदेवेदं तस्मिन्नेव तेन सदृशं यमलकवदित्यादि प्रत्यभिज्ञानाभासम् १९६

१० असंबद्धे तज्ज्ञानं तर्काभासं यावाँस्तवपुत्रः स श्याम इति यथा १९७

११ इदमनुमानाभासम् १९७

१२ तत्रानिष्टादिः पक्षाभासः १९७

१३ अनिष्टो मीमांसकस्यानित्यः शब्दः १९८

१४ सिद्ध श्रावणशब्दः १९८

१५ बाधितः प्रत्यक्षानुमानागम लोकस्ववचनैः १९८

१६ तत्र प्रत्यक्षवाधितो यथा अनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वाज्जलवत् १९८

१७ अपरिणामी शब्दः कृतकत्वाद् घटवत् १९९

१८ प्रेत्याऽसुखप्रदोधर्मः पुरुषाश्रितत्वादधर्मवत् १९९

१९ शुचिनरशिरःकपालं प्राण्यंगत्वाच्छंखशुक्तिवत् १९९

२० मातामे वंध्या पुरुषसंयोगेप्यगर्भत्वात् प्रसिद्धवंध्यावत् २००
२१ हेत्वाभासा असिद्धविरुद्धानैकान्तिकाकिंचित्कराः २००
२२ असत्सत्तानिश्चयोऽसिद्धः
२३ अविद्यमानसत्ताकः परिणामी शब्दः चाक्षुषत्वात् २००
२४ स्वरूपेणैवासिद्धत्वात् २०१
२५ अविद्यमाननिश्चयो मुग्धबुद्धिं प्रत्यग्निरत्र धूमात् २०१
२६ तस्य वाष्पादिभावेन भूतसंघाते संदेहात् २०१
२७ सांख्यं प्रति परिणामी शब्दःकृतकत्वात् २०१
२८ तेनाज्ञातत्वात् २०१
२९ विपरीतनिश्चिताविनाभावो विरुद्धोऽपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् २०२
३० विपक्षेप्यविरुद्धवृत्तिरनैकान्तिकः २०२
३१ निश्चितवृत्तिरनित्यः शब्दः प्रमेयत्याद् घटवत् २०२
३२ आकाशे नित्येप्यस्य निश्चयात् २०३
३३ शंकितवृतिस्तु नास्ति सर्वज्ञो वक्तृत्वात् २०३
३४ सर्वज्ञत्वेन वक्तृत्वाविरोधात् २०३
३५ सिद्धे प्रत्यक्षादिवाधिते च साध्येहेतुरकिंचित्करः २०३
३६ सिद्धः श्रावणः शब्दः शब्दत्वात् २०३
३७ किञ्चिदकरणात् २०४
३८ यथानुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वादित्यादौकिंचित्कर्तुमशक्यत्वात् २०४
३९ लक्षण एवासौदोषोव्युत्पन्नप्रयोगस्य पक्षदोषेणैव दुष्टत्वात् २०४
४० दृष्टान्ताभासा अन्वयेऽसिद्धसाध्यसाधनोभयाः २०५
४१ आपौरुषेयः शब्दोऽमूर्तत्वादिन्द्रियसुखपरमाणुघटमत् २०५
४२ विपरीतान्वयश्च यदपौरुषेयं तदमूर्तम् २०६
४३ विद्युदादिनातिप्रसंगात्
४४ व्यतिरेके सिद्धतद्व्यतिरेकाः परमाण्विन्द्रियसुखाकाशवत् २०६
४५ विपरीतव्यतिरेकश्च यन्नामूर्तंतन्नापौरुषेयम् २०७
४६ वालप्रयोगाभासः पंचावयवेषु कियद्धीनता २०७
४७ अग्निमानयं प्रदेशो धूमवत्वाद्यदित्थं तदित्थं यथा महानसः २०८
४८ धूमावाँश्चायम् २०८
४९ तस्मादग्निमान् धूमवाँश्चायम् २०८

५० स्पष्ट तया प्रकृतप्रतिपत्तेरयोगात् २०८
५१ रागद्वेषमोहाक्रान्तपुरुषवचनाज्ञातमागमाभासम् २०९
५२ यथा नद्यास्तीरे मोदकराशयः संति धावध्वं माणवकाः २०९
५३ अङ्गुल्यग्रे हस्तियूथशतमास्ते इति च २०९
५४ विसंवादात् २०९
५५ प्रत्यक्षमेवकं प्रमाणमित्यादि संख्याभासम् २१०
५६ लौकायतिकस्य प्रत्यक्षतः परलोकादिनिषेधस्य परबुद्ध्यादेश्चासिद्धे-रतद्विषयत्वात् २१०
५७ सौगतसांख्ययौगप्रभाकरजैमिनीयानां प्रत्यक्षानुमानागमोपमानार्थापत्त्य-भावैरेकैकाधिकैर्व्याप्तिवत् २११
५८ अनुमानादेरतद्विषयत्वे प्रमाणान्तरत्वम् २११
५९ तर्कस्येव व्याप्तिगोचरत्वे प्रमाणान्तरत्वं, अप्रमाणस्याव्यवस्थापकत्वात् २११
६० प्रतिभासभेदस्यच भेदकत्वात् २१२
६१ विषयाभासः सामान्यं विशेषोद्वयं वा स्वातंत्रम् २१२
६२ तथा प्रतिभासनात्कार्यकारणाच्च २१२
६३ समर्थस्य करणे सर्वदोत्पत्तिरनपेक्षत्वात् २१३
६४ परापेक्षणे परिणामित्वमन्यथा तदभावात् २१३
६५ स्वयमसमर्थस्याकारकत्वात्पूर्ववत् २१३
६६ फलाभासः प्रमाणादभिन्नं भिन्नमेव वा २१४
६७ अभेदे तद् व्यवहारानुपपत्तेः २१४
६८ व्यावृत्यापि न तत्कल्पना फलान्तराद् व्यावृत्याऽफलत्वप्रसंगात् २१४
६९ प्रमाणान्तराद् व्यावृत्येवाप्रमाणत्वस्य २१५
७० तस्माद्वास्तवो भेदः २१५
७१ भेदेस्वात्मान्तरवत्तदनुपपत्तेः २१५
७२ समवायेऽतिप्रसंगः २१६
७३ प्रमाणतदाभासौ दुष्टतयोद्भावितौ परिहृतापरिहृतदोषौ वादिनः साधनतदाभासौ प्रतिवादिनो दूषणभूषणे च २१६
७४ संभवदन्यद्विचारणीयम् २१७

परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्वयोः
संविदे मादृशोबालः परीक्षादक्षवद्व्यधाम् ॥ १ ॥

इति.

निवेदन

इस ग्रंथका संशोधन श्रीयुत पंडित पन्नालालजी सोनी तथा मैंने किया है संभव है कि अज्ञान वश इसमें बहुतसी त्रुटियां रह गई होंगी तथा मैंने जो यह भूमिका और विषय सूची तथा सूत्र सूची लिखी है वहां भी प्रमाद हुआ हो होगा उसका खयाल न कर पाठकगण हमें अनुगृहीत करेंगे।

निवेदक—

रामप्रसाद जैन, बम्बई।

स्वर्गीय पंडित जयचंदजी विरचित

हिन्दी प्रमेयरत्नमाला ।

दोहा ।

श्रीमत वीरजिनेश रवि तम-अज्ञान नशाय ।
शिवपथ वरतायो जगति वंदौं मैं तसु पाय ।। १ ।।
माणिकनंदिमुनीशकृत ग्रंथ परीक्षाद्वार ।
करूं वचनिका तासकी लघुटीका अनुसार ।। २ ।।

ऐसैं मंगलपूर्वक प्रतिज्ञा करी । अब परीक्षामुखनाम संस्कृतसूत्रबंध माणिक्यनंदिआचार्यकृत ग्रंथ है ताकी बड़ी टीका तो प्रमेयकमलमार्त्तंड-नाम है सो प्रभाचन्द्र आचार्यकृत है, तामैं तौ विशेष करि वर्णन है । बहुरि छोटी टीका प्रमेयरत्नमाला है सो लघु अनन्तवीर्य आचार्यकृत है ताकै अनु-सार मैं देशभाषामय वचनिका लिखूं हूं । तामैं बुद्धिकी मंदतातैं तथा प्रमादतैं कहूं हीनाधिक अर्थ लिख्या होय तौ पंडितजन हास्य मत करियो, मूलग्रंथ देखि शुद्ध करलीजियो ।

इहां कोई कहै जो प्रमाणके प्रकरण तौ संस्कृतवचनरूपही चाहिये, देशभाषामय वचनतैं हीनाधिक कहनां वणै तौ विपर्यय होनेतैं बड़ा दोष लागै । ताका समाधान—जो यह तौ सत्य है देशभाषाके वचन अपभ्रंश बहुत हैं तहां अर्थ विपर्ययरूपभी भासै परन्तु कालदोषतैं संस्कृ-तके पढ़नेवाले विरले हैं, अर केई हैं ते भी गुरुसंप्रदायके विच्छेद

होनेतैं अर्थ यथार्थ न समझैं हैं तातैं संस्कृतका भावार्थ समझनेंकूं देश-भाषा करिये हैं । अर जे विशेष पंडित हैं ते मूलग्रंथ तथा संस्कृतटीकातैं समझैंहींगे। जैनमतमैं प्रमाणनयरूप स्याद्वाद न्यायके ग्रंथ बहुत हैं तिनिके अर्थ समझनेंकूं यह प्रकरण बड़ा उपकारी है तातैं याका भावार्थ देश-भाषामयभी लिखिये हैं। अर जे जिनमतकी आज्ञा मानैं हैं तिनिकै अर्थका विपर्ययभी न होयगा जेता यथार्थ समझैंगे तेता तौ यथार्थ रहैहीगा अर कहीं अन्यथा होयगा तौ विशेष बुद्धिवान पंडितनिका संयोग भये यथार्थ होयगा, जैनमतके श्रद्धानवाले पुरुष हठग्राही नाहीं होहै तातै देशभाषा करनेमैं दोष न लागैगा ऐसैं जाननां ।

तहां प्रथमही याका संबंध ऐसा—जो पहले श्री अकलंकदेव आचार्य भये, ते कैसे भये, अपनी निर्दोष ज्ञान अरु संयमरूप संपदा ताकरि प्रत्येकबुद्ध श्रुतकेवली सूत्रकार आदि बड़े ऋषीश्वर तिनिकी महिमांकूं आप लेते भये, बहुरि कल्याणरूप भये । बहुरि समस्त तार्किकनिका समूह तिनिविषै जे बड़े तार्किक तेई भये चूड़ामणि तिनिकी किरण सारिखी नमनक्रिया ताकरि मिली है चरणनिके नखनिकी किरण जिनिकी। भावार्थ—बड़े बड़े तार्किक जे तर्कशास्त्रके वेत्ता ते जिनिके चरण सेवैं हैं । बहुरि कविता करना, टीका करना, वाद जीतना, वक्तापणा करना, यहु च्यारि प्रकार पंडितपणा तिसके जाननेके इच्छुक तृषातुर ग्रहण करनेके इच्छुक जे विनयकरि नम्रीभूत शिष्यजन तिनिसहित किया आप अनुभव जिनूनैं ऐसे भये, तिनिनैं तर्क ग्रंथनिके सात प्रक-रण रचे । बृहत्त्रय, लघुत्रय, चूर्णिका । ते अतिकठिन जिनिमैं मन्दबुद्धि प्रवेश न करि सकै, तातैं तिनिमैं मन्दबुद्धीहूनिका प्रवेश होनेके अर्थि तिनिहीका अर्थ लेकरि धारा नगरीकैविषै श्रीमाणिक्यनंदिआचार्य तिनिनैं यह परीक्षामुख नाम प्रकरण रच्या । तिसका विवरण करनेंके

इच्छुक जे लघु अनंतवीर्य आचार्य ते तिसकी आदि विषैं नास्तिकताका परिहार, शिष्टाचारपालन, पुण्यकी प्राप्ति, निर्विघ्न शास्त्रकी समाप्ति आदि फलकूं चाहते संते श्लोक कहैं हैं;—

नतामरशिरोरत्नप्रभाप्रोतनखत्विषे।
नमो जिनाय दुर्वारमारवीरमदच्छिदे ॥ १ ॥

याका अर्थ—टीकाकार कहै हैं जो जिन कहिये कर्मशत्रुके जीतने हारे जे अरहंत परमेष्ठी तिनि सर्वनिके अर्थि हमारा नमस्कार होहु। कैसे हैं जिन—नमे जे देवनिके मस्तक तिनिके मुकुटानिके मणिनिकी प्रभा तिसविषैं पोई है मिली है चरणके नखनिकी किरण जिनिकी। भावार्थ—अरहंत परमेष्ठीकूं च्यारि प्रकारके देव नमस्कार करै हैं। बहुरि कैसे हैं कठिन है निवारन जाका ऐसा जो कामरूप सुभट ताका मदके छेदन हारे हैं। इस श्लोकमैं मारवीरमदच्छिदे ऐसा विशेषण जिनका है ताका ऐसाभी अर्थ है;—मा कहिये लक्ष्मी ताहि राति कहिए दे ताकूं मार कहिए, सो इस मार शब्दके अर्थ तैं मोक्षमार्गके दाता भये। बहुरि वीर शब्दकरि वि कहिए विशेष करि ईर कहिए समस्त पदार्थनिकूं जाननहारे हैं ऐसैं सर्वज्ञ भये। बहुरि मदच्छित् कहिए मानकषायके छेदनहारे हैं, ऐसैं मद ऐसा उपलक्षणपदतैं सर्व रागादिकका नाश करन हारे भये ऐसैं " मोक्षमार्गस्य नेतारं " इत्यादि सूत्रकी टीका विषैं कहे जे आप्तके तीनूं विशेषण ते सिद्ध भये। बहुरि अन्य प्रकार कहै हैं;—मा कहिये प्रमेयका प्रमाणरूप जाननहारा केवलज्ञान सोई भया रवि कहिये सूर्य, बहुरि इरा कहिये वाणी दिव्यध्वनि, ये दोऊ कैसे? दुर्वार कहिये खोटे हेतु दृष्टांतनिकरि निवारन जिनका न होय ऐसे जाके होय सो दुर्वारमारवीर कहिये। बहुरि मद कहने तैं सर्व रागादिक लेने तिनकौं छेदै सो मदच्छित्

कहिये। ऐसैं भी ते आप्तके तीनूं विशेषण भये ऐसा जाननां। ऐसैं मंगलकै अर्थि नमस्कार कीया। तहां मंगल दोय प्रकार हैं—एक मुख्यमंगल, दूजा अमुख्य मंगल। तहां मुख्यमंगल तौ जिनेन्द्रके गुणनिका स्तोत्र करना है अरु अमुख्यमंगल लौकिक है तहां दधि अक्षत आदि हैं। सो इहां मुख्यमंगल जिनेंद्रके गुणनिका स्तोत्र है सो ही किया है।

आगैं इस ग्रंथके कर्त्ताकूं टीकाकार नमस्कार करै हैं;—

अकलंकवचोऽम्भोधेरुद्दध्रे येन धीमता।
न्यायविद्यामृतं तस्मै नमो माणिक्यनन्दिने॥ २॥

याका अर्थ—तिस माणिक्यनंदिनाम आचार्यकै अर्थि हमारा नमस्कार होहु—जा बुद्धिवाननैं अकलंक कहिये कर्मकलंककरि रहित श्रीवर्द्धमानस्वामी अथवा अकलंकनामा आचार्य तिनिके वचन अथवा अकलंक कहिये निर्दोष सर्वज्ञकी दिव्यध्वनि सोही भया समुद्र तातैं न्यायविद्यारूप जो अमृत सो मथिकरि काढ्या—प्रगट कीया ऐसे हैं। इहां लौकिक कथा है जो नारायण समुद्र मथिकरि चौदह रत्न काढे तिनिमैं अमृतभी है सो प्रसिद्ध अपेक्षा अलंकाररूप वचन है।

आगैं इस ग्रंथकी बड़ी टीका 'प्रमेयकमलमार्तण्ड' है ताका कर्त्ता प्रभाचन्द्र आचार्य है ताकी महिमा दोय श्लोकमैं करै है;—

प्रभेन्दुवचनोदारचन्द्रिकाप्रसरे सति।
मादृशाः क्व नु गण्यंते ज्योतिरिंगणसन्निभाः॥३॥
तथापि तद्वचोऽपूर्वरचनारुचिरं सताम्।
चेतोहरं भृतं यद्वन्नद्या नवघटे जलम्॥ ४॥

इनिका अर्थ—प्रभाचन्द्रनाम आचार्यके वचनरूप उदार चांदणीका फैलना होतैं हम सारिखे आग्यानामा कीटजीवतुल्य कौन गणनांमैं गणिये तोऊ हम इस ग्रंथकी टीका करैं हैं सो जैसैं नदीका जल

नवीन घटविषैं किछू घालिये सोहू शीतल होय पीवनेंवाले पुरुषनिके चित्तकूं प्रिय लागै तैसैं तिस प्रभाचंद्रके वचनही अपूर्व रचना कहिये तिनिकूं नई रचनारूप किये संते सुंदर सत्पुरुषनिके चित्तकूं हरनहारे होयंगे।

आगैं यह टीका जिस निमित्ततैं बणी है सो संबंध कहै हैं;—

वैजेयप्रियपुत्रस्य हीरपस्योपरोधतः।
शांतिषेणार्थमारब्धा परीक्षामुखपंचिका ॥ ५ ॥

याका अर्थ—वैजेयका प्यारा पुत्र जो हीरपनामा ताकी प्रार्थनातैं शांतिषेणनामा कोई शिष्य हैं ताके पढ़नेके अर्थि यह परीक्षामुखनामा ग्रंथकी पंचिका आरंभी है।

इहां "परीक्षामुख" ऐसा नामका अर्थ ऐसा, जो परीक्षानाम विचारका है जो वस्तु ऐसैं है कि नांही है कि अन्यप्रकार है ऐसा विचारकूं कहिए सो इहां प्रमाणका लक्षण आदिकी परीक्षा करिये हैं इस द्वारतैं सर्वही वस्तुकी परीक्षा होय है तातैं परीक्षामुख है। बहुरि ताकी टीकाकूं पंचिका कही सो सूत्रनिके पद न्यारे करि तिनिका न्यारा न्यारा अर्थ कहिये ताकूं पंचिका कहिए है, सो इस टीकामैं सूत्रनिका भिन्न भिन्न पदनिका अर्थ करियेगा तातै पंचिका नाम है। याका दूजा नाम प्रमेयरत्नमालाभी है।

आगैं मूलग्रंथका आदि सूत्रकी सूचानिका कहै है;—

श्रीमत् कहिये पूर्वापरविरोधरहितपणां सो ही जो श्री लक्ष्मी ताकरि सहित ऐसा जो न्याय सो ही भया समुद्र जामैं अगणित प्रमेय वस्तुरूप रत्न भरे सो ही है सार जामैं ऐसा न्यायरूप समुद्र ताके अवगाहन करनेकूं अव्युत्पन्न जे न्यायशास्त्रके अभ्यासरहित पुरुष ते असमर्थ हैं, ऐसा विचारि श्रीमाणिक्यनन्दिनाम आचार्य तिनिके अवगाहनेंकूं जिहा-

जसारिखा यह परीक्षामुखनाम प्रकरण रचै है । इहां न्याय ऐसा शब्द है सो 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'इण् गतौ' धातुकै घञ्प्रत्यय करण अर्थमैं जोड्या है तातैं ऐसा अर्थ होय है--जो कोई प्रकार नियमकरि प्रमेय-पदार्थका स्वरूप जाकरि जाणिये सो न्याय है । अथवा नयप्रमाणरूप युक्ति ताका कहनेंहारा होय ताकूं भी न्याय कहिये । बहुरि याका श्रीमान् विशेषण किया ताका यहु अर्थ—जो निर्विपणां होय सो श्री, अथवा श्रद्धान आदि गुणका उपजावना है लक्षण जाका ऐसी श्रीकरि युक्त होय सो श्रीमान् । बहुरि याकूं समुद्र कह्या सो रूप-कालंकार करि कह्या सो याका विशेषण किया जो अमेयप्रमेयरत्नसार है । सो अमेय कहिये मिथ्यादृष्टीनिकरि जाननेमैं न आवै अथवा गणनारहित अनंतानंत ऐसे जे प्रमेय कहिये प्रमाणकरि जिनिकूं जानिये ऐसे जीव आदिपदार्थ वस्तु है । बहुरि रत्ननिविषैं सार होय सो रत्नसार कहिये, ऐसैं अमेय प्रमेय है रत्न सार जामैं ऐसैं बहुव्रीहि समास है । बहुरि अमेय प्रमेय जे रत्न तिनिकरि सार है—उत्कृष्ट है ऐसा न्यायरूप समुद्र है ऐसैं तत्पुरुष समास है। ऐसैं इस परीक्षामुख प्रकरणके संबंध, अभिधेय, शक्यानुष्ठानइष्टप्रयोजन इनि तीनूंनिकौं जानें विना परीक्षावान पुरुष-निकी प्रवृत्ति या विषैं होय नाहीं, इस हेतुतैं तिनि तीनूंनिका अनुवाद कहिये पूर्वाचार्यनि करि कह्या होय तिस अनुसार कहना सो है पुरस्सर कहिये मुख्य जामैं । बहुरि वस्तु जाका कथन कीजिये सो ऐसा इहां वस्तुशब्दकरि प्रमाण अर प्रमाणाभास लेनां ताका निर्देश कहिये स्वरूप कहनां तिंस विषैं पर कहिये उत्कृष्ट—तत्पर ऐसा प्रतिज्ञाका श्लोक कहै है ।

भावार्थ—इस ग्रंथका आदिका श्लोक है तामैं अभिधेय संबंध शक्या-नुष्ठानइष्टप्रयोजन इन तीनूंकौं जनाय अर प्रमाण अर प्रमाणाभासका लक्षण जो पूर्वाचार्यनिकरि कह्या है तिनिका अनुसार ले कहनेकी प्रतिज्ञा करै है;—

प्रमाणादर्थसंसिद्धिस्तदाभासाद्विपर्ययः ।
इति वक्ष्ये तयोर्लक्ष्म सिद्धमल्पं लघीयसः ॥ १ ॥

याका अर्थ—प्रमाणतैं अर्थकी संसिद्धि होय है, बहुरि प्रमाणाभासतैं अर्थकी संसिद्धि नांही होय है—विपर्यय होय है। या हेतुतैं मैं ग्रंथकर्त्ता हूं सो तिस प्रमाणका अरु प्रमाणाभासका लक्षण कहूंगा ।

टीका—अहं कहिये मैं ग्रंथकर्त्ता माणिक्यनंदिआचार्य हूं सो तल्लक्ष्म कहिये प्रमाण अर तदाभास इनि दोऊनिका लक्षण है ताहि वक्ष्ये कहिये कहूंगा। सिद्धं कहिये पूर्वाचार्यनिकरि प्रसिद्ध किया सो ही। बहुरि कैसा ? अल्प कहिये थोरे अक्षरनिकरि कहनें योग्य अरु अर्थतैं महान्। बहुरि कौनकूं विचारि करि कहूंगा ? अतिशय करि लघु जे शिष्यजन तिनिकूं विचारि करि। इहां लघुपणां बुद्धिकृत ग्रहण करनां, शरीरपरिमाणकृत न लेणां, जातैं छोटे शरीरवालेहू बड़े बुद्धिवान होय हैं, बहुरि अवस्थाकृत भी न लेणां जातैं छोटी अवस्थावालेभी केई बड़े बुद्धिवान होय हैं, तातैं जिनिमैं बुद्धि थोड़ी होय ते इहां लघुशब्दकरि ग्रहण करनें। इहां लक्षणका तौ स्वरूप ऐसा जाननां—जो बहुत वस्तु एकठी मिलिरही होय तिनिमैंसूं जुदी करनेंका जो किछु वस्तुमैं प्रसिद्ध चिह्न होय सो लक्षण होय। बहुरि सिद्ध विशेषणतैं अपनीही रुचि करि नांही कीया पूर्वैं कह्या तिसही अर्थरूप है ऐसा जनाया है। बहुरि अल्प कहनेंतैं यामैं थोरे अक्षरनिमैं ही अर्थ बहुत है ऐसें याका निष्प्रयोजनपनां निषेध्या है। यह प्रमाण तदाभासका लक्षण कौंन हेतुतैं कहिये है, जातैं अर्थ जो जाननें योग्य वस्तु ताकी संसिद्धि कहिये प्राप्ति होनां अथवा जाननां ये दोऊ प्रमाणतैं होय हैं यातैं। बहुरि केवल प्रमाणतैं अर्थकी संसिद्धि होय है, ऐसाही नांहीं है प्रमाणाभासतैं अर्थसंसिद्धिका अभावभी होय है यातैं दोऊहीका लक्षण कहनां। बहुरि इति

शब्द है सो हेतु अर्थमैं है अर याका समुदायार्थ उपरि कह्या सो जाननां।

इहां तर्क;—जो अभिधेय, संबंध, शक्यानुष्ठानइष्टप्रयोजन इन तीननि करि सहित शास्त्र होय हैं । तहां इस प्रकरणका जहां तांई अभिधेय अरु संबंध ये दोऊ न कहिये तहां तांई याका उपादेयपणां न होय—यहु ग्रहण करनें योग्य न होय। इहां उदाहरण—जैसैं काहूनैं कह्या जो यह वंध्याका पुत्र जाय है, आकाशके फूलनिका जाकै मस्तक सेहुरा है, मरीचिका—भाडलीमैं स्नान करि जाय है, सुसाके सींगका धनुप धारे है, ऐसे कहनेमैं किछू वस्तु नांही अवस्तु कहे तातैं यामैं अभिधेय—अर्थ नांही । बहुरि काहूनैं कह्या—दश दाडिम हैं, छह पूवा हैं, चरवी है, छेलीका चामड़ा है, मांसका पिंड है अथवा अहो देखो यह गेरू है स्पष्ट किया ताका पिता शीला होय गया ऐसे वचन कहे तिनिमैं काहूका संबंध न मिल्या—प्रलापमात्र भये । ऐसैं शास्त्रमैं अभिधेय सम्बन्धरहित वचन होयतौ परीक्षावान आदरै नांही । बहुरि तैसैं ही जो अशक्यानुष्ठानइष्टप्रयोजन होय जाका ग्रहण करनां कठिन होय अरु अपनें इष्ट होय तौ जैसें सर्पका मणि सर्वज्वर—रोगका हरनहारा है ऐसे कहनेमैं रोगका हरणां तौ इष्ट है परन्तु तिसका ग्रहण करनां कठिन है ऐसे वचनकूं परीक्षावान आदरै नांही । तैसैंही शक्यानुष्ठान अनिष्टप्रयोजन होय, जैसैं काहूनैं कह्या माताका विवाह करनां, तौ याका करनां तौ सुगम है परन्तु यह इष्ट नांही सो ऐसे वचन भी परीक्षावान आदरै नांही । तातैं ये तीनूं ही या शास्त्रके कहे चाहिए ?

ताका समाधान;—आचार्य कहै है जो यहु सत्य है । या प्रकरणके अभिधेय प्रमाण अरु प्रमाणभास हैं ते तौ इस श्लोकमैं प्रमाण तदाभास पदका ग्रहणतैं कहे ही, जातैं इस प्रकरणकरि प्रमाण प्रमाणाभासकाही

कथन करिये है। बहुरि संबंध है सो अर्थका सामर्थ्यहीतैं आया जातैं या प्रकरणकै अरु प्रमाण प्रमाणाभासरूप अभिधेयकै वाच्यवाचक है लक्षण-जाका ऐसा संबंध प्रतीतिमैं आवैही है। बहुरि प्रयोजन शक्यानुष्ठानरूप अरु इष्टरूप है सोभी आदि श्लोककरिही लखिये है, जातैं प्रयोजन दोय प्रकार है एक साक्षात्, दूजा परंपरा। तहां इस श्लोकमैं 'वक्ष्ये' ऐसा पद है सो या पदकरि साक्षात् प्रयोजन कहिये है जातैं संशय विपर्ययरहित शास्त्रका ज्ञान होनेतैं शिष्यजन देखि लैंगे, शिष्यजननिहीकूं विचारि करि कहनेंकी प्रतिज्ञा करी है सो यही साक्षात् प्रयोजन है; बहुरि परंपराप्रयोजन अर्थका ज्ञान तथा प्राप्ति है सो आदि श्लोकमैं 'अर्थसंसिद्धि' ऐसा पद है ताकरि कह्या, जातैं शास्त्रके ज्ञानकै अनंतर अर्थका ज्ञान तथा प्राप्ति होयगी ऐसैं जाननां।

फेरि तर्क;—जो समस्त विघ्नके नाशकै अर्थि इष्टदेवताका नमस्कार शास्त्रकी आदि विषैं चाहिये सो इस प्रकरणके कर्त्तानैं न किया सो कहा कारण?

ताका समाधान;—आचार्य कहै है जो ऐसैं न कहनां, जातैं नमस्कार मन अरु कायकरि भी संभवै है तातैं ऐसैं जानूं मन करि अरु कायकरि शास्त्रके प्रारंभ करतैं कर लिया होयगा। बहुरि वचनकरि नमस्कारभी इस आदि वाक्यकरि जाननां, जातैं केई वाक्य ऐसे हैं जिनका दोय आदि अर्थभी देखिये हैं; जैसैं काहूनैं कह्या 'श्वेतो धावति' ऐसे वाक्यके दोय अर्थ होय हैं, एक तौ ऐसा जो 'श्वा' कहिये कूकरा (कुत्ता) सो 'इतः' कहिये या तरफ 'धावति' कहिये दोडै है। बहुरि दूजा अर्थ— जो श्वेत कहिये धोळा गुणयुक्त कोई दोडै है। ऐसे दोय अर्थकी प्रतीति है। तहां आदिके वाक्यकै विषैं नमस्काररूप अर्थभी है, सोही कहिये हैं;—तहां अर्थ कहिये हेयोपादेयरूप वस्तु ताकी संसिद्धि कहिये यथार्थ-

ज्ञान सो प्रमाणतैं होय है, तहां मा कहिये लक्ष्मी अन्तरंग तौ अनंतचतुष्टयरूप अरु बाह्य समवसरणादिकरूप; बहुरि आण कहिये शब्द इनि दोऊनिका द्वन्द्वसमासतैं माण ऐसा भया, बहुरि उपसर्ग जोड्या तब प्रमाण भया सो इस उपसर्गके योगतैं ऐसा अर्थ भया जो ऐसी प्रकृष्ट उत्कृष्ट लक्ष्मी हरि—हर—ब्रह्मा आदिकूं लौकिकदेव मानै हैं तिनिकै नांही। बहुरि ऐसी दिव्यध्वनि वाणी प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाणतैं विरोधरहित अन्यकै नांही, ऐसा प्रमाणनाम भगवान अरहंतकाही भया ऐसैं असाधारण गुण दिखावनां—कहनां है सो भगवानका स्तवनही है तातैं अर्थकी संसिद्धिकूं अवश्य कारणभूत जो प्रमाण कहिये भगवान अर्हन्त तातैं तौ अर्थकी संसिद्धि सम्यग्ज्ञान होय है। बहुरि प्रमाणाभास जे हरिहरादिक तिनितैं अर्थकी संसिद्धिका अभाव—मिथ्याज्ञान होय है। इस हेतुतैं इस प्रकरणतैं तिनि प्रमाण प्रमाणाभासका लक्षण कहूंगा। ऐसैं कह्या तैसा आगैं सूत्र कहियेगा। जो "सामग्रीविशेष" इत्यादिक तिनिमैं सर्वज्ञ असर्वज्ञका निश्चय करियेगा। ऐसैं अरहंतका सत्यार्थस्वरूप कहनां सो मंगलरूप भया, अन्यका निषेध सो अमंगलका निषेध है ऐसा जाननां।

आगैं अब कहनेंकूं प्रारंभ किया जो प्रमाणतत्व ताविषैं अन्यवादीनिकै च्यारि विप्रतिपत्ति हैं। स्वरूपविप्रतिपत्ति १ संख्या विप्रतिपत्ति २ विषयविप्रतिपत्ति ३ फलविप्रतिपत्ति ४ ऐसैं च्यारि। तिनिमैं प्रथमही स्वरूपकी विप्रतिपत्तिका निराकरणकै अर्थि सूत्र कहै है। इहां विप्रतिपत्ति नाम अन्यथा जाननेंका है सो प्रमाणका स्वरूप अन्यवादी अन्यप्रकार कहै है सो बाधासहित है, सत्यार्थ नाहीं, ऐसा इस सूत्रतैं सिद्ध होय है:—

स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम् ॥ १ ॥

याका अर्थ——स्व कहिये आप आत्मा अपूर्वार्थ कहिये पहिले जाकी प्रमाणता न भई ऐसा अन्य वस्तु इनि दोऊनिविषैं व्यवसायात्मक कहिये व्यापारकरि निश्चय करनें स्वरूप जो ज्ञान सो प्रमाण है। इहां प्रमाण शब्दकी निरुक्ति ऐसी;——'प्र' कहिये प्रकर्षरूप संशय, विपर्यय, अनध्यवसायकरि रहित होय करि 'मीयते' कहिये वस्तुस्वरूपकूं जानिये जा करि सो प्रमाण है, ऐसैं करणसाधनरूप निरुक्ति है, सो ऐसा ज्ञान विशेषणकरि तौ जे अज्ञानरूप संनिकर्ष आदिकूं प्रमाण मानैं है तिनिका निराकरण भया। तहां लघु नैयायिकमतवाले तौ इंद्रियकै अर पदार्थकै संबंध होना ऐसा जो सन्निकर्ष ताकूं प्रमाण मानै है, अर बड़े पुराणे नैयायिक ते कर्त्ता कर्म आदि कारकनिका सकलपणांकूं प्रमाण मानैं हैं। बहुरि सांख्यमतवाले इन्द्रियनिकी प्रवृत्तिहीकूं प्रमाण मानैं हैं। बहुरि प्राभाकर जे मीमांसकमतके भेदवाले अज्ञानरूप जो ज्ञाता का व्यापार ताकूं प्रमाण मानैं हैं तिनिका निषेध ज्ञान कहनेंतैं भया। बहुरि बौद्धमती प्रमाण ज्ञानहीकूं कहै हैं परन्तु प्रमाणका भेद जो प्रत्यक्ष ताके च्यारि भेद करैं हैं। स्वसंवेदनप्रत्यक्ष १ इन्द्रियप्रत्यक्ष २ मानसप्रत्यक्ष ३ योगिप्रत्यक्ष ४ ऐसैं यहू च्यारूंही प्रकारका प्रत्यक्ष निर्विकल्प—व्यापार करि रहित मानैं हैं तिनिके निराकरणकै अर्थि व्यवसायपदका ग्रहण है। जो व्यापाररूप सविकल्प होय——निश्चय करनेंवाला होय सो प्रमाण है। बहुरि अर्थपदका ग्रहणतैं जे बाह्य पदार्थका लोप करनेंवाले विज्ञानाद्वैतवादी बौद्धमती तथा ब्रह्माद्वैतवादी वेदान्तमती तथा दीखती वस्तुका लोप करनेंवाले शून्यएकान्तवादी तिनिका निराकरण है। बौद्धमतीके च्यारि भेद हैं तहां माध्यमिक तौ सर्वशून्य मानै हैं, बहुरि योगाचार बाह्यपदार्थकूं शून्य मानैं है ज्ञानकूं अद्वैत मानैं हैं, बहुरि सौत्रांतिक अनुमानका विषय अनुमेयकूं अवस्तु मानैं हैं, बहुरि वैभाषिकभी सर्व वस्तुकूं शून्य

मानैं हैं। बहुरि अर्थका अपूर्व विशेषण है सो गृहीतग्राही पहले ग्रहण किया—जान्यां ताहीकूं ग्रहण करै—जानै ऐसा जो धारावाही ज्ञान ताकै प्रमाणताका निषेधकै अर्थि है, धारावाहीज्ञान प्रमाणका फलरूप प्रमिति है करणस्वरूप प्रमाण नांही। बहुरि स्वपदका ग्रहणतैं ज्ञानकूं परोक्षही मानैं ऐसे मीमांसकमती तथा ज्ञान स्वसंवेदनस्वरूप नांही परहीकूं जानै है—आपकूं आप जानै नांही ऐसे माननेवाले सांख्यमती तथा ज्ञान है सो दूसरे ज्ञान करि जानिये है आपकूं आपही जानैं नांही ऐसैं माननेवाले यौगमती नैयायिक इनिका निषेध है; ज्ञान स्वपरप्रकाशक है। ऐसैं अव्याप्ति अतिव्याप्ति असंभव ऐसे तीन लक्षणके दोष हैं तिनितैं रहित भले प्रकार ठहरया निश्चय भया प्रमाणका लक्षण है। ऐसैं यहु सूत्र है सो प्रमाणभूत है। तहां अनुमानप्रमाणका प्रयोगस्वरूप या सूत्रकूं दिखाइए है;—तहां प्रमाण तौ इहां धर्मी है ता विषैं यह लक्षण कह्या सो साध्य है, बहुरि प्रमाण जो धर्मी सो ही इहां हेतु कहनां।

इहां प्रश्न;—जो प्रमाण शब्दकै तौ प्रथमा विभक्ति है अर हेतु विषैं पंचमी होय है सो प्रमाण शब्द हेतु कैसैं?

ताका समाधान;—जो कोई जायगां प्रथमा विभक्ति अंतपदभी हेतुस्वरूप होय है, जैसैं कह्या है 'प्रत्यक्षं विशदं ज्ञानं' इहां साध्य साधनका प्रयोग करिये तब प्रथमाभी हेतुरूप है, इस सूत्रका प्रयोग ऐसैं किया है, "प्रमाण है सो स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान है, काहे तैं जातैं प्रमाणपनां याहीकै है, तातैं जो स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान नांहीं सो प्रमाण नांहीं जैसे संशयादिक स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक नाहीं ते प्रमाणभी नाहीं तथा घट आदि जडपदार्थ ते भी ऐसे नांहीं ते प्रमाण नाहीं, बहुरि प्रमाण है सो ऐसा है, तातैं स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान है सो ही प्रमाण

है।" ऐसैं अनुमानके पंच अवयवरूप यह सूत्र है। धर्मी अर साध्य दोऊ स्वरूप पक्ष कहिये ताका वचन सो प्रतिज्ञा है, साधनका वचन सो हेतु है, व्याप्तिकूं लार लगाय दृष्टांतका वचन सो उदाहरण है, दृष्टांतकूं अरु पक्षकूं समान कहनां हेतुको संकोचनां सो उपनय, साध्यका नियम कहनां सो निगमन, ऐसैं इनि पांचनिका स्वरूप आगैं सूत्रकार कहसी। ऐसैं सूत्र है सो प्रमाणभूत है आप्तका यह वचन है तातैं तौ आगमप्रमाणरूप होहै, बहुरि अनुमानके अवयवरूप होहै। बहुरि सूत्रका ऐसा भी स्वरूप कह्या है;—जामैं अक्षर अल्प होय, बहुरि जामैं संदेह न उपजै, बहुरि सारर(स)हित होय निःसार नाहीं होय, बहुरि जामैं निर्णय गूढ होय, अर्थ गंभीर होय, बहुरि शब्द अर्थ जामैं निर्दोष होय, बहुरि हेतुसहित होय, बहुरि सत्यार्थ होय ऐसा होय सो सूत्र है, सो इस प्रकरणके सर्वसूत्रनिका ऐसा स्वरूप जाननां। इहां प्रमाणकूंही हेतु कह्या सो असिद्ध नांही है जातैं सर्वही प्रमाणका स्वरूप कहनेंवालेनिकै प्रमाणसामान्यविषैं विप्रतिपत्तिका अभाव है, प्रमाणसामान्य प्रसिद्ध है जो ऐसैं नांही मानिये तौ अपनां इष्टतत्वकूं साधनां परका इष्टतत्वकूं दूषण देनां न होय प्रमाण विनां काहेतैं साधै काहेतैं दूषै।

इहां तर्क;—जो धर्मीहीकूं हेतु कहे प्रतिज्ञाका एकदेश भया सो असिद्धनामा हेत्वाभास भया।

ताका समाधान;—जो ऐसैं नांही, प्रमाणका विशेषकूं धर्मीकरि अरु प्रमाण सामान्यकूं हेतु कहैं तिनिकै दोष नाहीं आवै है इसही वचनतैं या हेतुकूं अपक्षधर्म कहै सो भी नांही है जातैं सामान्य है सो समस्त विशेषनिमैं व्यापक होय है सो पक्षका धर्मही है। बहुरि हेतुकै पक्षका धर्मपणांका बलकारि साध्य प्रति गमकपणां नांही है साध्य विनां न होना इस बलतैं ही साध्य प्रति गमकपणां है सो यहु साध्यान्यथानुपपत्ति कहिये,

सो इहां प्रमाणनामा हेतुकै स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञाननामा साध्यतैं नियम करि पाइए है सो विपक्ष जो संशयादिक तिनिविषैं यह साध्यान्यथानुपपत्ति नाहीं है सोही बाधक प्रमाण है ताके बलतैं निश्चयस्वरूप है। इसही कथनतैं इस हेतुकै विरुद्धपणां बहुरि अनैकान्तिकपणां भी निराकरण भया ऐसा जाननां जातैं विरुद्ध हेतुकै अरु व्यभिचारी हेतुकै अविनाभावका नियमका निश्चय सो ही है लक्षण जाका ऐसी व्याप्तिका अयोग है यातैं प्रमाणत्वनामा हेतु तैं यथोक्त साध्यकी सिद्धि होयही है, यह केवलव्यतिरेकी हेतु है तातैं साध्य प्रति गमकही है। जैसैं ऐसे हेतु और भी कहै हैं;—जीविता शरीर आत्मासहित है, जातैं प्राणादिसहितपणा है, जो आत्मासहित नाहीं होय सो प्राणादिसहित नाहीं होय—श्वासोच्छ्वासादिक्रिया जामैं नाहीं होय जैसैं मृतकशरीर, ऐसैं प्राणादिमत्पणां हेतु केवलव्यतिरेकी है याका अन्वयव्याप्तिरूप दृष्टांत नांही तातैं केवलव्यतिरेकी कहिये, तैसैं प्रमाणत्वनामा हेतु भी केवलव्यतिरेकी जाननां, याकाभी अन्वयव्याप्तिरूप दृष्टांत नांही है।

इहां पहले कह्या था जो प्रमाण संशयादिरहित वस्तुकूं जानै है संशयादिकका स्वरूप न कह्या सो ऐसैं है—जो दोय पक्षमैं ज्ञान समान होय—निर्णय न होय सकै, जैसैं स्थाणु था ता विषैं अंधकारादिके निमित्ततैं संशय उपज्या 'जो यह स्थाणुहै कि पुरुष है' ऐसैं दोऊ पक्षमें निश्चय न भया, जो कहा है सो तौ संशय है। बहुरि 'दोऊ पक्षमैं एकका अन्यथाका निश्चय होना सो विपर्यय है' जैसैं स्थाणु था ता विषैं ऐसा निश्चय भया जो यह पुरुषही है, ऐसा विपर्यय है। बहुरि अनध्यवसाय—जामैं चलते तृणादिका स्पर्श भया तहां ऐसा 'ज्ञान जो कछु है' ऐसैं जामैं संशय भी नांही अन्यथा निश्चय भी नांही यथार्थ निश्चय भी नांही सो अनध्यवसाय है।

बहुरि अव्याप्त अतिव्याप्त असंभवि ये तीन लक्षणाभास कहे। तिनिका स्वरूप ऐसा—जो लक्ष्य काहू वस्तुकूं स्थापि ताका लक्षण करिये सो जो लक्षण लक्ष्यके सर्वविशेषभेदनिमैं न व्यापै कोईमैं होय कोई विशेषमैं न होय सो लक्षण अव्याप्तस्वरूप है। बहुरि जो लक्षण लक्ष्य स्थाप्या तामैं भी होय अर जो लक्ष्य नाहीं तामैं भी होय सो अतिव्याप्त है। बहुरि जो लक्ष्य स्थाप्या तामैं नांहीं संभवै सो असंभवि है। सो इहां प्रमाण तौ लक्ष्य है अर स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान लक्षण है, सो ज्ञान ऐसा कहनेमैं तौ सम्यग्ज्ञानके पांच भेद हैं ते परोक्ष प्रत्यक्ष प्रमाणके भेद हैं तिनिमैं सर्वमैं पाइए है तातैं अव्याप्त लक्षण नांहीं। बहुरि व्यवसायात्मकविशेषणतैं संशयादिक अप्रमाण ज्ञान हैं तिनिमैं व्यवसाय कहिये यथार्थ निश्चयस्वरूपपणां नांहीं तातैं तिनिमैं व्यापै नांहीं तातैं अतिव्याप्त नांहीं। बहुरि स्वविशेषणतैं असंभव दोष भी नाहीं है जो आपकूं न जानैं सो परकूं भी न जानैं ऐसा असंभवदोष यामैं नांहीं। ऐसे त्रिदोषरहित लक्षण जाननां। जो लक्ष्य अप्रसिद्ध होय ताका प्रसिद्ध चिह्न होय सो लक्षण होय है॥ १॥

आगैं अब अपना कह्या जो प्रमाणका लक्षण ताका ज्ञान ऐसा विशेषण किया, ताकूं समर्थनरूप दृढ करते संते आचार्य सूत्र कहैं हैं;—

हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थं हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत् ॥ २ ॥

याका अर्थ—हि कहिये जातैं हितकी प्राप्ति अहितका परिहार विषैं समर्थ प्रमाण है तातैं ऐसा ज्ञानही है। अज्ञानरूप सन्निकर्षादिकविषैं यह सामर्थ्य नांहीं। तहां हित तौ सुख है जातैं सर्व प्राणी सुखहीकूं चाहैं हैं, बहुरि सुखका कारण है सो भी हित ही है। बहुरि

अहित दुःख है जातैं सर्व प्राणी दुःखकूं दूरि किया चाहैं हैं बहुरि दुःखका कारण है सो भी अहित ही है इहां दोऊनिका द्वंद्वसमास है। बहुरि प्राप्ति अरु परिहारका द्वंद्वसमास करणां ताकूं यथासंख्य लगावनां, तब हितकी प्राप्ति अहितका परिहार ऐसा भया। इनि दोऊविषैं समर्थ कहिये करनेंकी शक्तियुक्त ऐसा। बहुरि 'हि' शब्द हेतु अर्थमें है तातैं ऐसा अर्थ भया जो हिताहितकी प्राप्ति परिहार विषैं समर्थ है सो ही प्रमाण है। तातैं प्रमाणपणां करि मान्यां जो वस्तु सो ज्ञानही होनें योग्य है। अज्ञानरूप जे अन्यमतीनिकरि मानैं सन्निकर्ष आदि प्रमाण ते हितकी प्राप्ति अहितका परिहारविषैं समर्थ नांही तातैं ते प्रमाण नांही। या सूत्रका अनुमान प्रयोग ऐसैं करना;— 'प्रमाण ज्ञान ही है,' यह तौ धर्मी अर साध्यके वचनरूप प्रतिज्ञा भई, बहुरि 'हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थपणांतैं' यह साधनका वचनरूप हेतु भया, बहुरि 'जो ज्ञान है सोही ऐसा है अन्य ऐसा नाही जैसैं घट आदि जड़पदार्थ' यह व्यतिरेकव्याप्तिरूप दृष्टांतका वचन सो उदाहरण भया, बहुरि 'ऐसा यह प्रमाण है' यह उपनय भया, बहुरि 'तातैं हिताहितप्राप्तिपरिहारविषैं समर्थ जो प्रमाण सो ज्ञान ही है' यहु निगमन भया। ऐसैं पांच अवयरूप अनुमानका प्रयोग या सूत्रका होय है। इहां हेतु, असिद्ध नांही है जातैं परीक्षावान पुरुष हैं ते हितकी प्राप्ति अहितका परिहारकै अर्थिही प्रमाणकूं विचारैं हैं, निष्प्रयोजन व्यसनमात्रही प्रमाणकी कथनी नांही करैं है। ऐसैं सर्वही प्रमाणके कहनेंवाले मानैं हैं॥२॥

आगैं बौद्धमती कहैं हैं जो सन्निकर्षादिक अज्ञानरूप ही प्रमाणकूं मानैं हैं तिनिके निराकरणकै अर्थि ज्ञानहीकै प्रमाणपणां कह्या सो तौ होहु याकूं हम नांही निषेधैं हैं, बहुरि तुम व्यवसायात्मक ज्ञानका विशेषण किया सो या विषैं हम युक्ति नांही देखैं हैं जो यह तुम कैसैं

कहौ हौ ? हमारै तौ अनुमान प्रमाणकै तौ व्यवसायात्मकपणांकरि प्रमाणपणांका अंगीकार है, बहुरि प्रत्यक्षप्रमाणकै तौ निर्विकल्पणां होतैं ही सत्यार्थपणांतैं प्रमाणपणां बणै है, ऐसैं बौद्ध कहै ताके समाधानकै अर्थि सूत्र कहैं हैं;—

तन्निश्चयात्मकं समारोपविरुद्धत्वादनुमानवत् ॥३॥

याका अर्थ—तत् कहिये प्रमाणस्वरूप कह्या जो ज्ञान सो निश्चयात्मक कहिये निश्चयस्वरूप है, काहे तैं ? जातैं समारोप कहिये संशयादिक तिनितैं विरुद्ध है यथार्थ है, जैसैं अनुमान है तैसैं। इहां याका प्रयोग ऐसैं—तत् कहिये सो प्रमाणपणांकरि मान्यां वस्तु यहु तौ धर्मी भया, बहुरि यहु निश्चयात्मक कहिये व्यवसायस्वरूप है यहु साध्य है, दोऊ मिल्या हुवा पक्ष है, याका वचनकूं प्रतिज्ञा कहिये। बहुरि समारोपविरुद्धपणांतैं यह हेतु है, इहां समारोप नाम संशयादिकका है। बहुरि अनुमानवत् यहु दृष्टांतका वचन सो उदाहरण है। इहां यहु अभिप्राय है जो संशय विपर्यय अनध्यवसाय स्वभाव जो समारोप जिसका विरोधी जो वस्तुका ग्रहण कहिये जाननां सो है लक्षण जाका ऐसा व्यवसायस्वरूपपणांकूं होतैं ही अविसंवादी पणां कहिये बाधारहित सत्यार्थपणां सो बणै है, बहुरि जो अविसंवादी पणां है सो ही प्रमाणपणां है। ऐसैं बौद्धमतीनैं मान्यां जो च्यारि प्रकारका प्रत्यक्षप्रमाण ताकै प्रमाणपणांकूं अंगीकार करनेंका इच्छुक है तौ समारोपका विरोधी जो ग्रहण—जाननां सो है लक्षण जाका ऐसा निश्चयात्मक ज्ञानकूं ही प्रमाण माननां योग्य है।

इहां बौद्धमती कहै है जो समारोपका विरोधी अरु व्यवसायात्मक ये दोऊ रूप तौ एक ज्ञानहीकै भये तहां साध्यसाधनभाव एक ज्ञानहीकै

कैसैं वणैं ? ताकूं आचार्य कहै है—ऐसैं न माननां जातैं इनि दोऊ-निकै ज्ञानस्वभावकरि अभेद होतैं भी व्याप्यव्यापक जो धर्म तिनिका आधारपणां करि भेदभी वणै है, जैसैं शीसूं नामा वृक्ष है ताकै शीसूं पणांकै वृक्षपणांतैं अभेद होतैं भी व्याप्यव्यापक धर्मके आधारपणांकरि भेद वणैं है। भावार्थ—व्यापककै तौ व्याप्य बहुत है बहुरि व्याप्यकै सो व्यापक एक ही है, तहां व्यापककूं तौ गम्यसंज्ञा कही है अरु व्याप्यकूं गमकसंज्ञा कही है, सो इहां व्यवसायस्वरूप ज्ञान तौ व्यापक है जातैं यथार्थनिश्चयात्मक जो प्रमाण ताविषैं भी वर्त्तै है अरु अन्यथानिश्चयात्मक जो विपर्यय ज्ञान तामैं भी वर्त्तै है। बहुरि समारोपका विरोधीपणां है सो यथार्थनिश्चयात्मक ज्ञान विषैं ही प्रवर्त्तै है, विपर्ययविषैं नांही है तातैं भेद है; जैसैं वृक्षपणां तौ सर्व वृक्षनिमैं वर्त्तै है सो व्यापक है बहुरि शीसूं-पणां शीसूं वृक्षविषै ही वर्त्तै है तातैं व्याप्य है, तातैं शीसूंपणां तौ वृक्ष-विषैं गमक भया अर वृक्षपणां शीसूंकै गम्य भया, ऐसा जननां तातैं साध्यसाधनभाव वणै है। बौद्धमती प्रत्यक्ष प्रमाणाका लक्षण कल्पना-रहित अभ्रांत ऐसा कहै है, ताकूं अविसंवादस्वरूप कहैं हैं, अर्थक्रियाहीतैं कहैं हैं, वस्तुका प्राप्त करनेवाला कहैं हैं, याहीकूं वस्तुका प्रवर्त्तक कहैं हैं, अपनें विषयका दिखावनेवाला कहैं है, वस्तुविषैं निश्चय उपजावन-हारा कहैं हैं सो ऐसा तौ व्यवसायात्मक विशेषण किये ही वणैंगा। बहुरि अनुमानकूं बौद्धमती सविकल्प सामान्यमात्रविषयस्वरूप कहैं हैं ताकूं इहां दृष्टांत कीया है जो जैसैं अनुमानकूं निश्चयस्वरूप सवि-कल्प मानैं हैं तैसैं प्रत्यक्षकूं भी मानों, सर्वथा निर्विकल्पकै प्रमाणपणां वणैं नांही। बहुरि इहां समारोपका विरोधी कह्या सो विरोध तीनप्रकार होय है, एक तौ सहानवस्थानलक्षण, जहां दोऊ विरोधी एकठे रहैं नांही जैसैं प्रकाश अरु अंधकार। बहुरि दूजा परस्परपरिहारलक्षण, जैसैं

एकठे तौ रहैं परन्तु स्वरूप मिलै नांही जैसैं रूपगुण अर रसगुण, एक वस्तुमैं रहै स्वरूप जुदा जुदा है ही । तीसरा वध्यघातकलक्षण, परस्पर घातकरै जैसैं सर्पकै अरु न्योलाकै वैर होय । सो इहां समारोपकै अरु यथार्थनिश्चयात्मककै सहानवस्थानलक्षण विरोध है, यथार्थ निश्चय होय तहां समारोप संशय विपर्यय अनध्यवसाय रहै नांही ॥ ३ ॥

आगैं अब प्रमाणका लक्षणमैं अपूर्व विशेषणसहित अर्थका ग्रहण है ताकूं समर्थन करि दृढ़ करता संता—तिसकूं स्पष्ट करता संता सूत्र कहैं है;—

अनिश्चितोऽपूर्वार्थः ॥ ४ ॥

याका अर्थ—जाका पूर्वैं निश्चय न भया होय ऐसा वस्तु अपूर्वार्थ है । तहां जो अन्य प्रमाणकरि संशयादिकका व्यवच्छेद करि निश्चय न किया ऐसा जो अर्थ कहिये वस्तु सो अपूर्वार्थ है । ऐसा कहनें करि ईहा ज्ञानका विषय वस्तुकूं पहिले अवग्रहादिक करि ग्रहण किया ताकै गृहीतग्राहीपणां होतैं भी पूर्वार्थपणां नांही है, जातैं ईहादिक ज्ञानका विषयभूत वस्तु अवग्रहके ग्रहे पीछैं जो अवान्तरविशेष कहिये अन्यावशेष सो अवग्रहादिकरि निश्चय नांही होय है तातैं पूर्वार्थ नांही है, अपूर्वार्थ ही है ॥ ४ ॥

आगैं कहै हैं, जो अपूर्वार्थ कह्या सो याही प्रकार है कि कोई अन्य भी प्रकार है ऐसैं पूछैं सूत्र कहै हैं;—

दृष्टोऽपि समारोपात्तादृक् ॥ ५ ॥

याका अर्थ—जो वस्तु पूर्वैं देख्या होय—प्रमाणतैं निश्चय किया होय पीछैं ताविषैं संशयादिक जो समारोप सो होय जाय तौ वस्तु 'तादृक्' कहिये विना निश्चय कीया समान है—अपूर्वार्थ है । तहां 'दृष्टोऽपि'

कहिये अन्य प्रमाणकरि ग्रह्या होय तौ भी तादृक् कहिये अपूर्वार्थ ही है। इहां ऐसा अर्थ भया जो अनिश्चित ऐसैं पूर्वैं कह्या सो ही केवल अपूर्वार्थ नांही है, देखे विषैं भी संशयादिक होय जाय सो भी अपूर्वार्थ है। इहां ऐसा अर्थ है जो अन्यप्रमाणकरि पहली ग्रह्या था सो धूंधला आकारपणां करि निर्णय न होय सकै सो भी वस्तु अपूर्व है जातैं तिसविषैं प्रवर्त्त्या जो समारोप कहिये संशयादिक तिनिका व्यवच्छेद नांही है ॥ ५ ॥

आगैं जे ज्ञानकूं स्वप्रकाशक नांही मांनैं हैं ते कहैं हैं जो विज्ञानकै अपूर्वार्थ व्यवसायात्मकपणां तौ होहु परन्तु स्वव्यवसाय तौ हम नांही जानैं हैं, ऐसैं कहै ताकूं उत्तरका सूत्र कहै हैं;—

स्वोन्मुखतया प्रतिभासनं स्वस्य व्यवसायः ॥ ६ ॥

याका अर्थ—अपनें सन्मुखपणां करि अपनां प्रतिभासनां सो अपनां व्यवसाय है। अपनें स्वोन्मुखपणां सो तौ 'स्वोन्मुखता' कहिये ऐसैं अपनां अनुभव ताकरि प्रतिभासनां प्रतीति होनां सो 'स्वस्य व्यवसाय' कहिये। तहां मैं मेरे तांई जानूं हूं ऐसी प्रतीति जाननीं ॥६॥

इहां दृष्टान्तका सूत्र कहै हैं;—

अर्थस्येव तदुन्मुखतया ॥ ७ ॥

याका अर्थ—जैसैं अर्थ कहिये अन्यपदार्थ ताकै सन्मुख होय ताकूं जानै है तैसैं ही आपके सन्मुख होय अपनीं तरफ देखै तब आपकूं जानैं। इहां 'तत्' शब्द करि तौ अर्थका ग्रहण करनां जैसैं अर्थकै सन्मुखपणां करि प्रतिभासनां होय तब अर्थका निश्चय होय है तैसैं अपनें सन्मुखपणां करि अपनां प्रतिभासनां होय तब अपनां निश्चय होय है ॥ ७ ॥

आगैं इहां उल्लेख कहै हैं;–(दृष्टान्त दार्ष्टान्तिकका उदाहरणकूं उल्लेख कहिये);—

घटमहमात्मना वेद्मि ॥ ८ ॥

याका अर्थ—मैं आपही करि घट है ताहि जानूं हूं। इहां 'अहं' ऐसा तौ कर्त्ता है, 'घट' कर्म है, 'आत्मना' करण है, 'वेद्मि' ऐसी क्रिया है। सो जैसैं आप आपकरि घट वस्तुकूं जानैं है तैसैं आप आपकरि आपकूं भी जानैं है ऐसा जाननां ॥ ८ ॥

आगैं इहां नैयायिक तौ कहै है;–ज्ञान है सो अन्यपदार्थकूं ही निश्चय करै है—कर्महीकूं जानैं है आपकूं नांही जानैं है, आप करण है तथा आत्मा जो कर्त्ता है ताकूं भी नांही जानैं है तथा फलरूप क्रिया है ताकूं भी नांही जानैं है। इहां जैनमत अपेक्षा अज्ञानका नाश होनां हेयोपादेयका जाननां तथा वीतरागतारूप होनां ऐसा प्रमाणका फल जाननां। बहुरि मीमांसकनिमैं भट्टमतवाले कहै हैं—जो कर्त्ता अरु कर्मकूं ही ज्ञान जानै है, आप करण है सो आपकूं आप नांही जानै है अर क्रियारूप फलकूं भी नांही जानै है। बहुरि मीमांसकमतमैं ही जैमिनीय मत हैं ते कहैं हैं कर्त्ता कर्म क्रियाकूं ज्ञान जानै है अरु आप करण है सो आपकूं आप नांही जानैं है। बहुरि मीमांसकमतमैं ही प्रभाकरका मत है सो कहै है—कर्म क्रियाहीकूं ज्ञान जानै है आत्मा कर्त्ताकूं अर आप करणकूं नांही जानैं है। सो ये सर्वही मत प्रतीतिबाधित हैं ऐसा दिखावता संता सूत्र कहै हैं;—

कर्मवत्कर्तृकरणक्रियाप्रतीतेः ॥ ९ ॥

याका अर्थ—ज्ञानविषैं जैसैं कर्मकी प्रतीति है तैसै ही कर्त्ता, करण, क्रियाकी प्रतीति है ऐसैं पूर्वसूत्रका हेतुरूप यहु सूत्र है; तातैं पंचमी

विभक्ति अन्तमैं है। तहां ज्ञानका विषयभूत वस्तु है सो तौ कर्म कहिये है, जातैं कर्मका स्वरूप ऐसा है जो क्रियाकै व्याप्य होय—प्राप्त होनै योग्य होय तथा रचनें योग्य होय तथा विकार करनें योग्य होय सो इहां ज्ञप्तिक्रियाकै व्याप्य ज्ञानका विषय वस्तु ही है। बहुरि कर्मवत् कह्या सो यह उपमा अलंकाररूप दृष्टान्तका वचन भया। बहुरि कर्त्ता आत्मा है। बहुरि करण प्रमाणरूप ज्ञान है। बहुरि क्रिया प्रमिति है। तिनिका द्वंद्व समास करि प्रतीति शब्दतैं षष्ठीतत्पुरुष समास करनां, ताकै अंतविषैं हेतु अर्थ मैं पंचमी विभक्ति करनी। इहां वृत्तिमैं 'का' ऐसी पंचमीकी संज्ञा है सो जैनेन्द्रव्याकरण अपेक्षा है। ऐसैं पहले सूत्र कह्या तामैं अनुभवका उल्लेख है ता विषैं यथा अनुक्रम संबंध करणां तब ऐसा अर्थ होय है—जो ज्ञान जैसैं अपनां विषयभूत वस्तु जो कर्म ताकी प्रतीति करै है तैसैं ही कर्त्ता आत्माकी तथा करणरूप आपकी तथा क्रियाकी प्रतीति करै है यातैं जैसैं घटकूं मैं आप करि जानूं हूं ऐसी प्रतीति करै है तैसैं ही कर्त्ता करण क्रिया विषै भी मैं इनिकूं जानूं हूं ऐसी प्रतीति करै है यामैं बाधा नाहीं है, अनुभवसिद्ध है। इहां ऐसा जाननां जो एक ही ज्ञानमैं कर्त्ता आदि अनेक कारक अवस्था भेद विवक्षा करि संभवै है तातैं जैनमत स्याद्वाद है तामैं अपेक्षातैं विरोध नाहीं है, सर्वथा एकांतीनिकै विरोध आवै है ॥ ९ ॥

आगैं कोई कहै जो यह कर्त्ता आदिकी प्रतीति कही सो तौ शब्दका उच्चारमात्र ही है वस्तुका स्वरूपका बलतैं तौ नाहीं उपजी, कहनें मात्र है, वस्तुस्वरूप ऐसैं नाहीं, ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहैं हैं;—

शब्दानुच्चारणेऽपि स्वस्यानुभवनमर्थवत् ॥१०॥

याका अर्थ—यह कर्त्ता आदिकी प्रतीति ज्ञाने कै होय है सो शब्दका उच्चार विना भी होय है ऐसैं आपका अनुभव आपकै है जैसैं

अन्य अर्थका अनुभवन है तैसैं ही आपका है । तहां जैसैं घट आदिक शब्द है तिनिका उच्चार किया विना भी घट आदि वस्तुका ज्ञानविषैं तदाकार अनुभव होय है तैसैं ही 'मैं हूं मैं हूं' ऐसा जो अन्तरङ्गकै विषैं सन्मुख होतैं आपका तदाकारपणा करि प्रतिभास होय है सो शब्दके उच्चार किये विना ही आपकरि अनुभव कीजिये है ॥ १० ॥

आगैं इस ही अर्थकूं युक्तिपूर्वक अन्यवादीका उपहाससहित वचन जैसैं होय तैसैं सूत्र कहैं हैं;—

को वा तत्प्रतिभासिनमर्थमध्यक्षमिच्छँस्तदेव तथा नेच्छेत् ॥ ११ ॥

याका अर्थ—तिस ज्ञान करि प्रतिभास्या जो अर्थ कहिये वस्तु ताकूं प्रत्यक्ष इष्ट करता संता पुरुष ऐसा कौन है जो तिस ज्ञानहीकूं प्रत्यक्ष इष्ट न करै, इष्ट करै ही । इहां 'को वा' ऐसा कहनें तैं लौकिक जन तथा परीक्षक जन सर्व ही लेणें । बहुरि 'तत्प्रतिभासिनं' कहिये तिस ज्ञानकरि प्रतिभासनेंका जाका स्वभाव होय सो लीजिये । ऐसा जो प्रत्यक्ष विषयरूप वस्तु ताकूं प्रत्यक्ष इष्ट करता पुरुष सो ऐसा कौन है जो 'तदेव' कहिये सो ही ज्ञान ताहि 'तथा' कहिये प्रत्यक्षपणांकरि नांही इष्ट करै 'अपि तु' कहिये निश्चयतैं इष्ट करै ही करै। जातैं विषयी जो ज्ञान ताका प्रत्यक्षपणां धर्म है सो उपचार करि ताके विषयभूत पदार्थकूं प्रत्यक्ष कहिये है, मुख्य तौ प्रत्यक्षपणां ज्ञानका धर्म है । इहां ऐसा जाननां—जो मुख्यका अभाव होतैं बहुरि प्रयोजन अरु निमित्त होतैं उपचार प्रवर्त्तै है सो इहां अर्थकै तौ प्रत्यक्षपणां मुख्य नांही है अरु प्रत्यक्षपणां मुख्य धर्म ज्ञानका है सो ताकै विषयभूत अर्थ विषैं प्रत्यक्षपणांका उपचार है सो प्रयोजन तौ इहां व्यवहारका प्रवर्त्तना है अरु निमित्त इहां ज्ञानकै अरु वस्तुकै विषयविषयींभाव संबंध है सो है,

ऐसा जाननां। जो ऐसैं न मानिये तौ अप्रामाणिकपणां कहिये अपरीक्षकपणांका प्रसंग आवै है॥ ११॥

आगैं इहां इसका उदाहरण कहै हैं;—

प्रदीपवत्॥ १२॥

याका अर्थ—जैसैं दीपककै प्रत्यक्षता अर प्रकाशता विना तिसकरि भासे जे घटादिक पदार्थ तिनिकै प्रकाशता प्रत्यक्षता न वणै तैसैं प्रमाणस्वरूप ज्ञानकै भी जो प्रत्यक्षता न होय तौ तिसकरि प्रतिभास्या अर्थकै भी प्रत्यक्षता न वणै। इहां तात्पर्य कहै है—ताका प्रयोग—ज्ञान है सो अपनें प्रतिभास करनैं विषैं आपतैं अन्य जो समानजातीय अन्य अर्थ तिसकी अपेक्षा न चाहै है यह तौ धर्मिसाध्यका समुदायरूप पक्षका वचन सो प्रतिज्ञा है। प्रत्यक्ष पदार्थका गुण होतैं अदृष्ट जो शक्ति ताकी व्यक्तिरूप अनुयायिकरणपणांतैं यहु हेतु है। बहुरि प्रदीपभासुराकारवत् यह उदाहरण है। इहां भावार्थ ऐसा—जो ज्ञान अपनें जाननें विषैं अन्यज्ञानकी अपेक्षा न करै है आप ही आपकूं जानैं है जातैं ज्ञान आत्मा ही का गुण है सो जाननेंकी शक्तिकी व्यक्तिरूप करण अवस्थाकूं प्राप्त होय है। आपकी प्रमिति प्रति आपही कारण है जैसैं दीपककी प्रकाशरूप लोय है सो आपके प्रकाशनेमें अन्य लोयकी अपेक्षा नांही करै है, आप ही आपकूं प्रकाशै है, ऐसैं जाननां॥१२॥

आगैं कोई आशंका करै है जो प्रमाणका लक्षण कह्या सो ऐसा तौ होहु तथापि इस प्रमाणकी प्रमाणता 'स्वतः' कहिये आपहीतैं होय है कि 'परतः' कहिये अन्यतैं होय है? जो स्वतः ही कहौगे तौ अविप्रतिपत्ति होयगी आप अन्यथा भी ग्रहण करै ताका निषेध काहेतैं होयगा? बहुरि परतैं कहौगे तौ अनवस्थानामा दूषण आवैगा जातैं

प्रमाणकी प्रमाणता अन्यतैं होय तब तिस अन्यकी प्रमाणता काहेतैं होय ? बहुरि तिसकी भी अन्यतैं कहिये तौ कहूं ठहरनां नांही तब अनवस्था भई। ऐसैं दोऊ आशंकाका निराकरणकरि अपनां मत स्थापते संते सूत्र कहैं हैं। इहां ऐसा भावार्थ—जो मीमांसकमती तौ प्रमाणका प्रमाणपणां स्वतः कहैं हैं अप्रमाणपणां परतः कहैं हैं। बहुरि सांख्य-मती प्रमाणपणां तौ परतः अप्रमाणपणां स्वतः कहैं हैं। बहुरि नैयायि-कमती दोऊ ही परतः होय है ऐसें कहैं हैं। ऐसें बहुत वादीनिकरि अन्य अन्य प्रकार कहनेंतैं संशय उपजै है तातैं कथंचित् स्वतः कथंचित् परतः ऐसैं स्याद्वादतैं यथार्थसिद्धि होय है ऐसैं सूत्र कहैं हैं;—

तत्प्रामाण्यं स्वतः परतश्च ॥ १३ ॥

याका अर्थ—तिस प्रमाणका प्रामाण्य कहिये प्रमाणपणां कथंचित् आपहीतैं होय है कथंचित् परतैं होय है। तहां सूत्रनिके संप्रदायमैं ऐसी परिभाषा है—जो वाक्य कहिये सूत्र हैं ते सोपस्कार कहिये अन्यपदांनका अध्याहार—मेळनां सहित होय हैं, सो इहां ऐसी प्राप्ति करणीं, जो अभ्यासदशा विषैं तौ प्रमाणका प्रमाणपणां आपहीतैं होय है, बहुरि अनभ्यासदशा विषैं परतैं होय है। ऐसैं कहनेंतैं दोऊ एका-न्तका निराकरण भया। इहां कथंचित् अनभ्यास दशा विषैं परतैं प्रमाणपणां कहनेंमैं अनवस्था जैसैं एकान्त कहनेंमैं आवै है तैसैं समान नांही आवै है जातैं अभ्यस्तविषयस्वरूप जो अन्यज्ञान ताकरि आप हीतैं प्रमाणपणां होय है ताकरि अनवस्थाका परिहार होय है ऐसा अंगी-कार हमनैं किया है। अथवा प्रमाणका प्रमाणपणां उत्पत्तिविषैं तौ परतैं ही हो है जातैं विशिष्ट नवीन कार्यका होनां विशिष्ट नवीन कार-णतैं ही होय है। बहुरि विषयका जाननेंरूप तथा विषयविषैं प्रवर्त्तनें-रूप जो प्रमाणका कार्य ता विषैं अभ्यासदशामैं तौ आपहीतैं प्रमाणता

है, बहुरि अनभ्यासदशाविषैं परतैं प्रमाणता होय है, ऐसा निश्चय है। इहां अभ्यासदशा तौ सो कहिये जहां बारबार ग्रहण होय अनभ्यास जो प्रथम ही ग्रहण होय सो कहिये। जैसैं जा गांवमैं आप वसै ताका सरोवरका जल आपकै अभ्यासमैं आप रह्या होय तहां तिसका जलका प्रमाणपणां तथा जलज्ञानका प्रमाणपणां आपकै आपहीतैं होय है ताकी प्रमणता करनेंमैं अन्य प्रमाणादिकका सहाय चाहै नांही तिस सरोवरकै समीप जातैं ही स्नान करनां, जल भरनां, पीवनां आदि कार्य निःशंकपणैं करै है सो इहां तौ अभ्यासदशाविषैं स्वतः प्रामाण्य भया। बहुरि सो ही पुरुष अन्यग्रामादिक जाय तहां मार्गमैं दूरितैं जलका निवास देखै तहां अपनें ज्ञानकी तथा जिस जलरूप विषयकी प्रमाणता आई नांहीं, विचारने लगा यह जल है कि भाडली है ? कि कांश फूलि रह्या है ? कि मोकूं अन्यथा दीखै है ? ऐसा संशय उपज्या तहां जे जलकी प्रमाणता करनेंके कारण पूर्वै अभ्यासमैं थे, जो जहां अन्य लोक [illegible] भरि ल्यावते होय तथा जल भरते होय तथा घट आदि जलके पात्र जहां दीखते होय तथा कमलनिकी सुगंध आवती होय मींडके बोलते होय इत्यादि कारणनितैं तिस जलकी प्रमाणता आवै तहां अनभ्यासदशाविषैं परतैं प्रमाणपणां कहिये। बहुरि उत्पत्तिमैं परहीतैं कह्या सो अन्तरंग तौ ऐसा ही ज्ञानावरणका क्षयोपशम अर बाह्य पापकर्म आदि दोषरहित अपनां ज्ञान होय। बहुरि ज्ञानके कारण जे इंद्रियादिक ते निर्दोष निर्मलता आदि गुणकरि युक्त होय तब नवीन प्रमाणतारूप कार्य उपजै, जातैं विशिष्ट कार्य होय जो विशिष्ट कारणतैं ही होय। बहुरि विषायका जाननेंरूप क्रिया है लक्षण जाका अर विषयविषैं प्रवृत्ति होनां है लक्षण जाका ऐसा जो प्रमाणका कार्य ताविषैं अभ्यासदशाविषैं तौ प्रमाणकी प्रमाणता आपहीतैं होय है अर अनभ्यासदशाविषैं परतैं होय है, ऐसा निश्चय कीजिये है।

इहां मीमांसकमती कहैं हैं;—जो प्रमाणपणांकी उत्पत्तिविषै विज्ञानके कारण जे निर्दोष नेत्र आदिक तिनितैं भिन्न अन्य कारणकी अपेक्षापणां है सो असिद्ध है—अन्यकारण नाहीं है तातैं प्रमाणका प्रमाणपणां तिस प्रमाणहीतैं होय है जातैं तिस प्रमाणतैं अन्य वस्तुका ही अभाव है, अर जो कहोगे अन्यकारण नेत्रादिककै निर्मलपणां आदि गुण है ते है तौ यह कहना वचनमात्र है—वस्तुभूत नाहीं, जातैं विधिकी मुख्यताकरि अथवा कार्यकी मुख्यताकरि गुणनिकी प्रतीति नाहीं है प्रमाण सिवाय गुण न्यारे किछू भासते नांही प्रत्यक्ष करि तौ किछू गुण प्रमाणतैं न्यारे दीखैं नांही जातैं प्रत्यक्ष तौ इन्द्रियनिकरि जाननां है सो इन्द्रियनिकी प्रवृत्ति अतीन्द्रियविषै होय नांही इन्द्रियनितैं किछू न्यारे ही गुण दीखैं नांही। बहुरि अनुमानकरि किछू गुणनिका लिंग दीखै नांही, ताकरि अनुमान कीजिये, इन्द्रियनिकरि लिंग ग्रहण होय तब अनुमान होय है अर लिंगका भी लिंग अनुमानकरि ग्रहण करनां कहिये तौ अनवस्था आवै है तातैं प्रमाणतै न्यारे गुण प्रमाणसिद्ध नांही। बहुरि प्रमाणकी अप्रमाणता तौ आपहीतैं होय है अर प्रमाणता परहीतैं होय ऐसा विपर्यय भी कह्या न जाय, जातैं पक्षधर्म, सपक्षे सत्व, विपक्षाद्व्यावृत्ति इनि तीनरूप सहित जो लिंग तिसहीतैं केवल अनुमान प्रमाणकै प्रमाणपणां उपजता देखिये है। अन्वय व्यतिरेक करि ऐसैं ही उत्पति दीखै है अन्य प्रकार तौ नांही। बहुरि ऐसैं ही प्रत्यक्षविषैं भी लगावणां जो निर्दोष नेत्रादिकरि ही प्रमाणमणां उपजै है अन्यप्रकार नांही। तैसैं ही आगमविषैं भी लगावणां जो आप्तका कह्यापणां आगममैं गुण होतैं आगमका प्रमाणपणां तिस गुणतैं नांही है, तिस आगमविषैं गुणनितैं दोषनिका अभाव है अर दोषनिके अभावतैं संशय—विपर्ययस्वरूप जो अप्रमाण-

पणां ताका अभाव होतैं स्वाभाविक प्रमाणपणां निर्दोष आप ही तिष्टै है तातैं यह ठहरी जो प्रमाणपणां उत्पत्तिविषैं अन्यसामग्रीकी अपेक्षा नांही करै है। बहुरि विषयका जाननेंकी क्रियारूप जो अपनां कार्य ताविषैं अपने जाननेंकी भी अपेक्षा न करै है। जो प्रमाण आप आपकूं जानैं तब अन्यविषयकूं जाणैं ऐसी अपेक्षा नांही चाहै है, जातैं आपका प्रमाणपणां जानें विना ही ज्ञानके विषयके जाननेंकी क्रियारूप कार्य देखिये है। बहुरि कहोगे जो जाननक्रियामात्र तौ प्रमाणका कार्य नांही जातैं जाननक्रियामात्र तौ मिथ्याज्ञानविषैं भी पाइए है। जाननक्रियाका विशेष है सो तौ पहली प्रमाणकी प्रमाणता ग्रहण होय तब उपजै सो ऐसा कहनां भी बालकका विलास है विना समझ्यां कहनां है जातैं प्रमाणका प्रमाणपणां ग्रहणके उत्तरकालमैं उत्पत्ति अवस्थातैं जानन-क्रियाका विशेष कछू भासै नांही, जैसा जाननां प्रमाणपणां ग्रहण होतैं होय है तैसाही विना ग्रहण किये होय है जाका प्रमाणपणां ग्रहण किया जो यह मेरा ज्ञान प्रमाण है तिसतैं भी विषयके जाननेमैं तौ किछू विशेष भासता नांही, निर्विशेष विषयकी उपलब्धि है। बहुरि कहोगे जो जाननेंमात्रका तौ सीपकै विषैं रूपेका ज्ञान भया तामैं भी सद्भाव है सो याकै भी प्रमाणका कार्यपणांका प्रसंग आवै है। तौ ऐसैं तौ जब होय जो वस्तुविषैं अन्यथापणांकी प्रतीति अर अपनें कारणकरि उपज्या दोषका ज्ञान इनि दोऊनिकरि निराकरण न कीजिये सो इहां सींपविषैं रूपाका ज्ञान होय तौ ताका निराकरण होय है जो यह रूपा नांही सींप है। बहुरि नेत्रनिमैं दोष है तातैं रूपा दीखै है ऐसैं तिस-ज्ञानका बाधक है तातैं तिसकै प्रमाणपणांका प्रसंग नांही आवै है। तातैं जिस वस्तुविषैं प्रमाणका कारणका तौ दोषका ज्ञान अर बाध-ककी प्रतीति न होय तहां प्रमाणका प्रमाणपणां आपहीतैं होय है।

बहुरि ऐसैं अप्रमाणपणांविषै नांही है अप्रमाणपणां परतैं ही होय है, जातैं विज्ञानके कारणतैं भिन्न जो दोषस्वभावरूप सामग्री ताकी अपेक्षा सहितकरि अप्रमाणपणां उपजै है। बहुरि अप्रमाणताकी निवृत्तिस्वरूप जो अप्रमाणका कार्य ताविषैं अपनां अप्रमाणतारूप स्वरूपका ग्रहणकी सापेक्षा है ही सो जैतैं अपनी अप्रमाणताकूं न जाणैं तेतैं अपना अन्यथापणांरूप जो विषय तातैं पुरुषकूं नहीं निवृत्तिरूप करै है, अप्रमाणताकूं जाणैं तबही विषयका अन्यथापणां जाणि छोडै, ऐसैं मीमांसक स्वतः प्रमाणकी पक्षकूं दृढ किया।

अब याका निराकरण आचार्य करै है;—जो यह मीमांसकनैं कह्या सो सर्वही बडे अज्ञानरूप अन्धकारका विलास है, सो ही कहिये है—प्रथम तौ प्रामाण्यकी उत्पत्तिविषै अन्य सामग्रीकी अपेक्षापणां असिद्ध कह्या सो असिद्ध नांही है, आगमके आप्तका कह्यापणांरूप जो गुण ताका संनिधान होतैं संतैं ही आप्तप्रणीत वचन विषैं प्रमाणता देखिये है, जातैं जिसके अभावतैं तौ अनुत्पत्ति अर जिसके सद्भावतैं उत्पत्ति होय सो तिसका कारण होय है ऐसा लोकमैं प्रसिद्ध है सो आगमकी प्रमाणता सत्यार्थ आप्त होतैं होय है न होतैं नांही होय है, सो जो मीमांसकनैं कह्या जो विधिकी मुख्यताकरि तथा कार्यकी मुख्यताकरि गुणनिकी प्रतीति नांहीं है, तहां प्रथम तौ आप्तके कहे शब्दविषैं गुणनिकी प्रतीति नांही है ऐसा कहनां अयुक्त है जातैं ऐसैं होय तौ आप्तके कहेपणेंकी हानिका प्रसंग आवै है, अनाप्तका वचनकै समान ठहरै है, अर जो कहै नेत्र आदिकै विषैं गुणनिकी अप्रतीति है तौ सो भी अयुक्त है, नेत्रनिके निर्मलपणां आदि गुण है ते स्त्री बालक गुवाल सर्वकै प्रसिद्ध हैं—सर्व जानै है, जो ये नेत्र निर्मल है ये निर्मल नांही है। बहुरि जो कहै निर्मलपणां तौ नेत्रका स्वरूप ही है गुण नांही है

तौ हेतुकै अविनाभावकरि रहितपणांहै सो भी स्वरूपकी विकलता ही है दोप नांही है ऐसैं गुणका निषेध तैसैं ही दोषका निषेध दोऊ समान भये। बहुरि कहै जो स्वरूपकी विकलता है सो ही दोष है तौ लिंगकै तथा नेत्रादिककै तिसका स्वरूपका सकलपणां है सो ही गुण है ऐसैं क्यों न कहिये? ऐसैं ही आप्तके कहे शब्द विषैं भी मोह, राग, द्वेष आदि लक्षण दोषका अभाव सो ही यथार्थज्ञानादिलक्षण गुणका सद्भावकूं अंगीकार करता मीमांसक अन्य प्रमाणविषैं ऐसैं न मानैं सो उन्मत्त कैसैं नांही? उन्मत्त ही है।

बहुरि मीमांसकनैं कह्या जो शब्द विषैं गुण तौ है परन्तु प्रमाणकी उत्पत्तिविषैं ते व्यापार नांही करैं हैं, दोषका अभाव है सो ही प्रमाणकी उत्पत्तिविषैं व्यापार करै है। सो यह कह्या तौ सत्य परंतु युक्त नांही, जातैं कहनेंमात्र ही करि साध्यकी सिद्धिका अयोग है जातैं गुणनितैं दोषनिका अभाव है। ऐसैं कहनें विषै तौ अज्ञान ही कारण है अन्य किछू नांही है, भावार्थ—यह भूलि करि कहै है। फेरि मीमांसक कहै है;—जो अनुमानविषैं तीनरूप सहित जो लिंग तिस हीमात्र करि उपजी प्रामाण्यकी उपलब्धि होय है सो ही तहां हेतु है। ताकूं कहिये ऐसैं नांही है याका उत्तर तौ पहले दिया था तहां तीनरूप पणां है सो ही गुण है, जैसैं तिसकी विकलता कहिये तीनरूपपणांसूं रहित सो ही दोष है, ऐसैं हेतु है सो भलै प्रकार मान्यां हूवा है। ऐसैं ही अप्रामाण्यविषैं भी कह्या जाय है तहां दोषनि तैं गुणनिका अभाव है तिनिके अभावतैं प्रमाणपणाका अभाव होतैं अप्रमाणपणां स्वाभाविक तिष्ठै ही है। ऐसैं अप्रामाण्य स्वतैं ही आवै है ताका भिन्न कारणतैं उपजनेंका वर्णन उन्मत्तभाषित ही ठहरै है। भावार्थ—जो मीमांसक प्रामाण्य तौ स्वतैं कहै है अर अप्रामाण्य परतैं कहै है सो इहां दोऊ ही स्वतैं होय

है ऐसैं दिखाय तिसका मत खंडन किया है। बहुरि विशेष कहै है;— जो गुणनितैं दोषनिका अभाव है ऐसैं कहता जो मीमांसक सो ऐसैं याके कहनेमैं यहु आया जो गुणनितैं ही गुण होय है जातैं अभाव है अन्यभावस्वभावपणां है अभावभी भाव ही स्वरूप है तातैं अप्रामाण्यका अभाव है सो ही प्रामाण्य है सो एते ही कहनेमैं तौ परकी पक्षका निराकरण होय नांही जातैं यह कहनां तौ परपक्षका विरोधक नांही। बहुरि अनुमानतैं भी गुण प्रतीतिमैं आवै है सो ही कहिये है;—प्रामाण्य है सो विज्ञानके कारणतैं भिन्न जे कारण तिनितैं उपजै है जातैं प्रामाण्य है सो विज्ञानतैं अन्य है अरु कार्य है जैसैं अप्रामाण्य है ऐसा प्रयोग है। तथा अन्य प्रयोग कहै है;—प्रमाण अर प्रामाण्य दोऊ भिन्न कारणतैं उपजैं हैं जातैं ये भिन्न कार्य हैं, जैसे घट अर वस्त्र भिन्न कार्य है सो घट तौ माटी नामा कारणतैं वणैं अर वस्त्र सूतनामा कारणतैं वणैं ऐसैं भिन्न कार्य होय सो भिन्न कारणहीतैं होय। तातैं यह ठहरी जो प्रामाण्य है सो उत्पत्तिविषैं परकी अपेक्षा सहित है, भावार्थ—परतैं उपजै है। बहुरि तैसैं ही प्रमाणका कार्य जो विषयका जाननेंरूप क्रियास्वरूप तथा विषयविषैं प्रवृत्तिस्वरूप ताविषैं अपनां ग्रहणकी अपेक्षा नांही है, ऐसा एकान्त नांही है। मींमांसकनैं कह्या था जो अपनां स्वरूपका आपकरि जाननें विषैं परकी अपेक्षा नाही है सो कोई अभ्यस्त विषय होय तहां ही परकी अपेक्षाका अभावका व्यवस्थापन है अर अनभ्यस्तविषय होय तहां तौ जलमरीचिकाका साधारण प्रदेश होय तहां जलका ज्ञान परकी अपेक्षाहीतैं होय है। याका प्रयोग ऐसा;—यह जल सत्य है जातैं जैसा जलका आकार होय तैसा विशिष्ट आकारधारीपणां यामैं है। याका समर्थन—जो घट है पाणी भरनहारीका समूह है मींडकनिके शब्द हैं कमलनिका गंध आवै है इनिसहित

है जैसैं प्रत्यक्ष देख्या जल होय तैसैं यहु है ऐसैं अनुमानज्ञानतैं तथा जलकी अर्थक्रियाका ज्ञानतैं पहले जलका ज्ञान हुवा था तैसी ही ताकी प्रमाणता कहिये यथार्थपणां सो बहुतकालपर्यन्त कल्पिये ही है जातैं पहले अनुमानप्रमाणकै स्वतः सिद्ध प्रामाण्य भया तिसतैं इस जलज्ञानकै प्रमाणता भई तातैं पहले अनभ्यस्तमैं परतैं प्रमाणता कहिये। बहुरि मीमांसकनैं कह्या था जो प्रामाण्यके ग्रहणके उत्तरकालमैं उत्पत्ति अवस्थातैं जाननेंमैं किछू विशेष नांही भासै है जो प्रमाण उपजतैं जैसा था जैसा ही पीछैं है। ताका उत्तर;—जो अभ्यस्तविषयविषैं विशेष न भासता कहै तौ यह तौ हम भी मानैं हैं जातैं तहां पहले निःसन्देह विषयका जाननेंका विशेषका अंगीकार है। बहुरि अनभ्यस्तविषयविषैं कहै तौ जाननेंमैं विशेष है ही, प्रामाण्य ग्रहणके उत्तरकालमैं विषयका अवधारण कहिये नियमरूप स्वभाव लिये प्रतिभास भया, यह ही विशेष प्रतिभास भया। बहुरि मीमांसक कहै है—जो प्रामाण्यकै अरु जाननक्रियाकै तौ अभेदभाव है इनिमैं पहली पीछैं होनां कैसैं बणैं? ताकूं कहिये है;—जो ऐसैं नांही है जातैं सर्व ही जाननेंकी क्रिया प्रमाणस्वरूप नांही है अर प्रामाण्य है सो जाननक्रियास्वरूप है ही, तातैं कथंचित् भेद भया, तातैं दोष नांही। बहुरि मीमांसकनैं कह्या जो बाधक अर कारण दोषका ज्ञान इनि दोऊनिकरि प्रमाण्यका निराकरण होय है सो यह कहनां भी निष्फल है जातैं अप्रामाण्यविषैं भी ऐसैं कह्या जाय है, सो ही कहिये है—पहले तौ ज्ञान अप्रमाणरूप ही उपजै है पीछैं बाधारहित ज्ञान अर गुणका ज्ञान होय ताकै उत्तरकालविषैं तिस अप्रमाणरूप ज्ञानका निराकरण होय है। तातैं यह निश्चय भया जो प्रामाण्य अथवा अप्रामाण्य अपनें कार्यविषैं कोई जायगां आभ्यासकी अपेक्षा स्वतैं होय है कोई जायगां अनभ्यासकी अपेक्षा परतैं होय है सो ऐसैं ही निर्णय करना योग्य है।

ऐसैं बौद्धमती तौ प्रमाणकी प्रमाणता आपहीतैं मानैं हैं, अर नैयायिक परतैं ही मानैं हैं, अर मीमांसक उत्पति अर ज्ञप्तिविषैं प्रमाणता दोऊ आपहीतैं अर अप्रमाणता परहीतैं मानैं है, अर सांख्यमती प्रमाणता तौ परतैं मानैं हैं अप्रमाणता आपहीतैं मानैं हैं तिनि सर्वनिका निराकरण स्याद्वादतैं होय है ।

आगैं इहां टीकाकारकृत श्लोक है;—

देवस्य सम्मतमपास्तसमस्तदोषं
वीक्ष्य प्रपञ्चरुचिरं रचितं समस्य ।
माणिक्यनन्दिविभुना शिशुबोधहेतो-
र्मानस्वरूपममुना स्फुटमभ्यधायि ॥ १ ॥

याका अर्थ—' देवस्य ' कहिये अकलङ्कदेवनामा आचार्य ताका समस्तदोषरहित विस्तारकरि सुन्दर भलै प्रकार मान्यां ऐसा जो न्यायशास्त्रमैं प्रमाणका स्वरूप ताहि विचारिकरि माणिक्यनंदिनामा जे समर्थ आचार्य तिनिनैं इस परीक्षामुखशास्त्रविषैं संक्षेपकरि रच्या जो प्रमाणका स्वरूप तिसकूं बालक जे अल्पज्ञानी तिनकै ज्ञान करनैं आर्थि मैं अनन्तवीर्य आचार्य प्रगटकरि कह्या है ॥ १३ ॥

छप्पय ।

आप जानि परवस्तु अपूरवका निश्चय कर
करणरूप जो ज्ञान ताहि भाष्या प्रमाण वर ।
उपजै परतैं आनकूं गहै अभ्यासै
विन अभ्यास सहाय्य आनका लिये प्रकासै ॥
अकलंकदेव जैसैं कह्या माणिकनंदि विचारि उर ।
भाष्यो स्वरूप संक्षेप यह ग्रन्थ परीक्षाद्वार धुर ॥

इति परीक्षामुखकी लघुवृत्तिकी वचनिकाविषैं
प्रमाणका स्वरूपका उद्देश समाप्त भया ।

द्वितीय-समुद्देश।
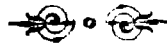
(२)

आगैं प्रमाणका स्वरूपकी विप्रतिपत्ति दूरि करि अब संख्याकी विप्रतिपत्ति निराकरण करता संता आचार्य सकल प्रमाणके भेदनिकी रचनाका संग्रह जामैं पाइये अर प्रमाणकी संख्या जामैं पाइये ऐसा सूत्र कहैं हैं;—

तद्द्वेधा ॥ १ ॥

याका अर्थ—सो प्रमाण दोय प्रकार है। इहां तत्शब्दकरि तौ प्रमाणका परामर्श करनां। सो ही प्रमाण पहले स्वरूपकरि निश्चय किया सो दोय प्रकार है। इहां एवकार अवधारण अर्थमें लेना जो संक्षेपकरि प्रमाणकी संख्या दोय है एक तीन आदि नांही है। यामैं प्रमाणके जे ते भेद हैं तिनि सर्वका अन्तर्भाव है ॥ १ ॥

आगैं जो प्रमाणकी संख्या दोय भेदरूप कही सो दोयपणां प्रत्यक्ष अनुमान भेदकरि भी संभवै है ताकी आशंका दूरि करनेकूं प्रमाणके जे समस्त भेद तिनिका संग्रह करनेवाली ऐसी संख्याकूं प्रगट करै है—

प्रत्यक्षेतरभेदात् ॥ २ ॥

याका अर्थ—पहले सूत्रमैं कही जो प्रमाणकी दोय संख्या सो प्रत्यक्ष अर परोक्ष ऐसैं दोय भेदतैं है। तहां प्रत्यक्षका लक्षण आगैं कहसी तिसतैं इतर कहिये अन्य परोक्ष ऐसैं दोय भेदतैं प्रमाणकी संख्या दोयरूप है। अन्यमतीनिकरि कल्पित जो प्रमाणकी एक दोय तीन च्यारि पांच छह प्रकार संख्या ताका नियमविषैं समस्त प्रमाणके भेदनिका अन्तर्भाव किया न जाय है सो ही कहिये है;—प्रथम तौ

चार्वाक मतवाला एक प्रत्यक्ष प्रमाण ही मानै है ताविषैं अनुमानका अन्तर्भाव होय सकै नांही है जातैं अनुमानतैं प्रत्यक्ष विलक्षणस्वरूप है, तिनि दोऊनिकै सामग्री अर स्वरूप भेदरूप हैं—न्यारे न्यारे हैं।

इहां चार्वाक कहै है;—प्रमाण तौ एक प्रत्यक्ष ही है दूजा अनुमानदिकरूप परोक्षप्रमाण कह्यो है सो परोक्षप्रमाण नांही है जातैं परोक्षप्रमाणमैं विसंवाद है—बाधा आवै है। सो दिखावै है;—देखो, अनुमान प्रमाणका स्वरूप ऐसा कह्या है जो निश्चित अविनाभावस्वरूप जो हेतु तातैं लिंगी जो साध्य ताकै विषैं जो ज्ञान सो अनुमान है, ऐसा अनुमानप्रमाण माननेवालाका मत है। तहां लिंग दोय प्रकार, तामैं एक स्वभावलिंग ताविषैं बहुल अन्यथापणां देखिये है। सो ही कहिये है;—कषायला रसकरि सहित जे आमला ते इस देशकालसंबंधी देखिये हैं ते देशान्तर कालान्तर तथा अन्य द्रव्यका संबंध होतैं अन्यप्रकार भी देखिये हैं तातैं जो स्वभाव हेतुकरि अनुमान कीजिये है तौ तामैं व्यभिचार आवै ऐसा अनुमान कीजिये जो आमला होय हैं ते कषायला होय हैं तौ कोई देशकालमैं अन्य द्रव्यके संबंधतैं रस अन्यप्रकार होय तब अनुमानमैं व्यभिचार आवै। अथवा कोई देशमैं आम्रवृक्ष है कोई देशमैं लता—आकार आम्र है अथवा कोई देशमैं शीसूं लताकूं कहैं हैं, तहां कोई ऐसा अनुमान करै जो यह वृक्ष है जातैं शीसूं है तौ जिस देशमैं लताकूं शीसूं कहै है तातैं व्यभिचार भया। ऐसैं ही कार्यलिंग मानिये तामैं भी व्यभिचार है जैसैं धूमतैं अग्निका अनुमान कीजिये है सो धूम इन्द्रजालके घड़ेमैं अग्नि विना देखिये है तथा बंबीमैं धूम अग्नि विना नीसरती देखिये है तातैं अग्निका अनुमान व्यभिचारी होय है। तातैं एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण है, याहीकै अविसंवादकपणा है—निर्बाध सत्यपणां है।

ताका समाधान आचार्य करै है;—जो यह कह्या सो बाल कहिये अज्ञानी ताका विलास सारिखा भासै है जातैं जो वार्त्ता कही सो उपपत्तितैं शून्य है—बणती न कही। सो ही कहिये हैं;—इहां दोय पक्ष पूछिये जो परोक्षकै प्रमाणपणां निषेधै है सो याके उत्पत्तिके कारणके अभावतैं निषेधै है कि आलंबनके अभावतैं निषेधै है ? तहां प्रथम तौ पहला पक्ष जो उत्पादक कारणका अभाव सो तौ नांही बणै है जातैं याका उत्पादक कारण सुनिश्चित भई जो साध्यतैं अन्यथा अनुत्पत्ति ताका नियमका निश्चय सो है लक्षण जाका ऐसा जो साधन कहिये हेतु ताका सद्भाव है। बहुरि दूजा उत्तरपक्ष जो आलंबनका अभाव सो भी नांही है जातैं याका आलंबन जो अग्नि आदिक सो समस्त जे विचार करनेंविषै चतुर है चित्त जिनिका तिनिकै सदाकाल प्रतीतिमैं आवै है, अग्निकूं आलंब्यकरि अनुमान उपजै सो आलंबनका अभाव कैसैं कहिये। अर जो स्वभावहेतुकै व्यभिचारकी संभावना कही सो भी अयोग्य है जातैं स्वभावमात्र ही हेतु नांही होय है, जो व्याप्यरूप स्वभाव होय सो व्यापक प्रति गमक होय है सो ही हेतु होय यातैं व्याप्यकै व्यापकतैं व्यभिचार नांही है, जो व्यभिचार होय तौ वह व्याप्य ही न कहिये। इहां अन्य विशेष कहै हैं;—जो ऐसैं अनुमानकूं व्यभिचारी कहकरि उत्थापन करनेंवाला जो चार्वाक ताकै प्रत्यक्ष प्रमाण भी नांही ठहरैगा, तहां भी अविसंवादपणां अर मुख्यपणां ये दोऊ ही अनुमान विना निश्चय नांही होगा जातैं प्रमाणपणांकै अर अविसंवादकपणांकै तथा मुख्यपणांकै अविनाभावीपणां है सो अनुमान मान्यां विना कैसैं निश्चय होय, प्रमाणका सत्यार्थपणां तौ अनुमान ही करै है। बहुरि जो कार्यनामा हेतुकै भी व्यभिचार बताय अन्यथाका संभावन किया सो भी विना विचारयां किया, नीकैं विचारया परीक्षारूप किया कार्य सो

कारणतैं नांही व्यभिचरै है—कारणकूं साधै ही है। जैसा धूम अग्निका कार्य पर्वतके तट आदिविषैं अतिसघन धवलपणां करि फैलता पाइये है तैसा इंद्रजालके घड़ा आदिविषैं नांही देखिये है। बहुरि जो कह्या बंबी-विषैं अग्नि विना धूमका सद्भाव है सो हम पूछैं हैं तहां यहु बंबी अग्नि-स्वभाव है कि अनग्निस्वभाव है? जो अग्निस्वभाव है तौ अग्नि ही है तिसतैं भया धूमकै अन्यथाभाव कैसैं कल्पिये, अर जो अग्निस्वभाव नांही है तौ तिसतैं भया धूम ही नांहीं तब तहां विना अग्नि भया धूम कैसैं कहिये—अग्नितैं व्यभिचार कैसैं मानिये। सो ही कह्या है इहां श्लोक 'उक्तं च' है, ताका अर्थ—जो शक्रमूर्द्धा कहिये बंबी सो जो अग्नि-स्वभाव है तौ अग्नि ही है अर अग्निस्वभाव नांही है तौ तहां धूम कैसैं होय।

बहुरि विशेष कहै है;—जो चार्वाक प्रत्यक्ष एक प्रमाण मानैं है सो परशिष्यकूं प्रत्यक्ष प्रमाण कैसैं कहैगा परपुरुषका आत्मा तौ प्रत्यक्ष ही करि ग्रहण करिवेकूं असमर्थ है, अर कहैगा जो वचन आदि कार्यके देखनेतैं परके बुद्धि आदि जानिये है तौ कार्यतैं कारणका अनुमान आया ही, अनुमानका निषेध कैसैं करै है। बहुरि जो कहै, लोकव्य-वहारकी अपेक्षा अनुमान मानिये ही है परलोक आदिकके सद्भावविषैं ही अनुमानका निषेध कीजिये है जातैं परलोकका अभाव है। ताकूं कहिये;—जो परलोकका अभाव कैसैं मानै है जो कहैगा मेरै परलोककी

---

१ **अग्निस्वभावः शक्रस्य मूर्द्धा चेदग्निरेव सः।**
अथानग्निस्वभावोऽसौ धूमस्तत्र कथं भवेत्॥ १॥

लिखित वचनिका प्रतिमें यह श्लोक नहीं लिखा है। संस्कृत प्रतिमें 'उक्तं च' कहकर दिया है सो वहांसे लेकर लिखा है। —सम्पादक।

उपलब्धि नांहीं—मोकूं दीखै नांहीं तातैं अभाव मानूं हूं तौ अनुपलब्धि-नामा लिंगकरि उपज्या अनुमान एक और आया, निषेध तौ न भया।

बहुरि प्रत्यक्षका प्रमाणपणां भी स्वभावहेतुतैं उपजी जो अनुमिति जाकूं अनुमान भी कहिये तिस विना न बणैंगा सो यह पहले कह आये हैं यातैं अब काहेकूं कहैं। इस अनुमानका समर्थन बौद्धमतका आचार्य धर्मकीर्तिनैं किया है, ताका श्लोक है ताका अर्थ;—प्रत्यक्ष प्रमाण सिवाय अन्य प्रमाणका सद्भाव तीन हेतुतैं होय है,—प्रथम तौ प्रमाण अर अप्रमाण सामान्यका ठहरनां प्रत्यक्ष सिवाय अन्य प्रमाण विना होय नांहीं प्रत्यक्षमैं विपर्यय ही ग्रहण भया होय ताका निषेधकूं अन्य प्रमाण चाहिये। दूसरै अन्यकी बुद्धिका जाणपणां प्रत्यक्षतैं नांहीं तातैं अन्य प्रमाण चाहिये जाकरि अन्यकी बुद्धिका ज्ञान होय, सो वचन आदि कार्यनितैं अनुमान होय है। तीसरा परलोक आदि अदृष्ट वस्तुका निषेध करनेंकूं अन्य प्रमाण चाहिये। ऐसैं सौगत जो बौद्धमती है सो चार्वाक एक प्रत्यक्ष प्रमाण मानैं ताकै दूजा अनुमान प्रमाणका सद्भाव दिखाय अर आपका स्थापनेंकूं अनुमानका समर्थन करि कहै है, जो प्रत्यक्ष अर अनुमान ये दोय प्रमाण हैं।

तहां आचार्य कहैं हैं;—ऐसैं दोय प्रमाण मानता जो बौद्ध सो भी युक्तवादी नांही है जातैं स्मृतिनामा प्रमाण विसंवादरहित निर्बाध है ताका सद्भाव है। याकूं विसंवादरहित कह करि प्रमाण न मानिये तौ देनें लेनें आदिका व्यवहारका लोपकी प्राप्ति आवै है, पहले काहूकौं धन सौंप्या पीछै ताकूं यादि करै मांगै। बहुरि जाकूं सौंप्या ताकूं यादि

१ यदप्युक्तं धर्मकीर्तिना;—

प्रमाणेतरसामान्यस्थितेरन्यधियो गतेः।
प्रमाणान्तरसद्भावः प्रतिषेधाच्च कस्यचित्॥ इति

करि कहै इसकूं मैं धन सौंप्या था सो यह प्रत्यभिज्ञान होय तब सौंप्या धन मांगै है सो स्मृतिकूं प्रमाणभूत न मानिये तौ देनें लेनेंका व्यवहार नांहीं होय। बहुरि वह कहै जो स्मृति तौ अनुभवन किये वस्तुविषैं होय है सो जिसकाल स्मृति होय तिस काल अनुभूयमान जो वस्तु जाविषैं स्मृति भई सो वस्तु विद्यमान नांही तातैं विषयरहित जो स्मृति सो तौ प्रमाणभूत नांही। ताकूं कहिये—जो ऐसैं नांही, जो तिस काल विषय विद्यमान नांही है तोऊ अनुभवन किया था जो वस्तु तिसका आलंबनतैं स्मृति भई तातैं निरालंब नांही, निरालंब तौ जब होय जो अकस्मात् विना अनुभूत वस्तुविषैं स्मृति होय सो ऐसैं होय नांही। अर ऐसैं अनुभूत वस्तुविषैं स्मृति होतैं भी निरालंबन कहिये अर अप्रमाण कहिये तौ प्रत्यक्षकै भी अनुभूत वस्तुविषैं अप्रमाणपणां ठहरै। बौद्धमती प्रत्यक्षकूं अतीतपदार्थविषयरूप कहै है तातैं स्मृति अतीतानुभूतार्थ विषयतैं अप्रमाण कहैगा तौ प्रत्यक्ष भी ऐसा न ठहरैगा ऐसैं कह्या है। अथवा अनुमानकरि पहिले अग्निका निश्चय भया पीछैं ताविषैं प्रत्यक्ष प्रवर्त्या सो ऐसा प्रत्यक्ष भी अप्रमाण ठहरैगा। अर अपनां जो विषय है ताका प्रतिभासनां प्रमाण कहिये तौ अपनां विषयका प्रतिभासनां तौ स्मरणविषैं भी है ही याकूं अप्रमाण कैसैं कहिये।

बहुरि विशेष कहैं हैं;—जो स्मृतिकूं अप्रमाण कहिये तौ अनुमानकै प्रमाणपणांकी वार्त्ता भी कहनां दुर्लभ होय है जातैं स्मृतिकरि व्याप्तिकूं याद किये अनुमान होय है, विना स्मृति व्याप्तिका स्मरण नांही तब अनुमानका उत्थान काहेतैं होय। तातैं यह कहनां जो स्मृतिकै प्रमाणता है जातैं अनुमानकै प्रमाणपणांकी याही तैं प्राप्ति है यह न होय तौ अनुमानकै प्रमाणपणांकी प्राप्ति नांही है। ऐसैं यह स्मृति सो बौद्धमतीकै मान्यां जो प्रत्यक्ष अनुमानरूप प्रमाणकै दोषप-

णांकी संख्याका नियम ताहि बिगाडै है—निषेधै है तातैं हमारी चिंता-करि कहा साध्य है।

तैसैं ही प्रत्यभिज्ञान प्रमाण है सो भी बौद्धकी दोयपणांकी संख्याका नियमका निराकरण करै है। तिस प्रत्यभिज्ञानाका भी प्रत्यक्ष अनुमानविषैं अंतर्भाव न होय है। इहां बौद्धमती तर्क करै है;—जो प्रत्यभिज्ञानविषैं 'तत्' कहिये सो है ऐसा तौ स्मरण भया अर 'इदं' कहिये यहु है ऐसा प्रत्यक्ष भया ऐसैं ये दोय ज्ञान भये इनितैं न्यारा तीसरा तौ ज्ञान भया नांही ताकूं हम प्रत्यभिज्ञान मानैं अर न्यारा प्रमाण कहैं यातैं तिस प्रत्यभिज्ञानकरि प्रमाणकी संख्याका निषेध कैसैं होय? ताका समाधान आचार्य करै है;—जो यह कहनां भी युक्त नांही जातैं प्रत्यभिज्ञानका विषयरूप जो पूर्वापरका जोड़रूप वस्तुभूत अर्थ ताकूं स्मृति अरु प्रत्यक्ष ये दोऊ ही ग्रहण करनेकूं समर्थ नांही हैं, पहली अर पिछली दोऊ अवस्थाविषैं वर्त्तनेंवाला जो एक द्रव्य सो प्रत्यभिज्ञानका विषय है। यहु स्मरणकरि ग्रहणमैं आवै नांही जातैं स्मरणका तौ पूर्वे अनुभवन जाका भया सो ही विषय है। बहुरि प्रत्यक्षकरि भी ग्रहणमैं आवै नांही जातैं प्रत्यक्षका विषय तौ वर्त्तमान अवस्था ही है। बहुरि बौद्धनैं कह्या जो स्मरण अर प्रत्यक्षतैं न्यारा तौ प्रत्यभिज्ञान नांही सो यह कहनां भी अयुक्त है। पूर्वोत्तरअवस्थाविषैं अभेदका ग्रहण करनेंवाला तीसरा प्रत्यभिज्ञान प्रतिभासमैं आवै है। स्मृति प्रत्यक्षमैं कोई एककै तौ पूर्वोत्तर अवस्थाविषैं व्यापक जो अभेद ताका ग्रहणस्वरूपपणां नांही है जातैं इनि दोउनिके विषय न्यारे न्यारे हैं। बहुरि यहु प्रत्यभिज्ञान प्रत्यक्षविषैं अन्तर्भाव होय नांही तथा अनुमानविषैं अन्तर्भाव होय नांही जातैं प्रत्यक्ष तौ वर्त्तमान निकटवर्त्ती वस्तुकूं ग्रहण करै है याका यह ही विषय है अर अनुमान है सो

अविनाभूत जो लिंग ताकरि संभावित जो वस्तु ताकूं ग्रहण करै है याका यहु विषय है, पूर्व-उत्तर पर्यायव्यापी जो एकपणां सो प्रत्यक्ष अनुमानका विषय नांही। बहुरि प्रत्यभिज्ञान है सो स्मरणविषैं भी अन्तर्भूत नांही ज्ञेय है जातैं पूर्व—उत्तरका एकपणां स्मरणका भी विषय नांही है। बहुरि इहां कोई कहै जो संस्कार अर स्मरणका सहायकरि ये इंद्रिय हैं ते ही प्रत्यभिज्ञानकूं उपजावै हैं सो जो इन्द्रियतैं उपजै सो प्रत्यक्ष ही है तातैं प्रत्यभिज्ञान न्यारा प्रमाण नांही? ताकूं आचार्य कहै है;—जो ऐसी कहनेवाला तौ अतिमूर्ख ही है जातैं अपनें विषयकूं मुख्यकरि प्रवर्त्तता जो इन्द्रिय ताकैं सैंकडां सहकारी सहाय मिलै तोऊ अन्यके विषयविषैं प्रवर्त्तनेंरूप जो अतिशय ताका अयोग है, इन्द्रिय अपनें अपनें विषैं ही प्रवर्त्तैं हैं। अर यह अतीत वर्त्तमान अवस्थाविषैं व्यापी जो एक द्रव्य सो इन्द्रियनिका विषय नांही, अन्य ही है। इन्द्रियनिका विषय तौ रूप ही है ये तावन्मात्र ही विषयविषैं चरितार्थ हैं। बहुरि अदृष्ट जो पुण्यपापकर्म तिसके सहकारीपणांकी अपेक्षा स्वरूप होयकरि भी इन्द्रिय इस पूर्वापर अवस्थाका एकत्वविषैं नांही प्रवर्त्तैं हैं तहां भी पूर्वोक्त दोष ही आवै है, सहकारीके बलतैं इन्द्रिय अपनें विषय सिवाय प्रवर्त्तैं नांही।

बहुरि विशेष कहै है;—जो अदृष्ट कहिये पूर्वकृत कर्म अर धारणाज्ञानरूप संस्कार आदिकी अपेक्षातैं प्रत्यक्षकै एकत्व विषयविषैं प्रवर्तना कह्या तौ ऐसैं प्रवर्तनां आत्माहीकै तिस एकत्वका विज्ञान क्यों न कल्पिये जातैं देखिये है जो स्वप्न सारस्वत चाण्डालिक आदि विद्याके संस्कारतैं आत्माकै विशिष्ट ज्ञानकी उत्पत्ति होय है। तहां अतीत अनागत वर्तमानके लाभ अलाभकी सूचना जातैं होय सो स्वप्नविद्या है। बहुरि अन्यतैं ऐसा न बणै ऐसा वादीपणां कवीश्वरपणां आदिकी कर-

णहारी सारस्वत विद्या है। बहुरि नष्ट मुष्टि आदिकी सूचना जातैं होय सो चाण्डलिक विद्या है। इहां बहुरि नैयायिकमती तर्क करै है,—जो अंजन आदिके संस्कारतैं नेत्रकै भी ऐसा अतिशय देखिये है? ताका समाधान;—आचार्य कहै है, ऐसैं नांहीं है जातैं नेत्रके अतिशय होय है सो अपनें विषयविषैं ही होय है अपनां विषयकूं नांहीं उलंघै है, ऐसा तो नांहीं जो अंजनके संस्कारतैं नेत्र अपनां विषय सिवाय जो रस गंध तिनिकौं जाणैं, सो ही कह्या है; 'उक्तं च' श्लोक है ताका अर्थ;—जहां अतिशय देखिये है सो अपनें विषयकूं उलंघिकरि नांही होय है श्रोत्रकी प्रवृत्तितैं रूपविषै तौ अतिशय होय नांहीं जो होय तौ दूरवर्त्ती तथा सूक्ष्मवस्तुके देखनेविषैं नेत्रकै अतिशय होय।

इहां नैयायिक फेरि कहै है;—जो यह श्लोक तौ सर्वज्ञके निषेधकै अर्थि मीमांसकनैं कह्या है इहां तुमनैं कह्या सो मिले नांहीं यह दृष्टान्त विषम है? ताका सामाधान;—इहां दृष्टान्त इन्द्रियनिकै अन्यके विषयविषैं प्रवर्तनेंका अतिशयका अभावमात्र दिखावनेंकी समानतामात्र कह्या है तातैं बणैं है, दृष्टान्तका सर्वही धर्म तौ दार्ष्टान्तविषै होय नांही जो सर्व ही धर्म मिलै तौ दृष्टान्त नांही दार्ष्टान्त ही होय है। तातैं यह निश्चय भया जो प्रत्यक्ष अनुमानतैं न्यारा ही प्रत्यभिज्ञान वस्तुभूत है जातैं इसकी सामग्री अर स्वरूप दोऊ ही भेदरूप न्यारे ही हैं। बहुरि यह प्रत्यभिज्ञान अप्रमाण नांही है जातैं इस प्रत्यभिज्ञानतैं अर्थकूं जाणकरि तिस विषैं प्रवर्तनेंवालाकै अर्थक्रियामैं विसंवाद नांही है, जैसैं प्रत्यक्षकरि विषयविषैं प्रवर्तनेंवालेकै विसंवाद नांही तैसैं इहां भी

१ तथा चोक्तम्;—

यत्राऽप्यतिशयो दृष्टः स स्वार्थानतिलंघनात्।
दूरसूक्ष्मादिदृष्टौ स्यान्न रूपे श्रोत्रवृत्तितः ॥ १ ॥

नांही। बहुरि इस प्रत्यभिज्ञानका विषय पूर्वोत्तर अवस्थाका एकपणां है ताका लोप कीजिये तौ बंध मोक्ष आदिकी व्यवस्था बहुरि अनुमान प्रमाणकी व्यवस्था न ठहरै जातैं एकत्व विना बंध्या सो ही छूट्या ऐसैं न ठहरै, तथा अनुमानका साधन जो लिंग ताका संबंधका ग्रहण एकत्वा विना कैसैं होय, बहुरि या प्रत्यभिज्ञानका विषयविषै बाधक प्रमाण भी नांही है, जो बाधक होय तौ प्रमाणपणां न मानिये जातैं प्रत्यक्षकै अर अनुमानकै तिस प्रत्याभिज्ञानके विषयविषै प्रवृत्ति ही नांही बाधक कैसैं होय, अर प्रवृत्ति होय तौ तिसका साधक ही होय बाधक तौ न होय। तहां बहुत कहनेंकरि पूरी पड़ो, प्रत्यभिज्ञान प्रमाण न्यारा ही है।

बहुरि तैसैं ही बौद्धकी प्रमाणसंख्याका विरोधी बाधारहित तर्क-नामा प्रमाण आवै ही है सो यह तर्कनामा प्रमाण प्रत्यक्षविषै अन्तर्भूत नांही होय है जातैं साध्यक अर साधनकै जो व्याप्यव्यापकभाव है ताका समस्तपणां करि सर्वक्षेत्रकालका ग्रहण तर्कका विषय है, सो प्रत्यक्षका विषय नांही है, यह इन्द्रियप्रत्यक्ष है सो सर्वदेशकालसंबंधी जे व्यापार हैं तिनिकूं करनेंकूं समर्थ नांही जातैं यह प्रत्यक्ष प्रमाण विचा-ररहित है अर इन्द्रियनिके समीपवर्ती पदार्थ याका विषय है। बहुरि तर्कके विषयकूं अनुमान भी ग्रहण करनेंकूं समर्थ नांही है जातैं याका भी जिस देश आदिमैं तिष्ठता पदार्थ है सो ही विषय है, व्याप्ति सर्व देशकालसंबंधी है सो अनुमानका विषय नांही। बहुरि जो व्याप्तिकूं अनुमानका विषय मानैं तौ तहां दोय पक्ष पूछिये;—जो व्याप्तिकूं ग्रहण करै सो अनुमान तिस व्याप्तिसूं सिद्ध भया सो ही है कि अन्य अनु-मान है? जो कहैगा तिसव्याप्तिसूं सिद्ध भया सो ही है तौ तहां इतरेतराश्रयनामा दूषण आवैगा जातैं पहले व्याप्तिग्रहण होय तब पीछैं

अनुमान सिद्ध होय, बहुरि अनुमान सिद्ध भये पीछैं व्याप्तिग्रहण होय ऐसे दोषतैं दोऊकी सिद्धि नांही है । बहुरि कहै जो अन्य अनुमानतैं अविनाभावस्वरूप व्याप्ति ग्रहण होय है तौ अनवस्थानामा दूषणरूपी वघेरी तिसपक्षकूं भखि जाय है जातैं अनुमान तौ व्याप्तिके ग्रहण विना होय नांही अरु व्याप्ति अन्य अनुमानकरि ग्रहण होय तौ तिस अनुमानकी व्याप्ति अन्य अनुमानकरि होय ऐसैं कहूं ठहरै नांही तब अनवस्था दूषण आवै । तातैं अनुमानका विषय व्याप्ति नांही सिद्ध होय है।

बहुरि सांख्यमती आदिकरि कल्प्या जो आगम उपमान अर्थापत्ति अभावप्रमाण तिनिकरि भी समस्तपणांकरि अविनाभावस्वरूप व्याप्तिका ग्रहण नांही है जातैं तिनि प्रमाणनिकै अपने अपने विषयका ग्राहकपणां है तातैं व्याप्ति तिनिका विषय नांही । बहुरि सांख्यमती आदि तिनि प्रमाणनिका व्याप्ति विषय मानैं भी नांही है । तहां आगमका विषय तौ वस्तुका संकेतकरि ग्रहण करनां है । अर उपमानका विषय सादृश्यभाव है । अर्थापत्तिका विषय अर्थका अन्यथा न होनां है, एक वस्तुकी सामर्थ्यतैं अन्य अर्थ आय पड़ै सो अर्थापत्ति है । बहुरि अभावका विषय अभाव ही है । इनिका विषय व्याप्ति नांही ।

इहां बौद्धमती फेरि कहै है;–जो प्रत्यक्षकै पीछैं विकल्प होय है–विचार होय है तातैं साध्यसाधनभावका ज्ञान समस्तपणांकरि होय है तातैं तिस व्याप्तिके ग्रहणकै अर्थि अन्य प्रमाण नांही हेरनां । ताका समाधान आचार्य करै है;—जो यह कहनेवाला भी युक्तवादी नांही, जातैं इहां ताकूं दोय पक्ष पूछिये—जो तिस विकल्पकै प्रत्यक्षकरि ग्रहे विषयका व्यवस्थापकपनां है कि प्रत्यक्ष करि ग्रह्या नांही ऐसे विषयका व्यवस्थापकपनां है ? जो कहैगा प्रत्यक्षकरि ग्रहे विषयकूं ही थापै है तौ दर्शनस्वरूप प्रत्यक्षकी ज्यों ताकै पीछैं भया निर्णयकै भी नियतविषयपणां ही ठहर्या

व्याप्ति तौ ताका विषय न ठहरैगा। बहुरि कहैगा जो प्रत्यक्षकरि नांही ग्रह्या विषयकूं थापै है तौ यामैं भी दोय पक्ष है;—प्रत्यक्षकै पीछैं भया विकल्प ज्ञान है सो प्रमाण है कि अप्रमाण है? जो कहैगा प्रमाण है तौ प्रत्यक्ष अनुमान सिवाय तीसरा प्रमाण आया जातैं दोऊ प्रमाणमैं याका अन्तर्भाव नांही होय है। बहुरि कहैगा अप्रमाण है तौ तिसतैं अनुमानकी व्यवस्था न ठहरैगी जातैं व्याप्तिके ज्ञानकूं अप्रमाण मानैं तिसपूर्वक अनुमान भी प्रमाण न ठहरैगा जातैं सन्दिग्ध आदि जो लिंग तातैं उपज्या अनुमानकै प्रमाणताका प्रसंग आवैगा। तातैं व्याप्तिका ज्ञान जो तर्क सो विचारसहित विसंवादरहित प्रमाण प्रत्यक्ष अनुमान दोय प्रमाणतैं न्यारा ही माननां योग्य है। यातैं बौद्धकरि मान्यां जो प्रमाणके दोयकी संख्याका नियम सो नांही है।

याही कथनकरि अनुपलंभ कहिये जाका सद्भाव ग्रहण नांही तिसतैं बहुरि कारणका अर व्यापकका अनुपलंभतैं कार्यकारणभाव अर व्याप्य-व्यापकभावका ज्ञान होय है यह ही व्याप्तिका ज्ञान है ऐसा कहनां भी निराकरण किया, जातैं अनुपलंभ तौ प्रत्यक्षका विशेष है अर कारण आदिका अनुपलंभ है सो लिंग है सो लिंगकरि उपज्या अनुमान है है यातैं प्रत्यक्ष अनुमानकरि व्याप्तिग्रहणमैं पहले दोष दिखाये ते ही जाननें। इस ही कथनकरि प्रत्यक्षका फल जो ऊहापोह—जो पहले तर्क उपजै जो यह कैसैं है पीछैं ताका निराकरणकरै ऐसा विकल्प-ज्ञान ताकरि व्याप्तिका ज्ञान है ऐसा वैशेषिकमती मानै है ताका भी निराकरण किया जातैं प्रत्यक्षका फलकूं प्रत्यक्ष अथवा अनुमान कहै तौ ते तौ व्याप्तिकूं विषय करैं नांही अर तिनितैं अन्य कहै तौ न्यारा प्रमाण ठहर्या ही। बहुरि कहै जो व्याप्तिका जाननेंरूप विकल्प तौ प्रमाण ठहरै नांही तौ यह कहनां भी युक्त नांही जातैं फल है तौऊ यातैं

अनुमान होय है सो अनुमान याका फल है ताका कारणपणांकी अपेक्षा याकै भी प्रमाणपणां युक्त है यामैं विरोध नांही जैसैं इन्द्रियकै अर अर्थकै जुड़नेंरूप सन्निकर्ष होय ताका फल जो विशेषणका ज्ञान ताकै विशेष्यका ज्ञानस्वरूप जो फल ताकी अपेक्षाकरि प्रमाणपणां मानिये है तैसैं यहु भी माननां । यातैं वैशेषिककरि मान्यां जो ऊहापोह विकल्प ताहीकै प्रमाणान्तरपणां आवै है, प्रमाणपणाकूं उलंघि नांही वर्त्तै है ।

याही कथनकरि तीन च्यारि पांच छह प्रमाणकी संख्या कहनेंवाले जे सांख्य अर अक्षपाद कहिये नैयायिक अर प्रभाकर जैमिनीय मीमांसक ते अपनें अपनें प्रमाणकी संख्याके थापनेंकूं समर्थ नांही हैं ऐसैं कह्या जो न्याय तिसकरि स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क इनि तीन प्रमाणनिकै तिनि सांख्यमती आदिनिकरि मानें प्रमाणकी संख्याका विपक्षपणां है, स्मृत्यादि तिनिके प्रमाणकी संख्याकूं निराकरण करैं हैं ॥ २ ॥

आगैं प्रथम प्रमाणका भेद जो प्रत्यक्ष ताके निरूपण करनेंकूं सूत्र कहै हैं;—

विशदं प्रत्यक्षम् ॥ ३ ॥

याका अर्थ—विशद कहिये स्पष्ट जो ज्ञान सो प्रत्यक्ष प्रमाण है । इहां ज्ञानकी तौ अनुवृत्ति करनीं, अर प्रत्यक्ष है सो तौ धर्मी है अर विशद ज्ञानस्वरूप साध्य है अर प्रत्यक्षपणां हेतु करनां । सो ही प्रयोग कहिये है,—प्रत्यक्ष है सो विशद ज्ञानस्वरूप ही है जातैं प्रत्यक्ष है, जो विशद ज्ञानस्वरूप नांही सो प्रत्यक्ष नांही जैसैं परोक्ष, इहां विवादमैं आया प्रत्यक्ष है तातैं विशद ज्ञानस्वरूप ही है, ऐसैं अनुमानके पांच अवयवरूप प्रयोग या सूत्रका है । इहां कोई कहै जो यह प्रत्यक्षपणां हेतु किया सो सूत्रमैं तौ एक धर्मीहीका शब्द प्रत्यक्ष ऐसा था तिसहीकूं हेतु किया सो पक्षका वचनरूप जो प्रतिज्ञा ताका अर्थका एकदेशकूं

हेतु किया सो यह हेतु असिद्ध है। ताका समाधान आचार्य कहै है;— जो प्रतिज्ञा कहा[1] है अर तिसका एकदेश कहा है तब वह कहै जो धर्मका अर धर्मीका समुदाय सो प्रतिज्ञा है ताका एकदेश धर्मी अथवा धर्म है सो तिसमैंसूं एक कह्या सो ही प्रतिज्ञाका एकदेश है ऐसा धर्मी हेतु असिद्ध है, ताका समाधान—जो धर्मीकै हेतुपणां कहते असिद्धपणांका अयोग है जातैं तिस धर्मीकै पक्षके प्रयोगकालविषैं जैसैं असिद्धपणां नांही है तैसैं ही हेतुके प्रयोगविषैं भी असिद्धपणां नांही है धर्मी प्रसिद्ध ही कह्या है। बहुरि वह कहै है जो धर्मीकूं हेतु कहते अनन्वयनामा दोप आवै है जातैं धर्मी साध्यतैं अन्वयस्वरूप नांही। ताका समाधान—जो ऐसैं नांही है इहां प्रत्यक्ष विशेप तौ धर्मी है अर प्रत्यक्ष सामान्य है सो हेतु किया है सो सामान्य है सो विशेपविषैं अन्वयरूप है ही जातैं सामान्य है सो विशेप विना नांही होय है। बहुरि कहै जो साध्य जो धर्मी ताकै हेतुपणां होतैं प्रतिज्ञाका एकदेशस्वरूप असिद्ध हेतु होय है कि नांही? ताकूं कहिये—जो ताकै प्रतिज्ञाका एक देशपणातैं असिद्धपणां नांही है साध्यकै तौ स्वरूप ही करि असिद्धपणां है। जो प्रतिज्ञाका एक देशपणां करि असिद्धपणां कहिये तौ धर्मी भी प्रतिज्ञाका एकदेश है ताकरि व्यभिचार होय है। बहुरि कहै जो इहां धर्मीकूं हेतु किया अर व्यतिरेकव्याप्तिरूप व्यतिरेक ही दृष्टान्त कह्या सो सपक्षविषैं याकी वृत्ति नांही तातैं अनन्वय दोप आया, ताका समाधान—जो यह भी असत्य है जातैं बौद्धमती सर्व वस्तुकै क्षणभंगका संगम है सो ही स्वरूप है ऐसैं मानैं है तहां सत्वकूं हेतु करै है कि जो जो सत् है सो सर्व क्षणभंग है सो ऐसा सत्वनामा हेतुकै सपक्ष नांही जातैं सर्व ही पक्षमैं आय गये, सो ऐसे हेतु भी अनन्वयदोषरूप

[1] क्या।

भये तब हेतुका उदय नांही होय है। अर कहै ऐसे हेतुकै विपक्षविषैं बाधकप्रमाणका अभाव है अर पक्षमैं व्यापकपणां है तातैं दोष नांही अन्वयवानूपणां है तौ हमारा भी हेतु ऐसा ही है, याकै वाकै समानता भई तब दोष काहेका है ॥ ३ ॥

आगैं प्रत्यक्ष विशद ज्ञानकूं कह्या सो विशदपणांका स्वरूप कहै है;—

प्रतीत्यन्तराव्यवधानेन विशेषवत्तया वा प्रतिभासनं वैशद्यम् ॥ ४ ॥

याका अर्थ—जो अन्यप्रतीति बीचिमैं न आवै आप ही जानैं अर विषयकूं विशेषनिसहितपणांकरि जानै सो विशदपणां है। तहां एक प्रतितितैं दूसरी अन्य प्रतीति होय सो प्रतीत्यंतर कहिये तिसकरि जाकै अव्यवधान होय—बीचिमैं अन्यप्रतीति न आवै, तिस अव्यवधानकरि जो प्रतिभासनां सो वैशद्य कहिये। इहां जो अवायज्ञानकै अवग्रह ईहा प्रतीतिकरि व्यवधान है, अवायकै पहली अवग्रह ईहाकी प्रतीति होह है तौऊ तिस अवायज्ञानकै परोक्षपणां नांही है जातैं इहां विषय जो पदार्थ अर विषयी जो विषयका जाननेवाला ज्ञान ताके भेदकरि प्रतीति नांही है। जहां विषयविषयीके भेद होतैं व्यवधान होय तहां परोक्षपणां होय है। इहां जो अवग्रहका विषय है ताकी तिस ही कारि प्रतीति है, ईहाका विषय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है, अवायका विषय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है; परंतु ये सारे प्रत्यक्ष ही हैं अर इनिका विषय प्रत्यक्ष ही है, प्रतीत्यन्तर न कहिये। यातैं ऐसा नांही जो जो जाका विषय है ताकी प्रतीति पहले अन्यकी प्रतीति बीचिमैं आवै तब होय। बहुरि कोई कहे जो ऐसैं है तौ पहिले अग्निका अनुमान भया होय पीछैं सो ही पुरुष अग्निकूं देखै तब अग्निका देखनांकै परोक्ष-

पणां आवै है ? ताकूं कहिये—जो यह कहना अयुक्त है जातैं इहां देखना प्रत्यक्ष है भिन्न विषयपणांका अभाव है तातैं प्रतीत्यन्तर नांही, देखनेतैं प्रतीति भई है सो ही प्रत्यक्ष है ऐसैं नांही जो पहिले अनुमान प्रतीति भई तिसतैं प्रत्यक्षकी प्रतीति भई। इहां अग्नि वस्तु है ताकूं अनेक प्रमाण करि अपनें अपनें विषयसारू जाननेमैं दोष नांही जातैं विसदृश सामग्री करि उपजै जो भिन्न विषयविषैं प्रतीति सो प्रतीत्यंतर कहिये है तातैं पहले अनुमानकी प्रतीति भई सो अपने विषयविषैं भई अर प्रत्यक्ष प्रतीति भई सो अपने विषयविषैं भई इनिकै परस्पर कार्यकारणभाव नांही है। बहुरि विशदपणां केवल एतावन्मात्र ही नांही है यामैं विशेषनिसहितपणां करि भी प्रतिभासनां है। वस्तुका आकार वर्ण रस गंध स्पर्श आदिके जे विशेष तिनिकरि वस्तुका सर्वस्व देखनां सो वैशद्य है ॥ ४ ॥

आगैं सो प्रत्यक्ष दोय प्रकार है एक मुख्य प्रत्यक्ष, दूजा सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष, सो आचार्य दोऊनिकूं मनमैं धारि पहले सांव्यवहारिक प्रत्यक्षकी उत्पत्ति करनेवाली सामग्री अर तिसके भेदनिका सूत्र कहैं हैं;—

इन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तं देशतः सांव्यवहारिकं ॥ ५ ॥

याका अर्थ—इन्द्रिय अर मन है कारण जाकूं ऐसा जो एकदेश विशद ज्ञान सो सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष है। इहां विशद अर ज्ञानकी अनुवृत्ति लेणीं। यातैं देशतैं विशद ज्ञान होय सो सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष प्रमाण है ऐसा अर्थ भया। तहां 'सं' कहिये समीचीन—भला प्रवृत्तिनिवृत्तिरूप जो व्यवहार सो संव्यवहार है तिसविषैं होय सो सांव्यवहारिक कहिये। बहुरि कैसा है ? इन्द्रिय कहिये नेत्र आदिक अर अ-

निन्द्रिय कहिये मन ये दोऊ हैं निमित्त कहिये कारण जाकूं। सो इ-न्द्रिय मन समस्त भी कारण हैं अर व्यस्त कहिये न्यारे न्यारे भी कारण हैं। तहां इन्द्रियनिके प्रधानपणातैं मनके सहायतैं उपजै सो तौ इन्द्रिय प्रत्यक्ष है, बहुरि कर्मके क्षयोपशमतैं विशुद्धि होय ताकी अपेक्षासहित जो मन तिसहीतैं उपजै सो अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष है। तहां इन्द्रिय प्रत्यक्ष है सो अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणाभेदतैं च्यार प्रकार है सो भी बहु, अबहु, बहुविध, एकविध, क्षिप्र, अक्षिप्र, अनिसृत, निसृत, अनुक्त, उक्त, ध्रुव, अध्रुव, इनि बारह विषयनिके भेदनिकरि अड़ताळीस भेद होय हैं, ते पांचूं इन्द्रिय प्रति होय हैं सो दोयसै चाळीस होय। ऐसैं ही मनके प्रत्यक्षके अड़ताळीस मिलाये दोयसै अठ्यासी भेद होय हैं, सो ये तौ अर्थकी अपेक्षा भये। बहुरि व्यंजन विषयका अव-ग्रह ही होय है सो मन अर नेत्र द्वारैं नांही होय तातैं च्यार इन्द्रियनिकै द्वारैं बहु आदि बारह विषयका अवग्रह होय ताके अड़ताळीस भेद होय। सर्व भेळे किये इन्द्रिय अनिन्द्रिय प्रत्यक्षके तीनसै छत्तीस भेद होय हैं।

इहां प्रश्न—जो स्वसंवेदननाम प्रत्यक्ष अन्य है सो क्यों न कह्या? ताका समाधान—ऐसैं न कहनां जातैं सो संवेदन सुख ज्ञान आदिका अनुभवनस्वरूप है सो मानसप्रत्यक्षमैं आय गया अर इन्द्रियज्ञानका स्वरूपका संवेदन सो इन्द्रियप्रत्यक्षमैं आय गया। जो ऐसैं न मानिये तौ तिस ज्ञानकै अपनें स्वरूपका निश्चय करनेंका अयोग आवै है। बहुरि स्मरण आदिका स्वरूपका संवेदन है सो मानसप्रत्यक्ष ही है अन्य नांही है सो स्वसंवेदन प्रत्यक्ष कहिये ही है, परन्तु जुदा भेद नांही॥५॥

आगैं नैयायिक कहै है—जो प्रत्यक्षका उत्पादक कारण कहता जो ग्रंथकार इन्द्रियादिककूं कारण कहे तैसैं ही अर्थ अर आलोककूं कारण

क्यों नांहीं कहे । अर्थ कहिये वस्तु ताकरि भी ज्ञान उपजै है अर आलोक कहिये प्रकाशकरि भी ज्ञान उपजै है इनिकूं विना कहे कारणनिका सकलपणांका संग्रह न भया तब शिष्यजनकै भ्रम ही रहेगा जातैं कारण एते हैं ऐसा निश्चय न होयगा। जो परम करुणावान भगवान हैं तिनकै शिष्यजनकै भ्रम होय ऐसी चेष्टा न होय है ऐसी आशंका नैयायिककी दूरि करनेंकूं सूत्र कहै हैं;—

नार्थालोकौ कारणं परिच्छेद्यत्वात्तमोवत् ॥ ६ ॥

याका अर्थ—अर्थ कहिये वस्तु अर आलोक कहिये प्रकाश ये दोऊ ही सांव्यवहारिक प्रत्यक्षकूं कारण नांहीं हैं जातैं ये परिच्छेद्य कहिये जाननें योग्य ज्ञेय हैं। जैसैं अंधकार ज्ञेय है तैसैं ही ये हैं। याका अर्थ सुगम है तातैं टीकाकार टीका न करी है।

इहां बौद्धमती तर्क करै है—जो बाह्य आलोकका अभाव सो ही अंधकार है इसतैं न्यारा किछू अन्धकार वस्तु है नांही तातैं सूत्रमैं अन्धकारका दृष्टान्त साधनविकल है—यामैं साधन नांही? ताकूं आचार्य कहै हैं;—जो ऐसैं नांही है जो ऐसैं होय तौ बाह्यप्रकाशकूं भी ऐसैं कहिये, जो अंधकारका अभाव सो ही प्रकाश, इस सिवाय अन्य किछू वस्तु नांही। ऐसैं तौ तेजवान पदार्थ हैं तिनिका असंभव आवै है। सो याका विस्तारकरि निरूपण प्रेमयकमलमार्त्तण्ड याकी बड़ी टीका ताका नाम याका अलंकार है तामैं प्रतिपादन किया है सो जाननां॥६॥

आगैं इस सूत्रके साध्यकूं साधनेंविषैं अन्यहेतु कहै है;—

तदन्वयव्यतिरेकानुविधानाभावाच्च केशोण्डुकज्ञानवन्नक्तञ्चरज्ञानवच्च ॥ ७ ॥

याका अर्थ—अर्थ अर आलोककै सांव्यवहारिकप्रत्यक्षके कारणपणांका अन्वय-व्यतिरेकका अनुविधानका अभाव है। ऐसा नियम नांही

जो अर्थ आलोक होतैं तौ ज्ञान उपजै अर नांही होतैं न उपजै जैसैं केशनिका गुच्छाका ज्ञान होय है। काहूकै मांछरनिका समूह मस्तकपरि उडै था सो काहूकूं केशनिकां झूमका दीख्या ऐसैं तौ अर्थ ज्ञानका कारण नांही है अर अंधकारमैं विलाव आदिकूं दीखै है तातैं प्रकाश ज्ञानका कारण नांही। इहां कारणकार्यकै व्याप्तिका प्रयोग करै है— जो जाकै अन्वय-व्यतिरेकका जोड़ न करै सो तिसका कार्य नांही जैसैं केशनिका झूमकाका ज्ञान, सो ज्ञान अर्थका अन्वय-व्यतिरेकपणां नांही करै है अर्थ तौ मांछरनिका समूह था अर ज्ञान केशनिका झूमकाका भया। तैसैं ही आलोक जो प्रकाश है, तहां यह विशेष है जो नक्तंचरका दृष्टान्त है ते नक्तंचर विलाव आदि हैं तिनिकूं अंधारेमैं दीखै है जो प्रकाश ही ज्ञानका कारण होय तौ तिनिकूं अंधकारमैं ज्ञान कैसैं होय ॥ ७ ॥

इहां बौद्धमती तर्क करै है;—जो विज्ञान है सो अर्थ करि उपजै अर्थकै आकार होय सो अर्थका ग्राहक होय, ज्ञानकी अर्थतैं उत्पत्ति न मानिये तौ विषय प्रति नियमका अयोग ठहरै—घटके ज्ञानका घट ही विषय ऐसा नियम न ठहरै। बहुरि अर्थतैं उपजना है सो आलोक जो प्रकाश तामैं अविशिष्ट है तातैं 'ताद्रूप्य' कहिये तदाकार होनां तिससहित ही जो 'तदुत्पत्ति' कहिये अर्थतैं ज्ञानका उपजनां ताकै विषय प्रति नियमरूप हेतुपणां है। ज्ञान ज्ञेयका भिन्न काल है तौऊ ग्राह्य ग्राहकभावका अविरोध है, तैसैं ही हमारे कह्या है, इहां श्लोक है ताका अर्थ—कोई पूछै जो जाका भिन्नकाल होय सो ग्राह्य कैसैं होय तौ ताकूं कहै है—जे युक्तिके जाननेंवाले हैं ते ऐसैं कहैं हैं—

१ तथा चोक्तम्—

भिन्नकालं कथं ग्राह्यमिति चेद् ग्राह्यतां विदुः।
हेतुत्वमेव युक्तिज्ञास्तदाकारार्पणक्षमम् ॥ १ ॥

यहु जो हेतुपणां है—अर्थकै ज्ञानकी उत्पत्तिका कारणपणां है सो ही ग्राह्यपणां है, कैसा है यह हेतुपणां ? अर्थके आकारकूं ज्ञानमें अर्पण करनेंविषै समर्थ है । भावार्थ—जो अर्थकै ज्ञानका उपजावणापणां है सो ही तिस अर्थके आकार होनां ज्ञानकै करै है ऐसी बौद्धकै आशंका होतैं सूत्र कहै है;—

अतज्जन्यमपि तत्प्रकाशकं प्रदीपवत् ॥ ८ ॥

याका अर्थ—जो ज्ञान अर्थकरि न उपजै है तौऊ अर्थका प्रकाशक है जैसैं दीपक घट आदि अर्थतैं उपज्या नांही तौऊ तिनिका प्रकाशक है तैसैं जाननां । तहां अर्थकरि जन्य नांही है तौऊ ताका प्रकाशक है ऐसा अर्थ भया सो इहां 'अतज्जन्य' ऐसा शब्द है सो उपलक्षणरूप है ताकरि अतदाकार कहिये अर्थाकार न होय तौऊ ताका प्रकाशक है ऐसा भी ग्रहण करनां । बहुरि दोऊ ही अर्थमैं प्रदीपका दृष्टान्त है जैसैं दीपककै घटादिककरि जन्यपणां नांही तथा तिनिकै आकारपणां होय नांही तौऊ तिनिकूं प्रकाशै है तैसैं ज्ञानकै भी है ऐसा अर्थ भया ॥ ८ ॥

इहां बौद्ध कहै है—जो अर्थतैं तौ उपज्या नांही अर अर्थकै आकर न भया ऐसे ज्ञानकै अर्थका साक्षात्कारीपणां कहोगे तौ नियमरूप दिशा देश कालवर्त्ती जे पदार्थ तिनिका प्रकाश प्रति नियमका अभाव होनेंतैं सर्व ही विज्ञान अप्रतिनियत विषय कहिये न्यारे न्यारे नियमरूप विषय जाका होय ऐसा न ठहरैगा ऐसी बौद्धकी आशंका होतैं सूत्र कहै है;—

स्वावरणक्षयोपशमलक्षणयोग्यतया हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति ॥ ९ ॥

याका अर्थ—अपनां आवरण जो ज्ञानावरण वीर्यान्तराय कर्म ताका क्षयोपशम सो है लक्षण जाका ऐसी जो योग्यता ताकरि प्रति-

नियत जो जो जिस ज्ञानका अर्थ होय सो ही विषय ताकूं व्यवस्थापै है। तहां अपना आवरण तिनिका क्षय कहिये उदयका अभाव बहुरि तिनिहीका सत्ता अवस्थारूप उपशम ये दोऊ हैं लक्षण जाका ऐसी जो योग्यता सो यह तौ कारणरूप है ताकरि प्रतिनियत जो अर्थ ताहि स्थापन करै है—अपना विषय करै है सो ज्ञान प्रत्यक्षप्रमाण है ऐसा सूत्रमैं वाक्य शेष है। बहुरि 'हि' शब्द है सो 'यस्मात्' अर्थमैं है तातैं ऐसा अर्थ भया जो जातैं ऐसैं है तातैं बौद्ध आशंका करी थी जो प्रतिनियत अर्थकी व्यवस्था न होगी सो ऐसा दोष नांही है। इहां यह तात्पर्य है जो ताद्रूप्य कहिये तदाकारपणां अर तदुत्पत्ति कहिये तिसतैं उपजनां अर तदध्यवसाय कहिये तिस स्वरूप अर्थका निश्चय ये तीनूं कल्पिकरि भी योग्यता अवश्य माननें योग्य है, इस विना तीनूं ही व्यभिचारसहित हैं। सो ही दिखाइए हैं;—ताद्रूप्यकै समान अर्थ-करि व्यभिचार है जो ज्ञान तदाकारपणांतैं उपजै सो जिस पदार्थतैं उपजै तिस समान अन्यपदार्थकूं तिसकाल क्यों जानै नांही सो पदार्थ भी तौ तिसही आकार है, यह ही व्यभिचार। बहुरि तदुत्पत्तिकै इन्द्रि-यआदिकरि व्यभिचार है, इन्द्रियनैं उपजै है अर इन्द्रियनिकूं तिसकाल क्यों नांही जानै, यह ही व्यभिचार। बहुरि तिनि दोऊनिकै भी समान अर्थ समनंतर प्रत्ययनिकरि व्यभिचार है, पहिले क्षण जैसैं नीलका ज्ञान भया सो दूसरे क्षण सो ज्ञान तिस नील ज्ञानका उपजावनहारा है अर तिसतैं तदाकार भी है अर पहले क्षणका ज्ञानकूं क्यों जानैं नांही यह ही व्यभिचार। बहुरि ताद्रूप्य तदुत्पत्ति, तदध्यवसाय, इनि तीनूंनिकै धोला शंखकै विषैं पीलेका ज्ञान होय तहां व्यभिचार है, काहूके नेत्र-विषैं कामला रोग था ताकूं धौला शंख पीला दीख्या तहां धोला आका-रकरि पीला आकारका ज्ञान उपज्या। बहुरि जो तदाकार ज्ञान अर

तिसका निश्चय भया सो ऐसा ज्ञानकरि दूजे क्षण तैसा ही ज्ञान उपज्या सो तदाकार भी है तिसका निश्चयस्वरूप भी है अर पहले क्षणका पीताकारज्ञानकूं क्यों नांहीं जानै, यह ही व्यभिचार। ऐसैं च्यारूं ही प्रकार यह व्यभिचार भया, तातैं क्षयोपशमलक्षणयोग्यता माननां श्रेष्ठ है। इस ही कथनकरि जो बौद्धनैं ऐसैं कह्या ताका श्लोक है ताका अर्थ—प्रत्यक्ष ज्ञान निर्विकल्प है ताहि अर्थ रूपता विना अन्य कोई अर्थ करि नांही रचै, अर्थरूपता ही प्रत्यक्षरूप निर्विकल्प ज्ञानकूं अर्थकरि जोडै है तातैं प्रमेयका जाननां प्रमाणका फल है प्रमेयरूप होनां सो ही ताका प्रमाण है, ऐसैं कहनां निराकरण किया जातैं समान अर्थनिके आकार भये जे अनेक ज्ञान तिनिविषैं प्रमेयरूप होनेंका सद्भाव है। बहुरि बौद्धमती यहु सारूप्य मानै है सो समानपरिणामरूप समान्य ही सारूप्य है सो सामान्यकूं वस्तुभूत नांहीं मानैं हैं सो अवस्तुभूत होय सो काहेका सारूप्य? तातैं यह ही ठहरे है जो क्षयोपशमलक्षण योग्यता है सो ही विषय प्रति नियमका कारण है ॥ ९ ॥

आगैं कोई ऐसा मानैं है—जो अर्थ है सो ज्ञानका कारण है याहीतैं अर्थ ज्ञेयरूप कहिये है ऐसा मतकूं निराकरण करै है ताका सूत्र;—

कारणस्य च परिच्छेद्यत्वे करणादिना व्यभिचारः १०॥

याका अर्थ—जो कारणकै परिच्छेद्यत्व कहिये ज्ञेयपणां मानिये तौ नेत्रादि करण हैं तिनिकरि व्यभिचार होय है, ते कारण तौ हैं अर परिच्छेद्य नांही हैं आपकूं आप नांहीं जानै है। इहां वह कहै जो हम कारणपणांतैं परिच्छेद्यपणां नांही कहैं हैं परिच्छेद्यपणांतैं कारणपणां कहैं

---

१ एतेन यदुक्तं—

अर्थेन घटयत्येनां न हि मुक्त्वार्थरूपताम्।
तस्मात्प्रमेयाधिगतेः प्रमाणं मेयरूपता ॥ १ ॥

हैं जो ज्ञेय होय सो कारण होय तौ ऐसैं कहे केशनिका झूमका आदि-करि व्यभिचार होय है सो पूर्वैं कह्या ही था काहूके मस्तक परि मांछर उडैं थे सो काहूकूं केशनिका झूमका दीख्या सो ते मांछर ज्ञानके कारण न भये ॥ १० ॥

आगैं अब अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष जो मुख्य प्रत्यक्ष ताहि कहै है;—

सामग्रीविशेषविश्लेषिताखिलावरणमतीन्द्रियमशेषतो मुख्यम् ॥ ११ ॥

याका अर्थ—सामग्री जो द्रव्य–क्षेत्र–काल–भावलक्षण ताका विशेष जो सर्वकी पूर्णता–एकता मिलनां ताकरि दूरि भये हैं अखिल कहिये समस्त आवरण जाके ऐसा, बहुरि अतीन्द्रिय कहिये इन्द्रियनिकूं उलंघि वर्त्तै, बहुरि अशेषत: कहिये समस्तपणांकरि विशद कहिये स्पष्ट ऐसा ज्ञान मुख्य प्रत्यक्ष है ॥ ११ ॥

इहां कोई पूछै समस्तपणांकरि विशदपणांविषैं कहा कारण है ? ताकूं कहिये–ज्ञानका प्रतिबंध जो कर्म ताका अभाव कारण है हम ऐसैं कहैं हैं। फेरि पूछै तहां भी कहा कारण है ? ताकूं कहिये अतीन्द्रियपणां है अर अनावरणपणां है ऐसैं कहैं हैं फेरि पूछै यह भी काहेतैं है ? ताका समाधानकूं सूत्र कहै है;—

सावरणत्वे करणजन्यत्वे च प्रतिबंधसंभवात् ॥१२॥

याका अर्थ—जो ज्ञानकै आवरणसहितपणां होय अर इंद्रियजन्य-पणां होय तौ प्रतिबंध संभवै तातैं निरावरण अतीन्द्रिय होय सो ही मुख्य प्रत्यक्ष है। इहां कोई कहै कि अवधि मन:पर्यय ज्ञानका इस सूत्रकरि ग्रहण न भया तातैं यहु लक्षण अव्यापक है ? ताकूं आचार्य कहै है—ऐसैं न कहना तिनि दोऊनिकै भी अपने विषयविषैं समस्त-पणांकरि विशदपणां आदि धर्म संभवै है। बहुरि ऐसैं मति–श्रुतज्ञानकै

अपने विषयविषैं भी विशदपणां नांही है ऐसैं अतिव्याप्ति दूषणका भी परिहार है सो यह अतीन्द्रिय अवधि, मनःपर्यय, केवलके भेदतैं तीन प्रकार मुख्य प्रत्यक्ष है जातैं ये आत्माके संनिधिमात्रकी अपेक्षातैं उपजै हैं; अन्य इन्द्रिय आदिकी अपेक्षा इनिकै नांही है ।

इहां मीमांसकमती भट्टमताका आशय ले कहै है;—जो समस्त विषयविषै विशदका अवभासनेवाला ज्ञानकै अर तिस ज्ञानसहित पुरुषकै प्रत्यक्ष आदि पांच प्रमाणका विषयपणांका अभावपणांकरि अभाव प्रमाण सो ही भया विषमसर्प ताकरि नष्ट भई है सत्ता जाकी तिसपणांतैं कौनकै मुख्य प्रत्यक्ष होय है। भावार्थ—सर्वका जाननेंवाला ज्ञान अर सर्वज्ञ ये पांचूं ही प्रमाणका विषय नांही—अभाव प्रमाणका विषय है तातैं अभाव ही सिद्ध होय है । सो ही कहै है;—प्रथम तौ प्रत्यक्ष प्रमाण है ताका सर्वज्ञ विषय नांही, जातैं प्रत्यक्षकै तौ रूपादिक नियमरूप जे विषय तिनिविषैं प्रवर्त्तनपणां है इन्द्रिय प्रत्यक्ष जो विषय संबंधरूप होय अर वर्त्तमान होय ताही विषय (विषैं) प्रवर्त्तै है सो समस्तका ज्ञाता सर्वज्ञ इन्द्रियनितैं संबद्ध नांही वर्त्तमान नांही । बहुरि अनुमानतैं भी ताकी सिद्धि नांही है, जातैं ग्रहण किया है संबंध जानैं ऐसा पुरुषकै वस्तुका एकदेश देखनेंतैं दूरववर्त्ती वस्तुविषैं बुद्धि होय है सो सर्वज्ञका सद्भावतैं अविनाभावी कार्यलिंग तथा स्वभावलिंग हम नांही देखैं हैं जातैं अनुमान करैं, जातैं सर्वज्ञके जानें पहली तिसका स्वभाव अर तिसका कार्य जो तिसके सद्भावतैं अविनाभावीका निश्चय करनेंका असमर्थपणां है । बहुरि आगमप्रमाणकरि भी ताकी सिद्धि नांही है । इहां दोय पक्ष—आगम नित्यरूप तिसके सद्भावकूं जनावै है कि अनित्य आगम जनावै है ? तहां नित्य आगम तौ ताका सद्भाव नांही जनावै है जातैं नित्य तौ अर्थवादरूप है प्रयोजनमात्रकूं कहै है।

अपौरुषेय वेद है सो कर्मविशेष जो यज्ञ आदि शुभकार्य ताका संस्तवन कहिये प्रशंसादिक ताकै विषैं प्रवीण है सो पुरुषविशेषका जनावनहारा नांही। पुरुष तौ आदि लिये है अर नित्य आगम वेद है सो अनादि है सो अनादिकै आदिमान पुरुषका कहनां बणैं नांही। बहुरि जो अनित्य आगम स्मृति पुराण आदि हैं ते सर्वज्ञकूं साधैं है ऐसैं कहिये तौ तिस अनित्य आगमकै (कूं) भी सो सर्वज्ञका कह्या कहिये तौ सर्वज्ञका निश्चय पहिले किया विनां ताका प्रमाणपणांका निश्चय नांही होय है, बहुरि इतरेतराश्रयनामा दोष आवै है, सर्वज्ञके कहे पणेंतैं तौ तिस आगमका प्रमाणपणां सिद्ध होय अर तिस आगमका प्रमाणपणांकी सिद्धितैं सर्वज्ञकी सिद्धि होय ऐसैं इतरेतराश्रयदोष होय। बहुरि असर्वज्ञका कह्या आगमका प्रमाणपणां ही नांही ताकै सर्वज्ञका प्ररूपणविषैं प्रवीणपणां है ऐसा कहनां ही अतिशयकरि असंभाव्य है। बहुरि सर्वज्ञसमान अन्यका ग्रहणका असंभवतैं उपमान प्रमाण ताका सद्भाव नांही जनावै है। बहुरि अर्थापत्तिप्रमाण है सो भी सर्वज्ञका जनावनेंवाला नांही है जातैं याका अनन्यथाभूत वस्तुतैं जाननां है, सो कोई ऐसा वस्तु नांही जो सर्वज्ञविना न होय ताकरि अर्थापत्ति सर्वज्ञकूं जनावै। बहुरि जो धर्मादिकपदार्थ हैं तिनिका उपदेश है ताकरि अर्थापत्ति होय ऐसैं कहिये तौ धर्म आदिका उपदेश तौ व्यामोहतैं भी संभवै है, जातैं उपदेश दोय प्रकार है सम्यक् उपदेश, मिथ्या उपदेश। तहां मनु आदि ऋषि भये हैं तिनिका तौ सम्यक् उपदेश हैं जातैं तिनिकै यथार्थज्ञानका उदय है सो वेदमूल है—वेदतैं उपज्या है। बहुरि बुद्ध आदिका उपदेश है सो व्यामोहपूर्वक है जातैं तिनिकै ज्ञान वेदतैं उपज्या नांही ते—वेदार्थके जाननेंवाले नांही। तातैं सर्वज्ञ पांचूं ही प्रमाणका विषय नांही, तहां अभाव प्रमाणहीकी प्रवृत्ति है ताकरि सर्वज्ञका अभाव ही जानिये

है। पांच प्रमाणका तौ व्यापार भावके अंशविषैं ही होय है ऐसैं भट्टमती अपनें मतका समर्थन कीया।

अब आचार्य ताका प्रतिविधान करै है;—प्रथम तौ कह्या जो सर्वज्ञकै प्रत्यक्षादिक प्रमाणका अविषयपणां है सो अयुक्त है जातैं तिस सर्वज्ञका ग्राहक अनुमान प्रमाणका संभव है, सो ही कहै है;—कोई पुरुष सकल पदार्थका साक्षात् करनेंवाला है जातैं तिनि पदार्थनिके ग्रहण करनेंका स्वभावपणांके होतैं संतैं प्रक्षीणप्रतिबंधप्रत्ययपणां है, भावार्थ—सूक्ष्म आदि पदार्थनिकूं ग्रहण करनेंका पुरुषका स्वभाव है सो ज्ञानका प्रतिबंधक कर्मके नाश भये ज्ञान प्रकट होय है। जो जिसका ग्रहणस्वभावपणांकूं होतैं प्रक्षीणप्रतिबंधप्रत्यय होय सो तिसका साक्षात् करनेंवाला होय जैसैं जाका तिमिर दूरि भया ऐसा नेत्र सो रूपका साक्षात् करनेंवाला होय, सो इहां तिसके ग्रहणरूप स्वभावपणांके होतैं प्रक्षीणप्रतिबंधप्रत्ययस्वरूप विवादमैं आया कोई पुरुष है। ऐसैं च्यार प्रयोगका अनुमानकरि सर्वज्ञका सद्भाव मीमांसककूं आचार्यनैं बताया। बहुरि सकल पदार्थनिका ग्रहणस्वभावपणां कह्या सो आत्माकै असिद्ध नांही है जातैं आत्माका ऐसा स्वभाव न मानिये तौ वेदतैं सकलपदार्थका ज्ञान होय ऐसे कहनेका अयोग आवै है, जैसैं आंधे पुरुषकै आरसेसूं रूपकी प्रतीतिका अयोग होय तैसैं। बहुरि व्याप्तिज्ञानकी उत्पत्तिके बलतैं समस्तपदार्थसंबंधी परोक्षज्ञानका संभव मानिये ही है, इहां केवल एक ज्ञानकै विशदपणां जो स्पष्टपणां—प्रत्यक्षपणां ताही विषैं विवाद है। तहां आवरणाका दूर होनां ही कारण है, जैसैं धूलितैं आवरण तथा बरफका आवरण कोई पदार्थकै होय सो आवरण दूर होय तब पदार्थ स्पष्ट दीखै तैसैं ज्ञानकै कर्मका आवरण दूर होय तब ज्ञान स्पष्ट प्रगटै है। बहुरि पूछै है—जो प्रक्षीणप्रतिबं-

धप्रत्ययपणां कैसैं है ? ताका समाधानकूं प्रयोग करै है;—दोष अर आवरण कोई पुरुष विषैं मूलतैं नाश होय है जातैं इनकी हानि बधती बधती देखिये है सो जाकी बधती हानि है सो कोई विषैं मूलतैं समस्त भी नाश होय है, जैसैं अग्निके पुटका पाकतैं दूर भये हैं कीट अर कालिमा आदि अंतरंग बहिरंग दोऊ मल जाके ऐसैं सुवर्ण शुद्ध होय है तैसैं ही बधती बधती हानिरूप दोष अर आवरण हैं, ऐसा प्रयोग जाननां। बहुरि विवादमैं आया जो ज्ञान ताके आवरण कैसैं सिद्ध है जातैं प्रतिषेध है सो विधिपूर्वक है ? इहां कहिये है—विवादमैं आया जो ज्ञान सो आवरणसहित है जातैं अपने विषयकूं अविशदपणांकरि जनावनहारा है जैसैं रज करि तथा धूम बरफ आदि करि पदार्थ अंतरित होय है आच्छादित होय है तैसैं है। बहुरि कोई कहै आत्मा तौ अमूर्तीक है सो अमूर्तपणातैं आवरणका अयोग्य है ? सो ऐसैं नांही है, चैतन्यकी शक्ति अमूर्तीक है तौऊ मदिरा तथा मांचणां कोदूं आदि करि याके आवरण होय है। कोई कहै मदिरादिकरि तौ इन्द्रियके आवरण है तौ ऐसैं भी नांही है जातैं इन्द्रिय तौ अचेतन है सो आवरण भये भी अनावरणा समान ही है बहुरि स्मरण आदिका प्रतिबंधका अयोग होय, मतवालाकै स्मरण नांही है जो इंद्रियहीकै आवरण होय तौ मदोन्मत्तकै स्मरण कैसैं न होय। बहुरि मनकै भी आवरण न कहिये जातैं आत्मा विना अन्य मनका निषेध आगें करैंगे तातैं अमूर्तिककै आवरणका अभाव नांही है। तातैं तद्ग्रहण स्वभावपणां होतैं प्रक्षीणप्रतिबंध प्रत्ययपणां हेतु है सो असिद्ध नांही है। बहुरि यह हेतु विरुद्ध भी नांही है जातैं विपरीत जो विपक्ष आत्माकै सूक्ष्मादिग्रहण स्वभावका अभाव ताविषैं निश्चयस्वरूप जो अविनाभाव ताका अभाव है। बहुरि यहु हेतु अनैकान्तिक भी नांही है जातैं एकदेशकरि तथा साम-

स्यकरि विपक्षकै विषैं वृत्तिका अभाव है। बहुरि कालात्ययापदिष्ट भी नांही है जातैं यातैं विपरीत अर्थका स्थापनेवाला प्रत्यक्षप्रमाण तथा आगमप्रमाणका अभाव है। बहुरि सत्प्रतिपक्ष भी यह हेतु नांही है जातैं इसका प्रतिपक्षसाधनेका हेतुका अभाव है।

इहां मीमांसक कहै है—जो याका प्रतिपक्षका साधनका अनुमान यह है ताका प्रयोग–विवादमैं आया जो पुरुष सो सर्वज्ञ नांही है जातैं वक्ता है, पुरुष है, हास्तदिकसहित है ऐसैं तीन हेतुतैं पुरुष सर्वज्ञ नांही जैसैं हरेक गैलै चालता पुरुष सर्वज्ञ नांही तैसैं? ताका समाधान आचार्य करै है;— जो यह कहनां सुन्दर नांही जातैं वक्तापणां आदि तीन हेतु कहे ते समीचीन भले हेतु नांही। इहां तीन पक्ष पूछिये, जो वक्तापणां कह्या सो प्रत्यक्ष–अनुमानतैं विरुद्ध अर्थका वक्तापणां कह्या कि अविरुद्ध अर्थका वक्तापणां कह्या कि वक्तपणां सामान्य कह्या? इनि तीन सिवाय चौथी गति नांही है। तहां प्रथमपक्ष तौ न बणै हैं याकै तौ सिद्धसाध्यपणांका प्रसंग है जातैं प्रत्यक्ष अनुमानतैं विरुद्ध अर्थ कहै सो सर्वज्ञ काहेका? बहुरि दूसरा पक्ष कह्या सो यह विरुद्ध है जातैं प्रत्यक्ष अनुमानतैं विरुद्ध अर्थ कहै सो ऐसा वक्तापणां तौ ज्ञानके अतिशयविना न बणैं जामैं ज्ञान बहुत होय सो ही वक्ता सत्यवादी होय। बहुरि वक्तापणां सामान्य है सो भी विपक्षतैं अविरुद्ध है। तातैं प्रकरणगोचर जो साध्य असर्वज्ञपणां ताकूं साधनेंविषैं समर्थ नांही। ज्ञानकी बधवारी होतैं वक्तापणांकी हानि दीखै नांही, उलटा ज्ञानकी बधवारीवालाकै वचनकी प्रवृत्तिकी बधवारीका संभव है। इस ही कथनकरि पुरुषपणां हेतु भी निराकरण किया। पुरुषपणां होतैं जो रागादिदोषदूषत होय तौ सिद्ध साध्यता ही है ताकै सर्वज्ञपणांका अभाव सिद्ध ही है अर रागादि दोषकरि दूषित नांही होय तौ हेतु विरुद्ध है, वीतराग विज्ञान आदि गुणनिकरि युक्त

पुरुषपणांका सर्वज्ञ विना अयोग है। बहुरि पुरुषपणां सामान्य है सो सन्दिग्धविपक्षव्यावृत्तिक है असर्वज्ञपणांका विपक्ष सर्वज्ञपणां सो कोई पुरुषमैं होय भी तातैं विपक्षतैं व्यावृत्ति संदेहरूप है। ऐसैं सकल पदार्थका साक्षात्कारीपणां कोई पुरुषकै सिद्ध होय है इस अनुमानतैं यातैं पांच प्रमाणका विषय सर्वज्ञ नांही ऐसैं कहना अयुक्त है।

बहुरि असर्वज्ञवादी कहै है—जो इस अनुमानविषैं सामान्य सर्वज्ञपणां सिद्ध भया सो यह सर्वज्ञपणां अरहंतकै है कि अन्यकै है? जो कहोगे अन्य जे बुद्ध आदि तिनिकै है तौ अरहंतके वाक्य अप्रमाण ठहरैंगे। बहुरि कहोगे अरहंतकै है तौ आगम करि सामर्थ्यकरि अथवा स्वशक्ति कहिये अविनाभावी लिंगपणां ताकरि अथवा ताका दृष्टान्तका अनुग्रह करि तिस हेतुतैं अरहंतकौं सर्वज्ञ जाननेंका असमर्थपणां है जातैं हेतुकै अन्यपक्ष जो बुद्धादिक तिनिविषैं भी समानवृत्ति है, जैसैं हेतुतैं अरहंतकै साधिये तैसैं ही बुद्ध आदिकै भी सिद्ध होयगा। ऐसैं असर्वज्ञवादी मीमांसक आदिक कहैं। सो यह कहनां भी तिनिकै अपनें घातकै अर्थि कृत्य कहिये करतूति तथा शस्त्रविशेष तथा मारीका उठावनां है जातैं ऐसैं पूछनां है सो तौ सर्वज्ञसामान्यका माननेंपूर्वक है। सो सर्वज्ञ सामान्य मान्यां तब अपनी पक्षका घात भया। अर जो सर्वज्ञसामान्य न मानिये तौ काहूहीकै सर्वज्ञपणां नांही है ऐसैं ही कहनां। बहुरि प्रसिद्ध अनुमानविषैं भी इस दोषका संभवकरि जातिनामा दूषणरूप उत्तर होय है, सो ही कहिये है;—जैसैं काहूनैं अनुमान किया जो शब्द नित्य है जातैं प्रत्यभिज्ञानकरि जान्या जाय है, ऐसैं कहनेंतैं जातिवादी कहै है—शब्दकूं व्यापकरूप नित्य साधिये है कि अव्यापकरूप नित्य साधिये है? जो अव्यापकरूप नित्य साधिये है तौ व्यापकपणां करि मान्यां जो शब्द सो किछू भी अर्थकूं पुष्ट नांही करै है

व्यापक माननां निरर्थक ठहरया, मीमांसक शब्दकूं व्यापक मानैं है। बहुरि व्यापकरूप शब्द नित्य साधिये तौ आगमकरि अथवा सामर्थ्यकरि अथवा अपनी शक्तिकरि तथा दृष्टान्तके अनुग्रहकरि व्यापकपणां नांही निश्चय होय है जातैं अव्यापक नित्यपक्षविषैं भी याकी समानवृत्ति है, तातैं जाति-उत्तर होय है। दोऊ पक्षविषैं प्रश्न उत्तर समान होय जाय तहां जातिनामा दूषण होय है। ऐसैं पूर्वैं सर्वज्ञका साधनरूप हेतु कह्या सो निर्दोष है तातैं सर्वज्ञ सिद्ध होय है। बहुरि जो अभावप्रमाणकरि सर्वज्ञकी सत्ता ग्रासीभूत करी कही सो भी अयुक्त है—तिस सर्वज्ञका ग्राहक अनुमानप्रमाणका सद्भाव होतैं पांच प्रमाणका अभाव है मूल जाका ऐसा जो अभाव प्रमाण ताकी उत्पत्तिकी सामग्रीका अयोग है जातैं हे मीमांसक ! तेरे ही मतमैं ऐसा कह्या है ताका श्लोक[1] है, ताका अर्थ—वस्तुका सद्भावकूं ग्रहण करि बहुरि ताका प्रतियोगीकूं यादि करि इन्द्रियनिकी अपेक्षारहित मनसंबंधी नास्तिताका ज्ञान उपजै है अन्यप्रकार नांही उपजै है। ऐसैं होतैं तीनकाल तीन लोकस्वरूप जो वस्तु ताका सद्भावका ग्रहणविषैं कोई काल कोई क्षेत्रविषैं ग्रहण किया जो सर्वज्ञ ताका स्मरण होतैं कोई क्षेत्र कालविषैं ताकी नास्तिताका ज्ञानरूप अभावप्रमाण युक्त होय है, अन्यप्रकार नांही है। सो कोई छद्मस्थ असर्वज्ञजनकै तीन जगत तीनकालका ज्ञान नांही बणै है तातैं सर्वज्ञ अतीन्द्रियका ज्ञान न होय है, यह सर्वज्ञपणां चैतन्यका धर्म है तातैं अतीन्द्रिय है सो भी असर्वज्ञ जनका विषय नांही ऐसैं होतैं अभावप्रमाण कैसैं उदयकूं प्राप्त होय। असर्वज्ञ पुरुषकै तिस सर्वज्ञके अभावकी उपजावनेंकी सामग्रीका संभवका अभाव है। बहुरि

---

१ गृहीत्वा वस्तुसद्भावं स्मृत्वा च प्रतियोगिनम्।
मानसं नास्तिताज्ञानं जायतेऽक्षानपेक्षया ॥१॥

जो असर्वज्ञकै सर्वकाल सर्वक्षेत्रका ज्ञान मानि सर्वज्ञके अभावका उपजनेंकी सामग्री मानिये तौ ऐसैं जाननेंवालाहीकै सर्वज्ञपणां ठहऱ्या। बहुरि कहै—जो इस क्षेत्र कालमैं सर्वज्ञका अभाव साधिये है तौ युक्त नांही यामैं सिद्धसाध्यपणांका प्रसंग आवै है कोई क्षेत्र कालकी अपेक्षा सर्वज्ञका अभाव सिद्ध ही है, सिद्धकूं कहा साधिये। तातैं मुख्य अतीन्द्रियज्ञान समस्तपणांकरि विशद ऐसा सिद्ध भया।

बहुरि सर्वज्ञका ज्ञान अतीन्द्रिय है तातैं अपवित्रका देखनां तिसका रसका आस्वादन करनां ऐसा दोप भी निराकरण भया, अशुच्यादिकका देखनां रसका आस्वाद करनां दोप तौ इन्द्रियज्ञान अपेक्षा कह्या है, वीतरागकै यह दोष नांही।

बहुरि पूछै है—जो अतीन्द्रियज्ञानकै विशदपणां कैसैं है; हम तौ नेत्रादिकतैं स्पष्ट ज्ञान होता जानैं हैं। ताका समाधान;—जैसैं सांचा स्वप्नका ज्ञानकै तथा भावनाका ज्ञानकै विशदपणां है तैसैं इन्द्रियनि विना भी विशदपणां जाननां, जातैं देखिये है—भावनाके बलतैं दूरदेश अन्यदेशवर्त्ती वस्तुकौं विशद जानिये है, जैसैं कह्या है ताका श्लोक[1] है; ताका अर्थ;—काहू कामीजनकूं बंदीखानेमैं दीया सो कहै है;—देखो! यह गुप्त आछाद्या जुड्या जो बंदीखानांका घर तहां ऐसा अंधकार जो सूईके अग्रभागकरि भी भेद्या न जाय तहां मेरे नेत्र मींचिकरि मैं बैठा तौऊ तिस स्त्रीका मुख मोकूं प्रगट दीखै है। ऐसा काहू कामीका वचन है सो ऐसे बहुत उदाहरण हैं। इन्द्रियनिके संबंध विना केवल मनकै ही द्वारा विशद—स्पष्ट प्रतिभास होय है, ऐसैं मीमांसककूं तौ उत्तर दिया।

---

१ पिहिते कारागारे तमसि च सूचीमुखाग्रदुर्भेद्ये।
मयि च निमीलितनयने तथापि कान्ताननं व्यक्तम् ॥१॥

अब इहां नैयायिक बोलै है;—जो सर्वज्ञपणांकी तौ सिद्धि भई परंतु आवरणके अभावतैं सर्वज्ञपणां है यह नांही बणैं है, शरीर इन्द्रिय लोक आदि ये कार्य हैं तिनिके निमित्तपणांकरि सर्वज्ञकी सिद्धि होय है। बहुरि इहां शरीर आदि कार्यनिका होनां बुद्धिवान पुरुषकरि किये होय है सो असिद्ध नांही है जातैं अनुमान प्रमाण आदिकतैं इह नीकैं प्रसिद्ध होय है, सो ही कहिये है, ताका प्रयोग करै है—नांही निश्चयमैं आये—विवादमैं आये जे पृथिवी पर्वत वृक्ष शरीर आदिक सो कोई बुद्धिवान पुरुषके रचे हैं तिस हेतुक हैं जातैं ये कार्यरूप हैं कार्य होय सो किया विना होय नांही। बहुरि इनिका उपादान अचेतन है। बहुरि इनिका संनिवेश कहिये आकारादिकी रचनां सो भलै प्रकार है ऐसे आकारादिक बुद्धिमान पुरुष विना होय नांही जैसैं वस्त्र आदिका बनावनेवाला कारीगर तिनिकी यथास्थान रचना बनावै तैसैं ये भी काहूनैं बनाये हैं। बहुरि आगम भी तिस सर्वज्ञका प्रतिपादक सुनिये है, सो वेदका वचन है—'विश्वतश्चक्षुः' कहिये सर्व तरफ जाके नेत्र हैं—समस्तकूं देखै है, 'उत विश्वतो मुखः' कहिये सर्व तरफ जाका मुख है, बहुरि 'विश्वतो बाहुः' कहिये सर्व तरफ जाका भुजानिका व्यापार है, 'उत विश्वतः पात्' कहिये सर्व तरफ जाके पग हैं—सर्व व्यापक है, बहुरि 'संबाहुभ्यां धमति' कहिये पुण्य पापतैं सर्वकूं जोड़ै है—सर्व प्राणीनिकै पुण्य पापका संयोग करै है, ऐसा 'संपतत्रैः द्यावा-भूमी जनयन् देव एकः'[1], कहिये एक देव ईश्वर है सो पृथिवी आकाशकूं परमाणूनिकरि उपजावता संता वर्त्तै है। बहुरि व्यासका वचन ऐसा

१-**विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतः पात् सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ॥**

है;—ताका[1] श्लोक है ताका अर्थ;—यह जंतु कहिये जीव सो अज्ञानी है आप ही आपकै सुख दुःख करिवेकूं असमर्थ है यातैं ईश्वरका प्रेरया हूआ स्वर्ग तथा नरककूं गमन करै है। बहुरि ऐसैं भी न कहनां जो अचेतन जे परमाणु आदि कारण तिनिहीकरि कार्यकी निष्पत्ति होय है तातैं बुद्धिमान कारणका अनर्थकपणां है जातैं अचेतनकै कार्यकी उत्पत्तिविषैं आपहीतैं व्यापार करनेका अयोग है—जड़ आप ही कार्य करि सकै नांही, जैसैं कोलीके राछ वेम तुरी अर तंतु इनितैं आपहीतैं वस्त्र बणैं नांही कोली पुरुष व्यापार करै तब बणै। बहुरि ऐसैं चेतनकै भी अन्यचेतनपूर्वक कार्य करनां नांही है जातैं यामैं अनवस्था आवै। ईश्वर है सो सकल पुरुषनितैं बड़ा है समर्थ है अतिशयकी हदकूं प्राप्त है, सर्वज्ञबीज कहिये जगत्का कारण सर्वज्ञ सो ही बीज है। बहुरि क्लेश कर्म विपाक आशय इनिकरि अपरामृष्ट है—रहित है। बहुरि अनादिभूत अविनाशी ज्ञानका संभव जाकै है, ऐसैं ही पतंजलिनैं कह्या है—क्लेश कहिये अविद्या १ अस्मिता १ रागद्वेष १ अभिनिवेश १, तहां अविद्या तौ विपरीत जाननां सो है, बहुरि अस्मिता कहिये अहंकार, रागद्वेष कहिये सुख–दुःख तथा ताके साधनविषैं प्रीति–अप्रीति, अभिनिवेश कहिये अपनां ईश्वरपणांका भंगका भय, ये तौ क्लेशके विशेष। बहुरि कर्म कहिये धर्म–अधर्मके साधन यज्ञ अर ब्रह्महत्यादिक। बहुरि विपाक कहिये जाति आयु भोग, तहां जाति देव मनुष्य आदि-

---

१–अज्ञो जन्तुरनीशोऽयमात्मनः सुखदुःखयोः।
ईश्वरप्रेरितो गच्छेत्स्वर्गं वा श्वभ्रमेव वा ॥ १ ॥

२—यदाह पतञ्जलि;—

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषः सर्वज्ञः
स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनाविच्छेदादिति।

पणां, आयु कहिये आयुर्बल, सुख दुःखका भोगनां सो भोग ये विपाकके विशेष । बहुरि आशय कहिये निवृत्ति तांई जो भाव लाग्या रहै सो ऐसे भावनिकरि सर्वज्ञ पुरुष स्पर्शित नांही है । सो सर्व ही विषैं गुरु है बड़ा है कालकरि जाका विच्छेद नांही है, ऐसैं पतंजलिके वचन हैं । बहुरि अवधूत जो संन्यासीनिका आचार्य ताके ऐसे वचन हैं, श्लोकका अर्थ;—हे भगवन् ! एते विशेषण तेरे ही हैं, प्रथम तौ जो काहूकरि हत्या न जाय ऐसा ऐश्वर्य तेरै ही है, बहुरि स्वभावहीतैं विरागता तेरै ही है, बहुरि स्वभावतैं उपजी तृप्तिता तेरै ही है, बहुरि इन्द्रियनिका वश करनां तेरै ही है, बहुरि अत्यन्तसुख तेरै ही है, बहुरि आवरणरहित शक्ति तेरै ही है, बहुरि सर्वविषयका जाननहारा ज्ञान तेरै ही है ऐसा अवधूतका वचन है । ऐसैं ईश्वर सर्वतैं बड़ा है तातैं कार्यके करनेंमैं अनवस्था नांही है । बहुरि तहां ईश्वरकी सिद्धिकूं कार्यत्वनामा हेतु है सो असिद्ध नांही है, अवयवसहितपणांकरि कार्यत्वकी सिद्धि है जो अवयवनिकरि सहित होय सो कार्य है सो किया ही होय । बहुरि यह हेतु विरुद्ध भी नांही है जातैं याकी विपक्ष जो विना किया होना ताविषैं वृत्तिका अभाव है । बहुरि अनैकान्तिक भी नांही है विपक्ष जे परमाणु आदि तिनि विषैं याकी अप्रवृत्ति है, परमाणु आप कार्य नांही । बहुरि प्रकरणसम भी नांही है जातैं प्रतिपक्षकी सिद्धिका कारण जो अन्य हेतु ताका अभाव है ।

२—ऐश्वर्यमप्रतिहतं सहजो विराग-
स्तृप्तिर्निसर्गजनिता वशितेन्द्रियेषु ।
आत्यन्तिकं सुखमनावरणा च शक्ति-
र्ज्ञानं च सर्वविषयं भगवंस्तवैव ॥

इत्यवधूतवचनाच्च ।

बहुरि इहां कोई कहै——याका प्रतिपक्षका साधन हेतु है, ताका प्रयोग ——तनु आदि बुद्धिमान हेतुक नांही है जातै देख्या है कर्त्ता जाका ऐसा जो प्रासाद आदिक तिनितैं यह तनु आदि विलक्षण हैं, प्रासाद आदि सारिखे नांही, जैसैं आकाश आदिक है, ऐसैं याका प्रतिपक्षका हेतु है तनु आदिककै अकर्त्ताकूं साधै है, तातैं कार्यत्व हेतु प्रकरणसम है। ताकूं नैयायिक कहै है—यह कहनां अयुक्त है जातैं इस हेतुकै असिद्धपणां हैं, संनिवेशविशिष्टपणांकरि प्रासादादिकतैं समानजातीयपणांकरि शरीरादिकका उपलंभ है जैसैं प्रासादादिकका आकार रचनाविशेष है तैसैं ही शरीरादिकका आकार ऐसा ही रचना विशेष है। बहुरि कहोगे जैसा प्रासादादिकविषैं संनिवेशविशेष देखिये है तैसा तनुशरीर आदि विषैं नांही तौ सर्व ही एकसे सर्वस्वरूप तौ होय नांही कोईमैं किच्छू विशेष होय कोईमैं किछू होय। अतिशयसहित संनिवेश होय सो सातिशय कर्त्ताकूं जनावै है, जैसैं प्रासादादिक, जो प्रासाद सुन्दर वणैं तब जानिये चतुर कारीगरनैं वणाया है। बहुरि कोईका तौ कर्त्ता दृष्ट है——जानिये है फलाणांनैं बनाया है अर कोईका कर्त्ता अदृष्ट है जाण्यां न पड़ै है तौ इनि दोऊ रीतितैं तौ बुद्धिवानका किया अर बुद्धिवान न किया स्वयमेव है ऐसा सिद्ध होय नांही। मणि मोती आदिका कर्त्ता कौननैं देख्या ये स्वयमेव भये ठहरे हैं, ऐसैं संनिवेशविशेष हेतु सिद्ध है। इस ही कथनकरि अचेतन उपादानपणां आदि हेतु भी दृढ़ किया। ऐसैं बुद्धिवान हेतुक तनु आदि है ऐसा भलै प्रकार कह्या हुवा बणै है। इस ही हेतुतैं सर्वज्ञपणां सिद्ध होय है। ऐसैं नैयायिकनैं अपनां मत दृढ़ किया।

ताका समाधान आचार्य करै है;——जो यहु कहनां अनुमानरूप मुद्रा करनेंकूं धनकरि रहित दरिद्रीके वचन है जातैं कार्यत्व आदि हेतु

कहे तिनिकै असम्यक् हेतुपणांकरि तिनि हेतुनिकरि उपज्या ज्ञानकै मिथ्यारूपपणां है, सो ही कहिये है;—यह कार्यत्वनामा हेतु कह्या सो याका कहा स्वरूप हैं, स्वकारणसत्तासमवायस्वरूप कार्यत्व है, कि अभूत्वा भावित्व है, कि अक्रियादर्शीकै कृतबुद्धि उत्पादकपणां है, कि कारणके व्यापारकै अनुविधायीपणां है? इनि सिवाय गतिका अभाव है, ऐसें चार पक्ष पूछिये हैं। तहां आदिका पक्ष कहैगा तौ योगीश्वरनिकै समस्त कर्मका नाशनामा जो कार्य सो भी कार्यत्वपक्षमैं ही है ताविषैं कार्यत्वनामा हेतुकी अप्रवृत्ति है यातैं हेतु भागासिद्ध होयगा। जो हेतु पक्षके कोई देशमैं न व्यापै सो भागासिद्ध कहिये। सो इस कर्मका नाशविषैं स्वकारणसमवाय भी नांही अर सत्तासमवाय भी नांही। वस्तुकी सत्तासूं एकता होय सो तौ सत्तासमवाय कहिये, बहुरि वस्तुके कारणसूं एकता होय सो स्वकारणसमवाय कहिये। सो कर्मका नाश प्रध्वंसनामा अभावस्वरूप है सो यामैं सत्ता भी नांही अर समवाय भी नांही जातैं सत्ता तौ द्रव्य, गुण, क्रियाकै आधार मानिये है, बहुरि समवाय द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, इनि पांच पदार्थमैं वर्त्तनैंवाला मानिये है यह नैयायिक-वैशेषिकका मत है। तहां पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, दिशा आत्मा, काल, मन, ये नव तौ द्रव्य मानैं हैं। बहुरि बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, संस्कार, धर्म, अधर्म, रूप, रस, गंध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व,

---

१–सत्तासूं वस्तुकै एकता होय सो तौ सत्तासमवायस्वरूप कार्य वस्तु है बहुरि वस्तुके कारणसूं सत्ताकै एकता होय सो स्वकारणसत्तासमवायस्वरूप कार्य है ऐसें दोऊमैं ही कहिये, वस्तुमैं वा वस्तुके कारणमैं सत्तासमवाय मान्या यातैं सत्तासमवायलक्षण कार्यका स्वरूप मानैं है।

द्रवत्व, स्नेह, शब्द, ए चौईस गुण मानैं हैं। बहुरि प्रसारण, आकुंचन, उत्क्षेपण, गमन, आगमन, ये पांच कर्म मानैं हैं। पर सामान्य, अपर सामान्य ये दोय प्रकार सामान्य मानैं हैं। विशेष अनेक हैं सो इनिमैं अभाव नांही। अभावनामा सातवां पदार्थ न्यारा है। बहुरि कहै जो अभावका परित्याग करि इहां भाव ही विवादाध्यासितकरि पक्ष किया है तातैं तुमनैं दोष बताया सो इहां नांही प्रवेश करै है? ताकूं कहिये—जो अभावकूं कार्यका पक्षमैं न लीजिये तौ मुक्तिके अर्थी जे मुनि तिनिकै ईश्वरका आराधनां अनर्थक ठहरैगा जातैं तिस कर्मनाशके कार्यविषैं ईश्वरका आराधनां किछू करनेंवाला नांही। बहुरि यह सत्तासमवाय कार्यका स्वरूप माननां विचार किये सैंकडां प्रकार खंड्या जाय है तातैं कार्यत्व हेतु स्वरूपासिद्ध है, जातैं सो सत्तासमवाय पदार्थ उत्पत्ति भये होय है कि उपजतें संतेकै होय है? जो कहैगा उत्पत्ति भये होय है तौ तहां भी पूछिये जो छतेनिकै होय कि अछतेनिकै? जो कहैगा अणछतेनिकै होय है तौ गदहाके सींग आदिकै भी सत्तासमवायका प्रसंग आवैगा। बहुरि कहैगा जो छते पदार्थनिकै होय है तौ तहां पूछिये जो सत्तासमवायतैं होय है कि आपहीतैं होय है? तहां प्रथम सत्तासमवायतैं कहैगा तौ अनवस्थाका प्रसंग आवैगा जातैं पहले पूछया था जो छत्ते पदार्थकै होय है कि अणछतेनिकै सो ही विकल्प फेरि पूछिये तब अनवस्था चली जाय। बहुरि कहैगा पदार्थनिकै आपहीतैं सत्तासमवाय है तौ जुदा सत्तासमवायका माननां अनर्थक है। बहुरि दूजा कहै जो पदार्थ उपजते संतेनिकै सत्तासमवाय है जातैं पदार्थनिकी निष्पत्ति अर संबंध इनि दोऊनिकै एक कालपणांका अंगीकार है तौ पूछिये जो यह सत्तासंबंध है सो उत्पादतैं भिन्न है कि अभिन्न है? जो कहैगा भिन्न है तौ उत्पत्तिके असत्त्वतैं अवि-

शेष भया तौ उत्पत्तिकै अर अभावकै भेद कैसैं भया। बहुरि कहैगा उत्पत्तिकरि सहित वस्तुकै सत्व है तातैं उत्पत्ति भी तैसा नाम पावै है तौ ऐसा कहनां भी मूर्खपणांकरि ही है जातैं इहां उत्पत्तिका—सत्त्वका विवाद है तहां वस्तुका सत्व कहनां कबहू न बणैगा। बहुरि यामैं इतरेतराश्रयदोष आवैगा, वस्तुविषैं उत्पत्तिका सत्त्व होतैं तिस ही काल भया सत्तासंबंधका निश्चय होय अर तिसका निश्चय होय तब ही तिस वस्तुके सत्त्वकरि उत्पत्तिका सत्त्वका निश्चय होय ऐसैं इतरेतराश्रय होय है। बहुरि इस दोषके दूर करनेकी इच्छाकरि उत्पत्तिकै अर सत्तासंबंधकै एकता मानिये तौ सत्तासंबंध ही कार्यत्व भया तातैं बुद्धिमानहेतुपणां तनु आदिकै होतैं आकाश आदिकरि हेतु अनैकान्तिक भया जातैं आकाश आदिविषैं सत्तासंबंध तौ है अर कार्यपणां नांही। नित्यवस्तुकै कार्यपणां होय नांही तातैं बुद्धिमानहेतुकपणां भी नांही। ऐसैं सत्तासमवाय तौ कार्यत्व नांही तैसैं ही स्वकारणसंबंध भी कार्यत्व नांही, जो चर्चा सत्तासंबंधमैं है सो ही इहां भी लगावणीं। बहुरि कहै जो स्वकारणसमवाय अर सत्तासमवाय दोऊ संबंध कार्यत्व है तौ सो भी युक्त नांही है, तिनि संबंधनिकै भी कदाचित् काल होतैं तौ समवायकै अनित्यताका प्रसंग आवै जैसैं घट आदिककै अनित्यता है तैसैं, बहुरि सदाकाल कहै तौ सर्वकाल तिस कार्यपणांका उपलंभ कहिये प्राप्ति ताका प्रसंग आवै। बहुरि इहां कहै जो वस्तुनिके उत्पादक कारणनिकी निकटता न होय तब समवाय न होय यातैं सर्वकाल उपलंभका प्रसंग न आवै तौ तहां पूछिये है—वस्तुकी उत्पत्तिकै अर्थि तौ कारणनिका व्यापार है अर उत्पाद स्वकारणसत्तासमवायस्वरूप है सो यह सर्वकाल है ही, ऐसैं तौ कारणका ग्रहण अनर्थक ही है। बहुरि कहै जो वस्तुकै कारणका ग्रहण उत्पत्तिकै अर्थि तौ

नांही अभिव्यक्तिकै आर्थि है, सो यह भी कहनां वार्तामात्र ही है—
वस्तुके उत्पादकी अपेक्षाकरि अभिव्यक्ति कहनां बणैं नांही, वस्तुकी
अपेक्षा अभिव्यक्ति कहिये तौ तात्रिषैं कारणके आवनें पहले भी कार्य-
वस्तुका सद्भावका प्रसंग आवै है । बहुरि उत्पादकै अभिव्यक्ति भी
असंभवरूप है जातैं स्वकारणसत्तासंबंध है लक्षण जाका ऐसा जो उत्पाद
ताकै वस्तुके कारणके व्यापार पहले सद्भाव होतैं वस्तुका सद्भावका
प्रसंग आवै है जातैं वस्तुके सत्त्वका सो ही लक्षण इहां है । सो पहले
सत्-रूप होय ताकै ही कोई कारणकरि आच्छादित होय ताकी अभि-
व्यंजककरि अभिव्यक्ति होय, जैसैं घट आदि वस्तु अंधकारकरि आ-
च्छादित होय तब दीपक आदि अभिव्यंजककरि ताकी व्यक्ति होय तैसैं
इहां भी जाननां । तातैं अभिव्यक्ति आर्थि कारणका ग्रहण करनां युक्त
नांही । तातैं स्वकारणसत्तासंबंध तौ कार्यत्व नांही है ।

बहुरि अभूत्वा भावित्वनामा दूसरा पक्ष है सो भी कार्यत्व नांही है
ताकै भी विचारका सहबापणां नांही है, परीक्षा किये अयुक्त ही है जातैं
अभूत्वा भावित्वपणां है सो पहले न होय करि आगामी होय ताकूं कहिये है ।
सो भिन्नकालविषैं जो दोय क्रिया ताका आधारभूत जो कर्त्ता ताकै सिद्धि
होतैं सिद्धि होय है जातैं अतीतकालवाची जो 'क्त्वा' प्रत्यय तदन्तपद-
करि विशेषित जो वाक्यका अर्थपणां तिसरूप है, जैसैं 'भुक्त्वा व्रजति'
इत्यादि वाक्यार्थ है । कोई पुरुष भोजन करि चलै है, तहां 'भुक्त्वा'
ऐसा तौ अतीतकाल भया 'पीछै चलै है' सो यह भावीकाल है सो
इहां दोऊ कालविषैं क्रिया दोयका आधार पुरुष है सो इहां कार्यत्वविषैं
'भवन अभवन' कहिये होनां न होनां रूप जो दोय क्रिया ताका
आधारभूत एक कर्त्ताका अनुभव नांही है जातैं अभवनका आधारकै
अविद्यमानपणांकरि अर भवनका आधारकै विद्यमानपणांकरि भाव

अभावका एक आश्रयकै विरोध है, भावार्थ—कार्य है सो भावस्वरूप ही है अभावस्वरूप नांही है । अर जो अविरोध मानिये तौ तिनि दोऊनिकै पर्यायमात्रकरि ही भेद आवै वस्तुभेद नांही आवै । अथवा कोई प्रकार अभूत्वा भावित्व है सो कार्यत्वका स्वरूप होहु तौऊ तनु आदिक सर्वविषैं नांही माननेंतैं हेतु भागासिद्ध होय है जातैं हमारै पृथिवी पर्वत समुद्र उद्यान आदि पहली न होय करि होते नांही मानिये है जातैं हमारै जैनीनिके पृथिवी आदिका सदाकाल अवस्थान मानैं हैं । बहुरि कहै जो पृथिवी आदिकै अवयवसहितपणांकरि आदिसहितपणां साधिये है सो ऐसा कहनां भी विना सीखेकरि कह्या है, जातैं इहां दोय पक्ष पूछिये, अवयवनिविषैं अवयवींकी प्रवृत्तितैं है कि अवयवनिकरि आरंभिये है यातैं है ? इनि दोऊ ही पक्षनिविषैं अवयवसहितपणांकी अनुपपत्ति है । जो प्रथम पक्ष लीजिये तौ अवयवसामान्यकरि अनेकांत है जातैं अवयवसामान्य है सो अवयवनिविषैं वर्त्तै है अर कार्य नांही है । बहुरि दूसरी पक्ष जो अवयवनिकरि अवयवी आरंभिये है तौ साध्यतैं अविशिष्ट है जातैं आदिसहितपणां साधिये है सो ही अवयवनिकरि आरंभिये है ऐसा हेतु कह्या यामैं साध्यतैं विशेष कहा भया। बहुरि कहै—जो यह संनिवेश है आकाररूप रचनाविशेष है सो ही सावयवपणां है सो ही घट आदिकी ज्यों पृथिवी आदिविषैं पाइए है यातैं अभूत्वा भावित्व ही कहिये है सो ऐसैं कहनां भी सुन्दर नांही, संनिवेशके भी विचारका असहपणां है—परीक्षा किये बणैं नांही है । इहां दोय पक्ष पूछिये, यह संनिवेश है सो अवयवनिका संबंध है कि रचनाका विशेष है ? जो कहैगा अवयवनिका संबंध है तौ आकाश आदिकरि अनेकांत होगा जातैं आकाशकै समस्त मूर्तीक द्रव्यका संयोग है कारण जाकूं ऐसा प्रदेश-

निका नानापणांका सद्भाव है। इहां कहै—जो आकाशकै विषैं तौ प्रदेश उपचरित है तौ समस्त मूर्तीक द्रव्यनिका संबंधकै भी उपचरितपणां आया तब आकाशकै सर्वगतपणां भी उपचरित ठहरया, तब श्रोत्रकै अर्थक्रियाकारीपणां न ठहरैगा श्रोत्र इन्द्रिय आकाशतैं जुड़ै तब शब्द आकाशका गुण है सो ग्रहण होय है ऐसैं नैयायिक मानैं है सो संबंध उपचरित ठहरै तब श्रोत्रकै अर्थक्रियाकारीपणां—शब्दका ग्रहण करनां है सो न ठहरैगा जातैं आकाश उपचरित प्रदेशरूप मान्यां है। बहुरि कहै जो धर्म अधर्मके संस्कारतैं श्रोत्रतैं अर्थक्रिया होय है, ताकूं कहिये—जो उपचरित तौ अभावरूप है सो ताके तिनि धर्मादिकरि उपकारका अयोग है जैसैं गदहाके सींगकै कछू काहूकरि उपकार न होय तैसैं है। तातैं अवयवनिका संबंधस्वरूप जो संनिवेश कह्या सो तौ किछू भी नांहीं। बहुरि दूसरी पक्ष रचनाविशेष है सो मानिये तौ हमारे जैनिनकै पृथ्वी आदि रचनाविशेषकूं सावयवरूप कार्यस्वरूप नांहीं मानिये है तातैं यह हेतु भागासिद्ध होय है सो यह दूषण अवस्थित होय है ऐसैं अभूत्वा भावित्व है सो विचारमैं नांही बणैं है।

बहुरि तीसरा पक्ष अक्रियादर्शीकै कृतबुद्धिका उत्पादकपणां है, याका अर्थ यह—जो कार्यके उपजनेंकी क्रिया तौ न देखी तौऊ ताविषैं ऐसी बुद्धि उपजै जो यह काहूनैं किया है सो यह कार्यपणां मानिये तौ दोय पक्ष पूछिये है, सो ऐसी बुद्धि उपजै जो पहले काहूनैं संकेत किया होय जो ऐसा तौ किया ही होय है ताकै उपजै है कि विना ही संकेत उपजै है? जो कहैगा संकेत करनेंवालेकै उपजै है तौ आकाश आदिकै भी बुद्धिमानकरि कियापणां ठहरैगा। तहां भी कहूं खोदिकरि माटी काढैं तब खानां (डा) होय जाय आकाश प्रगट होय तहां ऐसी बुद्धि उपजै है जो यह आकाश काहूनैं

किया है जातैं पूर्वें खोदता देख्या था तथा काहूके वचनतैं निश्चय किया था तहां ऐसा संकेत भया था जो खोदेतैं आकाश नीकसैं है तातैं इहां कृतबुद्धि उपजै है। इहां कहै—जो यह बुद्धि तौ मिथ्या है तौ तेरी भी बुद्धि अन्यविषैं किये उपजै है सो मिथ्या क्यों न होय ? बाधाका सद्भाव अर प्रतिप्रमाण विरोधका अन्यविषैं समानपणां है, जो आकाशविषैं कृतबुद्धिमैं बाधक बतावैगा सो ही तन्त्रादिकमैं आवैगा, बहुरि कर्त्ताका ग्रहण दोऊ ही जायगां प्रत्यक्ष नांही है। इहां प्रमाणकी समानताका प्रयोग ऐसा—पृथिवी आदिक हैं ते बुद्धिमान हेतुक नांही हैं जातैं हम आदिककै नांही ग्रहण करनें योग्य याका परिमाण अर आधार है, जैसा आकाश आदिकका परिमाण आदि नांही ग्रहणमैं आवै है तैसैं यहु भी है ऐसा प्रमाण पृथिवी आदिका कर्त्ताका निषेधका समान है। तातैं कृतसमय कहिये जानैं संकेत किया ताकै तौ पृथिवी आदिकविषैं कृतबुद्धिका उपजावनहारापणां नांही है। बहुरि अकृतसमय कहिये नांही किया है संकेत जानैं ताकै भी कृतबुद्धिका उपजावनहारा नांही है जातैं यह असिद्ध है विना संकेत किये कृतबुद्धि उपजै नांही जो उपजै तौ विप्रतिपत्ति नांही होय सर्वहीकै उपजै। कोई कहै—जो अग्नि शीतल है तौ जाकै अग्निका संकेत नांही सो ऐसैं जानैं जो शीतल ही होगी यामैं संदेह न उपजै तैसैं पृथिवी आदि कार्य काहूके किये बतावै तौ किये ही मानैं न किये बतावै तौ विना किये ही मानैं।

बहुरि चौथा पक्ष कारणव्यापारानुविधायिपणां है, याका अर्थ यह—जो जैसा कारणका व्यापार होय तिसकै अनुसार तैसा ही कार्य होय। सो इहां दोय पक्ष पूछिये, तहां जो कारणमात्र ही की अपेक्षा कहै तौ यह विरुद्ध होय जातैं कार्य तौ अबुद्धिमानके किये भी होय

है सो विपक्षकूं साध्या तब कारणविशेष जो ईश्वर ताकी सिद्धि भई तातैं विरुद्ध भया। बहुरि कारणविशेषकी अपेक्षा कहै तौ इतरेतराश्रयनामा दूषण आवै, कारणविशेष जो बुद्धिमान ताकी सिद्धि होतैं तौ तिसकी अपेक्षाकरि कारणव्यापारानुविधायित्वस्वरूप कार्यत्व सिद्ध होय अर तिसतैं ताके विशेषकी सिद्धि होय ऐसैं इतरेतराश्रय भया।

बहुरि इहां संनिवेशविशिष्टपणां अर अचेतन-उपादानपणां ये दोऊ भी हेतु हैं ते कहे जे दोष तिनकरि दुष्ट हैं—निर्बाध नांही, तातैं न्यारे नांही विचारे हैं। संनिवेशविशिष्ट तौ सुख आदिविषैं नांही वर्त्तै तातैं भागासिद्ध है, सुख आदि कार्य तौ है अर रचनाविशेषरूप नांही है। बहुरि अचेतनोपादानपणां ज्ञानस्वरूप कार्यविषैं नांही तातैं भागासिद्ध है, ज्ञान कार्यरूप तौ है अर अचेतनोपादानरूप नांही ऐसैं भागासिद्धनामा दूपण तहां भी सुलभ है। बहुरि ये हेतु विरुद्ध हैं जातैं दृष्टांतके अनुग्रह कहिये घट आदि दृष्टांतका बल ताकरि शरीररहित सर्वज्ञपूर्वक साधन किया है अर घटका कर्त्ता कुंभकार है सो शरीरसहित असर्वज्ञ है तातैं हेतु विरुद्ध होय है। बहुरि कहै— जो ऐसैं तौ धूमतैं अग्निका अनुमान कीजिये तामैं भी यह दोप आवैगा सो दोप नांही आवै है जातैं तहां तृणकी अग्नि तथा पान आदिकी अग्नि सर्व ही अग्निमात्रविषैं व्याप्त जो धूम सो देखिये हैं तैसैं इनि हेतुनिमैं नांही देखिये हैं जो सर्वज्ञ तथा असर्वज्ञ जो कर्त्ताका विशेष ताका आधार जो कर्त्तापणां सामान्य तिसकरि कार्यत्वनामा हेतुकी व्याप्ति है ऐसैं नांही देखिये है अर सर्वज्ञ जो कर्त्ता ताकी इस अनुमान पहले असिद्धि है, इस ही अनुमानकरि कर्त्ता साधिये है। बहुरि यह हेतु व्यभिचारी है बुद्धिवान कारण विना भी विजली आदि कार्य प्रकट होय है। बहुरि सूता आदि पुरुपकी अवस्थाविषैं बुद्धिपूर्वक विना भी कार्य

होते देखिये है। बहुरि कहै जो शिव तिनि कार्यनिविषैं भी अवश्य कारण है तौ ऐसा कहनां अतिमुग्धका विलास है जातैं तहां शिवका व्यापारका असंभव है जातैं शिव शरीररहित है अर ज्ञानमात्र ही करि कार्यकारीपणां बणै नांही, बहुरि इच्छा अर प्रयत्न ये दोऊ शरीरविनां संभवै नांही, ताका असंभव आप्तपरीक्षा आदि ग्रंथनिविषैं पुरातन बड़े आचार्यनिकरि विस्तारकरि कह्या है तातैं इहां नांही कहिये है। बहुरि जो महेश्वरकै क्लेश आदिका रहितपणां अर निरतिशयपणां अर ऐश्वर्य आदि सहितपणां कह्या सो सर्व ही आकाशके कमलकी सुगंध ताका वर्णन सारिखा है जातैं जाका आधार सिद्ध होय नांही तातैं हमारै आदरनें योग्य नांही। तातैं महेश्वरकै सर्वज्ञपणां कहै सो नांही।

बहुरि ब्रह्मकै सर्वज्ञपणां कहै सो भी नांही है जातैं ताका सद्भावका कहनेंवाला जनावनेंवाला प्रमाणका अभाव है। तहां प्रथम तौ प्रत्यक्ष-प्रमाण ताका जनावनेंवाला नांही है, जो प्रत्यक्ष ब्रह्म दीखै तौ विप्रतिपत्ति नांही होय, सन्देह काहेकूं होय। बहुरि अनुमान भी ताका सिद्धि करनें-वाला नांही है जातैं ब्रह्मतैं अविनाभावी जो लिंग ताका अभाव है लिंग विना अनुमान कैसैं होय।

इहां ब्रह्मवादी कहै है—प्रत्यक्षप्रमाण ब्रह्मका ग्राहक है ही जातैं नेत्र उघाड़िकरि देखें लगता ही निर्विकल्प अभेदरूप सत्तामात्रकी विधि दीखै है ताका विषयपणांकरि प्रत्यक्षकी उत्पत्ति है, सर्व वस्तु एक सत्तारूप भासै है, बहुरि जो सत्ता है सो ही परमब्रह्मका स्वरूप है, ताका श्लोकका अर्थ—प्रथम ही आलोचना कहिये दर्शन-

---

१ तथा चोक्तम्—

अस्ति ह्यालोचनाज्ञानं प्रथमं निर्विकल्पकम्।
बालमूकादिविज्ञानसदृशं शुद्धवस्तुजम्॥ १॥

मात्र ज्ञान है सो निर्विकल्पक है-भेदरहित है जैसा बालक तथा मूक कहिये गूंगा बहरा आदिकै ज्ञान होय है तैसा होय है सो यह ही शुद्ध वस्तुतैं उपज्या है। भावार्थ—शुद्धसत्तामात्र अभेद ब्रह्मका स्वरूप है। बहुरि कोई कहै—विधिकी ज्यों परस्पर जुदायगीरूप निषेध भी प्रत्यक्ष-करि प्रतीतिमैं आवै है तातैं विधिनिषेधरूप द्वैतकी सिद्धि होय है सो ऐसैं नांही है जातैं प्रत्यक्षका विषय निषेध नांही है, सो ही हमारै कही है; ताका श्लोकका अर्थ—पंडित पुरुष हैं ते प्रत्यक्षप्रमाणकूं विधान करनेंवाला कहैं है निषेध करनेंवाला न कहै हैं तातैं एकत्व जो अद्वैत ताके कहनेंवाला आगम है सो तिस प्रत्यक्षकरि न बाधिये है। बहुरि अनुमानतैं भी ब्रह्मका सद्भाव पाइये है, ताका प्रयोग;—ग्राम बाग आदि पदार्थ हैं ते प्रतिभासमात्रमैं सर्व प्रवेशकरि रहे हैं जातैं प्रतिभा-समानपणां सबकै पाइये है जो प्रतिभासै है सो सर्व प्रतिभासकै मध्य आय गया जैसैं प्रतिभासका स्वरूप, ऐसैं ही सर्व विवादमैं आये पदार्थ प्रतिभासै हैं, ऐसें च्यार प्रयोगरूप अनुमानतैं ब्रह्म सिद्ध होय है। बहुरि तिसके आगममैं भी वचन बहुत पाइये हैं 'जो हूवा अर जो होयगा बहुरि यह वर्त्तमान है सो सर्व एक पुरुष है, ऐसा वचन है। बहुरि श्लोक है, ताका अर्थ;—'इदं सर्वं' कहिये यह जो प्रत्यक्ष सर्व दीखै है सो निश्चयतैं ब्रह्म है इस जगतमैं नानारूप किछू वस्तु नांही है अर

१ तथा चोक्तम्—

आहुर्विधातृ प्रत्यक्षं न निषेधृ विपश्चितः।
नैकत्वे वागमस्तेन प्रत्यक्षेण प्रबाध्यते ॥ १ ॥

२-सर्वं वै खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन।
आरामं तस्य पश्यन्ति नतं(तत्) पश्यति कश्चन ॥ १॥

लोक है सो तिस ब्रह्मके आराम कहिये विवर्त्तरूप पर्यायनिकूं देखै है तिसकूं कोई न देखै है ऐसा वेदका वचन सुनिये है। इहां कोई पूछै —परमब्रह्मकै ही परमार्थ सत्त्व होतैं घट आदिका भेद भासै है सो कैसैं है? सो ऐसा तर्क इहां नांही करनां जातैं सर्व ही घट आदि वस्तु हैं ते तिसके विवर्त्तपणांकरि भासैं हैं जैसैं दर्पणकै विषैं प्रतिबिंब भासैं है तैसैं है। एक ही वस्तुके अपरमार्थरूप अनेक प्रतिबिंब भासै सो विवर्त्त कहिये। बहुरि सर्व ही भेद हैं तिनिकै ब्रह्मका विवर्त्तपणां असिद्ध नांही जातैं प्रमाणकरि सिद्ध होय है, ताका प्रयोग—विवादमैं आया जो विश्व लोक सो एक कारणपूर्वक है जातैं एकरूपतैं जुड़ि रह्या है, जैसैं घड़ा हांडी ढांकणां डीवा आदिक हैं ते मांटीस्वरूप हैं तातैं अन्वयरूप हैं सो ये मांटीनामा कारणपूर्वक ही हैं तैसैं सत्‌रूप करि जुड़े सर्व वस्तु हैं। तैसैं ही आगम भी ताका साधक है; ताका श्लोकका[1] अर्थ—जैसैं मांकड़ी है सो जालाके तंतूनिका एक कारण है अथवा जैसैं जलका चंद्रकांतमणि कारण है अथवा जैसैं कूंपलनिका बड़वृक्ष कारण है तैसैं सर्व जीवनिका एक ब्रह्म कारण है, ऐसैं ब्रह्मवादीनै अपनां मत दृढ़ किया।

अब ताकूं आचार्य कहै है—हे ब्रह्मवादी! यह तेरा कहनां जैसैं मदिराका रसकूं पानकरि गदगद वचन कहै तैसा है अथवा मांचणां कोदूं खायकरि गहला होय मूर्ख विलास करै—यथा कथंचित् कहै तैसा है जातैं यह विचारमैं आवै नांही—परीक्षामैं न आय सकै है। जातैं जो तैं प्रत्यक्षकै सत्ताविषयपणां कह्या तहां दोय पक्ष पूछिये है;—निर्विशेषसत्ताविषयपणां कह्या कि विशेषसहित

१-ऊर्णनाभ इवांशूनां चद्रकांत इवांभसाम्।
प्ररोहाणामिव प्लक्षः स हेतुः सर्वजन्मिनाम्॥ १॥

सत्ताका जनावनहारा कह्या ? तहां प्रथम पक्ष तौ न बणैं है जातैं सत्ताकै सामान्यरूपपणां है तातैं विशेषकी अपेक्षारहितपणांकरि सत्ताका प्रतिभास होय नांही जैसैं गोत्वसामान्य है सो काबरा धोला आदि विशेषरहित प्रतिभासता नांही, जातैं ऐसा कह्या है जो विशेषरहित सामान्य है सो सुस्साके सींगसमान अवस्तु है, बहुरि सामान्यरूपपणां सत्ताका सत् सत् ऐसा अन्वयरूपबुद्धिका विषयपणांकरि प्रसिद्ध ही है। बहुरि दूसरा पक्ष कहैगा तौ परमपुरुषकी सिद्धि न होयगी जातैं परस्पर न्यारे न्यारे हैं आकार जिनके ऐसे विशेषनिका प्रत्यक्षतैं प्रतिभास होय है। बहुरि अनुमानका साधन कह्या जो प्रतिभाससमानपणां सो भी समीचीन नांही जातैं विचारमैं बनता नांही। तहां दोय पक्ष पूछैं हैं—यहु प्रतिभाससमानपणां स्वतैं होय है कि परतैं होय है ? जो कहैगा स्वतैं होय है तौ नांही बणैगा जातैं हेतु असिद्ध है जातैं पदार्थनिका स्वयमेव प्रकाशन है तौ नेत्र मीचिये अथवा प्रकाश नांही होय तहां भी प्रतिभासनां होहु सो नांही होय है तातैं असिद्ध है। बहुरि कहैगा परतैं होय है तौ विरुद्ध है परतैं प्रतिभासनां पर विना न बणैं, बहुरि प्रतिभासमात्र भी नांही सिद्ध होय है जातैं तिस प्रतिभासकै ताके विशेषनितैं अविनाभावीपणां है, बहुरि प्रतिभासकै विशेष मानिये तौ द्वैतका प्रसंग आया। बहुरि किछू विशेष कहै है—अनुमानका उपायभूत जे धर्मी हेतु दृष्टांत ये प्रतिभासै है कि नांही ? जो कहैगा प्रतिभासै है तौ प्रतिभासमांही प्रवेश भये प्रतिभासै है कि तातैं बाह्य न्यारे प्रतिभासै है ? जो कहैगा प्रतिभासमांही प्रतिभासै है तौ साध्यकै मांही ही आय पड़े तिनितैं अनुमान कैसे होय, बहुरि प्रतिभासकै बाह्य प्रतिभासैं है तौ हेतुकै तिनिहीकरि व्यभिचार भया। बहुरि जो कहै—प्रतिभासैं नांही है तौ धर्मी आदिकी व्यवस्थाका अभाव है तब तिनि विना

अनुमान कैसे होयगा। बहुरि ब्रह्मवादी कहै है—जो अनादि अविद्याके उदयतैं यह सर्व असंबद्ध है? तहां आचार्य कहै है—यह कहनां भी महा-अज्ञानका विलास है जातैं अविद्याविषैं भी पहिले कहे जे दोष तिनिका प्रसंग है। बहुरि कहै—जो अविद्या सर्वविकल्पनितैं रहित है तातैं दोष नांही आवैं है सो यह कहनां भी अतिमुग्धका वचन है जातैं अविद्याका कोई ही रूपकरि प्रतिभासका अभाव होतैं तिसका स्वरूप ही अवधारण मैं आवैं नांही। बहुरि और भी इहां विस्तार करि विचार है सो देवागमस्तोत्रका अलंकार जो अष्टसहस्री ताविषैं है तातैं इहां विस्तार न कीजिये है। बहुरि समस्त भेदनिकै विवर्त्तपणां कह्या, तहां एकरूपकरि अन्वयपणां हेतु है सो अन्वय करनेंवाला अर अन्वीयमान कहिये जाका अन्वय करिये सो वस्तु इनि दोऊनिकरि अविनाभावीपणांकरि पुरुषाद्वैतकूं निषेधै है यातैं अपनां इष्ट जो अद्वैतब्रह्म ताका विघातकारीपणांतैं विरुद्ध है। बहुरि अन्वितपणां है सो एक हेतुक जे घट आदिकविषैं अर अनेक हेतुक जे स्तंभ कुंभ कमल आदिविषैं दोऊविषैं पाइये हैं तातैं अनैकान्तिक हैं। बहुरि पूछिये—जो यह अद्वैत ब्रह्म हैं सो जगतनामा कार्य कौन अर्थि करै है, तहां च्यार पक्ष हैं;—एक तौ अन्यका प्रेरया करै, दूसरैं कृपाके वशतैं करै, तीसरां क्रीडाके वशतैं करै, चौथे स्वभावहीतैं करै। तहां जो कहै—अन्यका प्रेरया करै है तौ स्वाधीनपणांकी हानि भई अर द्वैतका प्रसंग भया। बहुरि कृपाके वशतैं करनां कहै तौ कृपाविषैं दुःखिनिका तौ न करनेंका प्रसंग आवै जगतमैं दुःखी हैं ही अर तिसकैं कृपाका करणां तौ परके उपकार करनेंतैं बणैं, बहुरि सृष्टि रचे पहली प्राणी है नांही तिनिकी कृपाकै अर्थि नवीन सृष्टि रचै तौ कृपाकै अर्थि रचनां युक्त होय, बहुरि कृपाविषैं तत्पर होय ताकैं प्रलयका विधान युक्त होय नांही,

बहुरि प्रलय तौ प्राणीनिके अदृष्ट जो पाप ताके वशतैं होय है तौ ऐसैं तौ स्वाधीनपणांकी हानि होय है, कृपाविषैं तत्पर होय ताकैं पीड़ाका करनां अर अदृष्ट-पाप ताकी अपेक्षाका अयोग है। बहुरि क्रीड़ाके वशतैं करनां कहै तौ क्रीड़ा अर्थि प्रवृति करनेंमैं प्रभुपणां नांही जैसैं बालक क्रीड़ा करनेंकूं उपाय गीन्दड़ी आदि बनावै तैसैं ठहरै यामैं कहा बड़ाई, बहुरि क्रीड़ाका उपाय बनाया जो जगत अर याकरि साध्य जो सुख ताकी एक काल उत्पत्ति भई चाहिये, जातैं समर्थ कारणके होतैं कार्यका अवश्य होनां होय, जो समर्थ कारण न होय तौ अनुक्रमतैं भी तिसतैं कार्य न होय, जैसैं दीपक है सो काजलका पाड़नां तेल शोषणां बातीका बालनां प्रकाश करनां एककाल करै है यह सामर्थ्य है, अर ऐसैं न होय तौ अनुक्रमकरि भी ये कार्य न होय। बहुरि कहै—ब्रह्म स्वभावहीतैं जगतकूं रचै है जैसैं अग्नि स्वभावहीतैं बालै है पवन स्वभावहीतैं चलै है ता यह कहनां भी अज्ञानका वचन है, पहले कहे जे दोष ते मिटैं नांही, सर्व दोष आवै हैं, सो ही दिखावै है ताका प्रयोग—समस्त अनुक्रमतैं उपजता जो विवर्त्तका समूह सो एककाल उपजै जातैं जिस सहकारी कारणकी अपेक्षा कीजिये सो एककाल उपजै जातैं जिस सहकारी कारणकी अपेक्षा कीजिये सो भी ब्रह्महीकरि साधनें योग्य है ताका एककाल संभव है। भावार्थ—सर्व ही ब्रह्मके कार्य मानिये हैं, तहां ब्रह्म तौ समर्थकारण है ही बहुरि सहकारी चाहै तौ सो भी तिसहीका किया होय तब सर्वजगत एककाल उपज्या चाहिये, बहुरि अग्नि पवनका उदाहरण दिया ताकै भी विषमपणां है, कोई कालविषैं स्वहेतु जो काष्टादिक ताकरि उपज्या अग्निके दहन करनेंकी शक्ति स्वरूपपणांकी प्राप्ति मर्याद रूप है जिस देशकालमैं भया तेता ही है, अर ब्रह्मविषैं तौ नित्यपणां सर्वव्यापकपणां

अर सर्वसामर्थ्यस्वरूप एकस्वभावरूप कारणकरि उपजावापणां है सो देशकालका न्यारा न्यारा नियमरूप कार्यनिविषैं बणैं नांही। सो ऐसैं ब्रह्मकी असिद्धि होतैं वेदनिमैं ताकी सुप्त-अवस्थाका कहनां अर ताकी जागृत-अवस्थाका कहना अर तिस परमपुरुषनामा महाभूत ताका निश्वास वेद है ऐसा कहनां आकाशके कमलकी सुगंधका वर्णन सारिखा है, सो अग्राह्य पदार्थ है विषय जाका तिस स्वरूप होनेंतैं आदरनें योग्य नांही है, असत्यार्थकूं कौन आदरै। बहुरि जो ब्रह्मके साधनेविषैं आगम प्रमाण कह्या " सर्वं वै खल्विदं ब्रह्म " इत्यादि "बहुरि ऊर्णनाभ" इत्यादि सो सर्व ही कहे विधानकरि अद्वैतका विरोधी हैं यातैं अवकाश नांही पावै है। बहुरि आगमकूं अपौरुषेय कहै है सो बणैं नांही याका विस्तार आगैं कहसी तातैं पुरुषोत्तम परमब्रह्म कहै सो भी परीक्षामैं नांही आवै है।

ऐसैं मुख्यप्रत्यक्षका वर्णन किया, तहां सर्वज्ञकी सिद्धि यथार्थ करी, अन्यवादीकी बाधाका परिहार किया।

इहां टीकाकारकृत श्लोक है;—

प्रत्यक्षेतरभेदभिन्नममलं मानं द्विधैवोदितं
देवैर्दीप्तगुणैर्विचार्य विधिवत्संख्याततेः संग्रहात्।
मानानामिति तद्दिगप्यभिहितं श्रीरत्ननंद्याव्हयै-
स्तद्व्याख्यानमदो विशुद्धधिषणैर्बोद्धव्यमव्याहतम् ॥१॥

याका अर्थ—'देवैः' कहिये श्रीअकलंकदेव आचार्य जैसे विधि जिनागममैं है तैसे विचारिकरि अर प्रत्यक्ष अर परोक्ष भेदकरि भिन्न निर्दोषप्रमाण दोय प्रकार ही कह्या, कैसैं है आचार्य? दीप्त कहिये देदीप्यमान है सम्यग्दर्शन आदि गुण जिनिमैं बहुरि प्रमाणनिकी

संख्याकी पंक्तिका संग्रह कहिये संक्षेपतैं तिनि प्रमाणनिका उपदेश श्रीमाणिक्यनंदिनाम आचार्य भी ऐसै ही करया, बहुरि तिनिका व्याख्यान यहु मैं अनन्तवीर्य आचार्यनैं किया है सो विशुद्धबुद्धीनिके माननें योग्य है कैसा है व्याख्यान? अव्याहत कहिये बाधारहित है।

बहुरि श्लोक—

मुख्यसंव्यवहाराभ्यां प्रत्यक्षमुपदर्शितम्।
देवोक्तमुपजीवद्भिः सूरिभिर्ज्ञापितं मया॥ २॥

याका अर्थ—प्रत्यक्ष प्रमाण मुख्य-संव्यहारके भेदकरि दोय प्रकार अकलंकदेवजीनैं कह्या सो ही माणिक्यनंदिजीनैं दिखाया सो ही मैं अनंतवीर्यनैं जनाया है॥ १२॥

सवैया तेईसा।

श्री अकलंक मुनीश भजो परतक्ष परोक्ष प्रमाण जु दोउ।
ता मधि हू परतक्ष कह्यो व्यवहार यथारथ भेद है सोउ॥
माणिकनंदि लयो अनुसार कह्यो तसु आगम जानहु कोउ।
वृत्ति रची जु अनंत सुवीरजि देशकथामय मैं सब जोउ॥

ऐसैं परीक्षामुखनाम प्रकरणकी लघुवृत्तिकी वचनिकाविषैं द्वितीय समुद्देश समाप्त भया।

तृतीय-समुद्देश ।

(३)

आगैं अब प्रत्यक्ष-परोक्षभेदकरि प्रमाण दोय प्रकार कह्या ताविषैं प्रथमभेद जो प्रत्यक्ष ताका व्याख्यानकरि अर परोक्ष प्रमाणकूं कहै हैं;—

परोक्षमितरत् ॥ १ ॥

याका अर्थ—प्रत्यक्षतैं इतरत् कहिये अन्य विलक्षण सो परोक्ष है। इहां कह्या जो प्रत्यक्ष ताका प्रतिपक्षीकूं इतर शब्द कहै है तातैं तिस प्रत्यक्षतैं इतरत् ऐसा पाइये सो परोक्ष प्रमाण है । प्रत्यक्षका स्वरूप विशद कह्या था इहां अविशद ग्रहण करनां ॥१॥

आगैं याके सामग्री अर स्वरूपभेद कहते संते सूत्र कहैं हैं;—

प्रत्यक्षादिनिमित्तं स्मृतिप्रत्यभिज्ञानतर्कानुमानागम-भेदम् ॥ २ ॥

याका अर्थ—प्रत्यक्ष आदि प्रमाण हैं निमित्त जाकूं ऐसा परोक्ष प्रमाण है ताके पांच भेद हैं, स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान आगम ऐसैं । तहां प्रत्यक्ष अर आदिशब्दकरि परोक्ष ग्रहण करनां ये दोऊ निमित्त है—उत्पत्तिकूं कारण हैं सो तौ यथावसर निरूपण करियेगा। बहुरि प्रत्यक्ष आदि हैं निमित्त जाकूं ऐसा समास करनां। स्मृति आदि-विषैं द्वन्द्वसमास करनां ॥ २ ॥

आगैं अनुक्रममैं आया जो पहलैं स्मृति ताहि दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

संस्कारोद्बोधनिबन्धना तदित्याकारा स्मृतिः ॥३॥

याका अर्थ—संस्कारका जो उद्बोध कहिये प्रगट होना सो है निबंधन कहिये कारण जाकूं, बहुरि तत् कहिये पूर्वे अनुभवमैं आया था ताका 'सो है' ऐसा यादि आवनां ऐसा जाका आकार है ऐसी स्मृति है। इहां 'भवति' ऐसी क्रिया सूत्रमैं वाक्यशेषतैं लेनीं ॥ ३ ॥

आगैं याका उदाहरण कहै हैं;—

स देवदत्तो यथा ॥४॥

याका अर्थ—जैसैं पहलें काहू पुरुषकूं देख्या था सो वर्त्तमानमैं मनविषैं यादि आया जो 'सो फलाणां पुरुष' ऐसा स्मृति प्रमाण है ॥ ४ ॥

आगैं प्रत्यभिज्ञानप्रमाण कहनेंका अवसर है सो कहैं हैं;—

दर्शनस्मरणकारणकं सङ्कलनं प्रत्यभिज्ञानं तदेवेदं तत्सदृशं तद्विलक्षणं तत्प्रतियोगीत्यादि ॥ ५ ॥

याका अर्थ—वर्त्तमानका दर्शन—पूर्वे देख्या ताका स्मरण ये दोन्यों है कारण जाकूं ऐसा जोड़रूप ज्ञान ताकूं प्रत्यभिज्ञान कहिये। सो च्यार प्रकार है—वर्त्तमानमैं काहू वस्तुकूं देखिकरि अर ताकूं पूर्वे देख्या था ताकूं यादिकरि ऐसा जान्यां जो 'यह सो ही है' ऐसा तो एकत्वप्रत्यभिज्ञान है। बहुरि वर्त्तमानमैं देख्या तिस सारिखा पूर्वे देख्या था ताकूं जान्या जो 'यह तिस सारिखा है' सो सादृश्य प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि वर्त्तमानमैं काहूकूं देखिकरि तिसतैं विलक्षण पूर्वे देख्या था ताकूं यादिकरि तिसतैं विलक्षण जान्यां जो 'यह तिसतैं विलक्षण है' सो तद्विलक्षण प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पूर्वे देख्या था तिसका वर्त्तमानमैं प्रतियोगी कहिये जिसतैं अवश्य जोड़ मिली जाय ऐसा अन्यपदार्थकूं देखि

जान्यां जो 'यह तिसका प्रतियोगी है' सो तत्प्रतियोगी प्रत्यभिज्ञान है। आदिशब्दतैं और भी पूर्वापरका जोड़रूप ज्ञान होय सो जाननां। इहां दर्शन-स्मरणकारणपणांतैं सादृश्यादिक जाका विषय होय सो भी प्रत्यभिज्ञान ही कह्या है। बहुरि जिनिके मतमैं सादृश्यविषयकूं उपमान-नामा जुदा प्रमाण कह्या है तिनिके मतमैं वैलक्षण्यादिक जाका विषय ऐसा ज्ञान भी अन्य प्रमाण ठहरैगा, सो ही कह्या है, ताका श्लोकका अर्थ;—प्रसिद्ध पदार्थके समान धर्मपणांतैं साध्यका साधनां सो उपमानप्रमाण मानिये तौ तिसके असमानविलक्षणधर्मतैं साध्य साधनां सो प्रमाण कहा कहिये, किछू कह्या चाहिये। बहुरि जहां संज्ञा जो नामरूप पदार्थ ताका प्रतिपादन जो संज्ञा पहले सुनी थी तातैं जोड़रूप प्रतिपादन करिये सो प्रमाण न्यारा कहनां, ऐसैं उपमानकूं न्यारा प्रमाण मानें दोष आवै है। बहुरि यह यातैं अल्प है, यह यातैं बहुत है, यह यातैं दूर है, यह यातैं निकट है, यह यातैं ऊँचा है, यह यातैं नीचा है, बहुरि इनके निषेध यह यातैं अल्प नांही है इत्यादि, ऐसैं प्रत्यक्ष देख्या पदार्थविषैं परस्पर अपेक्षातैं अन्यभावका निश्चय होय है सो ये अन्य प्रमाण ठहरै तब अपने इष्ट जो प्रमाणकी संख्या ताका विघटन होय है। तातैं उपमान प्रमाण न्यारा माननां युक्त नांही ॥५॥

आगैं इनि प्रत्यभिज्ञानका भेदनिका अनुक्रमकरि उदाहरण दिखावता संता सूत्र कहैं हैं;—

१—तथा चोक्तम्—

उपमानं प्रसिद्धार्थसाधर्म्यात्साध्यसाधनम्।
तद्वैधर्म्यात्प्रमाणं किं स्यात्संज्ञिप्रतिपादनम् ॥ १ ॥
इदमल्पं महद्दूरमासन्नं प्रांशु नेति वा।
व्यपेक्षातः समक्षेऽर्थे विकल्पः साधनान्तरम् ॥ २ ॥

यथा स एवायं देवदत्तः, गोसदृशो गवयः, गोविलक्षणो महिषः, इदमस्माद्दूरं, वृक्षोऽयमित्यादि ॥६॥

याका अर्थ––जैसैं काहू पुरुषकूं देखिकरि कहै 'यह पहले देख्या था सो ही पुरुष है' यह तौ एकत्वप्रत्यभिज्ञानका उदाहरण भया। बहुरि काहूनैं वनविषैं गवयनाम तिर्यंच प्राणी देखिकरि जानीं 'जो गऊ पहले देख्या था तिस सारिखा यह गवय है' यह सादृश्यप्रत्यभिज्ञानका उदाहरण है। बहुरि भैंसाकूं देखिकरि यह जान्यां 'जो पहले गऊ देख्या था तातैं विलक्षण यह भैंसा है' यह तद्विलक्षण प्रत्यभिज्ञानका उदाहरण है। बहुरि काहू वस्तुकूं निकट देखिकरि अन्य काहूकूं ऐसैं जान्यां 'जो यह यातैं दूर है' यह तत्प्रतियोगी प्रत्यभिज्ञानका उदाहरण है। बहुरि काहू वृक्षकूं देखिकरि वृक्षसामान्यकी संज्ञाकूं यादि करि जानैं 'जो यह वृक्ष है' यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि आदिशब्दकरि अन्यभी उदाहरण हैं–जैसैं पहले सुन्यां था तथा देख्या था जो जलका अर दूधका भिन्न करनैंवाला हंस होय है, बहुरि कहूं जल दूधकूं भिन्न करता देखि जान्यां जो 'यह हंस है' यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहली सुन्यां था जो छह पादका भ्रमर होय है, बहुरि छह पाद देखिकरि पहले सुण्यां ताकूं यादिकरि जाण्यां जो 'यह भ्रमर है' यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहले सुण्यां था जो सात पान जाकै एकलगमैं होय सो

१–**पयोऽम्बुभेदी हंसः स्यात् षट्पादैर्भ्रमरः स्मृतः।**
सप्तपर्णैस्तु तत्वज्ञैर्विज्ञेयो विषमच्छदः ॥ १ ॥
पंचवर्णं भवेद्रत्नं मेचकाख्यं पृथुस्तनी।
युवतिश्चैकशृंगोऽपि गण्डकः परिकीर्तितः ॥ २ ॥
शरभोऽप्यष्टभिः पादैः सिंहश्चारुसटान्वितः ॥ $\frac{1}{3}$ ॥

विषमच्छद वृक्ष होय तब सात पत्र देख पहले सुण्यां ताकूं यादकरि जान्यां जो यह 'विषमच्छद है' भीमसेनी कर्पूरकी उपजावनेंवाली जो वेलि ताकूं भी विषमच्छद कहैं हैं, यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पहले सुण्यां था जो पंचवर्णका मेचकनामा रत्न होय है तब कहूं पंच-वर्णका देखकरि पहले सुण्यां ताकूं यादिकरि जानैं 'यह मेचकनाम रत्न है, यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहले सुनीं थी जो जाके कुच बड़े भारे विस्तारसहित होय सो स्त्री होय है पीछैं भारे स्तन देखि पहले सुनींकूं यादकरि जानैं जो 'यह स्त्री है' यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहले सुन्यां था जो जाकै एक सींग खग होय सो गैंडा होय है पीछैं एक सींग देखि पहलेकूं यादकरि जाण्यां जो 'यह गैंडा है' यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पहले सुन्यां था जो जाकै आठ पग होय सो शरभ होय है पीछैं आठ पग देखि पहले सुनेंकूं यादिकरि जानीं जो 'यह शरभ है' शरभ ऐसा नाम अष्टापदका है यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पहले जान्यां था जो जाकै सुन्दर मस्तकपरि सटा कहिये केश-निकी लटी बहुत होय सो सिंह होय है पीछैं सटाकूं देखिकरि पहले जाण्यांकूं यादकरि जानैं 'यह सिंह है' यह भी प्रत्यभिज्ञान है। ऐसैं इनिकूं आदि देकरि ये उदाहरण हैं। इनिके नामके शब्द सुनि बहुरि तैसा ही हंस आदिकूं देखिकरि पहले सुनेंकूं यादिकरि तैसैं ही प्रतीति करै तब तिनिका संकलनरूप जोड़का ज्ञान भया सो प्रत्यभिज्ञान कह्या है जातैं इनिमैं देखनां अर याद करनां ये दोऊ कारण सर्वमैं समान हैं। बहुरि अन्यमतीनिकै ये न्यारे प्रमाण ठहरैं हैं जातैं उपमानप्रमाणविषैं इनिका अन्तर्भाव नांहीं होय है तब प्रमाणकी संख्या बिगड़ै है ॥६॥

आगैं ऊह कहिये तर्क प्रमाणके कहनेंका अवसर पाया है ताकूं कहैं हैं;—

उपलंभानुपलंभनिमित्तं व्याप्तिज्ञानमूह इदमस्मिन् सत्येव भवत्यसति न भवत्येवेति च ॥ ७ ॥

याका अर्थ—उपलंभ तौ प्राप्ति अनुपलंभ अप्राप्ति ये दोऊ हैं निमित्त जाकूं ऐसा व्याप्तिका ज्ञान सो ऊह कहिये तर्कप्रमाण है। तहां यह याकै होतैं संतैं ही होय ऐसा तौ अन्वय, बहुरि यह न होय तौ नहीं होय ऐसा व्यतिरेक, ऐसैं दोऊनितैं व्याप्तिज्ञान है। इहां उपलंभ तौ प्रमाणमात्रका ग्रहण करनां। जो प्रत्यक्षहीकूं उपलंभ शब्दकरि ग्रहण कीजिये तौ अनुमानके विषय जे साधन तिनिविषैं व्याप्तिका ज्ञान न होय। इहां कोई कहै—व्याप्ति तौ सर्वोपसंहारवती है सर्व क्षेत्र-कालका संग्रहकरि प्रतीति कीजिये है सो अतीन्द्रिय ही साध्य होय अर ताका साधन भी अतीन्द्रिय होय तौ तिस साध्यकरि साधनकै व्याप्ति कैसैं जानी जाय? ताका समाधान—जो ऐसैं नांहीं है, जैसैं प्रत्यक्षके विषय साध्य-साधन होय तिनिविषैं व्याप्ति जानिये है तैसैं ही अनुमानके विषय साध्य-साधनकैविषैं भी व्याप्ति जाननेंका अविरोध है। जातैं व्याप्तिका ज्ञान जो तर्क ताकै परोक्षपणां मानिये है ॥ ७ ॥

इहां याका उदाहरण कहैं हैं;—

यथाऽग्नावेव धूमस्तदभावे न भवत्येवेति च ॥ ८ ॥

याका अर्थ—जैसैं अग्निके होतैं ही धूम होय अग्निके अभाव होतैं धूम नांही ही होय ऐसैं। इहां अतीन्द्रिय साध्यसाधनका उदाहरण ऐसा—जो जैसैं सूर्यकै गमनशक्तिसहितपणां साध्य करै अर गतिमानपणांकूं हेतु करै सो ये दोऊ ही अतीन्द्रिय हैं—सूर्यकी गमनशक्ति दीखै नांही अर चलता भी दीखै नांही सो यह आगमगम्य है। बहुरि

याका समर्थन यह—जो जब दूरि देश जाय तब जानिये चालै है, ऐसैं अनुमान दृढ़ होय है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां ॥ ८ ॥

आगैं अनुमान अनुक्रममैं आया ताका लक्षण कहैं हैं;—

साधनात् साध्यविज्ञानमनुमानम् ॥ ९ ॥

याका अर्थ—साधन कहिये हेतु तातैं साध्य कहिये साधनें योग्य जो वस्तु ताका विज्ञान होय सो अनुमान प्रमाण है ॥ ९ ॥

आगैं साधनका लक्षण कहैं हैं;—

साध्याविनाभावित्वेन निश्चितो हेतुः ॥ १० ॥

याका अर्थ—साध्यतैं अविनाभावीपणांकरि जो निश्चय किया होय सो हेतु कहिये। इहां बौद्धमती कहै है—जो हेतुका लक्षण तीनरूपपणां ही है ताके होतैं ही हेतुकै असिद्ध आदि दोपका परिहार बणैं है, सो ही कहिये हैं;—प्रथम तौ हेतु पक्षका धर्म होय तब असिद्धपणां दोपका परिहार होय तातैं ताके अर्थि हेतुकूं पक्षधर्मरूप कहिये। बहुरि सपक्षविषैं जाका सत्व होय सो विरुद्धपणांका निराकरणकै अर्थि है। बहुरि विपक्षविषैं जाका असत्व होय सो अनैकान्तिकके निषेधकै अर्थि है, ऐसैं तीनरूप हेतु कहै, सो ही कहिये है—श्लोकका अर्थ;—दिग्नागनामा बौद्धमतका आचार्य हेतुकै तीन रूपनिविषैं निर्णय वर्णन किया है जातैं ये तीन रूप असिद्ध विरुद्ध व्यभिचारी जे हेतु सदूषण तिनिके प्रतिपक्षी हैं। ताका समाधान आचार्य करै है;—जो यह कहनां अयुक्त है जातैं अविनाभावका नियमका निश्चय होतैं तीनूं दोपनिका परिहार बणैं है, अविनाभाव है सो साध्यविनां न बणनां है। इस अ-

१—**हेतोस्त्रिष्वेपि रूपेषु निर्णयस्तेन वर्णितः।**
असिद्धविपरीतार्थव्यभिचारिविपक्षतः ॥ १ ॥

विनाभावपणाकूं ही अन्यथानुपपन्नपणां ऐसा नाम कहिये, सो यहु अन्यथानुपपन्नपणां असिद्ध हेतुकै संभवै नांही। जातैं ऐसा कह्या है जो अन्यथानुपपन्नपणां असिद्धकै नांही सिद्ध होय है। बहुरि विरुद्धहेतुकै भी तिसके लक्षणकी उपपपत्ति नांही बणै है जातैं साध्यतैं विपरीत अविनाभावस्वभावरूपविषैं साध्यतैं अविनाभावनियमलक्षणकी अनुपपत्ति है जातैं दोऊनिकै विरोध है। बहुरि व्यभिचारी हेतुविषैं भी तिस प्रकृत कहिये कह्या लक्षणका अवकाश नांही है जातैं विरुद्धविषैं हेतु सो ही इहां जाननां। तातैं हेतुका स्वरूप अन्यथानुपपत्ति ही श्रेष्ठ है अर तीन रूपता श्रेष्ठ नांही है। जातैं तिस त्रिरूपताकै होतैं भी यथोक्तलक्षणका अभाव होतैं हेतुकै साध्य प्रति गमकपणां नांही देखिये है, सो ही कहिये है—जैसैं काहूकै पहले पांच पुत्र भये थे ते श्याम भये थे तिनिकूं देखिकरि तिनिकी ज्यों ही ताकी स्त्रीकै गर्भविषै तिष्ठताकै भी तिसपुत्रपणां नामा हेतुतैं श्यामपणां साधनेमैं तीनरूपपणां तौ संभवै है—जातैं गर्भमैं तिष्ठताकै तिसके पुत्रपणां है यह तौ पक्षधर्मपणां भया। बहुरि सपक्ष अन्य पुत्रनिमैं तिसके पुत्रपणां है ही। बहुरि अन्यके पुत्रमैं गौरपणां है तिनि विपक्षनितैं व्यावृत्ति है ही। ऐसैं तीनरूप होतैं भी साध्य जो श्यामपणां तिस प्रति गमकपणां नांही, गर्भमैं तिष्ठता गौर भी होय तौ बाधक कहा। इहां बौद्ध कहै—जो इस हेतुमैं विपक्षतैं व्यावृत्ति नियमरूप नांही दीखै है तातैं गमकपणां नांही? ताकूं कहिये—जो यह कहना भी मुग्धका विलास है, जातैं तिस विपक्षतैं व्यावृत्ति कहिये न्यारापणांकै ही अविनाभावरूपपणां है, अन्य दोयरूपका सद्भाव होय अरु विपक्षतैं व्यावृत्ति न होय तौ हेतुकै अपने साध्यकी सिद्धि प्रति गमकपणांकी अनिष्टि होतैं सो विपक्षतैं व्यवृत्ति ही हेतुका निर्बाध लक्षण करनां।

जातैं ताका सद्भाव होतैं अन्य दोयरूपकी अपेक्षा विना ही साध्य प्रति गमकपणां बनै है। इहां उदाहरण—जैसैं अद्वैतवादीकै प्रमाण है जातैं अपनें इष्टका साधन अनिष्टका दूषणकी अन्यथा अप्राप्ति है प्रमाण विना साधन-दूषण बणै नांही। इस हेतुमैं पक्षधर्मपणां नांही है सपक्षविषैं अन्वय भी नांही है, केवल एक अविनाभावमात्रहीकरि साध्य प्रति गमकपणांकी प्रतीति है साध्यकूं साधै है। बहुरि बौद्धादिकनैं और भी कही है—जो पक्षधर्मपणांका अभाव होतैं भी हेतुकूं गमक कहिये तौ काकके कृष्णपणांतैं यह प्रासाद कहिये महल धवल है ऐसैं हेतुकै भी गमकपणां आवै है, भावार्थ—कोई श्वेत महल था तापरि काक बैठा था तहां काहूनैं कह्या जो महलकूं धवल कहिये है सो काकके कालापणांकी अपक्षातैं साधिये है, ऐसैं कहे काकका कृष्णपणां पक्ष जो प्रासाद ताका धर्म नांही अर पक्षधर्म विनां हेतुकै गमकपणां नांही। ताका समाधान आचार्य करै है—जो यह कहनां भी इस ही कथनकरि निराकरण किया जातैं अन्यथानुपपत्तिका बलहीकरि पक्षधर्मरहित हेतुकै भी साधुपणां मान्या है, सो इस तेरे प्रयोगमैं अन्यथानुपपत्ति नांही है। तातैं हेतुका स्वरूप अविनाभाव ही प्रधान है जाकूं अन्यथानुपपत्ति भी कहिये सो ही अंगीकार करनां, जातैं अविनाभावकूं होतैं तीनरूपपणां न होतैं भी हेतुकै साध्य प्रति गमकत्वका दर्शन है। तातैं तीनरूपपणां हेतुका लक्षण नांही है जातैं याकै अव्यापकपणां है, सो ही कहिये है—बौद्ध आप मानै है जो जहां सर्व पदार्थनिविषैं क्षणिकपणां साध्य थापै है ताका सत्त्व आदि साधन थापै है ताका सपक्ष नांही है सर्वहीकूं साधतैं (?) पक्षमैं सर्व आय गये सपक्ष न रह्या तब तहां त्रिरूपपणांकी हानि भई तौऊ गमकपणां मानैं है। बहुरि इस ही कथनकरि नैयायिक हेतुकै पंचरूपपणां मानैं है सो भी नांही बणैं है ऐसैं कह्या।

जाननां। पक्षधर्मपणां बहुरि सपक्षसत्वपणां सो तौ अन्वयरूप अर विप-क्षतैं व्यावृत्तिपणां सो व्यतिरेकरूप, अर अबाधितविषयपणां, असत्प्रति-पक्षपणां ऐसैं पांच लक्षण हैं। तिनिकै भी अविनाभावहीका विस्तारपणां है। पंचरूपपणां अविनाभावहीका विशेष है। जो बाधितविषय है सो जाका विषय साध्य ही बाधासहित होय ताकै अविनाभावका अयोग है जाकै प्रतिपक्षीसहितपणां होय ताकी ज्यों ऐसैं जाननां। बहुरि साध्या-भास जाका विषय ताकै असम्यक् हेतुपणां है—समीचीनहेतुपणां नांही जातैं जैसा पक्ष कह्या तैसा ताका विषयका अभाव है। तिस ही दोष-करि हेतु दोषसहित है। यातैं यह निश्चय भया जो साध्यतैं अविना-भावीपणांकरि निश्चित होय सो ही हेतु है ॥ १० ॥

आगैं अविनाभावका भेद दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

सहक्रमभावनियमोऽविनाभावः ॥ ११ ॥

याका अर्थ—साध्य साधनकै लार एककाल होनेंका नियम सो तौ सहभावनियम कहिये, बहुरि जहां कालभेदकरि साध्य साधन अनुक्रमतैं होय सो क्रमभावनियम है। ऐसैं अविनाभाव नियम दोय प्रकार है ॥ ११ ॥

आगैं सहभावनियमका विषय दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

सहचारिणोर्व्याप्यव्यापकयोश्च सहभावः ॥ १२ ॥

याका अर्थ—सहचारीनिकै जैसैं रूप रसकै एक वस्तुविषै युग-पत् रहनेंका नियम है। बहुरि व्याप्यव्यापकपणांकै जैसैं वृक्षपणांकै अर शीसूंपणांकै व्याप्यव्यापकभाव नियम है। ऐसैं सूत्रविषै सप्तमीविभक्ति करि विषय दिखाया है सो सहभावनियम जाननां ॥ १२ ॥

आगैं क्रमभावनियमका विषय दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

पूर्वोत्तरचारिणोः कार्यकारणयोश्च क्रमभावः ॥१३॥

याका अर्थ—पूर्वोत्तरचारी कहिये पहली पीछैं होय ते कृतिका नक्षत्रका उदय अर रोहिणीका उदय पूर्वोत्तरचारी है तिनिकै क्रमभाव नियम है। बहुरि कार्यकारणकै जैसैं धूमकै अर अग्निकै कार्यकारणभाव है तिनिकै क्रमभाव नियम है ॥ १३ ॥

आगैं इस प्रकारका अविनाभावका ग्रहण कैसे प्रमाणकरि होय है तहां कहै है प्रत्यक्ष प्रमाणकरि तौ ग्रहण नांही जातैं प्रत्यक्षका विषय तौ निकटवर्ती वस्तु है। बहुरि अनुमानकरि भी ग्रहण नांही जातैं प्रकृत अनुमानकरि ग्रहण मानिये तौ इतरेतराश्रय दूषण आवै अर अन्य अनुमानकरि मानिये तौ अनवस्था दूषण आवै। बहुरि आगम आदिका भी यह अविनाभाव विषय नांही जातैं तिनिका न्यारा न्यारा विषय है सो प्रसिद्ध है। तातैं अविनाभावकी काहू प्रमाणकरि प्रतिपत्ति नांही, ऐसी आशंका होतैं ताका ग्राहक प्रमाणका सूत्र कहैं हैं;—

तर्कात्तन्निर्णयः ॥ १४ ॥

याका अर्थ—पूर्वै कह्या है लक्षण जाका ऐसा जो तर्क प्रमाण ताका द्वितीयनाम ऊह है तातैं तिस अविनाभावका निर्णय है—यह अविनाभाव ताका विषय है ॥१४॥

आगैं अब साध्यका लक्षण कहैं हैं;—

इष्टमबाधितमसिद्धं साध्यम् ॥ १५ ॥

याका अर्थ—जो साधनें योग्य होय सो साध्य कहिये, तिस साध्यके तीन विशेषण हैं;—साधनेंवालेकै इष्ट होय जाकूं साधनेंका अभिप्राय होय ऐसा, बहुरि जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणकरि बाध्या न जाय ऐसा, बहुरि जो पहले सिद्ध न किया होय ऐसा सो साध्य है।

इहां अन्यवादी दूषण कहै है—जो इष्टकूं साध्य कहे आसन शयन भोजन यान मैथुन इत्यादिक भी इष्ट हैं ते साध्य ठहरै हैं? ताकूं आचार्य कहै हैं—ऐसी कहनेंवाले अतिमूर्ख हैं जातैं विना अवसर कहनेंवालाकै अतिप्रलापीपणां है, इहां तौ साधनका अधिकार किया है जो साधनका विषय होय ताकी अपेक्षा इहां इष्ट कह्या है ॥१५॥

आगैं आपनैं कह्या जो साध्यका लक्षण ताके विशेषणनिकूं सफल करते संते प्रथम ही असिद्ध विशेषणकूं दृढ़ करनेकूं सूत्र कहैं हैं;—

सन्दिग्धविपर्यस्ताव्युत्पन्नानां साध्यत्वं यथा स्यादित्यसिद्धपदम् ॥ १६ ॥

याका अर्थ—सन्दिग्ध विपर्यस्त अव्युत्पन्न इनिकै साध्यपणां जैसैं होय इस हेतुतैं साध्यका असिद्धपदरूप विशेषण है। तहां काहू क्षेत्रमैं अंधकार आदिके निमित्ततैं खड़ा पदार्थ देखि विचारै जो यह स्थाणु है कि पुरुष है? ताका निश्चय न होय ज्ञान दोऊ तरफ स्पर्शता रहै ऐसैं संशयकरि व्याप्त जो वस्तु सो तो संदिग्ध है। बहुरि सत्यार्थतैं विपरीत वस्तुका निश्चय करनेंवाला जो विपर्यय ज्ञान ताका विषयभूत जो वस्तु जैसैं सीपविषैं रूपेका ज्ञान तहां रूपा आदि विपर्यस्त वस्तु है। बहुरि नाम जाति संख्या आदि विशेषनिका ज्ञान विना जो अनिर्णीत विषयरूप वस्तु निश्चय विनां ग्रहण करनां जाका होय सो वस्तु अव्युत्पन्न है यह अनध्यवसायज्ञानका विषय जाननां। इनि तीननिकै साध्यपणां कहनेंके अर्थि असिद्धपदका ग्रहण है, ऐसा अर्थ जाननां॥१६॥

आगैं अब इष्ट अर अबाधित इनि दोऊ विशेषणनिका सफलपणां दिखावते संते सूत्र कहै हैं;—

अनिष्टाध्यक्षादिबाधितयोः साध्यत्वं मा भूदितीष्टाबाधितवचनम् ॥ १७॥

याका अर्थ—अनिष्टकै अर प्रत्यक्षादि प्रमाणकरि बाधितकै साध्यपणां न होय इस हेतुतैं इष्ट अर अबाधित ऐसा वचन है। अनिष्ट तौ जैसैं मीमांसककै शब्दकै अनित्यपणां है जातैं मीमांसक शब्दकूं नित्य मानें है सो अनित्य साधै तौ अनिष्ट होय। बहुरि शब्दकै अश्रावणपणां कहिये श्रोत्रके सुननेंमैं न आवनां साधै तौ प्रत्यक्षप्रमाणकरि बाधित होय आदिशब्दकरि अनुमान-आगम-लोक-स्ववचनकरि बाधित लेनें। इनिका उदाहरण अकिंचित्कर हेत्वाभासका निरूपण करसी तिसके अवसरमैं ग्रंथकार आप विस्तारकरि कहसी यातैं इहां न कहिये है ॥१७॥

इहां साध्यका असिद्धविशेषण तौ प्रतिवादी जो पीछैं उत्तर कहै ताहीकी अपेक्षाकरि है जातैं पहलैं पक्ष स्थापै ऐसा जो वादी ताकै प्रसिद्ध ही है, बहुरि इष्टपद है सो वादीकी अपेक्षा ही है ऐसा विशेष दिखावनेंकूं सूत्र कहै हैं;—

न चासिद्धवदिष्टं प्रतिवादिनः ॥ १८ ॥

याका अर्थ—जैसैं प्रतिवादीकी अपेक्षा असिद्धकूं साध्य कहिये है तैसैं ताकै इष्ट साध्य नांही है। इहां ऐसा प्रयोजन है—जो साध्यके सर्व ही विशेषण सर्वकी अपेक्षा नांही है कोई कोईकी अपेक्षा है कोई कोईकी अपेक्षा है। बहुरि असिद्धवत् ऐसा व्यतिरेककूं मुख्यकरि उदाहरण दिया है। जैसैं असिद्ध प्रतिवादीकी अपेक्षा है तैसैं इष्ट ताकी अपेक्षा नांही है ऐसा अर्थ है ॥ १८ ॥

आगैं यह काहेतैं कह्या ऐसैं पूछैं सूत्र कहै हैं; —

प्रत्यायनाय हीच्छा वक्तुरेव ॥ १९ ॥

याका अर्थ—परकूं प्रतीति उपजावनेंकूं इच्छा वक्ता ही की है तातैं इष्ट वादीहीकी अपेक्षा है। जो इच्छाका विषय ताकूं इष्ट कहिये ताकी परकूं प्रतीति कहनेंवाला ही उपजावै तातैं ताहीकी इच्छा कही ॥१९॥

आगैं पूछै है कि यह साध्य धर्म है कि इस साध्य धर्मकरि विशिष्ट धर्मी है? ऐसैं प्रश्न होतैं तिसका भेद दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

साध्यं धर्मः क्वचित्तद्विशिष्टो वा धर्मी ॥ २० ॥

याका अर्थ—धर्म है सो साध्य है, बहुरि कोई जायगां तिस साध्यधर्मकरि विशिष्ट धर्मी है सो साध्य है। जाकै आधार साध्य वस्तु होय सो धर्मी कहिये तिसकी अपेक्षा साध्यकूं धर्म कहिये। इहां ऐसा अर्थ है—जो व्याप्तिकालकी अपेक्षाकरि तौ साध्यनामा धर्म ही साध्य है, बहुरि कोई जायगां प्रयोगकालकी अपेक्षा तिस साध्यधर्मकरि विशिष्ट धर्मी साध्य है जातैं सूत्रके वाक्य हैं, ते उपस्कारसहित होय हैं, सूत्रमैं पद ऊपरतैं लाइये ताकूं उपस्कार कहिये सो इहां अपेक्षाका पद उपरतैं आया है। इहां भावार्थ ऐसा—जो धर्मीकै साध्यपणां तौ प्रयोग कालहीविषैं कोई ठिकानै है। जहां अनुमानके प्रतिज्ञा हेतु आदि अवयव वचनकरि कहिये ताकूं प्रयोग कहिये। अर जहां व्याप्ति जनाइये तहां साध्य धर्महीतैं जोड़िये है साधनकै साध्य धर्महीतैं है ॥ २० ॥

आगैं साध्यधर्मकरि विशिष्ट जो धर्मी तिसका नामान्तर कहिये अन्य नाम कहैं हैं;—

पक्ष इति यावत् ॥ २१ ॥

याका अर्थ—जाकै आधार साध्य होय सो धर्मी कहिये ताहीका दूसरा नाम पक्ष भी है। इहां प्रश्न—जो धर्मधर्मीका समुदाय सो पक्ष है ऐसा पक्षका स्वरूप पुरातन आचार्य अकलंक देव आदिकरि कह्या है सो इहां

धर्मीहीकूं पक्ष कह्या सो सिद्धान्तका विरोध कैसैं न भया ? ताका समाधान आचार्य करै है—जो ऐसैं नांही है जातैं साध्य जो धर्म ताके आधारपणांकरि विशेषितरूप किया जो धर्मी ताकूं पक्षवचनकरि कहतैं भी दोषका अवकाश नांही है। रचनाका विचित्रपणांमात्रकरि तात्पर्यका निराकरण नांही होय है तातैं सिद्धान्तका अविरोध है॥२१॥

इहां बौधमती कहै है धर्मीकूं पक्ष कह्या सो तौ होहु परंतु धर्मी है सो विकल्पबुद्धिकैविषैं वर्त्तमान ही है अर वस्तुस्वरूप नांही है जातैं " अनुमान अनुमेयका व्यवहार सर्व ही बुद्धिकरि कल्पिये है, बुद्धिकरि कल्पे जे धर्म धर्मी तिस न्यायकरि बाह्य ताका सत्व है कि नांही है ऐसी अपेक्षा नाहीं करै है" ऐसा हमारै कह्या है सो ताकै निराकरणके अर्थि आचार्य सूत्र कहैं हैं;—

प्रसिद्धो धर्मी ॥ २२ ॥

याका अर्थ—धर्मी है सो प्रसिद्ध है कल्पित ही नांही है इहां यह अर्थ है—जो बाह्य अर अन्तरंग पदार्थका नांही है आलंबनभाव जाकै ऐसी विकल्पबुद्धि है सो ही धर्मीकूं स्थापै है सो ऐसैं नांही है। जो धर्मी अवस्तुस्वरूप होय तौ तिसकै व्यापार जो साध्यसाधन ताकै भी वस्तुस्वरूपणां न बणैं जातैं अनुमानकी बुद्धिकै परंपराकरि भी वस्तुकी व्यवस्थाका कारणपणांका अयोग होय। तातैं विकल्पकरि अथवा अन्यप्रमाणकरि स्थापन किया जो पर्वत आदिक सो अनुमानका विषयस्वरूप होता संता धर्मीपणांकूं पावै है। ऐसा निश्चय भया जो धर्मी प्रसिद्ध है बहुरि तिसकी प्रसिद्धि है सो कोई विषैं तौ विकल्पतैं, कोई विषैं प्रमाणतैं है, कोई विषैं प्रमाण अर विकल्प दोऊनितैं है, ऐसैं एकांतकरि विकल्पविषैं ही ल्यायाकै अथवा प्रमाण प्रसिद्धहीकै धर्मीपणां नांही॥२२॥

आगैं मीमांसक कहै है—जो धर्मीकी विकल्पतैं प्रतिपत्ति होतैं तुमारे साध्य कहा है ऐसैं आशंका होतैं सूत्र कहै है;—

विकल्पसिद्धे तस्मिन् सत्तेतरे साध्ये ॥ २३ ॥

याका अर्थ—तिस धर्मीकूं विकल्पसिद्ध होतैं सत्ता अर इतर कहिये असत्ता दोऊ साध्य हैं। इहां सुनिर्णीत कहिये भलै प्रकार निश्चय किया जो असंभवद्बाधक प्रमाण ताका बलकरि तौ सत्ता साध्य है। बहुरि योग्य जो अनुपलब्धि ताका बलकरि असत्ता साध्य है। ऐसैं सत्ता असत्ता साध्य है ऐसा वाक्यशेष लेना ॥ २३ ॥

इहां उदाहरण कहै हैं:—

अस्ति सर्वज्ञो नास्ति खरविषाणम् ॥ २४ ॥

याका अर्थ—सर्वज्ञ है, इहां तो विकल्पसिद्ध जो सर्वज्ञ धर्मी ताविषैं सत्ता साध्य है। बहुरि खरविषाण नांही है, इहां गदहाके सींग विकल्पासिद्ध धर्मी है ताविषैं असत्ता साध्य है। या सूत्रका अर्थ सुगम है सो टीकाकार टीका न लिखी है।

इहां मीमांसक कहै है–जो असिद्ध है सत्ता जाकी ऐसा जो धर्मी ताविषैं सद्भाव अर अभाव अरु भावाभाव इनि तीनूंही धर्मनिकै असिद्ध विरुद्ध अनैकान्तिकपणां है तातैं अनुमानके विषयपणांका अयोग है तातैं सत्ता अर असत्ताकै साध्यपणां कैसैं बणै। सो ही कह्या है श्लोकका[1] अर्थ;—जो सत्ता साधिये है सो तहां हेतु भावका धर्म है तौ असिद्ध है, अर अभावका धर्म है तौ विरुद्ध है, दोऊका धर्म है तौ व्यभिचारी है सो ऐसी सत्ता कैसैं साधिये? ताका समाधान आचार्य करैं

---

१ **असिद्धो भावधर्मश्चेद् व्यभिचार्युभयाश्रितः।
विरुद्धो धर्मो भावस्य सा सत्ता साध्यते कथं ॥ १ ॥**

हैं;—जो यह कहनां अयुक्त है जातैं मानसप्रत्यक्षविषैं भावरूप ही धर्मीका प्राप्तपणां है । बहुरि कहै—तिस धर्मीकी सिद्धि मानसप्रत्यक्षमैं होतैं ताका सत्त्वभी आय गया तातैं अनुमान व्यर्थ है, सो ऐसैं नांही है—तिसका सत्व अंगीकार भया तौ ऊपर वादी धीटपणांतैं—प्रतिपक्षपणांतैं अंगीकार न करै तब तिसकूं सिद्ध करनेकूं अनुमानका सफलपणां है । बहुरि कहै—जो मानसप्रत्यक्षमैं आकाशका फूलकाभी सद्भावकी संभावनातैं अतिप्रसंग आवै? सो ऐसैं भी नांही है, जातैं आकाशके फूलका ज्ञानकै बाधक प्रतीतिकरि निराकरण भई है सत्ता जाकी ऐसा असत्वरूप वस्तु विषयपणांकरि ताकै मानसप्रत्यक्षाभासपणां है । बहुरि इहां कहै—जो ऐसैं होतैं घोडाकै सींग इत्यादिककै धर्मीपणां कैसैं बणैंगा? तौ ऐसा तर्क न करनां जातैं धर्मीका प्रयोगकालविषैं बाधक प्रत्ययका उदय नांही है तातैं धर्मीका सत्त्वकी संभावना है । बहुरि सर्वज्ञादिक धर्मीविषैं साधकप्रमाणका अभावपणांकरि सत्त्व प्रति संशय बतावै तौ संशय नांही है, सुनिश्चितासंभवद्बाधकप्रमाणपणांकरि जैसैं सुख आदिकै विषैं सत्त्वका निश्चय है तैसैं सत्त्वका निश्चय है, तहां संशयका अयोग है । सुनिश्चितासंभवद्बाधकप्रमाण जाकूं कहिये जहां भलै प्रकार निश्चय किया असंभवता बाधक प्रमाण होय, भावार्थ—बाधकप्रमाण निश्चयतैं न होय ॥ २४ ॥

आगैं प्रमाणसिद्ध अर उभयसिद्ध जो धर्मी तिनिविषैं साध्य कहा है ऐसी आशंका होतैं सूत्र कहैं हैं;—

प्रमाणोभयसिद्धे तु साध्यधर्मविशिष्टता ॥ २५ ॥

याका अर्थ—प्रमाणसिद्ध अर प्रमाणविकल्पसिद्ध इनि दोऊ धर्मी विषैं साध्य जो धर्म ताकरि विशिष्टता जो धर्मीपणां सो ही साध्य है ।

इहां पहले सूत्रमैं 'साध्ये' ऐसा द्विवचन है तौऊ अर्थके वशतैं इहां एकवचन ही संबंध करनां, साध्यधर्मविशिष्टता साध्या ऐसैं। बहुरि प्रमाण अर उभय कहिये प्रमाण विकल्प दोऊ ऐसैं दोय भांतिकरि सिद्ध जो धर्मी ताविषैं साध्य जो धर्म ताकरि विशिष्टता साध्य है। दोऊ प्रकारके धर्मीविषैं जो साध्यका पूर्वस्वरूप कह्या सो ही धर्म ताकरि सहितपणां साध्य है। जहां जैसा साध्य होय तैसाहीकरि युक्त धर्मी साध्य है। इहां यह अर्थ है—जो प्रमाणकरि प्राप्त भया भी वस्तु विशिष्टधर्मके आधारपणांकरि विवादमैं आवै सो साध्यपणांकूं नांही उलंघै, साध्य होय ही। ऐसैं ही प्रमाण विकल्प विषैं भी जोड़ि लेनां॥ २५॥

आगैं प्रमाणसिद्ध अरु उभयसिद्ध दोऊ धर्मी अनुक्रमकरि दिखावते संते सूत्र कहै हैं;—

अग्निमानयं प्रदेशः, परिणामी शब्द इति यथा ॥२६॥

याका अर्थ—यह प्रदेश अग्निसहित है यह तौ प्रत्यक्षप्रमाणसिद्ध धर्मी है, बहुरि शब्द है सो परिणामी है इहां शब्द धर्मी है सो उभयसिद्ध है जो शब्द श्रवणमैं आया सो तौ श्रवणप्रत्यक्ष प्रत्यक्षप्रमाणसिद्ध है अर अन्यदेशकालवर्त्ती शब्द विकल्पसिद्ध है। इहां अग्नि जहां साधिये है सो प्रदेश प्रत्यक्षप्रमाणकरि सिद्ध है, बहुरि शब्द है सो उभयसिद्ध है जातैं अल्पज्ञानवाले पुरुषनिकरि अनिश्चित दिशा–देश–कालविषैं व्याप्त जे सर्व शब्द ते निश्चय करनेंकूं समर्थ नांही हूजिये है तौऊ तिस प्रति अनुमानका निरर्थकपणां है, अनुमान तौ अल्पज्ञ ही करै है॥२६॥

आगैं प्रयोगकालकी अपेक्षा साध्यका नियम दिखावता संता सूत्र कहै हैं;—

व्याप्तौ तु साध्यं धर्म एव ॥ २७॥

याका अर्थ—व्याप्तिविषैं साध्य है सो धर्म ही है । याका अर्थ सुगम है यातैं टीका नांही। इहां अर्थ जिस धर्मीविषैं जो साध्य साधिये ताकूं तिस धर्मीका धर्म कहिये । ऐसा साध्य जो धर्म सो ही साधने योग्य है । व्याप्ति साध्यसाधनहीकै होय है ॥ २७॥

आगैं धर्मीकै भी साध्यपणां होतैं कहा दोष है, ऐसैं पूछें सूत्र कहै हैं;—

अन्यथा तदघटनात् ॥ २८ ॥

याका अर्थ—जो धर्मीकूं साध्य करिये तो धर्मीकै अर साधनकै व्याप्ति बणैं नांही। इहां अन्यथा शब्द है सो पहले व्याप्तिविषैं साध्यधर्म कह्या तिसतैं विपर्यय अर्थमैं है, तातैं ऐसैं कहनां जो धर्मीकै साध्यपणां होतैं व्याप्ति बणैं नांही । यह सूत्र पूर्वसूत्रका हेतुरूप है । धूमके दर्शनतैं सर्व जायगां पर्वत अग्निमान है ऐसी व्याप्ति नांही करी जाय है जातैं यामैं प्रमाणतैं विरोध आवै है ॥ २८ ॥

आगैं बौद्धमती कहै है–जो अनुमानविषैं पक्षका प्रयोगका असंभव है तातैं ' प्रसिद्धो धर्मी ' इत्यादि वचन अयुक्त हैं जातैं तिस धर्मीकै सामर्थ्यलब्धपणां सामर्थ्यतैं जाणिये है, बहुरि जाणें पीछैं भी ताका वचन कहनां सो पुनरुक्तताका प्रसंग आवै है, जातैं ऐसा कह्या जो अर्थतैं आय प्राप्त हूवा तौऊ ताका फेरि वचन कहनां सो पुनरुक्त है, ऐसैं सौगतनैं पक्ष करी ताका निराकरणकूं आचार्य सूत्र कहैं हैं;—

साध्यधर्माधारसन्देहापानोदाय गम्यमानस्यापि पक्षस्य वचनम् ॥ २९ ॥

याका अर्थ—पक्ष है सो साध्य जो धर्म ताका आधार है तातैं साध्यकूं साधिये तब ऐसा सन्देह पड़ै जो कौंन जायगा इस साध्यकूं

साधिये है ताके सन्देह दूर करनेकूं जाननेमैं भी आया जो पक्ष ताका वचनकरि प्रयोग करनां। साध्य सो ही धर्म ताका आधार ताविषैं संदेह पड़ै जो अग्निकूं पर्वत आदिमैं साधिये है कि महानस आदिमैं ? ऐसा सन्देहका अपनोद जो दूर करनां तिसकै अर्थि गम्यमान भी जो साध्यका आधार पक्ष ताका वचन कहनां–प्रयोग करनां। इहां पक्षका गम्यमानपणां ऐसैं है जो साध्यसाधनकै व्याप्यव्यापकभाव दिखावनेकी अन्यथा अप्राप्ति है। साध्य साधनकै व्याप्यव्यापकभाव दिखावतैं तिसके आधारस्वरूप पक्षकूं भी जानिये है तौ ऊपरके सन्देह दूर करनेकूं पक्षका वचन कहनां युक्त है ॥ २९ ॥

आगैं याका उदाहरण कहैं हैं;—

साध्यधर्मिणि साधनधर्मावबोधनाय पक्षधर्मोपसंहारवत् ॥ ३० ॥

याका अर्थ—साध्यकरि विशिष्ट जो धर्मी पर्वतादिक ताविषैं साधन धर्मका जाननेकै अर्थि जैसैं पक्षधर्मका उपसंहाररूप जो उपनय ताका प्रयोग करिये है तैसैं पक्षका भी प्रयोग करनां। साध्यकरि विशेषणरूप जो धर्मी पर्वतादिक तहां साधनधर्मकै जाननेकै अर्थि जैसैं पक्षधर्मका उपसंहाररूप उपनय कहिये है जातैं पक्षधर्म जो हेतु ताका उपसंहार कहिये संक्षेप करनां सो उपनय है जैसैं अग्निमान् साध्यका प्रयोगविषैं धूमवान् यहु है ऐसा उपनय कहनां ताकी ज्यों पक्षका भी प्रयोग युक्त है। इहां यह अर्थ है—जो साध्यतैं व्याप्त जो साधन ताकै दिखावनेकरि तिस हेतुके आधारका जाणपणां होतैं भी नियमरूप जो धर्मी ताका संबंधीपणांकै दिखावनेकूं जैसैं उपनयका प्रयोग करिये है तैसैं साध्यकै विशिष्ट जो धर्मी ताका संबंधीपणां जनावनेकूं पक्षका भी वचन कहनां।

बहुरि किछू विशेष कहै है;—जो हेतुका प्रयोग करिये है ताका समर्थन भी अवश्य है–कहनें योग्य होय है जातैं विना समर्थन हेतुपणांका अयोग है, ऐसैं होतैं समर्थनका प्रयोगतैं ही हेतुकै सामर्थ्य सिद्धपणां होय तब हेतुका प्रयोग भी अनर्थक ठहरै है। इहां कहै—जो हेतुका प्रयोग न करिये तौ समर्थन किसका कहिये? तौ ताकूं कहिये—जो पक्षका प्रयोग न करिये तौ हेतु किसका कहिये? ऐसैं यह प्रश्नोत्तर समान है। तातैं कार्य, स्वभाव, अनुपलंभ, ऐसैं तीन भेदकरि हेतुकूं कहता तथा पक्षधर्मपणां आदि तीन प्रकार हेतुकूं कहकरि ताका समर्थन करता जो बौद्धमती ताकरि पक्षका प्रयोग भी अंगीकार करनें योग्य ही है। इहां भावार्थ ऐसा–जो बौद्धमती अनुमानका प्रयोग करता व्युत्पन्न पंडितकै एक हेतु ही मानैं है, ताकूं कह्या है जो पक्षका वचन भी माननें योग्य है जातैं पक्ष कहे विना साध्य जा ठिकानैं साधिये तामैं सन्देह रहै तौ पक्षके वचन विना दूर होय नाहीं। बहुरि हेतुका समर्थन बौद्ध करै है–ताकूं चेत कराया जो जा हेतुका समर्थन हेतु कह्या तब पहला हेतु तौ पक्ष ही भया सो पक्षका प्रयोग निषेध किये हेतुका भी प्रयोग अनर्थक ठहरै है, समर्थन ही कहनां युक्त ठहरै है। तातैं पक्षका ही वचन पहले क्यों न कहनां, ऐसैं जाननां ॥३०॥

आगैं इस ही अर्थके कहनेकूं सूत्र कहै हैं;—

को वा त्रिधा हेतुमुक्त्वा समर्थयमानो न पक्षयति ॥ ३१ ॥

याका अर्थ—'को वा' कहिये वादी प्रतिवादी ऐसा कौन है जो तीन प्रकार हेतुकूं कहकरि अर ताका समर्थन करता संता तिस हेतुकूं पक्ष न करै, करै ही करै। इहां 'को' ऐसा कहनेतैं वादी प्रतिवादी कोई लेनां। बहुरि 'वा' शब्द है सो निश्चय अर्थमैं है, सो युक्तिकरि

पक्षप्रयोगका अवश्य भाव होतैं निश्चयतैं कौन पक्ष नांहीं करै है, अवश्य करै ही है। कहा करता संता? हेतुका समर्थन करता संता-हेतुकूं कह करि ही समर्थै है विना कहे नांहीं समर्थै है। इहां समर्थनका स्वरूप ऐसा-जो हेतुका असिद्धपणां आदि दोषका परिहारकरि अपनें साध्यकूं अर साधनकूं सामर्थ्यरूप प्ररूपणा करनेंकूं समर्थ वचन होय सो ही समर्थन है। सो हेतुके प्रयोगकै पीछैं बौद्धमतीकरि अंगीकार किया है तातैं सूत्रमैं उक्त्वा' ऐसा वचन है ॥ ३१ ॥

अब इहां सांख्यमती कहै है—जो पक्षका प्रयोग तौ होहु परन्तु पक्ष, हेतु, दृष्टांत, भेदकरि अनुमानके तीन ही अवयव हैं। बहुरि मीमांसक कहै है—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, भेदकरि च्यार अवयवस्वरूप अनुमान है। बहुरि यौग कहिये नैयायिक कहै है—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन, भेदतैं पांच अवयवस्वरूप अनुमान है। तिनिके मतकूं निराकरण करते संते अपनें मतविषैं सिद्ध जो अनुमानके अवयव दोय तिनिहीकूं दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

एतद्द्वयमेवानुमानाङ्गं नोदाहरणम् ॥ ३२ ॥

याका अर्थ—अनुमानके अवयव पक्ष अर हेतु ये दोय ही हैं अर उदाहरण नांही है। ये पक्ष अर हेतु तिनिका द्वय कहिये द्विक सो ही अनुमानके अंग हैं अधिक नांही हैं। इहां एवकारकरि उदाहरण आदिका निषेध सिद्ध होतैं भी परमतके निराकरणकै अर्थि फेरि उदाहरण नांही है ऐसा वचन कह्या है ॥ ३२ ॥

आगैं सो उदाहरण कहा साध्यकी प्रतिपत्तिकै अर्थि है कि हेतुकै अविनाभावके नियमकै अर्थि है कि व्याप्तिके स्मरणकै अर्थि है ? ऐसैं तीन विकल्पकरि तिनिकूं दूषणरूप करते संते सूत्र कहैं हैं;—

न हि तत्साध्यप्रतिपत्त्यङ्गं तत्र यथोक्तहेतोरेव व्यापारात् ॥ ३३ ॥

याका अर्थ—यह उदाहरण है सो साध्यकी जो प्रतिपत्ति ताका अंग नांही है जातैं साध्यविषैं तौ जैसा हेतु कह्या तिसहीका व्यापार है । इहां तत् कहिये उदाहरण सो साध्यकी प्रतिपत्ति कहिये साध्यका ज्ञान ताका अंग—कारण नांही है ऐसा संबंध करना जातैं तिस साध्यकी प्रतिपत्तिविषै यथोक्त जो साध्यतैं अविनाभावीपणांकरि निश्चय किया हेतु तिसहीका व्यापार है ॥ ३३ ॥

आगैं दूसरे विकल्पकूं शोधता संता सूत्र कहैं हैं;—

तदविनाभावनिश्चयार्थं वा विपक्षे बाधकप्रमाणबलादेव तत्सिद्धेः ॥ ३४ ॥[1]

याका अर्थ—'तत्' ऐसी अनुवृत्ति लेनीं, बहुरि 'न' ऐसा निषेध की भी अनुवृत्ति लेनीं, ताकरि यह अर्थ भया—जो उदाहरण तिस साध्यकरि हेतुका अविनाभाव निश्चय करनेंकै अर्थि नांही है जातैं विपक्षविषैं बाधक प्रमाणके बलतैं ही अविनाभावनिश्चयकी सिद्धि होय है ॥ ३४ ॥

बहुरि किछू विशेष कहैं हैं;—जो उदाहरण तौ व्यक्तिरूप है, सामान्यके बहुत विशेष होय तिनिमैं एक विशेषकूं व्यक्ति कहिये, सो व्याप्तिकूं समस्तपणैंकरि कैसैं गमक होय, तिस व्यक्तिविषै व्याप्तिकै अर्थि अन्य उदाहरण हेरनां पड़ै है ताकै भी व्यक्तिरूपपणांकरि सामान्यरूप जो व्याप्ति ताका निश्चय करनेंका असमर्थपणां है यातैं और

---

१ मुद्रित संस्कृत प्रतिमें 'बाधकप्रमाणबलादेव' इसके स्थानमें 'बाधकादेव' इतना ही पाठ है ।

और उदाहरणकी अपेक्षा होतैं अनवस्था दूषण होय है, सो ही सूत्रमैं कहैं हैं;—

व्यक्तिरूपं च निदर्शनं सामान्येन तु व्याप्तिस्तत्रापि तद्विप्रतिपत्तावनवस्थानं स्याद् दृष्टान्तान्तरापेक्षणात् ॥ ३५ ॥

याका अर्थ—निदर्शन कहिये उदाहरण सो तौ व्यक्तिरूप है जिस साध्यसाधनकै जोड़िये तहां ही लागै, बहुरि व्याप्ति है सो सामान्य करि है सर्व साध्यसाधनमैं व्यापै है, सो एक उदाहरणतैं व्याप्तिका निश्चय नांही होय तहां दूसरी जायगां उदाहरणकै विषैं भी तिस व्याप्तितैं साध्यसाधन जोड़िये तब अन्य दृष्टांत चाहिये ऐसैं अन्य दृष्टांतकी अपेक्षा करनेंतैं अनवस्था होय है ॥ ३५ ॥

आगैं तीसरा विकल्पविषैं दूषण कहै है;—

नापि व्याप्तिस्मरणार्थं तथाविधहेतुप्रयोगादेव तत्स्मृतेः ॥ ३६ ॥

याका अर्थ—यह उदाहरण व्याप्तिकै स्मरण कहिये यादि करनेंकै अर्थि नांही है जातैं अविनाभावस्वरूपहेतुके प्रयोग करनेंहीतैं तिस व्याप्तिका स्मरण होय है। ग्रह्या है साध्यतैं संबंध जानैं ऐसा पुरुषकै हेतु दिखावनेंहीकरि व्याप्तिकी सिद्धि होय है। जानैं संबंध न ग्रह्या होय ताकै सौ दृष्टांतकरि भी स्मरण न होय जातैं स्मरण तौ पहली अनुभव होय ताहीका होय है, ऐसा भावार्थ है ॥ ३६ ॥

आगैं ऐसैं सो इस उदाहरणके प्रयोगकै साध्य पदार्थ प्रति उपयोगीपणां नांही है उलटा संशयका कारणपणां ही है ऐसैं दिखावै है;—

तत्परमभिधीयमानं साध्यधर्मिणि साध्यसाधने संदेहयति ॥ ३७ ॥

याका अर्थ—सो उदाहरण परं कहिये केवल कह्या हुआ साध्यके धर्मीविषैं साध्य अर साधनकूं संदेहसहित करै है। जातैं दृष्टान्तका धर्मीविषैं साध्यतैं व्याप्त जो साधन ताकूं दिखावतैं भी साध्यके धर्मीविषैं तिस साध्यका अर साधनका निर्णयका करनेका अशक्यपणां है ऐसा वाक्यशेष है। भावार्थ—उदाहरण कह्या हुवा साध्य साधनकूं संदेहरूप करै है॥ ३७॥

आगैं इस ही अर्थकूं व्यतिरेककूं प्रधानकरि दृढ़ करते संते कहैं हैं;—

कुतोऽन्यथोपनयनिगमने ॥ ३८ ॥

याका अर्थ—जो उदाहरण कहैं संदेह न उपजता तौ उपनय अर निगमन इनि दोऊनिका प्रयोग काहेकूं करते। जातैं यह जान्यां जो उदाहरणके प्रयोगतैं संशय होय है॥ ३८॥

आगैं नैययिक कहै है—जो उपनय निगमन इनि दोऊनिकै भी अनुमानका अंगपणां है, जो इनिका प्रयोग न कीजिये तौ निर्दोष साध्यकी सिद्धिका अयोग है तिसके निषेधकै अर्थि सूत्र कहैं हैं;—

न च ते तदङ्गे, साध्यधर्मिणि हेतुसाध्ययोर्वचनादेवासंशयात् ॥ ३९ ॥

याका अर्थ—ते उपनय निगमन भी तिस अनुमानके अंग ही नांहीं हैं जातैं साध्यके धर्मीविषैं हेतु अर साध्यके वचनतैं संशयका निराकरण है। उपनय निगमनका स्वरूप आगैं कहसी। अर इहां एवकारकरि ऐसा जाननां जो दृष्टान्त आदिके प्रयोग विना ही प्रतिज्ञा हेतुतैं ही साध्यकी सिद्धि होय है—संशय मिटि जाय है; ऐसा भावार्थ है॥ ३१॥ ३९

आगैं विशेष कहैं हैं—जो दृष्टान्तादिक कहकरि भी हेतुका समर्थन अवश्य कहनां जातैं विना समर्थ्या हेतुकै अहेतुकपणां है यातैं सो समर्थन ही श्रेष्ठ है, जो हेतुस्वरूप है अथवा अनुमानका समर्थन भी होहु जातैं साध्यकी सिद्धिविषैं ताहीका उपयोग है उदाहरण आदिक अनुमानके अवयव नांहीं है, इस ही अर्थरूप कहैं हैं;—

समर्थनं वा वरं हेतुरूपमनुमानावयवो वाऽस्तु साध्ये तदुपयोगात् ॥ ४० ॥

याका अर्थ—हेतुका समर्थन है सो ही श्रेष्ठ है सो हेतुरूपही है, अर यह समर्थन अनुमानका अवयव भी होहु जातैं साध्यविषैं तिसका उपयोग है—साध्य यातैं दृढ़ होय हैं। इहां सूत्रमैं पहला 'वा' शब्द है सो नियमके अर्थि है। बहुरि दूसरा 'वा' शब्द है सो न्यारा पक्षके सूचनेंकूं है। अब शेष या सूत्रका अर्थ सुगम है ॥ ४० ॥

आगैं पूछैं हैं कि दृष्टांत आदिक विना मन्दबुद्धीनिका समझावनेंका असमर्थपणां है तातैं पक्षहेतुके प्रयोगमात्रहीकरि तिनिकै साध्यकी प्रतिपत्ति कैसैं होय, ऐसैं पूछे सूत्र कहैं हैं;—

बालव्युत्पत्त्यर्थं तत्त्रयोपगमे शास्त्र एवासौ न वादेऽनुपयोगात् ॥ ४१ ॥

याका अर्थ—बाल कहिये अल्पज्ञानी तिनिकै ज्ञान होनेकै अर्थि उदाहरण उपनय निगमन ये तीन अवयव तिनिका अंगीकार होतैं भी शास्त्रहीविषैं तिनका मानना है, अर वादविषैं नांही जातैं वादविषै इनिका उपयोग नांही प्रयोजन नांही—जातैं वादके कालविषैं शिष्य समझावनें नांही, व्युत्पन्ननिहीका वादकैविषैं अधिकार है—जे न्यायविषैं प्रवीण हैं तिनिहीका वादविषैं अधिकारीपनां है ॥ ४१ ॥

आगैं बाल जे अल्पज्ञानी तिनिके समझावनेंकै अर्थि उदाहरण आदि तीन प्रयोग शास्त्रविषैं अंगीकार किया, तिनि तीननिका स्वरूप दिखावैं है;—

दृष्टान्तो द्वेधाऽन्वयव्यतिरेकभेदात् ॥ २४ ॥ ४२

याका अर्थ—जा विषैं साध्य साधन ये दोय अंत कहिये धर्म अन्वयकूं मुख्यकरि तथा व्यतिरेककूं मुख्यकरि प्रत्यक्ष दृष्ट होय सो दृष्टान्त है। याका अर्थ ऐसा--जो दृष्ट कहिये प्रत्यक्ष देखे हैं अन्त कहिये साध्यसाधनलक्षण धर्म जहां ऐसा दृष्टान्तशब्दका अर्थि है। सो दोय प्रकार है—अन्वयदृष्टान्त, व्यतिरेकदृष्टान्त ॥ ४२ ॥

तहां प्रथम अन्वयदृष्टान्तकूं दिखावते सन्ते सूत्र कहैं हैं;—

साध्यव्याप्तं साधनं यत्र प्रदर्श्यते सोऽन्वयदृष्टान्तः ॥ ४३ ॥

याका अर्थ—जा विषैं साध्यकरि व्याप्त जो साधन सो नियमरूप दिखाइए सो अन्वय दृष्टांत है। इहां व्याप्तिपूर्वकपणांकरि दिखावै ऐसा अभिप्राय है। जैसें जहां जहां धूमसहितपणां है तहां अग्निसहितपणां, जैसैं रसोईका स्थान, ऐसैं अन्वयदृष्टांत जाननां ॥ ४३ ॥

आगैं दूसरा भेद दिखावैं हैं;—

साध्याभावे साधनाभावो यत्र कथ्यते स व्यतिरेकदृष्टान्तः ॥ ४४ ॥

याका अर्थ—जाके न होतैं जो न होय सो व्यतिरेक कहिये, सो यहां प्रधान होय सो व्यतिरेक दृष्टान्त है। जैसैं जहां अग्नि नांहीं तहां नियमकरि धूम नांहीं, जैसैं जलका निवास। ऐसैं व्यतिरेकदृष्टान्त जाननां ॥ ४४ ॥

आगैं अनुक्रममैं आया जो उपनय ताका स्वरूप निरूपण करै है;–

हेतोरुपसंहार उपनयः ॥ ४५ ॥

याका अर्थ––इहां 'पक्षे' ऐसा अध्याहार लेनां, ताकरि यह अर्थ है:––जो पक्ष विषैं हेतुका संक्षेप करिये सो उपनय है। धूमवान्पणां हेतुतैं अग्निमानपणां काहू जायगां साधै ताका दृष्टान्त कहकरि अर हेतुकूं पक्षका विशेषण करै, जैसैं कहै–जो यह धूमवान है ऐसा कहनां उपनय है। याकी निरुक्ति ऐसैं है–'उपनीयते' कहिये फेरि उचारिये हेतु जा करि सो उपनय है, ऐसा जाननां ॥ ४५ ॥

आगैं निगमनका स्वरूप दिखावै है;––

प्रतिज्ञायास्तु निगमनम् ॥ ४६ ॥

याका अर्थ––जहां प्रतिज्ञाका उपसंहार करिये सो निगमन है। इहां उपसंहारकी अनुवृत्ति लेनी। प्रतिज्ञाकूं साध्य जो धर्म ताकरि विशिष्टपणांकरि दिखावनां। जैसैं पहले प्रतिज्ञा कहै जो यह पर्वत अग्निमान है पीछैं हेतु दृष्टान्त उपनय कहकरि फेरि फेरि प्रतिज्ञाकूं संकोचकरि नियम करै जो तातैं अग्निमान ही है, ऐसैं प्रतिज्ञाका संक्षेप करनां सो निगमन है ॥ ४६ ॥

आगैं अन्यवादी तर्क करै जो शास्त्रविषैं दृष्टान्त आदि कहनें ही ऐसा नियम तौ मान्यां नांही तब आचार्य इहां तिनि तीननिकूं कैसैं दिखाये ? ताका समाधान––जो इहां ऐसा तर्क न करनां जातैं आप आचार्य इनि तीनूंनिकूं अंगीकार न किये हैं तौऊ जिनमतके अनुसारी आचार्यनिनैं शिष्यके वशकरि प्रयोगकी परिपाटीतैं मानैं है सो प्रयोगकी परिपाटी तिनिका स्वरूप जिनिनैं न जान्यां होय तिनकरि करी जाय नांही इस हेतुतैं तिनिका स्वरूप भी शास्त्रविषैं कहनां ही

योग्य है । ऐसैं सो अनुमान मतभेदकरि दोय अवयव, तीन अवयव, च्यार अवयव, पांच अवयवस्वरूप मानिये है सो अनुमान दोय प्रकार ही है ऐसैं दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

तदनुमानं द्वेधा ॥ ४७ ॥

याका अर्थ—सो अनुमान दोय प्रकार है ॥ ४७ ॥

आगैं सो दोय प्रकारपणांकूं कहैं हैं;—

स्वार्थपरार्थभेदात् ॥ ४८ ॥

याका अर्थ—स्वार्थानुमान परार्थानुमान ऐसैं भेदकरि दोय प्रकार है । अपनीं अर परकी जो अनुमानविषैं अन्यथा मानि ताका दूर होनां याका फल है तातैं दोय ही प्रकार है ऐसा अभिप्राय जाननां ॥४८॥

आगैं स्वार्थानुमानके भेदकूं कहैं हैं;—

स्वार्थमुक्तलक्षणम् ॥ ४९ ॥

याका अर्थ—"साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानं" ऐसा पूर्वैं अनुमानका लक्षण कह्या था सो ही स्वार्थानुमान जाननां ॥ ४९ ॥

आगैं दूसरा अनुमानका भेदकूं दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

परार्थं तु तदर्थपरामर्शिवचनाज्जातम् ॥ ५० ॥

याका अर्थ—तिस स्वार्थानुमानका जो अर्थ साध्यसाधन है लक्षण जाका तिसकूं जो अपनां विषय करै प्रगट करै ऐसा जाका स्वभाव होय सो तदर्थपरामर्शी कहिये ऐसा जो वचन तिसतैं उपज्या होय ज्ञान सो परार्थानुमान है । इहां नैयायिक कहै है—पंचावयवरूप वचनात्मक परार्थानुमान प्रसिद्ध है सो इहां स्वार्थानुमानका अर्थका प्रतिपादक वचनकरि उपज्या ज्ञानकूं परार्थानुमानपणां कहता जो आचार्य सो तिस वचनकूं कैसैं ग्रहण न किया ? ताका समाधान करै है—जो,

ऐसैं न कहनां, जातैं वचन तौ अचेतन है सो अचेतनकै साक्षात् प्रमिति जो प्रमाणका फल ताका कारणपणां नांही है, तातैं मुख्य प्रमाणपणांका अभाव है, बहुरि मुख्य अनुमानके कारणपणांतैं तिस वचनकै उपचरित अनुमानका व्यपदेश कहिये नाम कहनां सो नाहीं निवारण कीजिये है ॥ ५० ॥

आगैं परार्थानुमानके वचनकै जो कह्या उपचारकरि परार्थानुमानपणां सो ही आचार्य सूत्रकरि कहैं हैं;—

तद्वचनमपि तद्धेतुत्वात् ॥ ५१ ॥

याका अर्थ—तिस परार्थानुमानका वचन है सो भी परार्थानुमान है जातैं ज्ञानरूप जो परार्थानुमान ताका कारण है। इहां ऐसा जाननां—जो उपचार है सो मुख्यका अभाव होतैं प्रयोजन अर निमित्त होतैं प्रवर्त्तै है। तहां वचनकै मुख्य अनुमानपणांका तौ अभाव है अर तिसका कारणपणां है सो ही परार्थानुमानपणांविषै निमित्त है तातैं परार्थानुमानका प्रतिपादक वचन भी परार्थानुमान है ऐसा संबंध करनां, जातैं कारणविषैं कार्यका उपचार होय है। अथवा परार्थानुमानका प्रतिपादक जो वक्ता ताका अनुमान सो है कारण जाकूं ऐसा परार्थानुमानका वचन सो भी अनुमान है ऐसा संबंध करनां, इस पक्षविषैं कार्यविषैं कारणका उपचार होय है। बहुरि वचनकै अनुमानपणां कहतैं प्रयोजन ऐसा जो अनुमानके प्रतिज्ञा आदि अवयव हैं तिनिका शास्त्रविषैं व्यवहार है सो ही प्रयोजन है जातैं ज्ञानस्वरूप अनुमान निरंश है अभेदरूप है। तातैं अवयवरूप भेदका व्यवहार नांही कियाजाय है वचनकरि अवयवनिका प्रयोगरूप व्यवहार प्रवर्तै है ॥ ५१ ॥

आगैं सो ऐसैं 'साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानं' ऐसा अनुमानका सामान्य लक्षण है सो ही अनुमान दोय प्रकार है ऐसैं तिसके प्रकार विस्ता-

रसहित कहकरि अब साधन है सो लक्षण कह्या ताकी अपेक्षा एक है तौऊ अतिसंक्षेपकरि भेदरूप किये दोय प्रकार हैं, ऐसैं कहैं हैं;—

स हेतुर्द्वेधोपलब्ध्यनुपलब्धिभेदात् ॥ ५२ ॥

याका अर्थ—सो हेतु दोय प्रकार है; उपलब्धि अनुपलब्धि ऐसैं दोय भेदतैं । याका अर्थ सुगम है । जो पदार्थ विद्यमान भावरूप ग्रहणमैं आवै सो उपलब्धि कहिये, बहुरि जो पदार्थ ग्रहणमैं नांही आवै अभावरूप सो अनुपलब्धि कहिये ॥ ५२ ॥

आगैं अन्यवादी कहै है—जो उपलब्धि है सो विधिहीका साधक है बहुरि अनुपलब्धि है सो प्रतिषेधहीका साधक है ऐसा नियम है; तहां आचार्य तिसके नियमकूं निषेध करता संता उपलब्धिकै अर अनुपलब्धिकै अविशेषकरि विधिप्रतिषेधका साधकपणां है, ऐसै कहैं हैं;—

उपलब्धिर्विधिप्रतिषेधयोरनुपलब्धिश्च ॥ ५३ ॥

याका अर्थ—उपलब्धि है सो विधि अर प्रतिषेध दोऊनिकी साधक है, बहुरि अनुपलब्धि भी तैसैं ही दोऊनिकी साधक है । याका अर्थ पहले कह्या सो ही है ॥ ५३ ॥

आगैं अब उपलब्धिका भी संक्षेपकरि विरुद्ध अविरुद्ध भेदतैं दोय प्रकारपणां दिखावते संते अविरुद्ध उपलब्धिकै विधिसाध्य होतैं विस्तारतैं भेद कहैं हैं;—

अविरुद्धोपलब्धिर्विधौ षोढा व्याप्यकार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरभेदात् ॥ ५४ ॥

याका अर्थ—अविरुद्धोपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध नांही ऐसी जो प्राप्ति सो विधि कहिये वस्तुका सद्भाव ताकूं साधै ऐसी छह प्रकार है । साध्यतैं व्याप्यस्वरूप, साध्यका कार्य, साध्यका कारण, साध्यतैं

पूर्वै प्रवर्तै, साध्यतै पीछैं दीखै, साध्यकै साथि ही रहै, ऐसैं छह भेद हैं। इहां सूत्रविषैं समास ऐसैं करनां–पूर्व, उत्तर, सह, इनि तीन शब्दनिका द्वन्द्वसमासकरि पीछैं चर शब्द करनां सो द्वंद्वतैं चरशब्द प्रत्येककै लगावणां, तब पूर्वचर, उत्तरचर, सहचर ऐसा होय। पीछैं व्याप्य आदिकरि द्वंद्व करनां तातैं पूर्वोक्त अर्थ भया ॥ ५४ ॥

इहां सौगत कहिये बौद्धमती सो कहै है—विधिका साधन दोय प्रकार ही है, स्वभाव अर कार्य ऐसैं। बहुरि कारणकै तौ कार्यतैं अविनाभावका अभाव है तातैं साध्यका लिंग नांही जातैं कारण हैं ते कार्यसहित अवश्य होय नांही ऐसा वचन है। बहुरि इहां कहोगे जो–जा कारणका सामर्थ्य काहूतैं रुकै नांही ऐसा कारण है सो कार्य प्रति गमक होय है सो ऐसा कहनां न बनैगा जातैं सामर्थ्य तौ इन्द्रियगोचर नांही जो कारणमैं विद्यमान भी है तौ ताका निश्चय होय सकै नांही? ताका समाधान आचार्य करैं हैं—ऐसा कहनां विना विचारे है, ऐसैं दिखावनेकूं सूत्र कहैं हैं;—

रसादेकसामग्र्यनुमानेन रूपानुमानमिच्छद्भिरिष्टमेव किंचित्कारणं हेतुर्यत्र सामर्थ्याप्रतिबंधकारणान्तरावैकल्ये ॥ ५५ ॥

याका अर्थ—आस्वादमैं आया जो रस तातैं तिसके उपजावनहारी फल आदि सामग्री ताका अनुमान कीजिये है। पीछैं तिस अनुमानतैं रूपका अनुमान होय है ऐसैं मानता जो बौद्धमती ताकरि तानैं किछू कारणकूं हेतु मान्यां ही? जिस कारणविषैं सामर्थ्यका रोकनेवाला न होय तथा सहकारी अन्यकारणका विकलपणां न होय, समस्त सहकारी आय मिलै तिस कारणकै कार्य जो साध्य ता प्रति गमकपणां होय है, जातैं पहला रूपका क्षण है सो अपनां सजातीय जो

पिछलारूपका क्षणस्वरूप कार्य ताहि करता संता ही रूपतैं विजातीय जो रस तिसस्वरूप कार्यकूं करै है, ऐसैं रसतैं रूपका अनुमानकूं इष्ट करता मानता जो बौद्धमती सो किस ही कारणकूं हेतु इष्ट करै ही है— मानैं ही है, जातैं पहला रूपका क्षण है तातैं अपनां सजातीय रूपका दूसरा क्षणकै व्यभिचार नांही है, उत्तर क्षणनामा कार्यकूं उपजावै ही है। जो ऐसैं न मानैं तौ रसकै ही काल रूपकी प्राप्तिका अयोग ठहरै। बहुरि अंत्यक्षणनैं प्राप्त भया जो कारण तथा अनुकूलमात्रहीकूं नांही लिंग मानिये है। जाकरि मणिमंत्र आदिकरि जाकी सामर्थ्य रुकनेंतैं तथा अन्य सहकारी कारणका सकलपणां न होनेंतैं कार्य नांहीं उपजावै तब कारणनामा हेतुकै व्यभिचारीपणां आवै। अर दूसरे क्षण कार्य प्रत्यक्ष देखिकरि कारण मानि तिस कारणतैं अनुमान करिये तब अनुमानकै अनर्थकपणां आवै। हमनैं तौ कार्यतैं अविनाभावीपणांकरि निश्चय किया ऐसा जो छत्र आदि कारण ताकूं छाया आदिका लिंगपणांकरि अंगीकार किया है। जहां जाकी सामर्थ्य तौ काहूकरि रुकै नांही अर सहकारी अन्यकारणका सकलपणां होय कोई सहकारी घटता न होय ऐसा निश्चयतैं कारणकूं हेतु मान्यां है सो तिस ही कारणकै लिंगपणां है, अन्य जामैं व्यभिचार दीखै सो कारण हेतु नांहीं है तातैं बौद्ध कहै सो दोष नांहीं है।

इहां भावार्थ यह—जो बौद्धमती कारणकूं तौ हेतु कहै नांही अर मानैं ऐसैं जो काहूनै अंधारेमैं विजोरा आदि फलका रस चाख्या तब ताका अनुमान भया जो यह रस विजोरा आदिका है। पीछैं तिस विजोरा आदि कारणतैं ताकै रूपका अनुमान किया सो ऐसे अनुमानमैं तौ कारण हेतु आया ही, अर यामैं व्यभिचार भी नांहीं। जातैं सर्व तत्वकूं क्षणिक मानि ऐसैं कहै है—पहला क्षण तौ कारण है अर उत्त-

रक्षण ताका कार्य है सो पहलै रूपकै क्षण पिछला रूपक्षणकूं उपजाया तैसैं ही पहले रसकै क्षण पिछले रसक्षणकूं उपजाया ऐसैं दोऊ समानकाल कारण अर कार्य भये। तहां कारणतैं कार्यका अनुमान निर्व्यभिचार होय है। ऐसा नांही—जो प्रथमक्षण दूजे क्षणका अनुकूलमात्र ही कारण है जातैं इहां तिसकी सामर्थ्यका रोकनेंवाला कोई नांही अर सहकारीकी घटती नांही; अथवा अन्त्यक्षणमात्र नांही जातैं कार्य न उपजै। अर अब कार्य अवश्य उपजै तब व्यभिचार काहेका? ऐसैं जामैं व्यभिचार नांही सो कारण हेतु अवश्य माननां योग्य है॥५५॥

आगैं अब पूर्वचर अर उत्तरचर हेतुका स्वभाव, कार्य, कारणनामा, हेतुनिविषैं अन्तर्भाव नांही, तातैं न्यारे ही भेद हैं, ऐसैं दिखावै हैं;—

न च पूर्वोत्तरचारिणोस्तादात्म्यं तदुत्पत्तिर्वा कालव्यवधाने तदनुपलब्धेः ॥ ५६ ॥

याका अर्थ—पूर्वचर अर उत्तरचर हेतुकै तादात्म्य अर तदुत्पत्ति नांही है जातैं इनिकै कालका व्यवधान है—कालका बीचिमैं अंतर है, सो जहां कालव्यवधान होय तहां तादात्म्य अर तदुत्पत्तिकी अप्राप्ति है। तादात्म्य तौ स्वभाव अर स्वभाववानकै कहिये अर तदुत्पत्ति कार्य कारणकै कहिये। भावार्थ—साध्यसाधनकै तादात्म्यसंबंध होतैं स्वभाव हेतुविषैं अंतर्भाव होय, अर तदुत्पत्तिसंबंध होतैं कार्य अथवा कारणविषैं अन्तर्भाव होय। सो पूर्वचर उत्तरचर हेतुकै अंतर है तातैं दोऊ ही संबंध नांही, तातैं स्वभाव कार्य कारणमैं इनिका अन्तर्भाव न होय, जो सहभावी होय तिनिकै ही तादात्म्य संबंध होय, अर अनंतर होय तिनिकै ही हेतु कहिये कारण अर फल कहिये कार्य ऐसा भाव होय, कालके अन्तरमैं ते दोऊ ही भाव नांही ॥ ५६ ॥

इहां तर्क करै है जो—कालका व्यवधान कहिये अंतर होतैं भी कार्यकारणभाव देखिये है जैसैं जागताकी दशाका ज्ञानकै अर सोयकरि फेरि जागताकी दशाका ज्ञानकै कार्यकारणाभाव है, तथा मरणकै अर पहले आवते अरिष्टकै कार्यकारणभाव है, ऐसा तर्कका परिहारकै अर्थि सूत्र कहै है;—

भाव्यतीतयोर्मरणजाग्रद्बोधयोरपि नारिष्टोद्बोधौ प्रति हेतुत्वम् ॥ ५७ ॥

याका अर्थ—आगामी होगा ऐसा तौ मरण अर पहले जागै था ताका अतीतज्ञान इनि दोऊनिकै मरणकै पहलै आया जो अरिष्ट अर सूतां पीछै जाग्याकी अवस्थाका ज्ञान इनिकै कारणकार्यभाव नांही है । अरिष्ट तौ आवै अर मरण होय तथा नांही भी होय अर सूता जागै तब पूर्वली बात यादि आवै तथा नांही यादि आवै ॥ ५७ ॥

याहीका समर्थन करैं हैं;—

तद्व्यापाराश्रितं हि तद्भावभावित्वम् ॥ ५८ ॥

याका अर्थ—इहां 'हि' शब्द हेतु अर्थमैं है तातैं यह अर्थ है जातैं तिस कारणके सद्भाव होतैं कार्यका होनां है सो कार्यमैं है सो कारणके व्यापारकै आश्रय है, तातैं जो पूर्वैं कहे जाग्रत्दशा अर प्रबोधदशाका ज्ञान अर मरण अर अरिष्ट इनिकै तौ कारणकै अर कार्यकै कालका अंतर है तहां कारणकै व्यापारका आश्रय काहेका? तातैं कार्यकारणभाव नांही है । इहां यह अर्थ–जो अन्वय व्यतिरेककरि निश्चयरूप सर्वत्र कार्य-कारणभाव है सो ये दोऊ कार्य प्रति कारणके व्यापारकी अपेक्षा लिये ही होय है जैसैं कुंभकारकै कलश प्रति होय है । जो कुंभकार होय तौ कलश होय न होय तौ न होय तैसैं है । सो जे अतिव्यव-

हित कालके अंतरसहित होय तिनिविषैं कारणका व्यापारका आश्रित-पणां कहां? भावार्थ—ऐसा तर्क किया-जो कोई पुरुष रात्रिकूं जागतैं कार्य विचारि सूता पीछैं प्रभात जाग्या तब जो विचार्या था सो यादि आया तहां पहली अवस्थाका ज्ञान पीछली अवस्थाका ज्ञानकूं कारण भया। बहुरि मरणकै पहले अरिष्ट आवै है तिनिकूं मरण कारण है। ऐसैं कालके अंतर होतैं भी कार्यकारणभाव होय है। ताका समाधान आचार्य किया—जो ऐसैं नांही जातैं कार्य है सो कारणके व्यापारकै आश्रय है सो जिनिकै कालका अंतर है तिनिकै कारणका व्यापारका आश्रय कहांतैं होय। कार्य—कारणके तौ अन्वयव्यतिरेकपणां है। जो कारण होय तौ कार्य होय ही होय, कारण न होय तौ कार्य न होय। सो जहां कालका अन्तर होय तहां कारणके व्यापारका आश्रय कार्यकै संभवै नांही, विना व्यापार कार्य होय नांही, ऐसा जाननां॥ ५८॥

आगैं सहचर हेतुकै भी स्वभाव कार्य कारण हेतुनिविषैं अंतर्भाव नांही है, ऐसा दिखावै है ;—

सहचारिणोरपि परस्परपरिहारेणावस्थानात्सहोत्पादाच्च ॥ ५९ ॥

याका अर्थ—जे सहचारी एककाल लारा रहैं हैं तिनिकै भी तादात्म्य अर तदुत्पत्ति नांही होय है जातैं परस्पर स्वरूपभेदकरि परिहार पाइए है अर एक काल दोऊका उत्पाद है। तातैं व्याप्यव्यापकभाव अर कार्यकारणभाव नांही है तातैं न्यारा ही हेतुपणां है। इहां यहु अभि-प्राय है—परस्पर परिहारकरि जिनिका ग्रहण होय है तिनिकै तादात्म्य नांही तातैं तौ स्वभावहेतुविषैं अन्तर्भाव नांही। अर जिनिकी साथ उत्पत्ति है तिनिका कार्यविषैं तथा कारणविषैं अन्तर्भाव नांही जातैं एककाल वर्त्तैं जिनिकै कार्यकारणभाव नांही है, जैसैं गऊकै बावां दा-

हिणां सींग है तिनिकी साथ उत्पत्ति है परस्पर कार्यकारणभाव नांही तैसैं जाननां । बहुरि एककाल उपजैं तिनिकै कार्यकारणभाव मानिये तौ कार्यकारणकै प्रति नियमका अभावका प्रसंग आवै। इहां एक वस्तु-विषैं दोय भाव तिष्टैं तौऊ तिनिकै स्वरूपभेदतैं तादात्म्य न (?) कहिये, जैसैं रूप—रसमैं स्वरूप भेद है अर एकवस्तुमैं दोऊ है ही। बहुरि जिनिकै साथ उत्पाद नांही ऐसे धूम अग्नि आदि तिनिकै कार्यकारण-भाव है ही। तातैं सहचर न्यारा ही हेतु है ॥ ५९ ॥

आगैं अब कहे हेतुनिके उदाहरण कहैं हैं। तहां पहले क्रममैं आया जो व्याप्यनामा हेतु ताहि उदाहरणरूप करते संते कहे जे अन्वय व्य-तिरेक तिनिकूं प्रधानकरि शिष्यके आशयके वशतैं कहे जे अनुमानके प्रतिज्ञादिक पांच अवयव तिनिकूं दिखावै है;—

परिणामी शब्दः कृतकत्वात्, य एवं स एवं दृष्टो यथा घटः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामीति, यस्तु न परि-णामी स न कृतको दृष्टो यथा वंध्यास्तनंधयः, कृत-कश्चायं, तस्मात्परिणामी ॥ ६० ॥

याका अर्थ—शब्द है सो परिणामी है यह तौ प्रतिज्ञा है, जातैं कृतक है यहु हेतु है, जो कृतक है सो परिणामी देखिये है जैसैं घट है यहु अन्वयव्याप्तिपूर्वक उदाहरण है, बहुरि यहु शब्द कृतक है यहु उपनय है, तातैं परिणामी है यहु निगमन है। ऐसैं तौ अन्वयव्याप्ति-करि पंच अवयव दिखाये, बहुरि जो परिणामी नांही है सो कृतक नांही देखिये है जैसैं बांझका पुत्र यहु व्यतिरेकव्याप्तिपूर्वक उदाहरण है। अरु यहु शब्द कृतक है तातैं परिणामी है। ये व्यतिरेकव्याप्तिकरि दिखाये ते पांचूं ही समझनें। इहां अपनीं उत्पत्तिविषैं जो परके व्यापा-रकी अपेक्षा करै ऐसा भाव होय सो कृतक कहिये। सो ऐसा कृतक

पणां कूटस्थ जो सदाकाल एक अवस्थारूप रहै ऐसा नित्यपक्षविषैं नांही बणैं है। बहुरि क्षणिक जो समय समय अन्य अन्य ही होय ताविषैं भी नांही बणैं है, तातैं परिणामीपणां होतैं ही बणै है ऐसैं आगैं कहसी। इहां परिणामीकी निरुक्ति ऐसी जो पूर्व आकारका तौ परिहार उत्तर आकारकी प्राप्ति अर दोऊमैं स्थिति ऐसा जाका लक्षण सो परिणाम, सो जाकै होय सो परिणामी कहिये। बहुरि कृतकका ऐसा स्वरूप कहनेंतैं कार्यपणांका कोई स्वरूप कहै जो स्वकारणसत्ता-समवायकूं कार्यत्व कहिये, तथा अभूत्वाभावित्वकूं कार्यत्व कहिये, तथा 'अक्रियादर्शिनोऽपि कृतबुद्ध्युत्पादकत्वं' ऐसा कहै, तथा 'कारणव्यापारानुविधायित्वं' ऐसा कहै, ते सर्व निराकरण किये। कृतकका ऐसा ही अर्थ सर्वत्र जाननां। ऐसैं कृतकपणां हेतु है सो शब्दकै परिणामीपणांकूं साधै है, सो परिणामीपणांतैं व्याप्य है तातैं व्याप्यनामा हेतु भया ॥६०॥

आगैं कार्यहेतुकूं कहैं हैं;—

अस्त्यत्र देहिनि बुद्धिर्व्याहारादेः ॥ ६१ ॥

याका अर्थ—या प्राणीविषैं बुद्धि है जातैं याकै वचनादिककी प्रवृत्ति है। इहां आदि शब्दतैं व्यापार आकारविशेष आदि लेनें। वचनादिकी चतुरता आदि बुद्धि विना होय नांही। ऐसैं बुद्धिका कार्य वचनादिक हैं ते बुद्धिनामा कारण जो साध्य ताकूं साधैं हैं तातैं कार्य-नामा हेतु भया ॥ ६१ ॥

आगैं कारणहेतुकूं कहैं हैं;—

अस्त्यत्र छाया छत्रात् ॥ ६२ ॥

याका अर्थ—इहां छाया है जातैं छत्र देखिये है। काहू जायगां छत्र देख्या तब जाणीं जो याकै नीचैं छाया भी है, जहां छत्र है तहां

छाया भी होय ही । ऐसैं छत्रनामा कारणहेतु छायानामा साध्यकूं साधै है तातैं कारणहेतु भया ॥ ६२ ॥

आगैं पूर्वचर हेतुकूं कहैं हैं;—

उदेष्यति शकटं कृत्तिकोदयात् ॥ ६३ ॥

याका अर्थ—रोहिणी नक्षत्र उगिसी जातैं कृत्तिका नक्षत्रका उदय देखिये है । इहां 'मुहूर्त्तान्ते' ऐसा सम्बंध करनां जातैं ऐसा नियम है जो कृत्तिकाका उदय भये पीछैं एक मुहूर्त्तमैं रोहिणीका उदय होय है । सो पहले कृत्तिकाका उदय देख्या तब जानीं रोहिणी एक मुहूर्त्तमैं अवश्य उगिसी, ऐसा पूर्वचर हेतु कृत्तिकाका उदय भया ॥६३॥

आगैं उत्तरचर लिंगकूं कहैं हैं;—

उदगाद्भरणिः प्राक्तत एव ॥ ६४ ॥

याका अर्थ—भरणी नक्षत्रका उदय पहले भया जातैं कृत्तिकाका उदय देखिये है । इहां मुहूर्त्ततैं पहलैं ऐसा संबंध करनां । काहूनैं कृत्तिका नक्षत्रका उदय देखिकरि जान्यां जो यातैं मुहूर्त्त पहले भरणीका उदयका नियम है सो वह भी उदय पहले भया है । यह भरणीके उदय पीछैं उदय है तातैं उत्तरचर हेतु कहिये ॥ ६४ ॥

आगैं सहचर लिंगकूं कहैं हैं;—

अस्त्यत्र मातुलिंगे रूपं रसात् ॥ ६५ ॥

याका अर्थ—इस मातुलिंग कहिये बिजोराकैविषैं रूप है जातैं रस है । काहूनैं अंधारेमैं मातुलिंगका रसका स्वाद लिया तब जान्यां यह मातुलिंग है तामैं रूप भी है । इहां रस हेतु है सो रूपतैं सहचर है । ऐसैं अविरुद्धोपलब्धि हेतुके छह भेद कहे ॥ ६५ ॥

आगैं विरुद्धोपलब्धिकूं कहैं हैं;—

विरुद्धतदुपलब्धिः प्रतिषेधे तथा ॥ ६६ ॥

याका अर्थ—साध्यतैं विरुद्ध जे पदार्थ तिनिसंबंधी जे व्याप्य कार्य कारण पूर्वचर उत्तरचर सहचर तिनिकी उपलब्धि है सो प्रतिषेध साध्य-विषैं तथा कहिये पूर्वोक्त प्रकार ही छह भेद रूप है ॥ ६६ ॥

आगैं तहां साध्यविरुद्धव्याप्य उपलब्धिकूं कहैं हैं;—

नास्त्यत्र शीतस्पर्श औष्ण्यात् ॥ ६७ ॥

याका अर्थ—इस जायगां शीतस्पर्श नांही है जातैं उष्णपणां है, इहां शीतस्पर्श साध्य है सो प्रतिषेधरूप है तातैं विरुद्ध अग्नि है तिसतैं व्याप्यस्वरूप उष्णपणां है सो शीतस्पर्शतैं विरुद्ध व्याप्योपलब्धिहेतु है ॥ ६७ ॥

आगैं विरुद्ध कार्यका उपलंभ कहैं हैं;—

नास्त्यत्र शीतस्पर्शो धूमात् ॥ ६८ ॥

याका अर्थ—इहां शीतस्पर्श नांही है जातैं धूम है । इहां भी प्रति-षेधरूप साध्य शीतस्पर्श तातैं विरुद्ध अग्नि है ताका कार्य धूम है सो हेतु है शीतस्पर्शका प्रतिषेधकूं साधै है सो साध्यविरुद्धकार्योपलब्धि हेतु भया ॥ ६८ ॥

आगैं विरुद्ध कारणकी उपलब्धि कहैं हैं;—

नास्मिन् शरीरिणि सुखमस्ति हृदयशल्यात् ॥६९॥

याका अर्थ—इस प्राणीविषैं सुख नांही है जातैं याके हृदयमैं शल्य है । इहां सुखका विरोधी जो दुःख ताका कारण जो हृदयशल्य सो हेतु है सो सुखके प्रतिषेधकूं साधै है । सो प्रतिषेध साध्यविषैं विरुद्ध कारणोपलब्धि हेतु भया ॥ ६९ ॥

आगैं विरुद्ध पूर्वचर हेतुकूं कहैं हैं;—

नोदेष्यति मुहूर्तान्ते शकटं रेवत्युदयात् ॥ ७० ॥

याका अर्थ—इस मुहूर्त्तके अन्तमैं रोहिणी नांही उगैगा जातैं रेवतीका उदय है । इहां रोहिणीके उदयतैं विरुद्ध जो अश्विनीका उदय ताकै पूर्वचर रेवतीका उदय हेतु है सो रोहिणीके उदयका प्रतिषेधकूं साधै है, सो विरुद्धपूर्वचर हेतु भया ॥ ७० ॥

आगैं विरुद्ध उत्तरचर लिंगकूं कहैं हैं;—

नोदगाद्भरणिर्मुहूर्तात्पूर्वं पुष्योदयात् ॥ ७१ ॥

याका अर्थ—भरणी नांही उगी है मुहूर्त्ततैं पहली, जातैं पुष्यका उदय है । इहां भरणीके उदयतैं विरुद्ध पुनर्वसुका उदय है ताकै उत्तरचर पुष्यका उदय हेतु है सो भरणीका उदयका प्रतिषेधकूं साधै है, सो विरुद्ध उत्तरचर हेतु भया ॥ ७१ ॥

आगैं विरुद्ध सहचर हेतुकूं कहैं हैं;—

नास्त्यत्र भित्तौ परभागाभावोऽर्वाग्भागदर्शनात् ॥ ७२ ॥

याका अर्थ—या भींतिविषैं परले भागका अभाव नांही है जातैं वैला एक भाग देखिये है । इहां परले भागका अभावकै विरुद्ध जो तिस परले भागका सद्भाव ताकै सहचर जो वैलाभाग ताका दर्शन सो विरुद्ध सहचर हेतु है । ऐसैं विरुद्धोपलब्धि हेतुके छह भेद कहे ॥७२॥

आगैं साध्यतैं अविरुद्ध जो अनुपलब्धि कहिये अप्राप्ति ताके भेद कहैं हैं;—

अविरुद्धानुपलब्धिः प्रतिषेधे सप्तधा स्वभावव्यापककार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरानुपलंभभेदात् ॥ ७३ ॥

याका अर्थ—साध्यतैं अविरुद्धकी अनुपलब्धि सो प्रतिषेधविषैं सात प्रकार है;—स्वभाव, व्यापक, कार्य, कारण, पूर्वचर, उत्तरचर,

सहचर, इनि भेदनितैं। इहां स्वभाव आदि पदनिका द्वंद्व समास है, तिनिका अनुपलंभ ऐसैं पीछैं षष्ठीतत्पुरुष समास है ॥ ७३ ॥

आगैं स्वभावानुपलंभका उदाहरण कहैं हैं;—

नास्त्यत्र भूतले घटोऽनुपलब्धेः ॥ ७४ ॥

याका अर्थ—या पृथिवीतलविषैं घट नांही है जातैं अनुपलब्धि है, दीखै नांही है। इहां कोई पिशाच काहूकूं दीखै नांही तथा परमाणु आदि सूक्ष्म वस्तु काहूकूं दीखैं नांही अर तिनिका नास्तित्व है नांही तातैं हेतुकै व्यभिचार आवै है तौ ताके परिहारकै अर्थि इहां उपलब्धिलक्षण प्राप्तपणां कहिये दृश्यपणां जामैं है अर दीखै नांही है, हेतुका ऐसा विशेषणकरि लेणां। इहां केवल भूतल घटरहितस्वभाव है सो ही अनुपलब्धि है सो प्रतिषेधस्वरूप जो घट ताकै अविरुद्ध है सो घटके प्रतिषेधकूं साधै है, तातैं स्वभावानुपलंभ हेतु भया ॥ ७४ ॥

आगैं व्यापकानुपलब्धि हेतुकूं कहैं हैं;—

नास्त्यत्र शिंशपा वृक्षानुपलब्धेः ॥ ७५ ॥

याका अर्थ—इस क्षेत्रमैं शीसूं नांही है जातैं वृक्षकी अनुपलब्धि है—वृक्ष दीखै नांही। इहां वृक्ष व्यापक है ताके अभाव होतैं तिसके व्याप्य शीसूं है ताका भी अभाव है सो वृक्षकी अनुपलब्धि शीसूंके प्रतिषेधकूं साधै है, तातैं व्यापकानुपलब्धि हेतु है ॥ ७५ ॥

आगैं कार्यकी अनुपलब्धिकूं कहैं हैं;—

नास्त्यत्राप्रतिबद्धसामर्थ्योऽग्निर्धूमानुपलब्धेः ॥७६॥

याका अर्थ—इस जायगां नांही रुकै है सामर्थ्य जाका ऐसी अग्नि नांही है जातैं धूमकी अनुपलब्धि है। इहां अग्निका कार्य धूम है सो अग्निका विशेषण किया जो अप्रतिबद्ध सामर्थ्य सो इस विशेषणतैं धूम-

नामा कार्यकूं अवश्य निपजावै ऐसी अग्निका प्रतिषेध है सो साध्य है। इहां धूमनामा कार्य दीखै नांही, यह हेतु अग्निके प्रतिषेधकूं साधै है। तातैं कार्यानुपलब्धिनामा हेतु भया ॥ ७६ ॥

आगैं कारणका अनुपलंभकूं कहैं हैं;—

नास्त्यत्र धूमोऽनग्नेः ॥ ७७ ॥

याका अर्थ—इस जायगां धूम नांही है जातैं अग्नि नांही है। इहां अग्नि धूमका कारण है सो ताकी अनुपलब्धितैं धूमका प्रतिषेध साध्या है, तातैं कारणानुपलंभ हेतु भया ॥ ७७ ॥

आगैं पूर्वचरकी अनुपलब्धिकूं कहैं हैं;—

न भविष्यति मुहूर्तान्ते शकटं कृत्तिकोदयानुपलब्धेः ॥ ७८ ॥

याका अर्थ—मुहूर्त्तके अंतमैं रोहिणीका उदय न होसी जातैं कृत्तिकाका उदयकी अनुपलब्धि है, नांही दीखै है। इहां मुहूर्त्तके अंतमैं रोहिणीका उदयका प्रतिषेध साध्य है ताका कृत्तिकाके उदयका अनुपलंभ पूर्वचरानुपलब्धि हेतु है ॥ ७८ ॥

आगैं उत्तरचरकी अनुपलब्धिकूं कहैं हैं;—

नोदगाद्भरणिर्मुहूर्त्तात्प्राक्तत एव ॥ ७९ ॥

याका अर्थ—मुहूर्त्त पहली भरणि नांही उगी है जातैं कृत्तिकाका उदयकी अनुपलब्धि है। इहां मुहूर्त्त पहली भरणिके उदयका प्रतिषेध साध्य है ताका कृत्तिकाका उदयकी अनुपलब्धि हेतु है सो उत्तरचरानुपलब्धि हेतु भया ॥ ७९ ॥

आगैं सहचरकी अनुपलब्धिका अवसर है, सो कहै है;—

नास्त्यत्र समतुलायामुन्नामो नामानुपलब्धेः ॥ ८० ॥

याका अर्थ—इस बराबर ताखड़ीकैविषैं डांडी एक वोर ऊंची नांही है जातैं दूसरी वोर नींची डांडीकी अनुपलब्धि है। एक वोर नीचापणां एक वोर ऊंचापणां सहचर हैं तिनिमैं एकका निषेध साध्य एकका निषेध हेतु भया, सो सहचरानुपलब्धि हेतु है ॥८०॥

आगैं विरुद्ध कार्य आदिककी अनुपलब्धि विधि विषैं संभवै है ताके भेद तीन ही हैं, तिनिकूं दिखावनेकूं कहैं हैं;—

विरुद्धानुपलब्धिर्विधौ त्रेधा विरुद्धकार्यकारणस्वभावानुपलब्धिभेदात् ॥ ८१ ॥

याका अर्थ—साध्यतैं विरुद्धकी अनुपलब्धि सो विधिसाध्यविषैं तीन प्रकार है; विरुद्धकार्यानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका कार्यका अभाव, बहुरि विरुद्धकारणानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका कारणका अभाव, बहुरि विरुद्धस्वभावानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका स्वभावका अभाव, इनि भेदनितैं ॥ ८१ ॥

आगैं तिनिमैं विरुद्धकार्यानुपलब्धिकूं कहैं हैं;—

यथास्मिन् प्राणिनि व्याधिविशेषोऽस्ति निरामयचेष्टानुपलब्धेः ॥ ८२ ॥

याका अर्थ;—इस प्राणीविषैं रोगका विशेष है जातैं नीरोग चेष्टा कि याविषैं अनुपलब्धि है। इहां व्याधिविशेषका सद्भाव साध्य है तिसतैं विरोधी व्याधिविशेषका अभाव है ताका कार्य नीरोग चेष्टा ताकी अनुपलब्धि हेतु है, सो विरुद्ध कार्यकी अनुपलब्धिनामा हेतु भया ॥८२॥

आगैं विरुद्धकारणकी अनुपलब्धिकूं कहैं हैं;—

अस्त्यत्र देहिनि दुःखमिष्टसंयोगाभावात् ॥८३॥

याका अर्थ—इस प्राणीविषैं दुःख है जातैं इष्ट संयोगका याकै अभाव है। इहां दुःखके विरोधी सुख ताका कारण इष्टसंयोग ताकी

अनुपलब्धि हेतु है सो दुःखके सद्भावकूं इष्टसंयोगका अभाव साधै है, तातैं विरुद्धकारणानुपलब्धि हेतु भया ॥ ८३ ॥

आगैं विरुद्धस्वभावानुपलब्धिकूं कहैं हैं;—

अनेकान्तात्मकं वस्त्वेकान्तस्वरूपानुपलब्धेः ॥८४॥

याका अर्थ—वस्तु है सो अनेकान्तस्वरूप है जातैं एकांतस्वरूपकी अनुपलब्धि है। इहां अनेकान्तात्मकका विरोधी नित्य आदि एकान्त है सो लेनां बहुरि तिसका ज्ञान नांही लेनां जातैं एकान्तका ज्ञानकै तौं मिथ्याज्ञानरूपपणांकरि उपलंभका संभव है। एकान्तका स्वरूप अवस्तुभूत है ताकी अनुपलब्धि हेतु है सो वस्तुकूं अनेकान्तस्वरूप साधै है, तातैं विरुद्धस्वभावानुपलब्धि हेतु भया ॥ ८४ ॥

आगैं पूछे है कि व्यापकविरुद्ध कार्यादिकका बहुरि परंपराकरि अविरोधी कार्यादि लिंगानिका बहुलताकरि उपलंभका संभव है सो ते भी आचार्य उदाहरणरूप किये नांही? ऐसी आशंका होतैं सूत्र कहैं हैं;—

परम्परया संभवत्साधनमत्रैवान्तर्भावनीयम् ॥८५॥

याका अर्थ—परंपराकरि जे साधन कहिये हेतु संभवते होंहि ते इनि कार्य आदि हेतुनिविषैं ही अन्तर्भाव करनें ॥ ८५ ॥

आगैं तिस ही हेतुके उपलक्षणकै अर्थि दोय उदाहरण दिखावैं हैं;—

अभूदत्र चक्रे शिवकः स्थासात् ॥ ८६ ॥

याका अर्थ—इस चाकविषैं शिवक पहले हुवा है जातैं स्थास देखिये है। इहां ऐसा भावार्थ-जो कुंभार चाकपरि माटीका पिंड धरि बासण बणावै है तब पिंडके आकार अनुक्रमतैं करै है, तिनकी संज्ञा

ऐसी—शिवक, छत्रक, स्थास, कोश, कुसूल इत्यादि; सो इहां काहूनैं स्थास देख्या तब जान्यां जो इहां पहले शिवक भया था ॥ ८६ ॥

सो इस हेतुकी संज्ञातौ कही अर अन्तर्भाव कौनमैं भया ऐसी आशंका होतैं कहैं हैं;

कार्यकार्यमविरुद्धकार्योपलब्धौ ॥ ८७ ॥

याका अर्थ—यह कार्यका कार्य है सो अविरुद्ध कार्योपलब्धिविषैं अंतर्भाव करनां। इहां सूत्रविषैं 'अन्तर्भावनीयं' ऐसा उपरले सूत्रतैं संबंध करनां । पहले शिवककार्य छत्रक भया ताका कार्य स्थास भया सो याकूं अविरुद्धकार्यकी उपलब्धिविषैं अन्तर्भूत करनां ॥ ८७ ॥

आगैं दृष्टान्तद्वारकरि दूसरा उदाहरण कहैं हैं;—

नास्त्यत्र गुहायां मृगक्रीडनं मृगारिसंशब्दनात्, कारणविरुद्धकार्यं विरुद्धकार्योपलब्धौ यथा ॥ ८८ ॥

याका अर्थ—इस पर्वतकी गुफाविषैं मृगका क्रीडन नांहीं है जातैं नाहर बोलै है । इहां कारणविरुद्ध कार्य है सो विरुद्धकार्यकी उपलब्धि-विषैं अन्तर्भूत करनां । यह सूत्र पहले सूत्रका दृष्टांतरूप है, जैसैं इहां अन्तर्भाव तैसैं पहले सूत्रमैं जाननां जातैं मृगक्रीड़ाका कारण मृग है ताका विरोधी मृगारि कहिये नाहर है तिसका कार्य संशब्दन कहिये बोलनां है सो मृगकी क्रीड़ाके अभावकूं साधै है, तातैं हेतु है। जैसैं विरुद्धकार्यकी उपलब्धिविषैं अन्तर्भूत होय है तैसैं पहले कह्या सो तिसमैं अन्तर्भूत जाननां ॥ ८८ ॥

आगैं बाल कहिये अल्पज्ञ ताकैं ज्ञान करनेकै आर्थि पांच अवयव-निका प्रयोग है ऐसैं कह्याथा सो जो व्युत्पन्न होय ज्ञानवान होय न्याय-

शास्त्रविषैं प्रवीण होय, तिस प्रति प्रयोगका नियम कैसै हैं; ऐसी आशंका होतैं सूत्र कहैं हैं,—

व्युत्पन्नप्रयोगस्तु तथोपपत्त्याऽन्यथानुपपत्त्यैव वा ॥८९॥

याका अर्थ—न्यायशास्त्रकै विषैं प्रवीण जो व्युत्पन्न ता प्रयोग कीजिये सो दोय ही प्रकार है—एक तौ तथोपपत्ति कहिये साध्य होतैं ही हेतुकी उपपत्ति है, दूसरा अन्यथोपपत्ति कहिये साध्यका अभाव होतैं हेतुकी अनुपपत्ति ही है, ऐसैं दोय प्रकार हैं; इनिमैं एकका प्रयोग करनां। इहां व्युत्पन्न प्रयोगका समास ऐसा-जो 'व्युत्पन्नका प्रयोग'ऐसैं षष्ठी तत्पुरुष, तथा व्युत्पन्नकै अर्थि ऐसैं चतुर्थीतत्पुरुष ॥ ८९ ॥

आगैं तिसही अनुमानका रूप कहैं हैं;—

अग्निमानयं प्रदेशस्तथैव धूमवत्त्वोपपत्तेर्धूमवत्त्वा-न्यथानुपपत्तेर्वा ॥ ९० ॥

याका अर्थ—यह प्रदेश अग्निमान है जातैं तैसैं होतैं ही धूमवानपणांकी यामैं उपपत्ति है—धूमवानपणां बणैं है; अथवा धूमवानपणांकी अग्निमानपणां विना अनुपपत्ति है—धूमवानपणां नांही बणैं है; ऐसैं प्रयोग करनां ॥ ९० ॥

आगैं पूछै है—जो साध्यसाधनतैं न्यारे ऐसे दृष्टान्त आदिककै व्याप्तिकी प्रतिपत्ति प्रति उपयोगीपणां है ये भी उपकारी है सो व्युत्पन्नकी अपेक्षा इनिका प्रयोग कैसैं नांही, ऐसैं पूछैं सूत्र कहैं हैं;—

हेतुप्रयोगो हि यथा व्याप्तिग्रहणं विधीयते सा च तावन्मात्रेण व्युत्पन्नैरवधार्यते ॥ ९१ ॥

याका अर्थ—व्युत्पन्न पुरुष हेतुका प्रयोग करैं हैं ते जैसैं व्याप्ति ग्रहण होजाय तैसैं करैं हैं सो तिस व्याप्तिकूं व्युत्पन्न पुरुष तिस हेतुके

प्रयोग मात्रहीकरि अवधारण करैं हैं—निश्चय करैं हैं। इहां 'हि' शब्द है सो हेतु अर्थमैं है तातैं ऐसा अर्थ भया । जातैं तथा उपपत्ति अन्यथा अनुपपत्ति ऐसैं अन्वय व्यतिरेक रूप व्याप्तिका ग्रहणकूं न उलंघि करि हेतुका प्रयोग व्युत्पन्न करैं हैं, तातैं ताकरि ही व्युत्पन्न हैं ते व्याप्तिका निश्चय करि ले हैं, दृष्टान्तादिकका किछू प्रयोजन न रह्या। दृष्टान्तादिककै व्याप्तिकी प्रतिपत्ति प्रति अंगपणां जैसैं नांही है तैसैं पहले कह आये, इहां फेरि काहेकूं कहिये ॥ ९१ ॥

आगैं दृष्टान्त आदिका प्रयोग है सो साध्यकी सिद्धिकै अर्थि भी फलवान नांही है, ऐसैं कहैं हैं;—

तावता च साध्यसिद्धिः ॥ ९२ ॥

याका अर्थ—तावता कहिये विपक्षविषैं जाका असंभव निश्चित होय ऐसे हेतुके प्रयोगमात्र हीकरि साध्यकी सिद्धि है, दृष्टान्तादिकका प्रयोजन नांहीं ॥ ९२ ॥

आगैं इस ही कारणकरि पक्षका प्रयोग है सो भी सफल है ऐसैं दिखावते संते कहैं हैं;—

तेन पक्षस्तदाधारसूचनायोक्तः ॥ ९३ ॥

याका अर्थ—जा कारणकरि पूर्वोक्त विधानही करि व्याप्तिकी प्रतिपत्ति होय तिस कारणकरि तिसका आधारका सूचन कहिये साध्यतैं व्याप्त जो साधन ताके आधारके सूचनेंकै अर्थि पक्ष कह्या है । इस कहनेंकरि बौद्धमती कहै है ताका निराकरण किया, बौद्धमतीका श्लोक[1]का

ऐसैं परोक्ष प्रमाणके भेदनिविषैं अनुमानका निरूपण किया ।

१—ततो यदुक्तं परेण;—

तद्भावहेतुभावौ हि दृष्टान्ते तदवेदिनः ।
व्याप्येते विदुषां वाच्यो हेतुरेव हि केवलः ॥ १ ॥

अर्थ—जे साध्यव्याप्त साधनकूं नांही जानैं हैं तिनि प्रति पंडितजन दृष्टान्तविषैं साध्यसाधनभाव पक्ष हेतुभाव कहैं हैं अर पंडितकूं तौ एक हेतु ही कहनें योग्य है, ऐसैं बौद्धमती कहै हैं। जो पंडितनिकै तौ एक हेतु प्रयोग ही युक्त है, तिनिका निराकरण करि पक्षहेतु दोऊ प्रयोगनिका स्थापन किया है। जातैं व्युत्पन्न प्रति जैसा कह्या तैसे हेतुका प्रयोग करै तौऊ पक्षके प्रयोग विना साधनकै नियमरूप आधारपणांका निश्चय न होय ॥ ९३ ॥

आगैं अनुमानका स्वरूप प्रतिपादनकरि अब अनुक्रममैं आया जो आगम ताका स्वरूपकूं निरूपण करनेंकूं कहैं हैं;—

आप्तवाक्या[1]दिनिबंधनमर्थज्ञानमागमः ॥९४॥

याका अर्थ;—आप्तका वाक्य आदि है कारण जाकूं ऐसा अर्थका ज्ञान सो आगमप्रमाण है। तहां जो जिस उपदेशादि कार्यविषैं अवंचक होय सो तहां आप्त है ऐसे आप्तके वचन, अर आदिशब्दकरि अंगुली आदिकी समस्या लेनी, सो है कारण जाकूं ऐसा अर्थ ज्ञानकूं आगमप्रमाण कहिये। इहां इस सूत्रकी पदव्यवस्था ऐसी—जो 'अर्थज्ञान' ही कहिये तौ प्रत्यक्ष आदितैं भी अर्थज्ञान होय है तिनिविषैं अतिव्याप्त होय, तातैं वाक्य निबंधन कह्या। बहुरि ऐसैं भी कहे हरेकके वाक्यनिबंधनविषैं अतिव्याप्ति होय, तातैं आप्त कह्या,। बहुरि ऐसैं भी कहे आप्तका वाक्य काननिकरि सुण्यां तब श्रावण प्रत्यक्ष मतिज्ञानरूप सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष भया ताविषैं अतिव्याप्ति होय यातैं अर्थज्ञान ऐसा कह्या, ऐसैं आगमका लक्षण निर्दोष है। इहां अर्थका स्वरूप तात्पर्यरूप जाननां।

१—मुद्रित संस्कृत प्रतिमें 'वाक्यादि' इसके स्थानमें 'वचनादि' ऐसा पाठ है।

बहुरि आप्तशब्दके ग्रहणतैं मीमांसक आगमकूं अपोरुषेय मानैं हैं ताका निराकरण है। बहुरि अर्थज्ञान पदकरि अन्यापोह कहिये अन्यके निषेधकूं बौद्धमती शब्दका अर्थ मानैं हैं ताका निराकरण है, तातैं अन्यापोहज्ञान आगम प्रमाण नांहीं। तथा शब्दका केई ऐसा अर्थ मानैं हैं–जैसैं काहूनैं कह्या जो 'घट ल्याव' तब ताकूं सुणि ऐसा विचारै जो जल भरनेंकै अर्थि घट मंगावै है, यहु वाक्य ऐसैंसूचै है, ऐसा अभिप्राय कल्पि घट ल्यावै; सो ऐसा अभिप्रायकै अर्थपणांका निराकरण है, तातैं अभिप्राय सूचन आगमप्रमाण नांही।

अब मीमांसकमतका विशेष जो भट्टमत तिसका पक्षी कहै है;—जो यह आगमका लक्षण असंभवी है जातैं शब्दके नित्यपणां है तातैं आप्तका कह्यापणांका अयोग है। बहुरि शब्दकै नित्यपणां है जातैं याके अवयव जे अक्षर तिनिकै व्यापकपणां है सर्वदेशमैं अक्षर व्याप रहे हैं, अर नित्य हैं तातैं शब्द भी नित्य ही है। बहुरि अक्षरनिका व्यापकपणां असिद्ध नांही है, एक जायगां उच्चारणरूप भया जो गौशब्दका गकारादिक अक्षर सो प्रत्यभिज्ञानकरि अन्य देशविषैं भी ताका ग्रहण होय है, जो एकदेशमैं सुन्यां था गकारादिक सो ही अन्यदेशमैं सुन्यां तब जान्यां जो सो ही यह गकारादिक है। बहुरि ताका नित्यपणां तिस प्रत्यभिज्ञानकरि ही निश्चय भया जातैं कालान्तरकैविषैं भी तिस ही गकारादिकका निश्चय होय है। बहुरि इस हेतुतैं भी नित्यपणां निश्चय कीजिये जो शब्दकै संकेतकी नित्यपणां विना अप्राप्ति है सो ही कहिये है;—एक शब्दका संकेत ग्रहण किया ऐसा शब्द अन्य ही श्रवणमैं आया मानिये तौ इस विना संकेत ग्रहण किये शब्दतैं अर्थकी प्रतीतिरूप ज्ञान कैसैं होय? जो इस शब्दका यह ही अर्थ है? अरु अर्थरूप प्रतीति लिये ज्ञान होयही है। सो इहां भी संकेतमैं ऐसा जानिये है

कि पहले सुन्यां था सो ही यह शब्द है, प्रत्यभिज्ञान इहां भी सुलभ है। इहां संकेतका उदाहरण ऐसा—जो गोशब्दका संकेत खुर ककुद लांगूल सास्नादिक सहित अर्थ विषैं है। बहुरि अक्षरनिकै अथवा शब्दकै नित्यपणां होतैं सर्वपुरुषनिकरि सर्वकालमैं सुननेंका प्रसंग आवै है, ऐसा भी न माननां—जातैं शब्दकी अभिव्यक्ति कहिये श्रवणमैं आवै ऐसा प्रगट होनां सदाकाल नांही संभवै है। बहुरि याका असंभवका कारण यहु—जो शब्दके अभिव्यंजक कहिये प्रगट करनेंवाले पवन हैं तिनिकै अक्षर अक्षर प्रति न्यारा न्यारा पणां है तालुवा होठ आदि संबंधी पवन न्यारे न्यारे हैं सो वक्ताके प्रेरें पवन चलैं तब अक्षर प्रगट होय। बहुरि ऐसा नांही जो ये पवन नांही वणैं हैं जातैं प्रमाणतैं पवन प्रसिद्ध है, सो ही कहिये है—जे वक्ताके मुखकै निकटदेशवर्त्ती पुरुष हैं ते तौ अपनां स्पर्शनप्रत्यक्ष प्रमाणकरि शब्दके व्यंजक पवननिकूं ग्रहण करैं ही हैं जानैं ही हैं, बहुरि वक्ताके दूरदेशवर्ती हैं ते मुखकै समीप तिष्ठते जे तूल कहिये रज फूंफदा सूक्ष्म तिनिके चलनेंतैं अनुमानरूप जानैं हैं। बहुरि सुननेंवालाका कानके प्रदेशनिविषैं शब्दके सुननें-की अन्यथा अनुपपत्तितैं अर्थापत्तिप्रमाणतैं भी निश्चय कीजिये है—जो पवन शब्दकूं न प्रेरै तौ श्रोताका कान तांई कैसैं जाय। तातैं पवनतैं शब्दके अक्षरनिकी अभिव्यक्ती होय है तातैं सर्वकाल सर्वकरि नांही सुनिये है। बहुरि अभिव्यक्तिपक्षमैं सर्वकरि सर्वकाल सुनेंनका प्रसंगरूप दोष बतावै तौ उत्पत्तिपक्षमैं भी ये दोष आवैं हैं; भावार्थ—मीमांसक शब्दकूं नित्य मानैं है अर अभिव्यक्ति सदा नांही मानैं है। ताकी पक्षमैं अनित्यपक्षकारि उत्पत्ति माननेंवाला जो नैयायिक सो दोष बतावै तौ ताकूं मीमांसक कहै है—जो अनित्य पक्षमैं ये ही दोष बराबर आवै हैं। सो ही कहै है—यह शब्द है सो पवन अ

आकाशका संयोग सो तौ असमवायिकारण कहिये सहकारी कारण अर आकाश समवायिकारण इनितैं दिशा देश आदिका अविभाग करि उपजता होय है सो सर्व हीकरि तौ सुननेंमैं न आवै, नियमरूप न्यारे न्यारे दिशा देशमैं तिष्ठते पुरुषनिकरि सुनिये है। तैसैं ही नित्य-पक्षमैं अभिव्यज्यमान कहिये प्रकट होता सुनिये है, ऐसैं समान भया। बहुरि अभिव्यक्तिका संकरपणां भी नांही है जातैं यहभी दोऊ पक्षमैं समान है। सोही कहिये है:—जैसैं तालु आदिका संयोगतैं जो वर्ण जिसतैं उपजै है सो तिसहीतैं उपजै है अन्यका संयोगतैं अन्य नांही करिये है, तैंसे ही अन्यध्वनिका अनुसारी तालु आदि हैं ते अन्यध्वनि-का आरंभ नांही करै हैं। तातैं संकरपणांका दोष बतावै तौ यहभी समान ही आवैहै। तातैं उत्पत्तिपक्ष अर अभिव्यक्तिपक्षविषैं समानपणां होतैं एक ही पक्षविषैं प्रश्नका अवसर नांही, ऐसैं मीमांसक कहै है हमारा कहनां सर्वही निश्चित है। बहुरि किछू और कहै है;—जो अक्षरनिकै अर तिनिस्वरूप जो शब्द ताकै कूटस्थस्वरूप नित्यपणा भी मति होहु तौऊ वेदकै अनादिपरंपराकरि चल्या आवनेंतैं नित्यपणां है, तातैं आगमका पौरुषेय लक्षण किया ताकै अव्याप-कपणां दूषण आवै है। बहुरि यह प्रवाहकरि परंपराकरि नि-त्यपणां है सो अप्रमाण स्वरूप नांही है, अवार भी याका कर्ता कोई दिखै नांही। बहुरि अतीत अनागत कालविषैं याका कर्ताका अनुमान करावनेंवाले लिंगका अभाव है। जे साध्य साधन अतीन्द्रिय हैं तिनि-का संबंध सदाकाल अतीन्द्रिय है ताकूं इन्द्रियनिकरि ग्रहण करनें-योग्यपणांका अभाव है, जातैं ऐसैं कह्या है जो लिंग प्रत्यक्षकरि ग्रहण होय सो ही है तिसहीतैं अनुमान होय है। ग्रहण किया है संबंध जानैं ऐसे पुरुषकै एक देशके देखनेंतैं जो पदार्थ इन्द्रियनितैं न भिड़ै ऐसा

परोक्ष ताका ज्ञान होय है सो अनुमान है। बहुरि वेदके कर्ताकी अर्थापत्ति प्रमाणतैं भी सिद्धि नांही होय है जातैं जाके होतैं अवश्य अन्य पदार्थ आय पड़ै तिसतैं अर्थापत्ति होय सो अनन्यथाभूत अर्थका अभाव है। बहुरि उपमान प्रमाणभी वेदका कर्ताका साधक नांही जातैं उपमान उपमेय दोऊ ही प्रत्यक्ष नांही। यातैं केवल अभाव प्रमाण ही रह्या सो वेदका कर्ताका अभावहीकूं साधै है। बहुरि ऐसैं नांही कहनां—जो पुरुषका सद्भावका साधनां जैसैं दुःसाध्य है तैसैं याका अभावका भी साधनां दुःसाध्य है, यातैं संशयकी आपत्ति आवै जातैं तिसके कर्त्ताका अभावके साधकप्रमाण सुलभ हैं। अबार काल-विषैं तौ तिसके अभावविषैं प्रत्यक्ष प्रमाण साधक है। अतीत अनागत कालविषैं अभावका साधक अनुमान प्रमाण है। इहां अनुमानके दोय प्रयोगके श्लोक हैं, तिनिका अर्थ—अतीत अनागत काल हैं ते वेदके कर्त्ताकरि रहित हैं जातैं 'काल' ऐसा शब्दकरि कहनेयोग्य अर्थ हैं जैसा अबार काल तैसे ही ते भी काल हैं ॥ १ ॥ बहुरि कोई पूछै वेदका पढनां कैसे है? तौ ताकूं कहिये—जो वेदका पढ़नां है सो सर्व ही वेदके पढ़नेंपूर्वक है पहले पढ़े हैं ते अन्यकूं पढ़ावै हैं, ऐसैं ही परि-पाटी चली आवै है जातैं "वेदका अध्ययन" ऐसे पदकरि वाच्य कहिये कहनें योग्य अर्थ है जैसैं अबार कोई पढ़ै है सो ऐसैं ही पढ़नेकी परिपाटी है ॥ २ ॥ बहुरि तैसैं ही अन्य प्रयोग कहै है;—वेद है सो

(१) तथा च—

अतीतानागतौ कालौ वेदकारविवर्जितौ।
कालशब्दाभिधेयत्वादिदानीन्तनकालवत् ॥ १ ॥
वेदस्याध्ययनं सर्वं तदध्ययनपूर्वकम्।
वेदाध्ययनवाच्यत्वादधुनाध्ययनं तथा ॥ २ ॥

अपौरुषेय है जातैं संप्रदायका अविच्छेद होतैं जाका कर्त्ताका स्मरण नांही, कथनी नांही, वेदके संप्रदायीकी परिपाटीमैं काहूनैं कर्त्ता देख्या नांही, सुन्यां नांही, कह्या नांही, जैसैं आकाशका कर्त्ता काहूनैं कह्या नांही तैसैं। बहुरि अर्थापत्ति प्रमाण है ताकरि वेदके कर्त्ताका अभाव निश्चय कीजिये है जातैं वेदकी प्रमाणता है लक्षण जाका ऐसा अनन्यथाभूत पदार्थका दर्शन कहिये सद्भाव देखिये है। जातैं धर्म आदि अतींद्रिय पदार्थ है विषय जाका ऐसा जो वेद ताका अल्पज्ञ पुरुषनिकरि करनेंका असमर्थपणां है। अर अतींद्रिय पदार्थका देखनेंवाला पुरुषका अभाव ही है तातैं वेदका प्रमाणपणां अपौरुषेयपणांहीकूं साधै है। ऐसैं मीमांसकनैं अपनां वेदके अपौरुषेयपणांकूं दृढ़ किया पौरुषेय आगमकूं दूषण दिया।

अब आचार्य याका प्रत्युत्तरकी विधि करैं हैं—प्रथम तौ जो कह्या कि अक्षरनिकै व्यापीपणांविषैं अर नित्यपणां विषैं प्रत्यभिज्ञान प्रमाण है सो यह तौ असत्य है, तिसविषैं ज्ञान प्रमाण होय तौ एकवर्णका अनेक देशविषैं सत्त्व होतैं खंड खंडरूप प्रतिपत्ति होय सो तौ नांही है। एकदेशमैं एकवर्ण अखंड ग्रहण होय है। दूसरे देशमैं दूसरा तिस सारिखा अखंड न्यारा ग्रहण होय है, सो जो अक्षर सर्वदेशमैं व्यापक होय तौ एक ही देशमैं एकवर्णका समस्तपणांकरि ग्रहण कैसैं बणैं, नांही बणैं। जो ऐसैं होय एक ही देशमैं अक्षर समस्तपणां करि ग्रहण होय तौ व्यापक न ठहरै, ऐसैं भी व्यापकपणां मानिये तौ घट आदिककै भी व्यापकपणांका प्रसंग आवै। ऐसैं भी कह्या जाय जो घट सर्वगत है जातैं नेत्र आदिकै निकटतैं अनेक देशविषैं प्रतीतिमैं आवै है। बहुरि जो कहै घटके उपजावनहारे माटीके पिंड अनेक देखिये हैं तातैं अनेकपणां ही है। तथा बड़ा घट छोटा घट

ऐसा देखिये है तौ यह तौ अक्षरनिविषैं भी समान है, तहां भी वर्ण वर्ण प्रति न्यारे न्यारे तालुवा आदिक कारणके समूह तथा तीव्र मंद आदि धर्म भेदका संभवका अविरोध है। बहुरि तालुवा आदिककै अक्षर-निका व्यंजकपणां आगैं इहां ही निषेध करसी, तातैं यह कथन इहां ही रहौ। बहुरि कहै है—जो अक्षरनिकै व्यापीपणां होतैं भी सर्वक्षेत्रमैं सर्वस्वरूपकरि प्रवृत्तिसहित हैं, तातैं तुम कहो सो दोष नांही। ताकूं आचार्य कहै है;—ऐसैं होतैं तौ सर्वथा एकपणांका विरोध आवै है जातैं देशका भेदकरि एककाल सर्वस्वरूपकरि सर्वक्षेत्रमैं प्रतीतिमैं आवै ताकै एकपणां बणैं नांही, यामैं प्रमाणविरोध है। ताका प्रयोग —गो शब्दका गकार आदि अक्षर हैं ते प्रत्येक अनेक ही हैं जातैं एककाल भिन्न न्यारे न्यारे क्षेत्रनिविषैं सर्वस्वरूपकरि जैसो उच्चा-रण है तैसो ही समस्तपणांकरि प्रत्येक ग्रहण होय हैं, जैसैं घट आदि न्यारे न्यारे देखिये है तैसैं। बहुरि कहै कि सामान्य पदार्थ सर्व जायगां प्रतीतिमैं आवै है अर एक है ताकरि हेतुकै व्यभिचार आवैगा, तौ इहां सो व्यभिचार नांही है, सदृश परिणामस्वरूप सामान्यकै भी अनेकपणां है। बहुरि चन्द्रमा सूर्य आदिकूं एककाल अनेक क्षेत्रमैं तिष्ठते पुरुष पर्वत आदि अनेक प्रदेशनिमैं तिष्ठयापणांकरि अनेक न्यारा न्यारा देखैं हैं अर चन्द्रमा सूर्य एक एक ही है तिनिकरि भी व्यभिचार नांही है जातैं ते अतिदूरवर्त्ती हैं एकदेशमैं तिष्ठैं हैं तौऊ भ्रांतिके वशतैं अनेक क्षेत्रमैं न्यारे न्यारे तिष्ठे दीखैं हैं। सो जो भ्रान्तिरहित सत्यार्थ होय तातैं भ्रांतिसूं दखे तिनिकरि व्यभिचारकी कल्पना करनां युक्त नांही। बहुरि जलके पात्रविषैं चन्द्रमा सूर्य आदिका प्रतिबिंब न्यारा न्यारा दीखै अर चन्द्रमा सूर्य एक एक ही हैं, अर ते प्रतिबिंब भ्रान्तिरूप भी नांही तिनिकरि भी व्यभिचार नांही है जातैं चंद्रमा सूर्य आदिका

प्रकाशकी समीपताकी अपेक्षाकरि जल तैसैं ही चन्द्रमा सूर्य आदिके आकाररूप परिणमि जाय है यातैं न्यारा न्यारा प्रतिबिंब दीखैं हैं ते अनेक हैं, तातैं अनेक प्रदेशविषैं एक काल समस्तस्वरूपकरि ग्रहणमैं आवै ऐसा एक विषयका असंभाव्यमानपणांतैं तिसविषैं प्रवर्त्तमान जो प्रत्यभिज्ञान सो प्रमाण नांही यह निश्चय भया। तैसैं ही नित्यपणां भी प्रत्यभिज्ञानकरि नांही निश्चय होय है जातैं नित्यपणां है सो एक वस्तुकै अनेकक्षणमैं व्यापीपणां है, सो ऐसा नित्यपणां तौ वीचिमैं—अन्तरालविषैं सत्ताका ग्रहण विना निश्चय न कह्या जाय। बहुरि प्रत्यभिज्ञानहीका बलकरि अन्तरालविषैं सत्ता न जानी जाय है—वीचिमैं सत्ताका संभव नांही सिद्ध होय है जातैं प्रत्यभिज्ञानके सादृश्यतैं भी संभवनेंका अविरोध है। बहुरि घट आदिविषैं भी ऐसा प्रसंग नांही आवै है जातैं ताकी उत्पत्तिविषैं अन्य अन्य मांटीके पिंडस्वरूप कारणका असंभवपणांकरि अंतरालविषैं सत्ताका साधनेंका समर्थपणां है, भावार्थ—पहले घटकूं देख्या पीछैं तिसहीकूं फेरि देख्या तब एकत्वप्रत्यभिज्ञान भया जो यहु घट सो ही है, तहां कहै याके अन्तरालमैं सत्ता कैसैं सधी? ताका समाधान किया है—जो अन्य अन्य मांटीके पिंडतैं घट उपजै ताकी जुदी सत्ता होय, इहां अन्य मांटीका पिंडतैं उपजनां नांही तातैं तिसहीकी सत्ता सधी। अर शब्दविषैं ऐसैं नांही—पहले शब्द सुन्यां ताका कारण अन्य ही था फेरि सुन्यां ताका कारण अन्य है। तातैं अपूर्व कारणनिका व्यापार संभवनेंतैं अन्तरालविषैं सत्ताका संभव नांही है। बहुरि जो और कह्या—संकेतकी अन्यथा अप्राप्ति है जो शब्द नित्य न होय तौ पदार्थविषैं संकेत नांही बणैं। सो ऐसा कहनां भी पुरुषका स्वरूप विना जाण्यां कहै है जातैं अनित्यविषैं भी यहु जोड़नां बणैं है। सो ही कहै है—

ग्रह्या है संकेत जाका ऐसा जो दंड ताका नाश होतैं अन्य अगृहीतसं-केतदंड अन्य ही ग्रहणमैं आवै है। ऐसैं होतैं तिस अगृहीतसंकेतदंडतैं दंडी ऐसा कहनां न होय, तैसैं ही ग्रहण करी है व्याप्ति जाकी ऐसे धूमका नाश होतैं अन्य धूमके देखनेतैं विना व्याप्ति ग्रहण अग्निका ज्ञानका अभाव होय। सो दंडीका व्यपदेश तथा धूमतैं अग्निका ज्ञान होय ही है, अर ते अनित्य हैं तातैं अनित्यविषैं संकेत होय ही है। बहुरि इहां कहै—जो दंडी इत्यादिविषैं तौ सदृशपणांतैं यह प्रतीति होय है तातैं हमारी पक्षमैं दोष नांही, तौ इहां शब्दविषैं भी सदृशप-णातैं अर्थकी प्रतीति होतैं कहा दोष है? शब्दकूं नित्य मानि खोटा अभिप्राय क्यों करना, ऐसैं मानें अन्तरालविषैं अदृष्ट सत्त्वकी भी कल्पना न होय। बहुरि जो और कह्या कि—शब्दके व्यंजक पवनकै न्यारा न्यारापणां है तातैं एक काल सुननां न होय है; सो भी कहनां विना सीखे कह्या है;—समान एक कर्णइन्द्रियकरि ग्रहणमैं आवै, अर समान ही जाका उदात्त अनुदात्तादि धर्म, अर समान ही क्षेत्रविषैं तिष्ठते विषय विषयी कहिये कर्ण इंद्रिय अर शब्द, तिनिविषैं न्यारे न्यारे पवनकरि न्यारे न्यारे ग्रहणका अयोग है एक ही काल ग्रहण चाहिये। सो ही कहै है;—श्रोत्र इन्द्रिय है सो समान क्षेत्रविषैं तिष्ठता समान इन्द्रियकरि ग्रहणयोग्य समान ही जिनिका धर्म, ऐसे जे गकारादि शब्दनामा पदार्थ तिनिका ग्रहणकै अर्थि न्यारा न्यारा संस्कार करनेवाला पवनकरि संस्कार करने योग्य नांही होय है, एक ही पवन संस्कारकतैं गकारादि पदार्थका ग्राहक होय है जातैं श्रोत्र है सो इन्द्रिय है, इन्द्रिय हैं ते ऐसे ही हैं, जैसैं नेत्र इन्द्रिय है सो अंजनादिकका संस्कार एकही करि अपनां सर्व विषयकूं ग्रहण करै है, तिसविषैं न्यारे न्यारे अंजनादिकके संस्कार

नांही चाहै है। बहुरि शब्द हैं ते भी न्यारे न्यारे संस्कारक जे पवन तिनिकरि संस्कार करने योग्य नांही हैं जातैं समान इन्द्रियकरि ग्रहण करने योग्य समान धर्म स्वरूप समान क्षेत्रमैं तिष्ठे, ऐसे होतैं एककाल इंद्रियकरि संबंधरूप होय हैं जैसैं घट आदि होय हैं। बहुरि कहै–जो उत्पत्तिपक्षमैं भी यह दोष समान है सो ऐसैं नांही है जातैं मांटीके पिंड अर दीपक इनिके दृष्टान्तकरि कारक व्यंजक पक्षमैं विशेषकी सिद्धि है। विद्यमान घटका मांटीका पिंड तौ कारक है अर दीपक ताका व्यंजक है, परन्तु ऐसैं विशेष है—जो एक घट करनेंकै अर्थि लिया एक मांटीका पिंड सो तौ एक ही घटकूं करै है अन्यकूं नांही करै है, अर दीपक एक घटके प्रकाशनेकै अर्थि जोया सो तिस घटकूं प्रकाशै अर अन्यकूं भी प्रकाशै। तैसैं शब्दका व्यंजक एक पवन सो एककाल प्रकाशै तब सर्व शब्दका श्रवण एककाल ही चाहिये सो नांही है। यह दूषण है सो अभिव्यक्तिपक्षमैं आवै अर उत्पत्तिपक्षमैं तौ नांही आवै। तातैं बहुत कहनेकरि पूरी पड़ो—शब्दकै उत्पत्ति पक्ष ही माननां योग्य है।

बहुरि और कह्या—जो प्रवाहके नित्यपणांकरि वेदकै अपौरुषेयपणां है, तहां दोय पक्ष पूछने? शब्दमात्रकै अनादि नित्यपणां है कि केई विशिष्टशब्दनिकैं अनादि नित्यपणां है? जो कहैगा शब्दमात्रकै है तौ जे शब्द लौकिक हैं ते ही वेदके हैं, तातैं यह कहनां तौ अल्प ही भया जो वेद तौ अपौरुषेय है अर लौकिक शब्द अपौरुषेय नाहीं? सर्व ही शास्त्रनिकै अपौरुषेयता आवैगी। बहुरि कहैगा–जो विशिष्ट अनुक्रमरूप चले आये हैं ते ही शब्द अनादि नित्यपणांकरि कहिये हैं, तौ इहां भी दोय पक्ष पूछनें—ते शब्द जिनिका अर्थ जाननेंमैं आया ऐसे हैं कि जिनिका

अर्थ जाननेंमैं न आया ऐसे हैं? जो कहैगा—उत्तर पक्ष है अर्थ जाननेंमैं न आया ऐसे हैं तौ तिनिकै अज्ञानस्वरूप अप्रमाणताका प्रसंग आवैगा। बहुरि कहैगा आद्यका पक्ष है जो अर्थ जाननेंमैं आया ऐसे हैं तौ पूछिये तिनिका व्याख्यान करनेंवाला अल्पज्ञ है कि सर्वज्ञ है? जो कहैगा—अल्पज्ञ है तौ जिनि वेदवाक्यनिका संबंध कठिन है जाननेंमैं न आवै तिनिका अर्थ अन्यथा भी होय जाय तब मिथ्यात्वस्वरूप अप्रमाणपणां होय। सो ही कही है, ताका श्लोकका[1] अर्थ—मेरा यह अर्थ है अर यह नांही है ऐसा शब्द ही तौ आप कहै नांही, पुरुष ही शब्दका अर्थ कल्पै हैं अर पुरुप हैं ते रागादि दोपनिकरि दूपित हैं। इहां विशेष ऐसा जो अल्पज्ञका कह्या अर्थमैं विशेष नांही, तातैं काहूनैं कह्या जो वेदका वचन है "अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः" ताका अर्थ—ऐसा जो स्वर्गका इच्छुक पुरुष है सो अग्निहोत्रनैं होमै। तब काहूनैं कह्या—याका यह अर्थ नांही, याका अर्थ ऐसा है—जो अग्नि है ऐसा श्वानका नाम है ताका होत्र कहिये मांस सो 'जुहुयात्' कहिये खाय जो स्वर्गका इच्छुक होय सो तथा अग्नि ऐसा नाम ही श्वानका है ताका होत्र कहिये मांस सो खाय ऐसा भी अर्थ क्यों न होय। ये अर्थ अल्पज्ञके कहे कहिये तौ ऐसैं ही सर्व ही अर्थ अल्पज्ञके कहे हैं ते प्रमाण कैसैं होहिं। अथवा यामैं संशय उपजै जो याका कैसा अर्थ है तब अप्रमाणपणां आवै। बहुरि दूसरा पक्ष जो—वेद सर्वज्ञकरि जान्यां अर्थ रूप है सो ही अनादिपरंपरातैं चल्या आवै है, तौ धर्म जे

१-तदुक्तम्—

> **अयमर्थो नायमर्थ इति शब्दा वदन्ति न।**
> **कल्प्योऽयमर्थः पुरुषैस्ते च रागादिविप्लुताः॥१॥**

यज्ञादिक तिनिविषैं चोदना कहिये वेदवाक्यमैं प्रेरणा तिष्ठै है सो ही हमारै प्रमाण है, ऐसा कहना तौ बाध्या गया। बहुरि अतीन्द्रियार्थ प्रत्यक्ष करनेंविषै समर्थ जो पुरुष सर्वज्ञ ताका सद्भाव होतैं तिसके वचनकै भी चोदनाकी ज्यों अर्थ निश्चय करावनेंवालापणांकरि प्रमाण-पणातैं यह वचन तौ वेदकै पुरुषका कियापणांका अभावकी सिद्धिका प्रतिबंधक होय, भावार्थ—सर्वज्ञ ठहऱ्या तब अर्थका निश्चय ताका वचनसूं होयहीगा अर वेदकूं अपौरुषेय माननां वृथा होयगा। बहुरि कहै—जो वेदका वक्ताकै अल्पज्ञपणां होतैं भी यथार्थ व्याख्यानकी परं-पराकरि संप्रदायका संतानका विच्छेद नाही होनेंकरि वेद सत्यार्थ ही मानिये है? ताकूं कहिये ऐसैं नांही जातैं अल्पज्ञकै अतीन्द्रिय पदार्थनि-विषैं निःसन्देह व्याख्यानका अयोग है, जैसैं अंधाकरि खैंच्या जो अंधा ताकरि अनिष्ट देशकूं छोडि वांछित देशका मार्गविषैं प्राप्त करनां बणैं नांही। बहुरि किछू विशेष कहै है—जो अनादितैं व्याख्यानकी परं-परातैं चल्या आया कहै तौऊ वेदका अर्थकूं संबंधकूं ग्रहणकरि पाछैं भूलनेंतैं तथा वचनकी प्रवीणता बिना औरसूं और अर्थ कहनेंतैं तथा खोटे अभिप्रायतैं व्याख्यानका अन्यथा करनेंतैं निर्बाध तत्वका प्रकाश-नका अयोगतैं अप्रमाणता ही होय। सो ही देखिये हैं;—अबारके पंडित भी ज्योतिषशास्त्रादिकविषैं रहस्य यथार्थ जानते भी खोटे अभि-प्रायतैं अन्यथा व्याख्यान करैं हैं। बहुरि केई जानते भी वचनकी प्रवीणता विना नीकैं कहैं नांही जानैं ते अन्यथा उपदेश करैं हैं। बहुरि केई वाच्यवाचकका संबंध भूलिकरि अयथार्थ कहैं हैं। जो ऐसैं न होय तौ वेदके वाक्यार्थविषैं भावना विधि नियोगरूप अर्थका अन्य-थापणांकरि विवाद कैसैं होय। भट्टके शिष्य तौ भावनांकूं वाक्यार्थ मानैं हैं। वेदान्ती विधिकूं वाक्यार्थ मानैं हैं। प्रभाकरवाला नियोगकूं वा-

क्यार्थ मानैं है। बहुरि मनु याज्ञवल्क्य आदि ऋषिनिकै श्रुतिका अर्थकै अनुसार स्मृतिके निरूपणविषैं अन्य अन्य प्रकारपणां कैसैं होय। तातैं प्रवाहपरिपाटीविषैं भी वेदकैं अयथार्थपणां ही है। यातैं यह ठहरी जो अतीतानागतकालविषैं वेदका कर्त्ता नांही। काल शब्दवाच्यपणां हेतुकरि ऐसैं कह्या सो भी अपनें मतका निर्मूल करनेंका हेतुपणांकरि विपरीत साधनतैं यहु हेतु हेत्वाभास ही है। सो ही कहिये है; इहां श्लोक है, ताका अर्थ—

अतीत अनागत काल हैं ते वेदके ज्ञाताकरि रहित हैं जातैं काल शब्दका अर्थ है जे कालशब्दकरि कहिये ते ऐसे ही हैं जैसैं अबार का काल। बहुरि विशेष कहैं हैं कि कालशब्दका अर्थ अतीत अनागत कालका ग्रहण होतैं होय सो तिनिका ग्रहण प्रत्यक्षतैं होय नांही जातैं ते अतीत अनागत काल इन्द्रियगोचर नांही। अर अनुमानतैं तिनिका ग्रहण होतैं भी साध्यकरि तिनिका सम्बन्ध निश्चय करनेंकूं नाही समर्थ हूजिये है जातैं प्रत्यक्षतैं ग्रहण किया साधनकैही साध्यका संबंध मानिये है, सो है नांही। बहुरि मीमांसक कालनामा द्रव्य भी नांही मानैं है। बहुरि कहै—जो अन्यवादी काल मानैं है तिनिकी ही मानि लेकरि तिनिकूं कह्या है काल वेदकर्त्ताकरि रहित है, ऐसा मानो—इनिकैं व्याप्यव्यापकभाव है, सो काल व्याप्यकूं मानों हो तौ वेदकर्ताकरि रहितपणां व्यापककूं भी मानों ऐसा प्रसंगसाधनतैं दोष नांही। ताकूं कहिये—जो परकैं तौ इहां साध्य साधन कहिये वेदके कर्त्ताकरि रहितपणांकै अर कालकै व्याप्यव्यापकपणांका अभाव है। अबार भी

---

(१) अतितानागतौ कालौ वेदार्थज्ञविवर्जितौ।
कालशब्दभिधेयत्वादधुनातनकालवत्॥

देशान्तरविषै वेदका कर्त्ता अष्टकदेव आदिका बौद्धमती आदिनिकै अंगीकार है। बौद्धमती वेदका कर्त्ता अष्टकदेवकूं मानैं है। वैशेषिकमती ब्रह्माकूं मानैं है। जैनी कालासुरकूं मानैं हैं। बहुरि जो आरंभी कह्या—वेदका अध्ययन वेदका अध्ययन पूर्वकही है इत्यादिक, सो भी विपक्ष ने पुरुषके किये शास्त्र तिनिका अध्ययन ताविषैं भी समान है। जैसैं भारतका अध्ययन है सो सर्वही गुरुके अध्ययनपूर्वक है जातैं तिसके अध्ययन पद करिही वाच्य अर्थ है जैसैं अबार अध्ययन कीजिये है ऐसैं समान जाननां। बहुरि और कह्या—जो वदका कर्त्ताका संप्रदायमैं कथन नाहीं किसीकूं यादि नांही जो फलाणें कर्त्ताका किया है ऐसा ही संप्रदाय चल्या आवै है ताका विच्छेद भी नांही हुवा। तहां कहिये—जो इस हेतुमैं जीर्णकूप आरामवन आदिकरि व्यभिचारके दूर करनेकूं संप्रदायका न होनां ऐसा विशेषण किया तौऊ विशेष्य जो कर्त्ता यादि नांही ऐसा है सो विचार किये याका ही अयोग है तातैं यह हेतु नांही। यामैं तीन पक्ष पूछिये—कर्त्ताका यादिपणां वादीकै नांही है कि प्रतिवादी कैं नांही है कि सर्वही कैं नांही है? जो वादिकै नांही है तौ यामैं दोय पक्ष पूछिये—कर्ताका स्मरणका अभाववादीकूं कर्त्ता नांही दीख्या तातैं है कि कर्त्ता के अभावहीतैं है, जो कहै कर्त्ता दीख्या नांही तातैं है तौ पिटकत्रय बौद्धका ग्रंथ है; ज्ञानपिटक, वंदनपिटक, चैत्यपिटक, तिनिकैं भी अपौरुषेयपणां आया। बौद्धकै शिष्यनिभी तिनिका कर्त्ता देख्या

---

(२) भारताध्ययनं सर्वं गुर्वध्ययनपूर्वकम्।
तदध्ययनवाच्यत्वादधुनाध्ययनं यथा॥

इस श्लोकका अर्थ वचनिकामें लिखातो है परन्तु जैसे अन्यत्र "ताका श्लोकका अर्थ" ऐसा लिखकर बादमें लिखा है वैसे नहीं लिखा है।

नांही। अर कहै बौद्ध कर्त्ता मानैं है तातैं अपौरुषेयपणां नांही तौ इसही हेतुतैं वेदविषैं अपौरुषेयपणां मति होहु। बहुरि जो कहै कर्त्ता के अभावतैं है तौ जे कर्त्ताका अभाव कर्त्ताके अस्मरण तैं मानैं तौ यामैं इतरेतराश्रय दूषण आवे है, कर्त्ताका अभाव तैं तौ तिसका अस्मरण सिद्ध होय अर तिसके अस्मरणतैं तिसका अभाव सिद्ध होय। बहुरि कहै—कि प्रमाणपणांकी अन्यथा अप्राप्ति तैं तिसका अभाव सिद्ध होय है जो कर्त्ता होय तौ प्रमाणपणां न होय ऐसैं इतरेतराश्रय नांही आवे है। तौ ऐसैं नांही है जातैं अप्रामाणका कारण जो पुरुषविशेष ताहीका प्रामाण्यकरि निराकरण है, पुरुषमात्रकातौ निराकरण है नांही। बहुरि कहै जो अतीन्द्रिय पदार्थके देखनें वालाका अभावतैं अन्य पुरुषविशेषकै प्रमांणपणांका कारणपणांकी अप्रप्ति है यातैं सर्वथा पुरुषका अभाव सिद्धही है। तौ ताकूं कहिये—जो सर्वज्ञका अभाव काहे तैं है? जो कहै प्रमाणपणांकी अन्यथा अप्राप्ति तैं सर्वज्ञका अभाव है तौ इतरेतराश्रयपणां है, बहुरि कहै कर्त्ताके अस्मरणतैं है तौ चक्रकनामा दूषण है। वेदविषैं कर्त्ताके अस्मरणतैं तौ सर्वज्ञका अभाव सिद्ध होय, बहुरि सर्वज्ञका अभाव सिद्ध होय तब वेदकैं प्रमाणपणांकी अन्यथा अनुपपत्ति सिद्ध होय और जब प्रमाणापणांकी अन्यथा अनुपपत्ति सिद्ध होय तब कर्त्ताका अभाव सिद्ध होय तिसकूं सिद्ध होतैं कर्त्ताका अस्मरण सिद्ध होय ताके सिद्ध होतैं फेरि सर्वज्ञका अभाव सिद्ध होय, ऐसैं चक्रकका प्रसंग होय है। बहुरि कहै सर्वज्ञका अभाव अभावप्रमाणतैंसिद्ध होय है। तौ ताकूं कहिये—जो सर्वज्ञका साधक अनुमान प्रमाणका प्रतिपादन पहले किया ही था तातैं अभाव-प्रमाणके उत्थानका अयोग है जातैं पांच प्रमाण भावरूप हैं तिनिका अभाव होय तब अभाव प्रमाणकी प्रवृत्ति होय, ऐसैं मीमांसकनैं कह्या

है, ताका श्लोक है ताका अर्थ:—"जिस वस्तुके स्वरूपविषैं पांच प्रमाण न उपजै तहां वस्तुका अभावका ज्ञान होनेंकै अर्थि अभावकै प्रमाणता है, ऐसैं कह्या है"। तातैं वादीक तौ वेदका कर्त्ताका अस्मरण नांही वणैं है। बहुरि दूजा पक्ष जो प्रतिवादीकैं है ऐसैं कहै। तौ ताकै भी नांही वणैं है जातैं प्रतिवादी कर्त्ता वेदका स्मरण करैही है। बहुरि सर्वहीकैं कहै तौ भी नांही वणै है जातैं वादीकैं वेदका कर्त्ताका अस्मरण है तौऊ प्रतिवादीकै स्मरण है॥ बहुरि मीमांसक कहैं है— जो प्रतिवादी वेदविषैं अष्टकदेवकूं आदि देकरि बहुत कर्त्ता स्मरैं हैं, यातैं स्मरणकै विवादतैं प्रमाणता नांही है, तातैं सर्वकैं कर्त्ताका अस्मरणही सिद्ध होय है। ताकूं कहिये—जो कर्त्ताका विशेषविषैंही विवाद है कर्त्तासामान्यविषैंतौ विवाद है नांही यातैं सर्वकै कर्त्ताका अस्मरण असिद्ध है। बहुरि सर्व प्राणीनिकै ज्ञानका विज्ञानकरि रहित जो अल्पज्ञ पुरुष सो सर्वकै कर्त्ताका अस्मरण कैसैं जानैं। तातैं वेदविषैं अपौरुषेयपणांका स्थापनेंका असमर्थपणां है। तातैं आगमका लक्षण किया ताकैं अव्यापकपणां नांही है। बहुरि असंभवीपणां दूषणभी नांही है पौरुषेयपणां साधनेंविषैं प्रमाण बहुत हैं, सोही कहै हैं; बृहत्पंचनमस्कारनामा स्तोत्र पात्रकेसरीकृत है ताकी काव्यका अर्थ;— जातैं जन्ममरणसहित जे ऋषि तिनिके गोत्र आचरण आदि नाम

१—प्रमाणपञ्चकं यत्र वस्तुरूपेण जायते।
वस्तुसत्तावबोधार्थं तत्राभावप्रमाणता॥ इति

२—सजन्ममरणर्षिगोत्रचरणादिनामश्रुते—
रनेकपदसंहतिप्रतिनियमसन्दर्शनात्।
फलार्थिपुरुषप्रवृत्तिनिवृत्तिहेत्वात्मनां
श्रुतेश्च मनुसूत्रवत्पुरुषकर्त्तृकैव श्रुतिः॥ इति

वेदमैं कहे हैं, बहुरि अनेक पदनिका समूहरूप न्यारे न्यारे छंदरचना वेदमैं देखिये है, बहुरि फलके अर्थी जे पुरुष तिनिकी प्रवृत्ति निवृत्तिके कारण स्वरूप वेदमैं कहे हैं ते सुनिये हैं "स्वर्गका वांछक अग्निष्टोम-करि पूजै" इत्यादिक तौ प्रवृत्तिके वाक्य, बहुरि "कांदा न खाइये, दारू न पीवै गऊकूं पगतैं स्पर्शनां नांही," इत्यादि निवृत्तिके वचन वेदमैं हैं जैसैं मनु ऋषिके सूत्रमैं हैं तैसैं, तातैं वेद है सो पुरुषका ही किया है। ऐसा भी वचन हमारे आचार्यनिका है। बहुरि अपौरुषेयपणां वेदकै होतैं भी प्रमाणता नांही वर्णैं है जातैं प्रमाणपणांका कारण जे गुण तिनिका वेदविषैं अभाव है। बहुरि मीमांसक कहै है—जो गुण-निकरि किया ही तौ प्रमाणपणां नांही, दोषका अभावकरि भी प्रमाण-पणां है, सो दोषका आश्रय पुरुष है ताकै कर्त्तापणांका अभाव होतैं भी वेदकै प्रमाणपणां निश्चय कीजिये है, गुणके सद्भावहीतैं नांही है सो ही हमारे कही है, ताका श्लोकका अर्थ—शब्दकै विषैं दोष उपजै है सो तौ वक्ताकै आधीन है ऐसा निश्चय है, बहुरि कहूं दोषका अभाव है सो गुणवान वक्तापणांकै आधीन है, जातैं वक्ताके गुणनि-करि दूर किये जे दोष ते फेरि शब्दमैं आवैं नांही, बहुरि यह पक्ष समीचीन है जो वक्ताका अभावकरि तिस वक्ताकै आश्रय जे दोष ते शब्दमैं न होहि। ताका समाधान आचार्य करै हैं—जो यह कहनां भी अयुक्त है जातैं हमारा अभिप्राय मीमांसकनैं जाण्यां नांही, जातैं हमनैं तौ वक्ताकै अभाव होतैं वेदकै प्रमाणपणांका अभाव है ऐसैं कह्या

---

(१) शब्दे दोषोद्भवस्तावद्वक्त्राधीन इति स्थितम्।
तदभावः क्वचित्तावद्गुणवद्वक्तृकत्वतः॥ १॥
तद्गुणैरपकृष्टानां शब्दे संक्रान्त्यसंभवात्।
यद्वा वक्तुरभावेन न स्युर्दोषा निराश्रयाः॥ २॥

नांही। हमनैं तौ ऐसैं कह्या है—जो वेदके व्याख्यान करनेवालेनिकै अतीन्द्रिय पदार्थनिका देखनां आदि गुणनिका अभाव होतैं दोषनिका अभाव नांही, तातैं वेदविषै भी दोषनिका सद्भाव आवै, तब प्रमाणपणांका निश्चय नांही, ऐसैं कहैं हैं। तातैं अपौरुषेयपणा होतैं भी वेदकै प्रमाणपणांका निश्चयका अयोग है। तातैं इस अपौरुषेयपणां रूप वेद करि हमारा आगमके लक्षणकै अव्यापीपणां अर असंभवीपणां नांही है। यातैं बहुत कहनेंकरि पूरी पड़ो ॥ ९४ ॥

आगैं बौद्धमती कहै है जो शब्दकै अर अर्थकै संबंधका अभाव है तातैं शब्द अन्यका निषेधमात्र कहनेवाला है, नाम जाति गुण क्रिया आदि स्वरूप शब्दका अर्थ नांही है तातैं शब्दकै आप्तप्रणीतपणां होतैं भी यातैं सत्य अर्थका ज्ञान कैसैं होय? ऐसैं तर्क होतैं सूत्र कहैं हैं;—

सहजयोग्यतासंकेतवशाद्धि शब्दादयो वस्तुप्रतिपत्तिहेतवः ॥ ९५ ॥

याका अर्थ—सहज कहिये स्वभावभूत योग्यता कहिये वस्तुस्वरूप विषै पुरुषका अभिप्रायका नियम "जैसैं पृथु बुध्नोदर आकाररूप मांटीका रूप है सो घट है" ऐसैं संकेतके वशतैं 'हि' कहिये प्रकटपणैं ते पूर्वोक्त आप्तप्रणीत शब्द अर आदि शब्दतैं अंगुली आदिकी समस्या हैं ते वस्तुकी प्रतिपत्ति कहिये ज्ञान ताकूं कारण हैं ॥ ९५ ॥

आगैं याका उदाहरण कहैं हैं;—

यथा मेर्वादयः सन्ति ॥ ९६ ॥

याका अर्थ—जैसैं मेरु आदिक हैं ते हैं। इहां बौधमती कहै है—जो जे ही शब्द तौ अर्थके होतैं देखे ते ही शब्द अर्थके अभाव

होतैं भी देखिये हैं तौ अर्थके कहनहारे शब्द कैसैं? ताकूं आचार्य कहैं हैं—यह भी कहना अयुक्त है जातैं जे अर्थके कहनहारे शब्द नांही है तिनितैं अर्थके कहनहारे शब्द अन्य ही हैं, सो अन्यकै व्यभिचार होतैं अन्यकै कहनां युक्त नांही, जातैं याभैं अतिप्रसंग दूषण आवै है। जो ऐसैं न मानिये तौ इन्द्रजालके घडेमैं धूम होतैं भी अग्नि नांही ऐसैं व्यभिचार होतैं पर्वत आदिके विषैं धूम होय ताकै भी व्यभिचारका प्रसंग ठहरै। बहुरि जो कहै—यत्नतैं परीक्षा किया कार्य कारणकूं उलंघि वर्त्तै नांही, तौ ऐसैं इहां भी समान जाननां, जो शब्द जिस अर्थमैं होय तिसकूं ही कहै है नीकैं परीक्षा किया शब्द है सो अर्थकूं नांही व्यभिचरै है। ऐसैं होतैं अन्यका निषेधके शब्दार्थपणांकी कल्पना है सो प्रयासमात्र ही है। बहुरि अन्यापोह कहिये अन्यका निषेध शब्दका अर्थ नांही ठहरै है जातैं प्रतीतिविरोध है प्रतीतिमैं ऐसैं आवता नांही। जातैं गौ आदि शब्दके सुननें तैं यह अन्य नांही ऐसा सामान्य अभाव जो तुच्छाभाव सो तौ प्रतीतिमैं आवै है नांही' तिस गऊ शब्दतैं सास्नादिमान पदार्थविषैं प्रतीति देखिये है, गऊतैं अन्यकी बुद्धि जातैं होय ऐसा तहां अन्य शब्द ल्यावनां। बहुरि कहै—एक ही गऊ शब्दतैं दोय अर्थकी प्रतीतिका संभावन है तातैं अन्य शब्द ल्याव नेंतैं प्रयोजन नांही। ताकूं कहिये—जो ऐसैं नांही, एक शब्दकैं दोय विरुद्ध अर्थके कहनेंका विरोध है असंभव है। बहुरि विशेष कहै है—जो गऊ शब्दकै गऊतैं अन्यकी व्यावृत्ति विषय होतैं पहलैं तौ गऊ नांही ऐसी प्रतीति आवै है, सो ऐसैं तौ बनैं नांही लोककैं तौ पहले ही गऊ अर्थकी प्रतीति होय है यातैं अन्यापोह शब्द का अर्थ नांही। बहुरि विशेष कहै है—जो अपोह कहिये निषेध सो सामान्य है, तौ शब्दका अर्थपणांकी प्रतीतिमैं लिया हुवा पर्युदास प्रतिषेधरूप

है कि प्रसज्य प्रतिषेधरूप है ? ऐसैं दोय पक्ष पूछिये। जहां विधिकी प्रधानता होय निषेध गौण होय तहां पर्युदासप्रतिषेध होय। इहां जाका निषेध करनां होय ताके शब्दकै पूर्वै नकार ल्यावै, जैसैं काहूनैं कह्या 'अब्राह्मणकूं ल्याव' तहां जानिये ब्राह्मणका तौ निषेध है अर अन्य वैश्यादिककी विधि है तिनिकूं बुलावै है। बहुरि जहां विधिकी तौ अप्रधानता होय अर निषेधकी प्रधानता होय तहां प्रसज्य प्रतिषेध होय इहां क्रियाकी साथ नकार ल्यावै जैसैं काहूनैं कह्या–'ब्राह्मणकूं न ल्याव' तहां जानिये नांही ल्यावनेंकूं कहै है, इहां अत्यंत निषेध जाननां। सो इहां अन्यापोह शब्दार्थविषैं दोय पक्ष पूछि तहां कहै—पर्युदास प्रतिषेध है तौ गऊपणां ही नामान्तरकरि कह्या जातैं अभावके अभावकैं तौ अन्यभावका सद्भावपणां ही है, गऊ के अभावका अभाव कह्या तब गऊका ही अन्य नाम कह्या। बहुरि इहां पूछिये जो गऊ शब्दकै वाच्य अश्व आदिकी निवृत्ति है लक्षण जाका ऐसा अभाव कहा है। जो कहै अपनां स्वलक्षण जो क्षणिक निरन्वय तिसस्वरूप है, तौ यह तौ वणैं नांही जातैं स्वलक्षण तौ सकल विकल्प अर वचन इनिके गोचरतैं दूरवर्त्ती है। बहुरि कहै जो कावरापणां आदि व्यक्तिरूप है तौ यह भी नांही है, जातैं बौद्ध शब्दकूं सामान्यका वाचक कहै है सो कावरापणां आदि विशेषरूप व्यक्ति तिनिकूं कहें शब्दकै सामान्यका वाचक कहनेंका अभावका प्रसंग आवै है। तातैं समस्त जे गऊकी व्यक्ति तिनि विषैं अन्वयकी प्रतीतिका उपजावनहारा अर तहां न्यारा न्यारा समस्तपणांकरि व्यक्तिनिविषैं वर्त्तमान ऐसा सामान्य ही गोशब्दका अर्थ है, ताहीका अपोह ऐसा नाम करतैं तौ नाममात्र ही भेद होय है अर्थभेद तौ नांही। तातैं आदिका पक्ष जो पर्युदासनिषेध सो तौ श्रेष्ठ नांही। बहुरि दूसरा पक्ष जो प्रसज्यप्रतिषेध सो भी श्रेष्ठ नांही है जातैं

गऊ आदि शब्दनिका प्रसज्यप्रतिषेध होय तब कोई बाह्य पदार्थ विषै प्रवृत्तिका प्रयोग होय, अर तुच्छाभाव मानिये तौ नैयायिकमतका प्रवेशका प्रसंग आवै। बहुरि विशेष कहैं हैं—जो गऊ आदिक जे सामान्य शब्द हैं, बहुरि जे शाबलेय कहिये कावरा आदिक विशेष शब्द हैं तिनिकै बौद्धके अभिप्रायकरि पर्यायशब्दपणां आवै अर्थका भेदका अभाव ठहरै जातैं एक अपोह ही सर्व शब्दानिका अर्थ ठहरै, जैसैं वृक्षका दूसरा नाम पादप इत्यादि पर्याय शब्द हैं तिनिका अर्थ न्यारा नांही तैसैं ठहरै। बहुरि तुच्छा भाव कहिये सर्वथा अभाव ताकै विषै भेद युक्त नांही है। संसृष्टत्व, एकत्व, नानात्व भेद हैं ते तौ वस्तु ही विषैं प्रतीतिमैं आवैं हैं। बहुरि अभावविषैं भेद मानिये तौ वस्तुपणांकी प्राप्ति आवै है जातैं वस्तुपणांका लक्षण भेद स्वरूप है। बहुरि निषेध करनें योग्य जे गऊ शब्दकै अश्व आदिक ते ही भये संबंधी तिनिके भेदतैं अभावमैं भेद कहै तौ यह बणै नांही जातैं प्रमेय अभिधेय आदिक जे विधिरूप शब्द हैं तिनिकी प्रवृत्तिका अभावका प्रसंग आवै। जातैं प्रमेय आदि शब्दानिकैं 'व्यवच्छेद्य' कहिये निषेध करनें योग्य अप्रमेय आदि है सो ताके अतद्रूपकरि भी अप्रमेय आदिरूपपणां होतैं तिस अप्रमेय आदितैं व्यवच्छेदका अयोग है, तातैं तहां प्रमेय अभिधेय इत्यादि शब्द वाच्य अपोहविषैं संबंधीके भेदतैं भेद कैसैं होय। बहुरि विशेष कहै है—शाबलेय कावरा आदि शब्दनिविषैं अपोह कहिये निषेध सो एक ही नांही ठहरै है जातैं व्यक्ति व्यक्ति विषैं न्यारा न्यारा ही ठहरै है। बहुरि कहै—जो कावरा आदि शब्द अपोहका भेद नांही करैं हैं तौ ताकूं कहिये—अश्व आदि शब्दभी भेद करनेंवाले मति होहु जाकै अपनें सामान्यमांही जे कावरा आदि गुण ते भेद करनेंवाले नांही, ताकै अश्व आदि भेद करनेंवाले कहनां तौ अति-

साहस है, जबरी है। वस्तुके भी संबंधीके भेदतैं भेद न पाइये तब अवस्तुकै कैसैं होय? सो ही कहिये है,—एक ही देवदत्त आदि नामा कोई पुरुष कडा कुंडल आदि पहेरे तब तिनि संबंधीनिकै भेदतैं अनेकपणां होय नांही। बहुरि विशेश कहै है —संबंधीके भेदतैं भेद भी कहूं होहु परंतु वस्तुभूत सामान्य मानें विना अन्यापोह है आश्रय जाका ऐसा संबंधी है सो तुमारें होनें योग्य न होय है, सो ही कहिये है —जो कावरा आदि विषैं वस्तुभूत सारूप्य कहिये समानता ताका अभाव है तौ अश्व आदिका परिहार करि तहां ही तिनिका विशेषरूप यह गऊ है ऐसा नाम अरु ज्ञान कैसैं होय तातैं संबंधीका भेदकरि भेद चाहै है तौ सामान्य भी वस्तुभूत अंगीकार करनां योग्य है। बहुरि विशेष कहै है—जो अपोह शब्दार्थकी पक्ष विषैं संकेत ही बणै नाहीं जातैं तिस अपोह के ग्रहणका उपायका असंभव है। तहां तिसका ग्रहण विषैं प्रत्यक्ष प्रमाण समर्थ नांही जातैं प्रत्यक्षका तौ वस्तु विषय है, अन्यापोह तौ अवस्तु है। बहुरि अनुमान भी ताका ग्रहणका उपाय नांही जातैं अनुमान तौ स्वभाव तथा कार्य वस्तुका लिंग होय तिस करि उपजै है, अपोह है सो तौ निरुपाख्य कहिये निःस्वभाव है तातैं स्वभावलिंग नांही अर अर्थक्रियाकरि रहित है तातैं कार्यलिंग नांही॥ बहुरि विशेष कहै है—गऊ शब्दकै अगऊका अपोह कहनहारापणां होतैं गऊ ऐसा शब्दका कहा अर्थ होय? जातैं विना जाण्यांकै विधि निशेधविषै अधिकार नांही है। जो कहै अगऊ की निवृत्ति गऊ शब्दका अर्थ है तौ इतरेतराश्रयनामा दोष आवैगा, अगऊका व्यवच्छेद तौ अगऊका निश्चय भयें होय बहुरि सो अगऊ गऊकी निवृत्तिस्वरूप है, बहुरि गऊ है सो अगऊका व्यवच्छेदरूप है ऐसैं इतरेतराश्रय दोष है। बहुरि अगऊ इस पदमैं भी गऊ ऐसा उत्तरपद है ताका अर्थ भी ऐसैं

ही विचारनां, गऊकी व्यावृत्तितैं अगऊका निश्चय होय अगऊकी व्यावृत्तितैं गऊका निश्चय होय । बहुरि कहै—जो अगऊ ऐसैं इहां गोशब्दका अर्थ विधिरूप और ही है, तौ अपोहही शब्दार्थ है ऐसा कहनां विगडैगा । तातैं कही जो युक्ति ताकरि विचाऱ्या हुवा अपोहका अयोग है ॥ तातैं अन्यापोह शब्दका अर्थ नांही है यह निश्चय भया जो सहज योग्यताके वशतैं शब्दादिक हैं ते वस्तुकी प्रतिपत्तिके कारणा हैं ॥ ९६ ॥

इहां श्लोकः—

स्मृतिरनुपहतेयं प्रत्यभिज्ञानवज्ञा
प्रमितिनिरतचिन्ता लैंगिकं सङ्गतार्थम् ।
प्रवचनमनवद्यं निश्चितं देववाचा
रचितमुचितवाग्भिस्तथ्यमेतेन गीतम् ॥

याका अर्थः—इस अधिकारविषैं निर्बाध तौ स्मृतिप्रमाण कह्या, बहुरि आदरनैंयोग्य प्रत्यभिज्ञान प्रमाण कह्या, बहुरि प्रमिति कहिये प्रमाणका फलरूप ज्ञान तिसविषैं लीन ऐसा चिंता कहिये तर्क प्रमाण कह्या, बहुरि यथार्थ है अर्थ जामैं ऐसा लैंगिक कहिये अनुमान प्रमाण कह्या, बहुरि निर्दोष प्रवचन कहिये आगम प्रमाण कह्या । ये पांच परोक्षप्रमाणके भेद अकलंकदेव आचार्यके वचनकरि निश्चय किया हुवा माणिक्यनंदिनैं उचितवचन करि रच्या हुवा मैं अनन्तवीर्य आचार्य यहु यथार्थ गाया है ॥ १ ॥

छप्पय

स्मृति वरनीं निरदोष तथा प्रतिभिज्ञा सांची,
तर्क यथारथरूप बहुरि अनुमा शुभ वांची ।

आगम बाधारहित, देव अकलंक विचारा,
ताके वच अनुसार नंदिमाणिकनैं धारा ॥
तेही अनंतवीरज गणी भाषे भेद परोक्षके ।
देशभाषभाषी पढो गुणी सुबुद्धी नर जिसे ॥१॥

ऐसैं परीक्षामुखप्रकरणकी लघुवृत्तिकी
वचनिकाविषैं परोक्षका प्रपंच
तीसरा समुद्देश
समाप्त भया ॥

चतुर्थ-समुद्देश ।

-»:※:«-

(४)

आगैं प्रमाणकी स्वरूप संख्या विप्रतिपत्तिका निराकरण करि अब प्रमाणका विषयकी विप्रतिपत्तिका निराकरणकै अर्थि सूत्र कहै है;—

सामान्यविशेषात्मा तदर्थो विषयः ॥ १ ॥

याका अर्थ—सामान्य विशेष स्वरूप तिस प्रमाणका अर्थ है ताकूं विषय कहिये । तहां 'तत्' शब्दकरि प्रमाण लेनां ताकै ग्रहण करनें योग्य जो अर्थ सो विषय है ताका विशेषण सामान्य अर विशेष है आत्मा जाका, ऐसा है । सामान्य अर विशेषका स्वरूप आगैं कहसी । इनि दोऊनिका ग्रहण तथा आत्मशब्दका ग्रहण है सो केवल सामान्यहीकै तथा केवल विशेषहीकै तथा केवल दोऊ स्वतंत्रकै प्रमाणका विषयपणांका प्रतिषेधकै अर्थि है, न्यारे न्यारे ही केवल विषय नांही ।

तहां केई तौ सत्ता सामान्यहीकूं प्रमाणका विषय मानैं हैं तिनिमैं सत्तामात्र देह जो परम ब्रह्म ताकै तौ प्रमाणका विषयपणां का निराकरण पूर्वै सर्वज्ञके विवादविषैं कियाहीथा । जातैं सत्ता मात्रकै केवल सामान्यपणां है सो प्रमाणका विषय नांही । बहुरि तिस शिवाय अन्य विचारिये है, तहां सांख्यमत वाले तौ प्रधानकूं सामान्य कहैं हैं सो प्रमाणका विषय मानैं हैं, ताका वचनका श्लोक है, ताका अर्थ ऐसा —जो सत्त्व रजः तम ये तीन जामैं पाइये, बहुरि अविवेकी कहिये महत्

---

१ त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि ।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ॥

आदितैं भेदरहित बाह्यविषयस्वरूप अभिन्न एक रूप ऐसा सामान्य, बहुरि अचेतन कहिये जड, बहुरि उत्पत्तिधर्मस्वरूप, बहुरि व्यक्त कहिये प्रकट दीखै, तैसैं तौ प्रधान है; बहुरि तिसतैं विपरीत कहिये उलटा विशेषणस्वरूप अर तैसा पुरुष है ऐसैं सांख्य कहै है। ताकूं दोय पक्ष पूछिये—जो ऐसा प्रधान केवल महत् आदि कार्यके निपजावनें प्रवर्त्तै है सो काहूकूं अपेक्षा लेकरि प्रवर्त्तै है कि विना अपेक्षा ही प्रवृत्ति है? जो कहै अपेक्षा लेकरि प्रवर्त्तै है तौ किसकी अपेक्षा ले है, सो निमित्त कहनां जाकी अपेक्षा ले प्रवर्त्तै। तहां कहै–जो पुरुषका प्रयोजन ही याके प्रवर्त्तनेंमैं कारण है जातैं ऐसा कह्या है, पुरुषार्थ हेतु करि प्रधान प्रवर्त्तै है। तहां पुरुषार्थ दोय प्रकार है; एक तौ शब्द आदि विषयका ग्रहण करनां, दूजा गुण तौ स्पर्श आदि अर पुरुषतैं अन्य जो प्रधान तिनितैं पुरुषकै भेदका देखनां, ये दोय पुरुषार्थ कहे हैं। ताकूं आचार्य पूछै है—कि यह सत्य है तैसैं प्रवर्त्तता भी प्रधान है सो पुरुषकृत किछू उपकार लेकरि प्रवर्त्तै है कि नांही लेकरि प्रवर्त्तै है? जो कहैगा पुरुषकृत उपकार लेकरि प्रवर्त्तै है तौ तहां पूछै है—कि सो उपकार प्रधानतैं भिन्न है कि अभिन्न है? जो कहै—भिन्न है, तौ यह उपकार प्रधानका है ऐसा नाम काहेतैं भया? जो कहै—प्रधानकै अर उपकारकै संबंध है, तौ समवायादिक संबंध सांख्य मानै ही नाही तब संबंध काहेका? बहुरि तादात्म्य कहै तौ भेद कैसैं कहिये, तादात्म्य तौ भेदका विरोधी है। बहुरि दूजा पक्ष कहै—जो उपकार प्रधानतैं अभिन्न है तौ प्रधान ही तिस पुरुष करि किया ठहर्‍या। बहुरि कहै—जो प्रधान पुरुष है उपकारकी अपेक्षा विना ही प्रवर्त्तै है तौ मुक्तात्मा प्रति भी प्रधान प्रवर्त्तै, यामैं विशेष नांही। या ही कथन करि निरपेक्षप्रवृत्ति पक्ष भी निराकरण किया, तहां भी हेतु कह्या सो ही जाननां।

बहुरि विशेष कहैं हैं—जो प्रधान कोई प्रकारकरि सिद्ध होय तौ कही बात सारी बणैं सो प्रधानकी तौ सिद्धी ही होय नांही, काहू प्रमाण करि निश्चय किया जाय नांही । इहां सांख्य कहै है—जो कार्य जगतमैं होय है तिनिकैं एक अन्वय देखिये है तातैं कोई एक कारण करि उपजबापणां माननां, बहुरि जे महत् अहंकारादिक कार्य है तिनिके भेदनिका परिणाम देखिये है । तातैं इनि दोऊ हेतुनितैं जैसैं घट घटी सरावा आदिकै एक माटीका अन्वय अर भेदपरिणाम देखिये है ताका कारण एक मृत्तिका दीखै है तैसैं महत् आदि कार्यनिकै एक अन्वय देखनेंतैं बहुरि भेदनिका परिणाम देखनेंतैं एकरूप कारण प्रधान मानिये है, ऐसैं प्रधानकी सिद्धि है । तहां आचार्य कहैं हैं—यह चर्चा तौ सुन्दर नांही जातैं सुख दुःख मोहरूपपणां करि घट आदिकै अन्वयका अभाव है, जडकै चेतनका अन्वय होय नांही सुखादिकका अन्वय तौ अन्तरंग तत्व ही कै पाइये है तातैं सर्व ही कार्यनिकै तौ एक अन्वय बण्यां नांही । इहां सांख्य कहै—जो अन्तरङ्ग तत्वकै तौ सुख आदिका परिणाम नांही अर सुख दुःखादिकरूप परिणामता जो प्रधान ताके संसर्गतैं आत्माकै भी ते प्रतिभासैं है । तहां आचार्य कहै है—यह भी बणै नांही, जो प्रतिभासमान वस्तु नांही ताकै भी संसर्गकी कल्पना कीजिये तौ तत्वकी संख्याका नियमका निश्चय नांही होय, सो कही है, ताका श्लोकका[1] अर्थः—

जो संसर्गतैं ही अविभाग कहिये अभेद मानिये जैसैं लोहके गोला-कै अर अग्निकै है तैसैं तौ सर्व वस्तुकै भेद अभेदकी व्यवस्था कहिये नियम ताका उच्छेद होय जाय, ऐसैं तत्वकी संख्याका नियम ठहरै

१ संसर्गादविभागश्चेदयोगोलकवह्निवत् ।
भेदाभेदव्यवस्थैवमुत्पन्ना सर्ववस्तुषु ॥ १ ॥ इति ।

नांही। बहुरि जो परिणामनामा हेतु कह्या सो एक स्वभावरूप मांटीतैं भये जे घट घटी सरावा आदि तिनिविषैं भी है, बहुरि अनेक स्वभावरूप जे पट कुटी मुकुट शकट, आदि तिनि विषैं भी पाइये है, यातैं हेतु अनैकान्तिक है; तातैं प्रधान जो प्रकृति ताकी सिद्धि नांही है, सो ऐसैं प्रधानका ग्रहणके उपायका असंभव है। अथवा संभवै तौऊ तिसतैं कार्यकी उत्पत्तिका अयोग है। सांख्यनैं जो कह्या ताकी दोय आर्या है, [१]तिनिका अर्थः—प्रकृतितैं तौ महान् होय है जो उत्पत्तितैं लगाय नाश ताईं स्थायी रहै ऐसी बुद्धिकूं महान् कहै है, बहुरि तिस महान्‌तैं अहंकार होय है, बहुरि तिस अहंकारतैं षोडश गण होय है (ते श्रोत्र त्वचा चक्षु जिह्वा घ्राण ये तौ पांच बुद्धि इन्द्रिय, अर पायु उपस्थ वचन पग हाथ ये पांच कर्म इन्द्रिय हैं, एक मन है, रूप रस गंध शब्द स्पर्श ये पांच तन्मात्रा हैं ऐसैं सोलह भये) बहुरि तिस षोडशगणतैं पांच जे तन्मात्रा तिनितैं पांच भूत उपजैं हैं, ते कहिये हैं,—रूपतैं तौ अग्नि होय है, रस तैं जल होय है गंधतैं भूमि होय है, शब्दतैं नभ होय है, स्पर्शतैं पवन होय है; ऐसैं सृष्टिका क्रम है। तहां मूल प्रकृति तौ विकृति रहित है (विकार रहित है) अर याका कोई कारण भी नांही, बहुरि महत् आदि हैं ते प्रकृतिकी सात विकृति हैं अर सोलह गण है सो विकार है; ऐसैं विकार हैं ते सात अर सोलह तेईस हैं। बहुरि पुरुष है सो विकृति भी नांही अर प्रकृति भी नांही। ऐसैं पचीस तत्व

१ यदुक्तं परेण—**प्रकृतेर्महान् ततोऽहंकारस्तस्माद्गणश्च षोडशकः।**
तस्मादपि षोडशकात्पंचभ्यः पंच भूतानि ॥ १ ॥

वचनिकाकी प्रतिमें दो आर्याओंका उल्लेख है परन्तु मुद्रित संस्कृत प्रतिमें उपरिलिखित सिर्फ एक यही आर्या है, दूसरी नहीं है।

कहे। तिनिका वर्णन वंध्याके पुत्रका सुरूपपणांका वर्णन सरीखा है याका विषय असत्यार्थ है, तातैं आदरनें योग्य नांही। प्रकृतितैं कार्यकी उत्पत्ति वर्णै नांही। आकाश तौ अमूर्त्तीक है अर पृथ्वी आदि मूर्त्तीक हैं तिनिकैं एक कारणतैं उपजनेंका अयोग है। जो ऐसैं न मानिये तौ अचेतन जो पंचभूतका समूह तातैं चैतन्यकी सिद्धि होय, तब चार्वाकमतकी सिद्धिका प्रसंग आवै। तब सांख्यमतका बास भी न रहै। बहुरि सत् कार्यवाद सांख्य करै है ताका प्रतिषेध "प्रमेयकमलमार्त्तंड" ग्रंथविषैं विस्तारकरि कह्या है, सो इहां नांही कहिये है, या ग्रंथकै संक्षेपपरूपणां है यातैं; ऐसैं जाननां। ऐसैं विचार किये सामान्यमात्रही प्रमाणका विषय बर्णै नांही इहां तांई सांख्यमतीसूं चरचा है।

आगैं सांख्य आदि सामान्यहीकूं तत्त्व कहैं हैं तैसैं बौद्धमती कहैं है—जो विशेष ही तत्त्व है, वस्तुस्वरूप है, ये ही प्रमाणका विषय है जातैं तिनिकै असमान आकारनिकरि सामान्य आकारनितैं समस्तपणां करि भिन्नस्वरूपपणां है, भावार्थ—विशेष हैं ते सामान्यतैं सर्वथा भिन्न ही हैं। नैयायिक सामान्यकूं सर्वथा एक मानैं है सो ऐसे एक सामान्यकैं अनेक विशेषनि विषैं व्याप्ति करि वर्त्तनके संभवका अभाव है। एक सामान्य अनेक विशेषनिमैं कैसैं व्यापै। तिस सामान्यकै एक व्यक्ति विषैं समस्तपणां करि तिष्ठना पावै तिस ही काल अन्य व्यक्ति विषैं पावनेंका अभावका प्रसंग आवै है। बहुरि जो कहिये—तिस ही काल अन्यव्यक्ति विषैं भी पाइए है तौ सामान्य नाना ठहरै जातैं एक ही काल भिन्नदेशपणांकरि तिष्ठते जे व्यक्ति तिनिविषैं समस्तपणाकरि जैसैं व्यक्ति न्यारे न्यारे हैं तैसैं सामान्य भी न्यारे न्यारे पावैं। बहुरि जो ऐसैं होतैं भी सामान्यकै नानापणां न होय तौ व्यक्ति भी न्यारे न्यारे मति होहु। तातैं जो बुद्धि करि अभेद मानिये है सो ही सामान्य

है वस्तुभूत नांही। सो हमारे कह्या है, ताका श्लोकका अर्थः—जो पदार्थ एक जायगां देखिये सो अन्य जायगां कहूं न देखिये है तातैं बुद्धि विषैं अभेदकल्पना सो ही सामान्य है, यातैं भिन्न और कछू नांही है। बहुरि बौद्ध ही कहैं हैः—ते विशेष परस्पर संबंधरहित ही हैं जातैं तिनिकैं संबंध विचारया हुवाका अयोग है। जो एकदेशकरि विशेषनिकै संबंध कहिये तौ एक परमाणुकै छहौंही दिशातैं छह परमाणुका एककाल संयोग होतैं परमाणुकै छह अंशपणांकी प्राप्ति होय, सो परमाणुकै छह अंश कहनां संभवै नांही। बहुरि सर्वस्वरूपकरि संबंध कहिये तौ पिंडकै अणुमात्रपणांका प्राप्ति आवै। बहुरि अवयवीका भी निषेध है। तातैं विशेषनिकै परस्पर संबंध नांही बणें है। बहुरि अवयवीका निषध ऐसैं है—जो वृत्तिविकल्प कहिये अवयवीकी अवयवनिविषैं वृत्तिका विचार ताकरि तथा अनुमानकरि बाधाही आवै है। सो ही कहिये है, बौद्ध नैयायिककूं कहै है—अवयव हैं ते अवयवीविषैं वर्त्तैं हैं यह तौ तैं मानीही नांही है बहुरि अवयवी है सो अवयवनिविषैं वर्त्तै है ऐसैं मानीं है; सो इहां दोय पक्ष पूछिये है—जो एकदेशकरि वर्त्तै है कि सर्वस्वरूप करि वर्त्तै है? जो कहै एकदेशकरि वर्त्तै है तौ अवयवीकै अवयवनि सिवाय अन्य अवयवका प्रसंग आवै, बहुरि तिनि विषैं भी अन्य एकदेशकरि अवयवी वर्त्तै तब अनवस्था पावै। बहुरि कहै सर्व स्वरूपकरि अवयवी अवयवनि विषै वर्त्तै है,–तौ पूछिये–एक एक अवयव प्रति स्वभावभेदकरि वर्त्तै है कि एकरूपकरि वर्त्तै है? जो कहै–

---

(१) तदुक्तम्—

एकत्र दृष्टो भावो हि क्वचिन्नान्यत्र दृश्यते।
तस्मान्न भिन्नमस्त्यन्यत्सामान्यं बुद्ध्यभेदतः॥१॥

स्वभावभेदकरि वर्त्ते है तौ अवयवी बहुत ठहरैं है। बहुरि कहै—एकरूप करि वर्त्ते है, तौ अवयनिकै एकरूपपणां ठहरै है। अथवा स्वभावभेदकरि तथा एकरूपकरि ऐसैं पूछनां मति होहु, ऐसैं ही कहना—न्यारे न्यारे एक एक अवयवनि करि एक एक अवयवी समस्तपणांकरि वर्त्तै तौ अवयवी बहुत ठहरैं हैं। ऐसैं होतैं वृत्तिविकल्पतैं बाधा आवै है॥ अब अनुमानतैं बाधा दिखावै है—जो देखनें योग्य होता संता भी ग्रहणमैं न आवै सो नांही ही है, जैसैं आकाशका कमल; तैसैं अवयवनिविषै अवयवी ग्रहणमैं नांही आवै हैं॥ बहुरि जाका ग्रहण न होतैं जाकी बुद्धि का अभाव, सो तिसतैं अन्य अर्थ नांही जैसैं वृक्षका ग्रहण नांही तहां वन नांही॥ पहले अनुमानतैं तौ अवयवनिविषैं अवयवी नांही ऐसा सिद्ध किया, इस अनुमानतैं भिन्न अर्थ नांही ऐसा कह्या॥ ऐसैं अवयवीका निषेध किया, संबंधका पूर्वे निषेध किया ही था॥ इनि दोऊ हेतुनितैं रूप आदिके परमाणु हैं ते निरंश हैं परस्पर स्पर्शनेवाले नांही सर्वथा भिन्न भिन्न ही हैं; बहुरि ते एक क्षणमात्र स्थायी हैं नित्य नांही हैं जिनिका क्षण क्षणमैं विनाश होय अन्य उपजैं हैं जातैं विनाश प्रति अन्यकी अपेक्षा नांही है॥ याका प्रयोग ऐसा—जो जिस भाव प्रति अन्यकी अपेक्षा नांही करै है सो तिस स्वभाव विषैं नियमरूप है जैसैं स्वकार्य पट आदिकी उत्पत्तिविषैं अन्तमैं जो तंतु आदि सामग्री है सो अन्य कारण नांही चाहै है सो तिस स्वभावविषैं नियत है॥ बहुरि इहां कोई आशंका करै—जो घट आदिका नाश मुद्गरादिककरि होय है यह अन्यकी अपेक्षा है॥ तहां बौद्ध दोय पक्ष पूछै है—जो घट आदिका नाश मुद्गरादिक करै है सो नाश घटतैं भिन्न करै है कि अभिन्न करै है? जो भिन्न करै है तौ नाश घटतैं भिन्न रह्या तब घटकै स्थिति ही भई॥ इहां कहै—जो विनाशके संबं-

घतैं घटकूं भी नष्ट भया ऐसैं कहिये तौ सद्भावकै अर अभावकै संबंध कहा है ? जो कहै—तादात्म्य है सो तौ नांही वणैं जातैं भाव अभावकैं तौ भेद है ॥ बहुरि कहै—जो तदुत्पत्ति कहिये कार्यकारणसंबंध है तौ सो भी नांही है जातैं अभावकै कार्यका आधारपणां वणैं नांही॥ बहुरि कहै—मुद्गर घटका नाश घटतैं अभिन्न करै है तौ घट आदिही किया ठहरै' नाश अर घटमैं भेद नांही; ऐसैं होतैं घटतौ पहले है ही, तिसनैं किया कहा ? ऐसैं घटतैं अभिन्न नाश कहनेमैं करणां वृथा होय है। ऐसैं नाशकै अन्यकी अपेक्षारहितपणां सिद्ध भया। सो परमाणुनिकै विनाशरूप स्वभावका नियमपणां साधै ही है । बहुरि अनित्य विशेषरूप परमाणु तिनिकैं तिस स्वभावका नियमपणां सिद्ध होतैं तिनितैं अन्य जे आत्मा आदिक विवादगोचर भये वस्तु तिनिकैं सत्त्व नामा आदि हेतुकरि साधतैं इस दृष्टांतकरि क्षणस्थितिस्वभावपणांकी सिद्धि होय ही है। सो ही कहिये है:—जो सत् है सो सर्व एकक्षणस्थितिस्वभावरूप हैं जैसैं घट है तैसैं ही सत् रूप भये भाव हैं, ऐसैं तौ वहिर्व्याप्ति मुख करि अनुमान किया। अब अन्तर्व्याप्ति मुख करि अनुमान करै है—अथवा सत्व है सो ही विपक्ष जो नित्य ता विषैं बाधक प्रमाणका बलकरि दृष्टान्त विना ही समस्त वस्तुकै क्षणिकपणांका अनुमान करावै है। सो ही कहिये है;—सत्त्व है सो अर्थक्रिया करि व्याप्त है, बहुरि अर्थक्रिया है सो क्रमयौगपद्यकरि व्याप्त है, बहुरि क्रम अर यौगपद्य ये दोऊ हैं ते नित्यतैं निवृत्तिरूप होते अपनीं व्याप्य अर्थक्रियाकूं लार ले निवृत्तिरूप होय हैं, भावार्थ—नित्यमैं अर्थक्रिया न बणैं है, बहुरि सो अर्थक्रिया है सो अपनां व्याप्य सत्त्वकूं लार ले है नित्यमैं सत्त्व नांही रहै है, ऐसैं नित्यकै क्रम यौगपद्य करि अर्थक्रियाका विरोध है, तातैं अर्थक्रिया विना सत्त्वका असंभव नांही, सो ही

विपक्ष जो नित्य ताविषैं बाधकप्रमाण है। बहुरि नित्यकैं अनुक्रम करि तथा युगपत् अर्थक्रिया नांही संभवै है, नित्य जो एकही स्वभाव करि पूर्व अपर काल विषै होते दोय कार्य करै तौ कार्यका भेद करनेंवाला नांही होय जातैं नित्यकै एक स्वभावपणां है। जो नित्यकै एक स्वभावपणां होतैं भी कार्यकै नानापणां है तौ अनित्य विषैं कार्यके भेदतैं कारणका भेदकी कल्पना निष्फल ही होय है। तैसा एक ही कोई कारण कल्पनें योग्य होय है जाकरि एक स्वभावरूप एक ही करि समस्त चराचर वस्तु उपजै। बहुरि नैयायिक कहै—जो नित्य वस्तुकै स्वभावका नानापणां ही कार्यके भेदतैं मानिये है, तौ तहां पूछिये—जो ते स्वभाव तिस नित्य वस्तुकै सदा संभवते हैं तौ कार्यका संकरपणां आवैगा जीव अजीव नर नारक एक काल उपजते ठहरैंगे? बहुरि ते स्वभाव सदा नांही संभवते हैं तौ तिनिकी अनुक्रमतैं उत्पति होने विषैं कारण कहा है, सो कह्या चाहिये? तिस नित्यतैं ये हैं ऐसैं एक स्वभावतैं उत्पत्ति होतैं तिनि स्वभावनिकैं भेदके असंभवनेंतैं सो ही कार्यनिकै युगपत् प्राप्ति संभवै। बहुरि कहै—जो नित्य कारणकै सहकारी कारण क्रमतैं होय तिस अपेक्षा करि ताके स्वभावनिका अनुक्रम करि सद्भाव है, तातैं तुम कह्या जो दोष; सो नांही। ताकूं कहिये—जो ऐसैं कहनां भी नींकैं मिलै नांही, जो नित्य है अर समर्थ है ताकै परकी अपेक्षाका अयोग है। बहुरि सहकारी कारणकरि सामर्थ्य करणां मानिये तौ नित्यताकी हानि आवै, सहकारिनैं नई सामर्थ्य उजाई तब नित्य कहां रह्या। बहुरि कहै—सहकारी कारण नित्यतैं सामर्थ्य भिन्न ही उपजावै है यातैं नित्यताकी हानि नांही, तौ नित्य तौ अकिंचित्कर रह्या, कछू करनेंवाला नांही, सहकारी करि उपजाई जो सामर्थ्य तिसहीकैं कार्यकारणपणां ठहरया। बहुरि कहै नित्य अर

सामर्थ्यकै संबंध है तातैं नित्यकैं भी कार्यकारीपणां कहिये तौ तहां दोय पक्ष पूछैं हैं—संबंध एक स्वभाव है कि अनेक स्वभाव है? जो कहैगा तिस सामर्थ्यकै संबंध है सो एक स्वभाव है तौ एक स्वभाव संबंध होतैं सामर्थ्यकै नानापणांका अभावतैं कार्य विषैं भेद न ठहरैगा। बहुरि कहैगा संबंधकै अनेक स्वभावपणां है तथा अक्रमवानपणां है तौ ऐसैं होतैं कार्यकी ज्यों तिस सामर्थ्यकै भी संकरपणां आवैगा, जड करनेंकी अर चेतनकरनेंकी सामर्थ्यकै संकरपणां आवैगा। ऐसैं सर्व आवर्त्तन होयगा तब चक्रक दोषका प्रसंग आवैगा, तातैं नित्यकै अनुक्रमकरि कार्यका करणां नांही बणैं है। बहुरि युगपत् एक काल भी नांही बणै है:—समस्त कार्यनिकी एककाल उत्पत्ति होतैं दूसरे क्षण कार्यका न करनां आया तब अर्थक्रियाकारीपणां न रह्या तब अवस्तुपणांका प्रसंग आवै है। ऐसैं नित्यकै क्रमयौगपद्यका अभाव सिद्ध ही है। ऐसैं बौद्धमती अपनां मत दृढ किया, जो विशेष ही वस्तुस्वरूप हैं सामान्य वस्तु स्वरूप नांही, बहुरि ते विशेष परस्पर असंबद्ध ही हैं संबद्ध नांही, अवयवी नांही, बहुरि ते एक क्षणस्थायी ही हैं नित्य नांही।

ऐसैं तीन पक्ष कही तिनि तीनोंहीका निराकरणकै अर्थि अब आचार्य कहै हैं;—ऐसैं कहनेवाला बौद्ध भी युक्तवादी नांही जातैं सजातीय विजातीय न्यारे न्यारे अंशरहित जे विशेष तिनिका ग्राहक प्रमाणका अभाव है। प्रत्यक्ष प्रमाणकैं तौ स्थूल स्थिर साधारण आकाररूप वस्तुका ग्राहकपणां है तातैं अंशरहित वस्तुका ग्रहणका अयोग है, परस्पर संबंधरूप नांही ऐसे परमाणु नेत्र आदिकरि नांही प्रतिभासैं हैं जो प्रत्यक्ष नेत्र आदिकरि दीखैं तौ विवाद कैसैं रहै। इहां बौद्ध कहै है—जो पहले तौ निरंश क्षणरूप परमाणु ही दीखैं हैं पीछैं विकल्पकी वासना तौ अन्तरङ्ग रूप ताके बलतैं अर बाह्य अन्तराल न दीखै तातैं

अविद्यमान भी स्थूल आदि आकार विकल्पबुद्धि विषैं प्रतिभासै है, सो ऐसा विकल्प तिस निर्विकल्प प्रत्यक्षके आकार करि मिल्या हूवा अपनां विकल्पव्यापारकूं गौणकरि प्रत्यक्ष व्यापारकूं मुख्यकरि प्रवर्त्तै है तातैं प्रत्यक्ष सारिखा दीखै है तहां आचार्य समाधान करैं हैं—जो यह कहनां तौ बालक अज्ञानीका विलास है, जातैं निर्विकल्पज्ञानका ही अनुभवन नांही है, निर्विकल्प सविकल्पका भेद पहले ग्रहण होय तब अन्य आकारके मिलनेंकी अन्य आकारविषैं कल्पना युक्त होय है, जैसैं पहले स्फटिकमणि अर जपाकुसुम न्यारे न्यारे देखे होंय पीछैं स्फटिककैं डंक लाग्या दीखै तब ऐसी कल्पनां संभवै जो यह स्फटिक जपाकुसुमतैं रंगित दीखै है, जो न देखे होय तौ ऐसी कल्पना न होय। या ही कथनकरि निर्विकल्प सविकल्पके युगपत् वृत्तितैं तथा क्रमवृत्तिमैं भी शीघ्र वृत्तितैं एकपणांका निश्चय होय है ऐसा कहना भी निराकरण किया। ताकै भी बीज लेणैंतैं प्रतीति आवै तिस समानपणां है। अथवा तिनि निर्विकल्प सविकल्पका एकपणांका निश्चय कौनसे ज्ञान करि करिये? प्रथम तौ विकल्प ज्ञानकरि तौ निश्चय नांही होय जातैं विकल्पज्ञान निर्विकल्पकी बातका जाननेवाला नांही। बहुरि अनुभव ज्ञानकरि निश्चय नांही होय जातैं अनुभव विकल्पकै अगोचर है। बहुरि निर्विकल्प सविकल्प जाका विषय नाहीं ऐसा ज्ञान भी तिनिका एकत्वका निश्चय विषैं समर्थ नांही, यामैं अतिप्रसंग दूषण है अन्यका विषय अन्यकरि ग्रहण होतैं अतिप्रसंग है। तातैं प्रत्यक्षबुद्धिविषैं तौ भिन्न असंबंधरूप परमाणु प्रतिभासै नांही। बहुरि अनुमानबुद्धिविषैं भी नांही प्रतिभासैं हैं जातैं तिसतैं अविनाभूत जो स्वभावलिंग अरु कार्यलिंग ताका अभाव है। अर स्थूल स्थिर साधारणका अनुपलंभतैं विशेष ही तत्व हैं ऐसैं कहै तौ अनुपलंभ लिंग है सो असिद्ध ही है

जातैं अन्वयरूप आकारका अर स्थूल आकारका प्रत्यक्ष देखनेंमैं आवनां कह्या ही है। बहुरि बौद्धनैं कह्या जो परमाणुकै एक देशकरि अर सर्व स्वरूपकरि संबंध नांही बणै है, सो याका परिहार यह ही—जो ऐसैं हम भी संबंध नांही मानैं है, हम तौ ऐसैं मानें हैं—जो रूखा चीकनाकै समान जातीयकै तथा विजातीयकै दोय अधिक गुण होय तौ कथंचित् स्कंधकै आकार परिणामै ताकै संबंध मानैं हैं। बहुरि बौद्धनैं जो अवयवीका अवयवनिविषै वृत्तिविकल्प आदि दूषण कह्या, तहां अवयवीकी वृत्ति ही जो न वणै तौ अवयवी वर्त्तै ही नांही है ऐसैं कहनां था, एक देश आदि विकल्प न कहनां था जातैं एक देश आदि विकल्पकै तौ अन्य विकल्प विशेषतैं अविनाभावीपणां है। सो ही कहिये है—अवयवी अवयवनिविषैं एक देशकरि नांही वर्त्तै है, सर्वस्वरूपकरि भी नांही वर्त्तै है ऐसैं कहतैं ऐसा आया—जो अन्य प्रकारकरि वर्त्तै है, अर ऐसैं न मानिये तौ, नांही वर्त्तै है—ऐसैं ही कहनां। ऐसैं विशेषका निषेधकै अवशेषका अंगीकाररूपपणां है। तातैं कथंचित् तादात्म्यारूपकरि अवयवीकी अवयवनिविषैं वृत्ति है ऐसा निश्चय कीजिये है, जहां जे कहे दोष तिनिका अवकाश नांही है। बहुरि विरोध आदि दोषका निषेध आगैं करसी यातैं इहां विस्तार नांही किया है। बहुरि जो वस्तुकै एकक्षणस्थायिपणां विषैं हेतु कह्या—जो जिस भाव प्रति इत्यादि, सो भी अहेतु है जातैं हेतु असिद्ध आदि दोषकरि दूषित है। तहां प्रथम तौ नाशविषैं अन्यकी अपेक्षातैं रहितपणां हेतु कह्या सो असिद्ध है जातैं घटादिकका अभावकै मुद्गर आदिके व्यापारका अन्वय व्यतिरेकका अनुसारीपणांतैं तिसके अभाव प्रति कारणपणां है, मुद्गराकी दिये घट फूटै न दे तौ न फूटै। इहां आशंका करै—जो मुद्गराकी देनां कपालकी उत्पत्तिकूं कारण है, अभाव तौ

निरपेक्ष ही है ? ताकूं कहैं हैं—जो कपाल आदि पर्यायांतरका सद्भाव है सो ही घट आदिका अभाव है । बहुरि तुच्छाभाव कहिये सर्वथा अभाव, सो समस्तप्रमाणकै अगोचर है ताकी बात ही न करनी । बहुरि विशेष कहै है—अभाव है सो जो स्वाधीन होय तौ अन्यकी अपेक्षारहितपणां विशेषणयुक्त होय, सो बौद्धमतविषैं सो अभाव स्वाधीन मान्यां नांही यातैं हेतुका प्रयोगकाही अवतार नांही । बहुरि यह अन्यानपेक्षपणां हेतु है सो अनैकान्तिक है जातैं शालिके बीजकै कोदूंका अंकुरका उपजनां प्रति अन्यकी अपेक्षारहितपणां है तौऊ तिस कोदूंके अंकुराके उपजनेंके स्वभाव प्रति नियमरूपपणां नांही है । बहुरि बौद्ध कहै—जो हेतुका विशेषण ऐसा किये दोष नांही, जो विनाश स्वभाव होतैं अन्यानपेक्ष है तौ तहां कहिये पदार्थकै सर्वथा विनाशस्वभावपणां ही असिद्ध है । पर्यायरूपकरि ही पदार्थनिकै उत्पाद विनाश मानिये है द्रव्यरूपकरि उत्पाद विनाश नांही है, जातैं ऐसा वचन है ताका श्लोकका अर्थ:—[१]

जो पदार्थ उपजै है अर विनशै है सो पर्यायनयका विषय है, बहुरि द्रव्यनयकरि आलिंगित वस्तु नित्य है न उपजै है न विनशै है । अन्वय कहिये पहिले पिछलेकै जोड तिसरहित जो विनाश सो निरन्वयविनाश तिसकूं होतैं पहले क्षणतैं उत्तर क्षणकी उत्पत्ति नांही बणै है, जैसैं मूवा मोरकी कुहुक नांही होय तैसैं । ऐसैं पदार्थनिका सर्वथा विनाशस्वभावपणां युक्त नांही जातैं कथंचित् द्रव्यरूपकरि पूर्वरूप जानैं न

(१) आर्या—समुदेति विलयमृच्छति भावो नियमेन पर्ययनयस्य ।
नोदेति नो विनश्यति भावनया लिंगितो नित्यम् ॥१॥
इति वचनात् ।

छोड्या ऐसा भी वस्तुस्वरूपका संभव है । बहुरि द्रव्यके रूपका ग्रहण होनेंका असमर्थपणांतैं द्रव्यका अभाव नांही है । तिस द्रव्यके ग्रहणका उपाय जो प्रत्यभिज्ञानप्रमाण ताका बहुलपणैं पावनां है, तिस प्रमाणकै पहले प्रमाणपणां कह्याही है । बहुरि उत्तरकार्यकी उत्पत्तिकी अन्यथानुपपत्तितैं भी द्रव्यकी सिद्धि होय है, द्रव्य न होय तौ उत्तरकार्यकी उत्पत्ति न होय। बहुरि जो क्षणिक साधनेंविषैं सत्त्वनाम अन्य हेतु कह्या सो भी विपक्ष जो नित्य ताविषैं सत्त्व नांही तैसैं क्षणिकमैं भी नांही है, तातैं सत्व हेतुतैं भी क्षणिक साध्यकी सिद्धि नांही होय है । सो ही कहिये है—सत्त्व है सो अर्थक्रियातैं व्याप्त है, बहुरि अर्थक्रिया है सो क्रमयौगपद्यकरि व्याप्त है, ते क्रम यौगपद्य दोऊ क्षणिकतैं निवृत्तिरूप हुये संते अपनैं व्याप्य जो अर्थक्रिया निवृत्तिरूप होती अपनें व्यापनें योग्य जो सत्त्व ताहि लेकरि निवृत्तिरूप होय है; ऐसैं नित्यकी ज्यों क्षणिककैं भी गधाके सींगवत् सत्त्व नांही है । ऐसैं क्षणिकविषैं सत्त्वकी व्यवस्था नांही है । बहुरि क्षणिक वस्तुकै क्रम यौगपद्यकरि अर्थक्रियाका विरोध है सो असिद्ध नांही है जातैं ताकै देशकरि क्रिया अर कालकरि क्रिया जो क्रम ताका असंभव है । जो अवस्थित एक होय ताहीकै अनेक देश अर कालकी कला तिनिविषैं व्यापीपणां होय सो देशक्रम अर कालक्रम कहिये है । सो क्षणिकविषैं ऐसा देशक्रम अर कालक्रम नांही है जातैं बौद्धमतमैं ऐसैं कह्या भी है, ताका श्लोकका अर्थ—जो वस्तु जिस क्षेत्रमैं है सो तहां ही है बहुरि जिस कालमैं है सो जहां ही है यातैं पदार्थनिकै देशकाल विषैं व्याप्ति नांही है; ऐसैं आप कह्या है ।

---

(१) यो यत्रैव स तत्रैव यो यदैव तदैव सः ।
न देशकालयोर्व्याप्तिर्भावानामिह विद्यते ॥

बहुरि पूर्व उत्तर क्षणनिकैं एक संतानकी अपेक्षा करि भी क्रम नांही संभवै है जातैं जो संतानकूं वस्तुभूत मानैं तौ तिसकै भी क्षणिकपणां ठहरै तब तिसकी अपेक्षा क्रम नांही बणैं है। अर अक्षणिकपणां होतैं भी वस्तुभूतपणां मानैं तौ वस्तुभूतपणां करि तिस संतानही करि सत्त्व आदि हेतुकै अनैकान्तिकपणां आवै। बहुरि सन्तानकूं अवस्तुभूत मानैं तौ भी तिसकी अपेक्षा क्रमयुक्त नांही होय। बहुरि युगपत्पणां करि भी क्षणिक विषैं अर्थक्रिया नांही संभवै है। इहां दोय पक्ष—जो युगपत् एक स्वभाव करि नानाकार्य करणां मानिये तौ तिसकै कार्यकैं एकपणां ठहरै, बहुरि जो नानास्वभाव कल्पिये तौ ते स्वभाव तिसक्षण करि व्यापे चाहिये। सो जो एक स्वभाव करि ते क्षणिक तिनि स्वभावनिमैं व्यापै तौ तिनि स्वभावनिकै एकरूप ठहरै, बहुरि जो नानास्वभाव करि व्यापैं तौ अनवस्था दूषण आवै जातैं फेरि एक स्वभाव अनेक स्वभावका प्रश्न चल्या जाय। बहुरि बौद्ध कहै है जो एक पूर्व क्षणकै एक उत्तर क्षणविषैं उपादानभाव है सो ही अन्य जे रूपतैं रसादिक तिनिविषैं तिसक्षणकैं सहकारी भाव है यह ही स्वभाव भेद है; तौ ताकूं आचार्य कहैं हैं:—नित्य एकरूप वस्तुकैं भी क्रमकरि नानाकार्य करनेवालेकै स्वभावका भेद अर कार्यका संकरपणां मति होहु, ऐसा दूषण तैं कह्या था सो मति होहु। इहां बौद्ध कहै—जो अक्रमतैं क्रमवान् वस्तुकी उत्पत्ति नांही तातैं नित्यकै ऐसैं नांही, तौ ताकूं कहिये—तैसैं ही क्रमरहित जो क्षणिक सो एक है अनंश है ऐसे कारणतैं युगपत् अनेक कारणनिकरि साधनें योग्य जे अनेक कार्य तिनिका विरोध है, तातैं ताकैं भी कार्यकारीपणां नांही है। बहुरि विशेष कहैं हैं, बौद्धकूं पूछैं है—तेरे पक्ष विषैं कार्यकारीपणां सत्कै मानैं है कि असत्कै मानैं है? जो सत्कैं कार्यका कर्त्तापणां मानैं है

तौ सकलकालकी कला विषैं व्यापीजे क्षण तिनिकैं एकक्षणवर्त्तीपणांका प्रसंग आवैगा। बहुरि जो दूसरा पक्ष असत्कैं कार्यकारीपणां मानैंगा तौ गधाकै सींग आदिकैं भी कार्यकारीपणां ठहरैगा जातैं गधाका सींग भी असत्रूप है, यामैं विशेष नांही। बहुरि सत्त्वका लक्षण अर्थक्रियाकारीपणां है सो असत्कै कार्यकारीपणां मानैं ताकै व्यभिचार आवैगा। तातैं विशेष एकांत है सो कल्याणकारी श्रेष्ठ नांही। ऐसैं विशेष एकान्त माननेंवाला जो बौद्धमत ताकी पक्षका निराकरण किया, यातैं विशेष एकान्त वस्तुस्वरूप नांही तातैं प्रमाणका विषय नांही है। इहां तांई बौद्धमतीसूं चर्चा है।

आगैं नैयायिकसूं चर्चा करैं हैं;—अब कहैं हैं–जो सामान्य विशेष दोऊ परस्पर अपेक्षारहित हैं ऐसैं नैयायिकमती मानैं हैं सो तिनिका मत भी युक्तिकरि युक्त नांही है, सो कहैं हैं जातैं तिनिकै परस्पर भेद होतैं दोऊमैं एकका भी स्थापन करनेंका असमर्थपणां है। सो ही कहिये है;—विशेष कहिये व्यक्तितैं तौ प्रथम द्रव्य गुण कर्म पदार्थ हैं। बहुरि सामान्य पर अपर भेदतैं दोय प्रकार है। तहां परसामान्य तौ सत्तास्वरूप है तिसतैं विशेषनिकै भेद होतैं विशेषनिकै असत्ताकी प्राप्ति आई, तैसैं ही प्रयोग है—द्रव्य गुण कर्म हैं ते असत् रूप हैं—जातैं सत्तातैं अत्यंत भिन्न हैं जैसैं प्राक् अभावादिक अभाव हैं तैसैं। इहां सत्तातैं अत्यंत भिन्नपणां हेतु है ताकै सामान्य विशेष समवाय पदार्थनितैं व्यभिचार नाहीं है जातैं तिनि विषैं स्वरूप सत्त्वकूं अभिन्न नैयायिक मानैं हैं। बहुरि नैयायिक कहै है—जोद्रव्यादि पदार्थनिकै प्रमाणकरि सिद्धपणां है तौ धर्मीका ग्राहक प्रमाण ताकरि तुमनैं हेतु कह्या सो बाधित है, जिस प्रमाणकरि द्रव्य आदिक निश्चय कीजिये है तिसही प्रमाणकरि तिनिका सत्त्व निश्चय

कीजिये है । इहां तुम कहोगे—द्रव्य आदिक प्रमाण सिद्ध नांही है तौ तुमारे हेतुकै आश्रयकी असिद्धि आवैगी, ताका उत्तर आचार्य कहैं है—जो यह कहनां अयुक्त है जातैं इहां हमनैं प्रसंगसाधन किया है। परका इष्ट लेकरि परकै अनिष्ट बतावनां सो प्रसंगसाधन है, सो इहां प्राक् अभावादिविषैं सत्त्वतैं भेद है सो असत्त्वतैं व्याप्त पाइये है सो व्याप्य है, तातैं तिस भेदका द्रव्यादिविषैं अंगीकार है सो व्यापक जो असत्त्व ताका अंगीकारतैं अविनाभावी है, ऐसैं इहां प्रसंगसाधन है। तातैं नैयायिकनैं कह्या प्रमाणबाधित आदि दोष, सो नाही आवै है, पदार्थनिकूं नैयायिक जैसैं भेदाभेद मानै था तिसहीकी अपेक्षा लेकरि प्रसंगसाधन किया है । इसही कथनकरि द्रव्य आदिककै भी द्रव्यपणांतैं भेद होतैं अद्रव्यादिपणां विचरया जाननां । बहुरि आचार्य नैयायिककूं पूछै है—कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवाय इनि छह पदार्थनिकै परस्पर भेद होतैं न्यारे न्यारे अपनें स्वरूपकी व्यवस्था कैसैं है ? जो कहैगा—द्रव्यका द्रव्य ऐसा नाम द्रव्यत्वका संबंधतैं हैं तौ द्रव्यत्वके संबंध पहले द्रव्यका स्वरूप कहा है, सो कह्या चाहिये जाकरि सहित द्रव्यत्वका संबंध होय ? जो कहै—द्रव्य ही स्वरूप है तौ तिसका द्रव्य ऐसा नाम तौ द्रव्यत्वका संबंधरूप कारणतैं होय है तातैं द्रव्य ऐसा स्वरूपका अयोग है । बहुरि कहै—जो निजरूप तौ सत्त्व है तौ ताका भी सत्त्व ऐसा नाम सत्ताके संबंधतैं करनेंतैं द्रव्यका निजरूप नांही बनैंगा । ऐसैं ही गुण आदिविषै भी कहि लेनां । ऐसैं होतैं केवल सामान्य विशेष समवाय इनि तीन हीकै स्वरूप सत्त्व करि तसौ नाम बनैं है, तातैं तिनि तीन ही पदार्थनिकी व्यवस्था ठहरै है । बहुरि इहां नैयायिक कहै है—नैयायिक वैशेषिकका अभिप्राय एक ही है तातैं नैयायिक ही नाम लिख्या है, इहां सामान्य नाम यौगमत जाननां, अर द्रव्यादिक सप्त ही पदार्थ वैशेषिक कहै है । अब वह कहै है—

स्याद्वादी जैनी जीव आदि पदार्थनिकै सामान्यविशेषस्वरूपपणां मानैं हैं सो तिनि सामान्य विशेषका वस्तुतैं भेद अभेद है ते विरोध आदि आठ दोपके आवनेंतैं एक वस्तुविषै नांही संभवै हैं, सो ही कहै हैं—भेद अभेद दोऊ विधि प्रतिषेधस्वरूप हैं ते एक जो अभिन्न वस्तु ताविषैं संभवैं नांही, जैसें शीत उष्ण स्पर्श दोऊ एकविषै नांही संभवै तैसैं, ऐसैं तौ विरोध दूषण आया। बहुरि भेदका आधार अन्य अभेदका आधार अन्य, ऐसैं वैयधिकरण्य दूषण आया। बहुरि जिस स्वरूपकूं मुख्यकारि भेद वर्त्तै है अर जिसकूं मुख्य कारि अभेद वर्त्तै है ते दोऊ स्वरूप भिन्न हैं तथा अभिन्न हैं, बहुरि तहां भी भेदाभेदके कलपनेंतैं अनवस्था दूषण है। बहुरि जिस रूपकारि भेद है तिस ही रूपकरि भेद भी अभेद भी है ऐसैं संकर दूषण है, बहुरि जिसकरि भेद है तिसकरि अभेद है जिसकरि अभेद है तिसकरि भेद है, ऐसैं व्यतिकर दूषण है। बहुरि भेदाभेद स्वरूपपणां होतैं वस्तुका असाधारण आकारकरि निश्चय करनेंकूं असमर्थपणां है, तातैं संशय दूषण है। तिस ही हेतुतैं अप्रतिपत्ति दूषण है। तिस ही हेतुतैं अभाव दूषण है। ऐसैं अनेकान्तात्मक वस्तु भी निश्चित नांही होय सकै है, ऐसैं नैयायिक कहै हैं। तहां आचार्य कहै हैं:—ऐसैं कहनेवाले भी प्रतीतिस्वरूप कहनेवाले नांही जातैं प्रतीतिगोचर वस्तु होय तामैं विरोधका असंभव है। विरोध तौ जैसैं दीखै नांही तैसैं कहै तामैं है, तहां जो देखनेमें आवै तहां कहा विरोध? भेदाभेदतैं एक वस्तुमैं दोऊ प्रगट दीखै हैं। इहां जो शीत उष्णस्पर्शका दृष्टांत कह्या सो धूपदहनका घट आदि एक अवयवीकै शीत उष्ण स्वभावकी प्राप्तितैं विरोधका दृष्टान्त अयुक्त है, धूप दहनके घडेमैं शीत उष्ण दोऊ स्पर्श होय हैं। आदि शब्दकरि संध्याविषै प्रकाश तमका साथि अवस्थान होय है। एक वस्तुकै चल अचल रक्त अरक्त

आवरणसहित आवरणरहित इत्यादि विरुद्ध धर्मनिका युगपत् देखनां है ! तैसैं कहे जे भेदाभेद तिनिकै भी विरोध नांही है । इस ही कथनकरि वैयाधिकरण्य भी निराकरण किया, तिनि भेदाभेदकै एक आधारपणांकरि प्रतीतिमैं समानाधिकरण है, इहां भी चल अचल आदि पहले दृष्टांत कहे ते जाननें । बहुरि जो अनवस्था नामा दूषण कह्या सो भी स्याद्वादमतकूं नांही जाननेवालेकरि बताया है, स्याद्वादीनिका यह मत है— सामान्य विशेष स्वरूप वस्तुविषैं सामान्य विशेष हैं ते ही भेद हैं जातैं भेदशब्दकरि तिनिकूं ही कहे हैं, बहुरि द्रव्यरूप करि अभेद है ऐसा कह्या है सो द्रव्यही अभेद है जातैं वस्तुकै एकानेक स्वरूपपणां है, अथवा भेदनयका प्रधानपणांकरि वस्तुके धर्मनिकै अनंतपणां है तातैं अनवस्था नांही है । सो ही कहिये है—जो सामान्य है बहुरि जे विशेष हैं तिनिकै अन्वयरूप आकारकरि अर व्यावृत्त कहिये न्यारा न्यारा आकारकरि भेद है, बहुरि तिनिकै अर्थक्रियाके भेदतैं भेद है, बहुरि तिस अर्थक्रियाक शक्तिभेदतैं भेद है, सो शक्ति भेद भी सहकारीके भेदतैं है, ऐसैं अनंत धर्मनिका अंगीकार करनेतैं अनवस्था काहेतैं होय ? सो ही कह्या है, ताका श्लोकका अर्थः—जो मूलनाशका करनहारा होय ताहि अनवस्था दूषण पंडित कहैं हैं, वस्तुकै अनंतपणां होतैं अथवा विचारनेकूं असमर्थता होय तहां अनवस्था दूषण नांही, जो अनवस्था होय तौ भी दूषण न कहिये । बहुरि जो संकर अर व्यतिकर ये दोऊ दूषण हैं ते भी मेचक ज्ञानके दृष्टान्तकरि बहुरि सामान्य विशेषके दृष्टान्त करि दूर किये । इहां संकर दूषणके निराकर-

---

(१) तथा चोक्तम्ः—**मूलक्षतिकरीमाहुरनवस्थां हि दूषणम् ।**
वास्त्वानंत्येऽप्यशक्तौ च नानवस्था विचार्यते॥१॥

णकूं दृष्टान्त मेचक ज्ञान अनेकवर्णाकार वस्तुके जाननेंकूं कह्या है। बहुरि सामान्य विशेष ऐसैं जो जो ही गऊपणां अपनीं व्यक्तिनिकी अपेक्षा सामान्य, सो ही महिष आदिकी अपेक्षा विशेष, ऐसें दृष्टान्तकरि व्यतिकर दूषण नांहीं। इहां कहै—जो मेचकज्ञान विषैं तौ जैसा वस्तुमैं अनेकवर्णाकार था तैसा प्रतिभासै है, तौ ताकूं कहिये इहां हमारै भी जैसी वस्तु है ताका तैसाही प्रतिभास होहु, ताका पक्षपातका अभाव है। बहुरि जैसा वस्तु है ताका तैसा निर्णय भया तहां संशय नांही युक्त है, संशय तौ चलितज्ञानरूप है, अचल प्रतिभासविषैं संशय बनैं नांही। बहुरि जो वस्तु प्राप्त भया सिद्ध भया ताकै विषै अप्रतिपत्ति कहनां यह तौ अतिधीठपणां है। बहुरि जाकी उपलब्धि होय तहां अनुपलंभ भी नांही सिद्ध है तातैं अभाव भी नांही। ऐसैं इनि दूषणनितैं रहित प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाणकरि अविरुद्ध अनेकांतात्मक वस्तुका कहनेंवाला अनेकान्तमत है सो सिद्ध है। इस ही कथन करि अवयव अवयवीकै गुण गुणीकै कर्म कर्मवान्कै कथंचित् भेद है कथंचित् अभेद है सो कहे जानने। अब नैयायिक कहै है—जो समवायके वशतैं भिन्न पदार्थ विषैं भी अभेदकी प्रतीति है जाकै ब्रह्मतुल्य ज्ञान न उपज्या ताकै, भावार्थ—जाकैं अतीन्द्रिय ज्ञान नाही ताकैं भिन्न पदार्थ विषैं भी समवायतैं अभेदका ज्ञान है। ताकूं आचार्य कहैं हैं—जो ऐसैं नांहीं जातैं समवाय भी पदार्थतैं भिन्न ही है ताके स्थापनेकी असमर्थता है। सो ही कहिये है—इहां दोय पक्ष हैं, समवायकी वृत्ति है सो अपना समवायी पदार्थनिविषैं वृत्ति सहित है, कि वृत्तिरहित है? जो कहै वृत्तिसहित है तौ तहां भी दोय पक्ष करैं हैं, जो यह वृत्ति आपही करि वृत्तिसहित है कि अन्यवृत्ति करि है? जो कहै— आपही करि है तौ यह पक्ष तौ नाही बणैं है, समवायविषैं अन्य

समवायका अंगीकार नांही पांचही पदार्थकै समवायीपणां है, ऐसा नैयायिकका वचन है। बहुरि अन्य वृत्तिकी कल्पना करैं तौ सो वृत्ति अपनें संबंधीनिविषैं वर्त्तै है कि नांही? ऐसैं कल्पना करेंतैं अन्य वृत्तिकी परंपराकी प्राप्तितैं अनवस्था आवैं। इहां कहै अपनें संबंधीनिविषैं अन्यवृत्तिकैं अन्यवृत्तिका अंगीकार नांही तातैं अनवस्था नांही आवै, तौ ताकूं कहिये—समवायविषैं भी अन्यवृत्ति मति होहु। अब फेरि नैयायिक कहै है—जो समवाय है सो अपनें आश्रयविषैं वृत्तिरूप नांही मानिये है, तौ ताकूं कहिये—छह पदार्थनिकै आश्रितपणां है ऐसा ग्रंथका विरोध आवैगा, नैयायिकका सूत्र है—जो निम्य द्रव्य विना छह पदार्थ अन्यके आश्रय हैं सो ऐसा सूत्र विरोध्या जाय। बहुरि नैयायिक कहै है—जो समवायि पदार्थनिके होतें ही समवायकी प्रतीति है तातैं समवायकै आश्रितपणां कल्पिये है, तौ ताकूं कहिये—मूर्त्तद्रव्यनिकूं होतैं ही दिशाद्रव्यका लिंग जो यहु यातैं पूर्व दिशाकरि है इत्यादिक ज्ञान ताकै बहुरि कालका लिंग जो पर अपर आदि प्रतीति ताका सद्भावतैं तिनि दोऊ द्रव्यानिकै भी तिनि मूर्त्त द्रव्यानका आश्रितपणां ठहरैगा। तातैं सूत्रमैं कह्या जो नित्य द्रव्य विना अन्यकै आश्रितपणां है, ऐसा कहनां अयुक्त भया। बहुरि विशेष कहै है—जो समवायकै अनाश्रितपणां होतैं संबंधरूपपणां ही न बणै है, तैसैं ही प्रयोग है—समवाय है सो संबंध नांही है जातैं याकै अनाश्रितपणां है जैसैं दिशा आदि द्रव्य अनाश्रित है तैसैं। इस प्रयोगविषैं समवाय जो धर्मी सो कथंचित् तादात्म्यरूप है अर अनेक है ताकूं हम मान्या है तातैं धर्मीका ग्राहक जो प्रमाण ताकरि बाधा नांही है। बहुरि आश्रयासिद्ध दूषण न कहनां। बहुरि तिस समवायकै आश्रितपणां होतैं भी यहु दूषणा कहिये है, समवाय

है सो एक नांही है जातैं संबंधस्वरूपपणां होतैं याकै आश्रितपणां है जैसैं संयोग सबंध है । इहां सत्ताकरि हेतुकै अनेकान्त होय है तातैं हेतुका संबंधस्वरूपपणां होतैं ऐसा विशेषण किया है । अब नैयायिक फेरि कहै है—जो संयोग विषैं तौ दृढ संयोग शिथिल संयोग इत्यादि नानापणांकी प्रतीति है तातैं नानापणां है अर ऐसैं समवायविषैं तौ नांही जातैं समवाय तौ तिसतैं विपरीत है, ताकूं आचार्य कहैं हैं—जो ऐसैं नांही जातैं समवायविषैं भी उत्पत्तिमानपणां विनश्वरपणांकी प्रतीतिरूप नानापणां सुलभ है । बहुरि कहै—संबंधी पदार्थके भेदतैं समवायविषैं नानापणां है तौ सयोगविषैं भी तैसैं ही नानापणां समान है, एक ही विषैं तौ प्रश्न युक्त नांही । तातैं नैयायिककरि कल्पित समवायकैं विचार कर अयोग्यपणां है, तातैं तिस समवायके वशतैं गुण गुणी आदि विषैं अभेदकी प्रतीति नांही बणैं है । बहुरि नैयायिक कहै है—जो अवयव अवयवी आदिका भिन्न प्रतिभास है तातैं तिनिकैं भेदही है । ताकूं आचार्य कहैं हैं—जो यहु नांही जातैं भेदप्रतिभासकै अभेदतैं विरोध नांही है, घटपट आदिकै भेद है तौऊ कथंचित् अभेद बणैं है । सर्वथा प्रतिभासकै भेदकी असिद्धि है जातैं यहु सत् है इत्यादि अभेद प्रतिभासका भी सद्भाव है । तातैं कथंचित् भेदाभेदात्मक, द्रव्यपर्यायात्मक, बहुरि सामान्यविशेषात्मक तत्व है, सो जलकी तीर देखनेंवालेकैं पक्षी देखनेंमैं आया तिस न्यायकरि नैयायिक अपनां मत साधै था ताकै स्याद्वादमतमैं कह्या तत्त्व भी देखनेंमैं आया, यातैं बहुत कहनेंकरि पूर्णता होहु ॥ १ ॥

आगैं अब अनेकान्तात्मक वस्तुके समर्थनकै अर्थिही दोय हेतु कहैं हैं;—

अनुवृत्तव्यावृत्तप्रत्ययगोचरत्वात् पूर्वोत्तराकारपरिहारावाप्तिस्थितिलक्षणपरिणामेनार्थक्रियोपपत्तेश्च ॥२॥

याका अर्थ—अनुवृत्त कहिये अन्वयरूप अर व्यावृत्त कहिये न्यारा न्यारा रूप इनिका जो प्रत्यय कहिये ज्ञानमैं प्रतीति ताकै गोचरपणांतैं, बहुरि पूर्व परिणामका छोडनां उत्तर परिणामका ग्रहण करनां इनि दोऊनिकरि सहित स्थितिरूप सो है लक्षण जाका ऐसा जो परिणाम तिसकरि अर्थ क्रियाकी प्राप्ति है तातैं। तहां अनुवृत्त आकार तौ जैसैं अनेक गऊ विषैं गऊ गऊ ऐसी प्रतीति, सो है। बहुरि व्यावृत आकार कहिये यह गऊ श्याम है यह काबरा है ऐसैं न्यारी न्यारी प्रतीति, सो है। तिनि दोऊ प्रतीतिनिकै गोचर कहिये विषय ताका भाव तातैं अनेकांतात्मक वस्तु है। इस हेतुकरि तौ तिर्यक् सामान्य अर व्यतिरेकलक्षण विशेष इनि दोऊ स्वरूप वस्तु साध्या। बहुरि पूर्व आकारका त्याग उत्तर आकारकी प्राप्ति अर इनि दोऊनिकरि सहित स्थिति सोही है लक्षण जाका ऐसा जो परिणाम तिसकरि अर्थ क्रियाकी उपपत्ति है, तातैं सामान्यविशेषात्मक वस्तु है। इस हेतुकरि ऊर्द्धता सामान्य अर पर्यायनामा विशेष इनि दोऊ रूप वस्तु समर्थ्या है ॥ २ ॥

आगैं पहले कह्या जो सामान्य ताका भेदकूं कहै हैं;—

सामान्यं द्वेधा तिर्यगूर्द्धताभेदात् ॥ ३ ॥

याका अर्थ—सामान्य दोय प्रकार है; तिर्यक् सामान्य, ऊर्द्धता सामान्य ऐसैं भेदतैं ॥ ३ ॥

आगैं पहला भेद जो तिर्यक् सामान्य ताकूं उदाहरणसहित कहै है:—

सदृशपरिणामस्तिर्यक् खंडमुंडादिषु गोत्ववत् ॥४॥

याका अर्थ—सदृश कहिये सामान्य जो परिणाम सो तिर्यक् सामान्य है जैसैं अनेक खांडी मूंडी गऊ हैं तिनिविषैं गऊपणां है। तहां

जो गऊपणां आदिकूं सर्वथा नित्य एक रूप मानिये तौ क्रम यौगपद्य करि अर्थ क्रियाका विरोध आवै अर सर्व व्यक्तिनिविषैं न्यारा न्यारा समस्तपणैं वृत्तिका अयोग आवै। तातैं अनेक है अर सदृशपरिणाम स्वरूप ही है, ऐसा तिर्यक् सामान्य कह्या ॥ ४ ॥

आगैं दूसरा भेद जो ऊर्ध्वता सामान्य ताकूं दृष्टान्तसहित दिखावैं हैं;—

परापरविवर्त्तव्यापि द्रव्यमूर्ध्वता मृदिव स्थासादिषु ॥ ५ ॥

याका अर्थ—पर कहिये पूर्वकालभावी अपर कहिये उत्तरकालभावी विशेष पर्याय तिनिविषैं व्यापनेवाला जो द्रव्य सो उर्ध्वता सामान्य है जैसैं स्थास कोश कुसूल आदि मृत्तिकाकी अवस्था विषैं मृत्तिका व्यापी है। इहां सामान्य शब्दकी अनुवृत्ति लेणीं। ताकरि यह अर्थ होय है जो यह उर्ध्वता सामान्य है सो कहा है? द्रव्य है, सो ही परापरविवर्त्तव्यापी ऐसा विशेपणरूप कीजिये है, पूर्व अपरकालवर्ती तीन काल विषैं अन्वयरूप है ऐसा अर्थ है, जैसैं चित्रका ज्ञान एक है ता विषैं एक कालभावी जे अनेक अपनें विषैं आये चित्रके नील आदि आकार तिनिकी व्याप्ति है तैसैं एककै भी क्रमतैं होय, ऐसा परिणाम तिनिविषैं व्यापीपणां है। ऐसा अर्थ जाननां ॥ ५ ॥

आगैं विशेषकै भी दोय प्रकारपणां है, ऐसैं दिखावै है;—

विशेषश्च ॥ ६ ॥

याका अर्थ—विशेष है सो भी दोय प्रकार है। इहां द्वेधा शब्दका अधिकार करि संबंध करनां ॥ ६ ॥

सो ही कहै हैं,—

पर्यायव्यतिरेकभेदात् ॥ ७ ॥

याका अर्थ—सो विशेष दोय प्रकार है, पर्याय अर व्यतिरेक ऐसैं भेदतैं ॥ ७ ॥

आगैं पहला विशेषका भेदकूं कहैं हैं;—

एकस्मिन् द्रव्ये क्रमभाविनः परिणामाः पर्याया आत्मनि हर्षविषादादिवत् ॥ ८ ॥

याका अर्थ—एक द्रव्यविषैं क्रमभावी परिणाम हैं ते पर्याय हैं जैसैं आत्माविषैं हर्ष अर विषाद अनुक्रमतैं होय हैं ते पर्याय हैं । इहां आत्मद्रव्य अपनी देह प्रमाण मात्र ही है व्यापक नांही है, बहुरि बट-कणिका मात्र छोटासा नांही है, बहुरि कायकै आकार परिणये जे पृथ्वी अप तेज वायु आकाश तावन्मात्र चार्वाकमती कहै है सो नांही है । तहां आत्माकूं यौगमती व्यापक कहै हैं, तिनिका तौ अनुमानका प्रयोग ऐसा है—आत्मा व्यापक है जातैं द्रव्यपणांकूं होतैं अमूर्तिकपणां है जैसैं आकाश व्यापक है। ताकूं पूछिये—जो अमूर्त्तपणां है सो जो रूपा-दिक स्वरूप मूर्त्तीकपणां है ताका प्रतिषेधरूप अमूर्त्तपणां है तौ मन-करि अनेकान्त है । यौगमती मनकूं द्रव्य मानैं हैं अर अमूर्त्तपणां ठह-राया है तौहू व्यापक नांही, यह व्यभिचार आया । बहुरि कहै—अ-सर्वगत द्रव्यका परिमाण मूर्त्तपणां है ताका निषेध अमूर्त्तपणां है तौ पर जे हम तिनि प्रति साध्य समान हेतु है, आत्माकै व्यापकपणां साध्य है तैसा ही व्यापकपणां हेतु भया । बहुरि अन्य अनुमान कहै—जो आत्मा व्यापक है जातैं अणुपरिमाण अधिकरणकका अभाव होतैं नित्य द्रव्य है, इहां नित्य है ऐसा ही हेतु कहै तौ परमाणुविषैं गुण भी नित्य है ताकरि व्यभिचार आवै ताके परिहारकै अर्थि नित्य द्रव्य

कह्या। बहुरि द्रव्य ही कहते तौ घट भी द्रव्य है ताकरि व्यभिचार आवै ताके परिहारकै अर्थि नित्य विशेषण किया। बहुरि नित्य द्रव्य ही कहतैं मनकरि अनेकान्त होय ताके परिहारकै अर्थि अणुपरिमाणानधिकरण कह्या, इहां भी आकाशका दृष्टान्त है। सो यह अनुमान भी समीचीन नांही है। जातैं अणुपरिमाणानधिकरणपणां हेतुका विशेषण है तहां निषेध पर्युदास है कि प्रसज्य है? जो कहैगा-पर्युदास-है तौ अणुपरिमाणका प्रतिषेध करि कैसा परिमाण है? महापरिमाण है कि अवान्तरपरिमाण है कि परिमाणमात्र है? जो कहै—महापरिमाण है तौ हेतु साध्य समान ही है जातैं व्यापकपणां साध्य है महापरिमाण हेतु कह्या सो समान भया। बहुरि कहै—अवान्तर परिमाण है तौ हेतु विरुद्ध है, अवान्तरपरिमाणाधिकरणपणां है सो अव्यापकपणांहीकूं साधै है। बहुरि कहै—परिमाणमात्र है तौ तिसकूं परिमाणसामान्य अंगीकार करनां, ऐसैं होतैं अणुपरिमाणका प्रतिषेधकरि परिमाणसामान्याधिकरणपणां आत्माकै है ऐसैं कह्या ठहरै सो बणैं नांही, यामैं विशेष अधिकरणरहितकी सिद्धिका प्रसंग आवै है; जातैं आत्माकै विषैं परिमाणसामान्य व्यवस्थित नांही। तौ कहां है? परिमाणकी व्यक्तिनिविषैं ही व्यवस्थित है, सामान्य होय सो तौ अपनें विशेषनिमैं ही रहै। बहुरि अवान्तरपरिमाण अर महापरिमाण इनि दोऊनिका आधारपणां करि आत्मा न पावै तब परिमाणमात्र अधिकरणपणां आत्मा विषैं निश्चय किया जाय नांही। बहुरि आकाशका दृष्टान्त कहै—सो साधनरहित होय, आकाशकै तौ महापरिमाणाधिकरणपणांकरि परिमाणमात्राधिकरणपणांका अयोग है। बहुरि नित्यद्रव्यपणां है सो सर्वथा असिद्ध है, सर्वथा नित्यकै क्रम यौगपद्यकरि अर्थक्रियाका विरोध है। बहुरि कहैगा—दूसरी पक्ष प्रसज्य प्रतिषेध है, तौ प्रसज्य प्रतिषेध तौ तुच्छा-

भाव कहिये सर्वथा अभाव रूप है, ताका ग्रहणका उपायका असंभव है, तातैं ताकै हेतुका विशेषणपणां ही नांही । बहुरि अगृहीतविशेषण हेतु है, सो कछू है नांही जातैं ऐसा वचन है जो विशेष्यविषैं बुद्धि है सो अगृहीतविशेषणस्वरूप नांही है, विशेषणकूं ग्रहण किये विशेष्यकी बुद्धि होय है । बहुरि तुच्छाभावका ग्रहणका उपाय प्रत्यक्ष प्रमाण नाही है जातैं प्रत्यक्षकै तुच्छाभावके संबंधका अभाव है । प्रत्यक्ष तौ इन्द्रियकै अर पदार्थकै सन्निकर्षतैं उपजै सो नैयायिकमतविषैं प्रसिद्ध है । अर विशेषण विशेष्यभाव संबंधकी कल्पना करै तौ अगृहीतकै विशेषपणां नांही है, ऐसैं तौ पूर्वै कह्या, सो ही इहां दूषण है तातैं आत्मद्रव्य व्यापक नांही है ॥ बहुरि वटकणिका मात्र भी नांही है, सुन्दर स्त्रीका कुच जघनस्पर्शनके कालविषैं रोम रोममैं आल्हाद आकार सुखका अनुभव होय है जो ऐसैं न होय तौ सर्वांग विषैं रोमांच आदि कार्यका उपजनेका अयोग होय ।

बहुरि इहां कहै—जो अणमात्र आत्माकै भी शीघ्र वृत्तितैं आलात चक्रकी ज्यों युगपतका प्रतिभास होय है तौहू क्रमकरि सर्वांग सुख होय है तौ इहां अयुक्त है जातैं तिस सुखका कारण अन्तःकरणका अन्य अन्य संबंधकी कल्पना होतैं बीचिमैं व्यवधान कहिये अन्तरका प्रसंग आवै है, सुखमैं विच्छेद बीचि बीचिमैं हूवा चाहिये । अर मनका संबन्ध विना ही सुख मानिये तौ सुखकै मानसप्रत्यक्षपणांका अयोग है । बहुरि पृथ्वी आदि भूतचतुष्टयस्वरूपपणां भी आत्माकै नांही है जातैं पृथ्वी आदि तौ अचेतन है सो अचेतनतैं चैतन्यकी उत्पत्तिका अयोग है । बहुरि पृथ्वी आदिके धारण प्रेरण द्रव उष्ण स्वभावरूपतैं चैतन्यकै अन्वयका अभाव है जातैं पृथिवीका धारण स्वभाव है पवनका प्रेरण स्वभाव है जलका द्रव स्वभाव है अग्निका उष्ण स्वभाव है, इनि स्वभावनितैं चैतन्यका देखनां

जाननां स्वभावके अन्वय नांही दीखै है। बहुरि तुरतके भये बालककैं स्तन आदिविषैं अभिलाषका प्रसंग आवै है, अभिलाप तौ प्रत्यभिज्ञान होतैं होय है, प्रत्यभिज्ञान स्मरण होतैं होय है स्मरण अनुभव होतैं होय है, ऐसैं पूर्वै अनुभव होनां सिद्ध होय है जातैं वीचिकी दशा विषैं तसैं ही व्याप्ति है। बहुरि मरण भये पीछैं व्यन्तरकुलविषैं आप उपजैं ते आय कहैं जो मैं फलाणां हूं सो व्यंतर भयाहूं ऐसैं कहते देखिये है। बहुरि केईकनिकैं पूर्व भवका स्मरण होय है। ऐसैं चेतनकै अनादिपणां सिद्ध होय है, सो ही कह्या है ताका श्लोक है ताका अर्थ—तिसही दिनका उपज्या बालककैं तिसही दिन स्तनकै लागणेंकी इच्छा होय है, बहुरि व्यन्तरका देखनां, भवस्मरणका होनां, पृथ्वी आदि भूत अचेतनतैं अन्वय नांही; ऐसैं च्यार हेतुनितैं स्वभावहीकरि ज्ञाता द्रव्यस्वरूप नित्य सिद्ध होय है। बहुरि ऐसैं न कहनां—जो अपनां देहप्रमाण आत्मा है, ऐसैं कहनेंमैं भी प्रमाणका अभाव है यातैं सर्वत्र संशय है जातैं देह प्रमाण साधनेंविषैं अनुमान प्रमाणका सद्भाव है। सो ही कहै है—देवदत्तनामा पुरुषका आत्मा तिसके देह विषै ही है, बहुरि तहां सर्वत्र ही विद्यमान है जातैं तिस देह विषै ही बहुरि तहां सर्वत्र ही अपनां असाधारण गुणका आधारपणांकरि ग्रहण होय है। जो जहां ही बहुरि जहां सर्वत्र ही अपनां असाधारण गुणका आधार-पणांकरि पाइये सो तहां ही बहुरि तहां सर्वत्र ही विद्यमान होय, जैसैं देवदत्तके घर विषै ही बहुरि तहां सर्वत्र ही पाइये ऐसा अपनां असाधा-

---

(१) तथा चोक्तम्—

तदहजस्तनेहातो रक्षोदृष्टेर्भवस्मृतेः।
भूतानन्वयनात्सिद्धः प्रकृतिज्ञः सनातनः॥ १॥

रण भासुर प्रकाशपणां आदि गुण जाकै ऐसा दीपक है तैसैं ही देव-दत्त पुरुषका देह विषै ही अर देह विषैं सर्वत्र ही आत्मा है, आत्माके असाधारण गुण ज्ञान दर्शन सुख वीर्य हैं ते सर्वांगविषै तिस देह विषैं ही पाइय हैं। इहां देह विषैं ही आत्मा है ऐसा कहनें तैं तौ व्यापकका निषेध भया, अर देह विषैं सर्वत्र है ऐसैं कहनें तैं बटकणिका मात्रका निषेध भया। इहां श्लोक है ताका अर्थ—सुख है सो तौ आल्हादनके आकार है, विज्ञान है सो मेय कहिये जाननें योग्य वस्तुका जाननां है, शक्ति है सो क्रिया करि अनुमानमैं आवै है जैसें तरुण पुरुषकै स्त्रीका समागमविषैं होय है, आनंद अर जाननां अरु सामर्थ्य ये तीनूं तहां ताकै प्रकट देखिये हैं ऐसा वचन है। तातैं आत्मा अपनी देहकै प्रमाण ही निश्चित भया ॥ ८ ॥

आगैं विशेषका दूसरा भेदकूं कहै हैं;—

अर्थान्तरगतो विसदृशपरिणामो व्यतिरेको गोमहिषादिवत् ॥ ९ ॥

याका अर्थ—अन्य अन्य पदार्थ विषैं पाइये ऐसा विसदृश परिणाम है सो व्यतिरेकनामा विशेष है, जैसैं गऊ भैंसि आदि न्यारे न्यारे विलक्षण परिणाम स्वरूप हैं तैसैं। जातैं विसदृशपणां है सो प्रतियोगीके ग्रहण होतैं ही होय है जैसें गऊतैं भैंसि विसदृश है। इहां गऊ प्रतियोगी है ताका ग्रहण है। बहुरि या विसदृशपणांकै परकी अपेक्षा स्वरूप होतैं वस्तुपणां नांही है, अवस्तुविषैं तौ आपेक्षिकपणांका अयोग है जातैं अपेक्षाकै वस्तुनिष्ठपणां ही है अवस्तुविषैं अपेक्षा नांही होय है ॥ ९ ॥

ऐसैं प्रमाणके विषयका निरूपण किया।

---

(१) **सुखमाल्हादनाकारं विज्ञानं मेयबोधनम्।
शक्तिः क्रियानुमेया स्याद्यूनः कान्ता समागमे ॥**

इहां श्लोक:—

स्यात्कारलांछितमबाध्यमनन्तधर्म-
सन्दोहवर्मितमशेषमपि प्रमेयम् ।
देवैः प्रमाणवलतो निरचायि तच्च
संक्षिप्तमेव मुनिभिर्विवृतं मयैतत् ॥ १ ॥

याका अर्थ—श्री अकलंकदेव आचार्यनैं समस्त ही प्रमाणका विषय जो प्रमेय ताका निरूपण किया, कैसा है प्रमेय—स्यात्कार कहिये कथंचित् प्रकार ताकरि चिह्नित है याहीतैं अबाध्य कहिये निर्बाध है, बहुरि कैसा है—अनंत धर्मका जो समूह ताकरि सहित है, सो काहेतैं कह्या है—प्रमाणके बलतैं कह्या है तातैं प्रमाणभूत है; सो ही मुनि जे माणिक्यनंदि आचार्य तिनिनैं संक्षेपकरि कह्या है, सो ही मैं अनंतवीर्य आचार्य विवरणरूप किया है ॥ १ ॥

सवैया ।

अकलंक देव मुनि रची जो प्रमेयधुनि,
स्याद्वाद चिह्नतें अशेष निरबाध है ।
मानको सहाय पाय लखे जे अनंत धर्म,
मंडित अखंड पंडितांके हू अगाध है ॥
रत्ननंदि ताहि जानि संक्षेप किया बखान,
ताका विसताररूप अनंतवीर्य साध है ।
देशमयी कथा रूप किया बुद्धि सारू मैंभी
पढ़ो सुनो भव्यजीव मिथ्यामत बाध है ॥ १ ॥

ऐसैं परीक्षामुख प्रमाणप्रकरणी लघुवृत्तिकी वचनिका
विषैं विषयका समुद्देशनामा चौथा
अधिकार पूर्ण भया ॥ ४ ॥

अथ पंचम समुद्देश ।

—••○••—

[५]

आगैं प्रमाणके फलकी विप्रतिपत्तिका निराकारणकै अर्थि सूत्र कहैं हैं;—

अज्ञाननिवृत्तिर्हानोपादानोपेक्षाश्च फलम् ॥ १ ॥

याका अर्थ—अज्ञानकी तौ निवृत्ति कहिये अभाव होनां बहुरि हान कहिये त्याग अर उपादान कहिये ग्रहण अर उपेक्षा कहिये उदासीनता वीतरागता ऐसे प्रमाणके फल हैं ॥ तहां फल दोय प्रकार है साक्षात् कहिये लगता ही, अर पारंपर्य कहिये परंपरा करि । तहां साक्षात् तौ अज्ञानका नाश होनां फल है जातैं वस्तुका यथार्थ ज्ञान होय तिस ही काल अज्ञानका नाश होय है, करणरूप ज्ञान सो तौ प्रमाण है अर क्रियारूप जाननां सो फल है सो ही अज्ञानकी निवृत्ति है । बहुरि परंपराकरि ग्रहण त्याग अर वीतरागता ये फल हैं जातैं प्रमेय वस्तुका निश्चय भये पीछैं होय है । सो यहु दोय प्रकारका ही फल प्रमाणतैं भिन्न ही है ऐसैं तौ नैयायिक मानैं हैं । बहुरि प्रमाणतैं अभिन्न ही है ऐसैं बौद्धमती मानैं है ॥ १ ॥

तिनि दोऊनिका मत निराकरण करि अपनां मत स्थापनेकूं सूत्र कहैं हैं;—

प्रमाणादभिन्नं भिन्नं च ॥ २ ॥

याका अर्थ—प्रमाणतैं प्रमाणका फल कथंचित् अभिन्न है कथंचित् भिन्न है ॥ २ ॥

आगैं कथंचित् अभेदके समर्थनकै अर्थि हेतु कहैं हैं;—

यः प्रमिमीते स एव निवृत्ताज्ञानो जहात्यादत्ते उपेक्षते चेति प्रतीतेः ॥ ३ ॥

याका अर्थ—जो आत्मा प्रमेयकूं प्रमाणकरि यथार्थ जानैं है सो ही दूर भया है अज्ञान जाका ऐसा होय करि अनिष्टका त्याग करै है इष्टका ग्रहण करै है जो आपकै इष्ट अनिष्ट न जानैं ताविषैं मध्यस्थ होय है वीतराग होय है ऐसैं प्रतीति है। इहां ऐसा अर्थ जाननां—जिस ही आत्माकैं प्रमाणकै आकार परिणाम होय है तिसहीकै फलरूपपणांकरि परिणाम होय है, ऐसैं एक प्रमाताकी अपेक्षाकरि प्रमाण फलकै अभेद है। बहुरि प्रमाण करणरूपपरिणाम है फल क्रियारूप है; ऐसैं करणक्रिया परिणामकै भेदतैं भेद है, ऐसैं भेदकै सामर्थ्यसिद्धपणां है तातैं भेदका समर्थन हेतु न्यारा न कह्या है ॥ ३ ॥

ऐसैं प्रमाणकै फलका निरूपण किया।

इहां श्लोक—

पारम्पर्येण साक्षाच्च फलं द्वेधाऽभ्यधायि यत्।
देवैर्भिन्नमभिन्नं च प्रमाणात्तदिहोदितम् ॥ १ ॥

याका अर्थ—श्रीअकलंकदेव मुनिनैं प्रमाणका फल साक्षात् अर परंपराकरि दोय प्रकार कह्या सो प्रमाणतैं भिन्न अर अभिन्न कह्या है, सो ही या प्रकरणविषैं माणिक्यनंदिआचार्यनैं कह्या है ॥ १ ॥

दोहा।

परंपरा साक्षात करि भिन्न अभिन्न विचारि।
देव कह्यो फल मानको सो ही या मधि धारि ॥ १ ॥

ऐसैं परीक्षामुख प्रमाण प्रकरणकी लघुवृत्तिकी
वचनिकाविषैं फलका समुद्देश नामा
पांचमां अधिकार संपूर्ण भया।

अथ षष्ठ समुद्देश ।

->:(✱):<-

(६)

आगैं अब कह्या जो प्रमाणका स्वरूप आदि चतुष्टय तिनिका आभास कहिये कहै जैसैं नांही अर तिनि सारिखे दीखै तिनिकूं कहै है—

ततोऽन्यत्तदाभासम् ॥ १ ॥

याका अर्थ—ततः कहिये कह्या जो प्रमाणका स्वरूपादिक तातैं अन्यत् कहिये विपरीत सो तदाभास कहिये ताका आभास है । इहां कह्या जो प्रमाणका स्वरूप संख्या विषय फल ये च्यार भेद तिनितैं अन्यत् विपरीत सो तदाभास हैं ॥ १ ॥

आगैं क्रममैं प्राप्त भया जो स्वरूपाभास ताकूं दिखावैं हैं—

अस्वसंविदितगृहीतार्थदर्शनसंशयादयः प्रमाणाभासाः ॥ २ ॥

याका अर्थ—अस्वसंविदित कहिये आपकरि आपकूं न जानैं, गृहीतार्थ कहिये ग्रह्याकूं ग्रहण करै, दर्शन कहिये सामान्याकारमात्रका ग्राही, संशय कहिये संदेहरूप, आदि शब्दतै विपर्यय अनध्यवसाय ये सर्व प्रमाणाभास हैं। इहां अस्वसंविदित गृहीतार्थ दर्शन संशयादि इनिका द्वन्द्वसमास करनां । बहुरि आदि शब्दकरि विपर्यय अनध्यवसायका ग्रहण करनां । तहां ज्ञान अस्वसंविदित है जातैं अन्य ज्ञानकरि प्रत्यक्ष होय है ऐसैं नैयायिक मती कहै है, ताका प्रयोग, सो ही कहैं हैं— ज्ञान है सो आपतैं न्यारा जो ज्ञान ताकरि जाननें योग्य है जातैं वेद्य

कहिये जाकूं जानिये सो तौ ज्ञेय है, जैसैं घट है । तहां आचार्य कहैं हैं—यह कहनां मिलै नांही, इहां धर्मी जो ज्ञान ताकै अन्य ज्ञानकरि वेद्यपणां होतैं साध्यकै मध्य आय पडनेंतैं धर्मीपणांका अयोग है जातैं धर्मी तौ प्रसिद्ध ही होय है । बहुरि धर्मी ज्ञानकै स्वसंविदितपणां कहिये तौ तिस ही करि हेतुकै अनेकान्तपणां है । बहुरि महेश्वरका ज्ञानकरि व्यभिचार आवै है जातैं महेश्वरका ज्ञान अस्वसंविदित कहै तौ सर्वज्ञपणां न ठहरै, स्वसंविदित कहै तौ स्वमतकी हानि होय है । बहुरि व्याप्तिज्ञानकरि भी अनेकान्त कहिये व्यभिचार आवै है । बहुरि अस्वसंविदित ज्ञानतैं अर्थकी प्रतिपत्तिका अयोग है जातैं जो ज्ञापक कहिये जनावनेंवाला अप्रत्यक्ष होय सो जनावनेंयोग्यकूं जनावै नांही । जो ऐसैं होय ज्ञापक विना जाण्यां भी जणावै तौ शब्द कानतैं सुण्यां विना अर्थकूं जनावनेंवाला ठहरै, लिंग धूमादिक नेत्रकरि देख्या विना अग्नि आदिकूं जानवनेंवाला ठहरै । इहां कहै—जो लगताही अन्य ज्ञान है ताकरि ग्रहण करिये है, तौ ताकै भी विना ग्रह्याकै परका जनावनेंवालापणां नांही तब ताके ग्रहणकूं तिसतैं अन्य ज्ञान कल्पनें योग्य ठहरै तहां भी तिसतैं अन्य कल्पना ऐसैं अनवस्था आवै । तातैं अस्वसंविदित ज्ञान ऐसा नैयायिकका पक्ष श्रेष्ठ नांही ।

इस ही कथनकरि मीमांसक कहै है—जो करण ज्ञानकै परोक्षपणांकरि स्वसंविदितपणां नांही है करणज्ञान परोक्ष ही है तातैं अस्वसंविदित ही है ताका भी निराकरण किया जातैं ऐसे ज्ञानतैं भी अर्थका प्रत्यक्षपणांका अयोग है । इहां मीमांसक कहै है—जो करण ज्ञान है सो कर्मपणांकरि प्रतीतिमैं न आवै है तातैं याकै प्रत्यक्षपणां नांही है प्रत्यक्ष तौ कर्मज्ञान है, तौ ताकूं कहिये—ऐसैं कहें फलज्ञानके भी प्रत्यक्षपणां न ठहरैगा । बहुरि कहै—फलपणांकरि प्रतिभास-

नेंतै प्रत्यक्षपणां है तौ करण ज्ञानकै भी करणपणांकरि प्रतिभासनेंतैं प्रत्यक्षपणां होहु । तातैं अर्थ जाननेंकी अन्यथा अप्राप्तितैं जैसैं करण ज्ञान कल्पिये है तैसैं अर्थका प्रत्यक्षपणांकी अन्यथा अप्राप्तितैं ज्ञानकै प्रत्यक्षपणां भी होहु । बहुरि कहै—जो नेत्र आदि करणकै अप्रत्यक्ष-पणां होतैं भी रूपका प्रगटपणां होय है, तिसतैं व्यभिचार आवै है। तहां कहिये—जो भिन्न है कर्त्ता जातैं ऐसा करणकै ही यहु व्यभि-चार है, अभिन्नकर्तृककरण होतैं संतैं तौ कर्त्ताका प्रत्यक्षपणां होतैं तिस कर्त्तातैं अभिन्न जो करण ताकै कथंचित् प्रत्यक्षपणांकरि अप्रत्यक्ष एका-न्तका विरोध है, जैसैं प्रकाश स्वरूपकै अप्रत्यक्षपणां होतैं प्रदीपकै प्रत्यक्षपणां होतैं विरोध है तैसैं ॥ बहुरि गृहीतग्राही जो धारावाही ज्ञान सो गृहीतार्थ प्रमाणाभास है । बहुरि बौद्धकरि मान्यां जो निर्वि-कल्पस्वरूप प्रत्यक्ष प्रमाण सो दर्शन है, सो अपनें विषयका उपदर्श-कपणां याकै नांही है तातैं अप्रमाण है । जातैं तिस विषयभूत पदा-र्थतैं उपज्या जो व्यवसाय कहिये निश्चय ताहीकै अपनां विषयका उप-दर्शकपणां है । बहुरि बौद्ध कहै है—जो व्यवसायकै प्रत्यक्षपणां नांही प्रत्यक्षके आकार करि अनुरक्तपणां ही है तातैं प्रत्यक्षकै तौ प्रमाणपणां है अर व्यवसाय है सो तौ गृहीतग्राही है यातैं अप्रमाण है । तहां आचार्य कहैं हैं—यह सुभाषित नांही, दर्शन है सो विकल्परहित है ताका उपलंभ नांही तातैं ताका सद्भावका अयोग है । बहुरि सद्भाव मानिये तौ जैसैं नील आदिक विषै उपदर्शक है तैसैं क्षणक्षयादिविषै भी ताका उपद-र्शकपणां ठहरै है। बहुरि कहै—जो क्षणक्षयादि विषैं क्षणिकतैं विपरीत अक्षणिकका संशयादिरूप समारोप होय यातैं ताका उपदर्शक नांही, तौ ताकूं कहिये—यह सिद्ध भई नील आदि विषैं समारोप जो संशयादिक ताका विरोधी जो ग्रहण सो है लक्षण जाका ऐसा निश्चय होय है तिस

स्वरूप ही प्रमाण है अन्य तदाभास है। बहुरि संशयादि हैं ते प्रमाणाभास प्रसिद्ध ही हैं। तहां संशय है सो तौ दोय तरफका स्पर्शन करनेंवाला है जैसैं खेतमैं रोप्या स्थाणुकौं देखि जाकै यह स्थाणु ही है ऐसा निश्चय नांही, सो विचारै यह स्थाणु है कि पुरुष है! ताका निश्चय नाही होनें तैं यहु प्रमाणाभास है। बहुरि अन्य विषैं अन्यका विकल्प निश्चय सो विपर्यय है, जैसैं सींपविषैं रूपाका निश्चय। बहुरि विशेषका निश्चय नांही सो अनध्यवसाय है, जैसैं चालताकै तृण लागै तब जानैं किछू है, विशेष निश्चय नांही ॥ २ ॥

आगैं कहै है इनि अस्वसंविदित आदिकै प्रमाणभासपणां कैसैं है; ताका सूत्र—

स्वविषयोपदर्शकत्वाभावात् ॥ ३ ॥

याका अर्थ—जातैं ये अस्वसंविदित आदिक हैं तिनिकै अपनां विषयका उपदर्शकत्व कहिये निश्चायकपणां ताका अभाव है तातैं ये प्रमाणाभास है ॥ ३ ॥

पुरुषान्तरपूर्वार्थगच्छत्तृणस्पर्शस्थाणुपुरुषादिज्ञानवत् ॥ ४ ॥

आगैं इनि विषैं दृष्टांत अनुक्रमतैं कहैं हैं;—

याका अर्थ—अन्य पुरुषका ज्ञानकी ज्यों अस्वसंविदित ज्ञान अपना विषय विषै नांही प्रवर्तै है तातैं प्रमाण नांही, पूर्वै ग्रह्या है अर्थ जानैं ऐसा ज्ञानकी ज्यों गृहीतार्थ ज्ञान प्रमाण नांहीं, चालताकैं तृणस्पर्शज्ञानकी ज्यों दर्शन प्रमाण नांही है, स्थाणु पुरुष ज्ञानकी ज्यों संशय प्रमाण नांही है, आदि शब्दतैं विपर्ययादिक तथा ऐसे और भी जाननें ते सारे प्रमाणभास है ॥ ४ ॥

आगैं जो संनिकर्षकूं प्रमाण कहै है तिस प्रति दृष्टान्त कहैं हैं—

चक्षूरसयोर्द्रव्ये संयुक्तसमवायवच्च ॥५॥

याका अर्थ—नेत्रकैं अर रसकैं द्रव्यविषैं संयुक्त समवाय स्वरूप सन्निकर्ष है सो जैसें प्रमाण नांही तैसैं और भी सनिकर्ष प्रमाण नांही। इहां यहु अर्थ है—जैसें नेत्र अर रसक द्रव्यविषैं संयुक्त समवाय है तौऊ प्रमाण नांही तथा चक्षु रूपकैं संयुक्त समवाय है सो भी प्रमाण नांही है तातैं यह भी प्रमाणाभासही है, यहु अतिव्याप्ति कही सो उपलक्षणरूप है, ऐसैं ही अन्य इन्द्रियके सन्निकर्ष अप्रमाण जाननें। इहां नेत्रकरि रूपकैं संयोग भया अर रूपकैं अर रसकैं एक द्रव्य विषैं समवाय है सो रसकरि भी समवाय भया सो संयुक्त समवायनामा संनिकर्ष तौ भया अरु नेत्रकैं रसका ज्ञान न भया तातैं प्रमाण न भया तब अतिव्याप्ति दूषण भया। बहुरि अव्याप्ति दूषण है जातैं नेत्र इंद्रिय विना अन्य इन्द्रियनिकैं संनिकर्ष है अर नेत्र प्रमाण है तहां संनिकर्ष व्यापै नांही तातैं अव्याप्ति है। बहुरि संनिकर्षकूं प्रत्यक्ष प्रमाण कहै हैं तिनिकैं नेत्रकै विषैं संनिकर्षका अभाव है नेत्र पदार्थतैं भिडै नांही तातैं नेत्रप्रत्यक्षमैं संनिकर्षलक्षण संभवै नांही तब असंभवी दूषण भी है। इहां नैयायिक कहै है—जो नेत्र प्राप्त अर्थका जाननेंवाला है जातैं वीचिमैं अन्य पदार्थ आडा आवै तब जानैं नांही है जैसैं दीपककै भीति आदि आडी आय जाय तिस अर्थकूं प्रकाशै नांही तैसैं, भावार्थ—नेत्र भी पदार्थतैं जुडिकर ही जाणैं है तातैं संनिकर्षकी सिद्धि है। ताकूं आचार्य कहै है:—यह भी साधनां समीचीन नांही जातैं नेत्रकै काच भोडल आदि आडा आय जाय तौऊ नेत्र ताकरि व्यवहित पदार्थकूं प्रकाशै है तातैं हेतु असिद्ध है। बहुरि वृक्षकी शाखा अर चन्द्रमाकूं एक काल नेत्र देखै है सो नांही ठहरै यह प्रसंग आवै है। बहुरि

कहै—इहां क्रमसूं देखे है तहां पुरुषकै युगपत् देखनेंका अभिमान है, सो ऐसैं भी न कहनां जातैं कालका अंतर नाही दीखै है एकही काल है। बहुरि विशेष कहैं हैं—जो क्रमका ज्ञान तौ प्राप्ति भयें ही नेत्रकै जाननेंका निश्चय भये होय है, क्रम प्राप्ति विषैं अन्य प्रमाण तौ नांही है। इहां कहै—जो नेत्र इन्द्रियकैं तैजसपणां है इस हेतुकरि प्राप्त अर्थका प्रकाशपणां है यह अन्य प्रमाण है, तौ ताकूं कहिये—यह नांही है, तैजसपणांकी सिद्धि नांही होय है। इहां नैयायिक तैजसपणां साधनेंकूं प्रयोग करै है—नेत्र है सो तैजस है जातैं रूपादिक गुण है तिनिमैं सूं रूपका ही यह प्रकाशक है जैसैं दीपक है। आचार्य कहै है—यह भी प्रयोग विना विचारयां किया है जातैं इहां प्रदीपका दृष्टान्त कह्या सो तौ तैजस है अर मणि तथा अंजन आदिक पार्थिव हैं पृथिवीतैं उपजै हैं तेऊ रूपकूं प्रकाशैं हैं। बहुरि नेत्रकूं तेजोद्रव्यके रूप प्रकाशनेंतैं तैजस कहिये तौ पृथिवी आदिके रूपका प्रकाशक है, तातैं याकैं पृथिवी आदि करि रच्यापणांका प्रसंग आवै है, भावार्थ—नेत्र भी पार्थिव ठहरै है। तातैं सनिकर्षकैं अव्याकपणा है। तातैं प्रमाणपणां नांही। बहुरि करण ज्ञानकरि याकै व्यवधान है, सन्निकर्ष भये पीछैं इन्द्रिय ज्ञान पदार्थकूं जाणैं है सन्निकर्षही जानैं नांही। ऐसैं करण ज्ञानकरि व्यवधान भया सन्निकर्षकरि ही तौ अर्थका संवेदन नांही भया तातैं सन्निकर्ष प्रमाणाभासही है ॥ ५ ॥

आगैं प्रमाण सामान्याभास कहि करि अब प्रमाणविशेषका आभास कहैं हैं, तहां प्रत्यक्षभास कहैं हैं;—

अवैशद्ये प्रत्यक्षं तदाभासं बौद्धस्याकस्माद्धूमदर्शनाद्वह्निविज्ञानवत् ॥ ६ ॥

याका अर्थ—अविशदपणां होतैं प्रत्यक्ष मानैं सो प्रत्यक्षाभास है जैसैं बौद्धमतीकै अकस्मात् निश्चय भये विनाही धूम देखनेतैं अग्निका विज्ञान बौद्ध निर्विकल्प प्रत्यक्ष मानैं है जैसैं धूमकी परीक्षा निश्चय विना अग्निका अनुमान करै । सो विना निश्चय तदाभास है तैसैं प्रत्यक्षाभासही है प्रमाण नांही ॥ ६ ॥

आगैं परोक्षाभासकूं कहैं हैं;—

वैशद्येऽपि परोक्षं तदाभासं मीमांसकस्य करणज्ञानवत् ॥ ७ ॥

याका अर्थ—जहां वैशद्य होय तहां भी परोक्षमानैं सो परोक्षाभास है जैसैं मीमांसक करणज्ञान विशद है तोऊ ताकूं परोक्ष मानैं है तैसैं । यहु पहले विस्तारकरि कह्या ही है ॥ ७ ॥

आगैं परोक्षके भेदाभासकूं कहते संते क्रममैं आया जो स्मरणाभास ताकूं कहैं हैं;—

अतस्मिँस्तदिति ज्ञानं स्मरणाभासं जिनदत्ते स देवदत्तो यथा ॥ ८ ॥

याका अर्थ—जो अनुभवविषैं आया नांही ताका स्मरणा सो स्मरणाभास है जैसैं जिनदत्त पुरुषकूं पूर्वै देख्या था अर यादि देवदत्तकूं किया ‘ जो सो देवदत्त ’ ऐसैं ॥ ८ ॥

आगैं प्रत्यभिज्ञानाभासकूं कहैं हैं;—

सदृशे तदेवेदं तस्मिन्नेव तेन सदृशं यमलकवदित्यादि प्रत्यभिज्ञानाभासम् ॥ ९ ॥

याका अर्थ—सदृश विषैं तौ सो ही यहु है अर तिस ही विषैं यहु तिस सारिखा है जैसैं दोयका जुगल विषैं एक देखै इत्यादि प्रत्य-

भिज्ञानाभास है ॥ इहां प्रत्यभिज्ञान दोय प्रकारकाकूं लेय प्रत्यभिज्ञाना-भास भी दोय प्रकार कह्या; एकत्वनिबंधन, सादृश्यनिबंधन। तहां एकत्वविषै तो सादृश्यका ज्ञान, अर सादृश्यविषैं एकत्वका ज्ञान, सो प्रत्यभिज्ञानाभास है ॥ ९ ॥

आगैं तर्काभासकूं कहै हैं;—

असंबद्धे तज्ज्ञानं तर्काभासं यावाँस्तत्पुत्रः सः श्याम इति यथा ॥ १० ॥

याका अर्थ—असंबद्ध कहिये अविनाभावरहित विषैं अविनाभा-वका ज्ञान सो तर्काभास है, जैसैं काहूकै अन्य कोई पुत्र श्याम देखि कहै—याके जे ते पुत्र हैं तथा होयगे ते सर्व श्याम हैं; ऐसैं व्याप्ति कहना तर्काभास है ॥ १० ॥

आगैं अनुमानभास कहै हैं;—

इदमनुमानाभासम् ॥ ११ ॥

याका अर्थ—इदं कहिये आगैं कहै हैं सो अनुमानाभास है ॥११॥

आगैं तिस अनुमानाभासविषैं तिसके अवयवाभास दिखावनैंकरि समुदायरूप अनुमानाभासकूं दिखावनैंकी इच्छाकरि पहले पहला अव-यवाभास कहैं हैं;—

तत्रानिष्टादिः पक्षाभासः ॥ १२ ॥

(१) मुद्रित संस्कृत प्रतिमें "यावाँस्तत्पुत्रः स श्याम इति यथा" यह पाठ सूत्रमें नहीं दिया है किन्तु टीकामें दिया है और परीक्षामुख सूत्र जो अलग पुस्तककी आदिमें प्रकाशित है वहां सूत्रमेंही ऐसा पाठ दिया है। लेकिन-यह पाठ सूत्रमें ही होना चाहिये।

याका अर्थ—तिनि अवयवनिविषैं अनिष्ट आदि शब्दकरि बाधित प्रसिद्ध ये पक्षाभास हैं। इष्ट अबाधित असिद्ध लक्षण साध्य पूर्वैं कह्या था सो ही पक्ष कह्या था ॥ १२ ॥

आगैं तिनितैं विपरीत तदाभास है, ऐसैं कहैं हैं;—

अनिष्टो मीमांसकस्यानित्यः शब्दः ॥ १३ ॥

याका अर्थ—अनिष्ट पक्षाभास तौ मीमांसककैं शब्द अनित्य है। मीमांसक शब्दकूं नित्य मानैं है सो अनित्य कहै तौ ताकैं अनिष्ट है॥१३॥

आगैं असिद्धतैं विपरीत सिद्ध पक्षाभास कहैं हैं;—

सिद्धः श्रावणः शब्दः ॥ १४ ॥

याका अर्थ—शब्द है सो श्रावण है, ऐसैं पक्ष कहै तौ सिद्ध पक्षाभास है जातैं शब्द तौ सुननेमैं आवै है सो श्रावण है ही फेरि साधै तौ सिद्ध पक्षाभास है ॥ १४ ॥

आगैं अबाधिततैं विपरीत बाधित पक्षाभासकूं कहते संते सो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणकरि बाधित है ऐसैं दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

बाधितः प्रत्यक्षानुमानागमलोकस्ववचनैः ॥ १५ ॥

याका अर्थ—बाधित पक्ष है सो प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, लोक, स्ववचन, इनि करि है तातैं बाधित पक्षाभास पंच प्रकार जाननां ॥१५॥

आगैं इनिका अनुक्रमकरि उदाहरण कहैं हैं:—

तत्र प्रत्यक्षबाधितो यथा, अनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वा-ज्जलवत् ॥ १६ ॥

याका अर्थ—तिनि विषैं प्रत्यक्ष बाधित–जैसैं अग्नि है सो अनुष्ण कहिये शीतल है जातैं याकै द्रव्यपणां है जैसैं जल शीतल है तैसैं

इहां अग्नि है सो उष्ण स्पर्श स्वरूप है सो अनुष्ण कह्या तब स्पर्शन प्रत्यक्षकरि बाधित भया ॥ १६ ॥

आगैं अनुमानबाधित कहैं हैं—

अपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् घटवत् ॥ १७ ॥

याका अर्थ—शब्द है सो अपरिणामी है जातैं याकै कृतकपणां है, कर्‍या होय है, जैसैं घट कर्‍या होय है । इहां अपरिणामी पक्ष है सो नित्य पक्ष है, सो शब्द कृतकपणां हेतुतैं परिणामी सधै है, इस अनुमानकरि नित्य पक्ष बाधित है ॥ १७ ॥

आगैं आगमबाधित कहैं हैं:—

प्रेत्याऽसुखप्रदो धर्मः पुरुषाश्रितत्वादधर्मवत् ॥ १८ ॥

याका अर्थ:—धर्म है सो परलोकविषैं दुःख देनेंवाला है जातैं यह पुरुषकै आश्रय है जैसैं अधर्म पुरुषकै आश्रय है तातैं दुःख देनेवाला है । इहां पुरुषकै आश्रयपणांतैं अधर्म धर्म अविशेषरूप है तौऊ आगमविषैं धर्मकै परलोकमैं सुखका कारणपणां कह्या है, तातैं पक्ष आगमबाधित है ॥ १८ ॥

आगैं लोकबाधित कहैं हैं;—

शुचि नरशिरःकपालं प्राण्यंगत्वाच्छंखशुक्तिवत् ॥ १९ ॥

याका अर्थ—मनुष्यका मस्तकका कपाल कहिये खोपरी सो पवित्र है जातै याकै प्राणीका अंगपणां है जैसैं शंख सीप पवित्र मानिये है तैसैं । इहां लोकविषैं मनुष्यकी खोपरी प्राणीका अंग है तौऊ अपवित्र मानिये है, शंख सीप प्राणीकै अंग हैं तिनिकूं पवित्र मानैं है तैसैं खोपरीकूं पवित्र कहनां लोकबाधित है ॥ १९ ॥

आगैं स्ववचनबाधित कहैं हैं;—

माता मे वंध्या पुरुषसंयोगेऽप्यगर्भत्वात् प्रसिद्धवंध्यावत् ॥ २० ॥

याका अर्थ—मेरी माता वांझ है जातैं पुरुषका संयोग होतैं भी ताकै गर्भवतीपणां नांही है जैसैं अन्य प्रसिद्ध वंध्या है तैसैं। इहां मेरी माता कहनेतैं वंध्या कहनां अपनां वचनहीतैं बाधित भया, जो वंध्या है तौ आप पुत्र कैसैं भया ॥ २० ॥

आगैं क्रममैं आये जे हेत्वाभास तिनिकूं कहै हैं;—

हेत्वाभासा असिद्धविरुद्धानैकान्तिकाकिंचित्कराः ॥ २१ ॥

याका अर्थ—हेत्वाभास च्यारि हैं; असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, अकिंचित्कर ऐसैं ॥ २१ ॥

आगैं इनिका यथानुक्रमकरि उदाहरणसहित लक्षण कहैं हैं;—

असत्सत्तानिश्चयोऽसिद्धः ॥ २२ ॥

याका अर्थ—असत् है सत्ता अर निश्चय जाका सो असिद्ध हेत्वाभास है ॥ सत्ता अर निश्चय जो है सो "सत्तानिश्चयौ" कहिये, नही है सत्ता अर निश्चय जाको सो असत्सत्तानिश्चय कहिये ॥ २२ ॥

आगैं पहला भेदकूं कहै हैं;—

अविद्यमानसत्ताकः परिणामी शब्दः चाक्षुषत्वात् ॥ २३ ॥

याका अर्थ—नाहीं विद्यमान है सत्ता जाकी सो असत सत्ताक नामा असिद्ध हेत्वाभास है जातैं शब्द है सो परिणामी है जातैं चाक्षुष है। इहां शब्द तौ श्रावण है अर चाक्षुष हेतु सूं साधै सो शब्दविषैं चाक्षुषपणांकी सत्ता नांहीं ॥ २३ ॥

आगैं कहैं हैं कि इस हेतुकैं असिद्धपणां कैसैं भया ?;—

स्वरूपेणैवासिद्धत्वात् ॥ २४ ॥

याका अर्थ—यह स्वरूपकरि ही असिद्ध है चाक्षुषपणां शब्दका स्वरूप नांही ॥ २४ ॥

आगैं प्रसिद्धका दूसरा भेदकूं कहैं हैं;—

अविद्यमाननिश्चयो मुग्धबुद्धिं प्रत्यग्निरत्र धूमात् ॥२५॥

याका अर्थ—प्रविद्यमान है निश्चय जाका सो असत् निश्चय हेत्वाभास है जैसैं मुग्धबुद्धि जो भोलाजीव तिस प्रति कहैं इहां अग्नि है जातैं धूम है ॥ २५ ॥

आगैं याकैं असिद्धता कैसैं ? ऐसैं पूछे कहैं हैं;—

तस्य वाष्पादिभावेन भूतसंघाते संदेहात् ॥ २६ ॥

याका अर्थ—तिस धूम नामा हेतुकैं वाफ आदिपणांकरि पृथिवी आदि भूतसंघातविषैं संदेहतैं असत् निश्चय है । मुग्धकैं विद्यमान धूमविषैं भी विना समस्यां संदेह उपजै जो यह वाफ है कि धूम है ? ॥२६॥

आगैं अमुग्धबुद्धि प्रति और असिद्धका भेद कहैं हैं;—

सांख्यं प्रति परिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥ २७ ॥

याका अर्थ—सांख्य मती प्रति कहै—जो शब्द परिणामी जातैं कृत कहै ॥ २७ ॥

याका असिद्धपणांविषैं कारण कहैं हैं;—

तेनाज्ञातत्वात् ॥ २८ ॥

याका अर्थ—तिस सांख्यकरि नांही, जानयापणांतैं जातैं सांख्यके मतमैं आविर्भाव तिरोभाव ही प्रसिद्ध है उत्पत्ति आदि प्रसिद्ध नांही

है। तातैं शब्द कृतक है ऐसा सांख्यमती नांही जाणैं है तातैं याकै भी असिद्धपणां है ॥ २८ ॥

आगैं विरुद्ध हेत्वाभासकूं दिखावता संता सूत्र कहैं हैं;—

विपरीतनिश्चिताविनाभावो विरुद्धोऽपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥ २९ ॥

याका अर्थ—विपरीत कहिये विपक्ष विषैं है अविनाभावका निश्चय जाका ऐसा विरुद्ध हेत्वाभास है जैसैं अपरिणामी शब्द है, इहां कृतकपणां हेतु है सो अपरिणामका विरोधी जो परिणाम ताकरि व्याप्त है तातैं विरुद्ध है ॥ २९ ॥

आगैं अनैकान्तिक हत्वाभासकूं कहैं हैं;—

विपक्षेऽप्यविरुद्धवृत्तिरनैकान्तिकः ॥ ३० ॥

याका अर्थ—विपक्षविषैं भी अविरुद्ध है वृत्ति जाकी सो अनैकान्तिक हेत्वाभास है। इहां 'अपि' शब्दतैं ऐसैं जानिये जो केवल पक्ष सपक्षविषैं ही याकी वृत्ति नांही है, विपक्षविषैं भी है। सो यह हेत्वाभास दोय प्रकार है; निश्चित विपक्षवृत्ति, शंकितविपक्षवृत्ति ॥३०॥

तहां आदि भेदकूं दिखावता संता सूत्र कहैं हैं;—

निश्चितवृत्तिरनित्यः शब्दः प्रमेयत्वाद् घटवत् ॥ ३१ ॥

याका अर्थ—जातैं नित्य जो आकाश ताकै विषैं भी याका निश्चय है, भावार्थ—इहां प्रमेयपणां हेतु है सो पक्ष जो शब्द ताविषैं अनित्यपणां साध्य है ताविषैं भी है अर याका सपक्ष घट ताविषैं भी है अर विपक्ष जो नित्य आकाश ताविषैं भी निश्चयकरि पाइये है, तातैं निश्चितविपक्षवृत्ति हेत्वाभास भया ॥ ३१ ॥

आगैं याकी विपक्षकै विषैं निश्चितवृत्ति कैसैं है ऐसी आशंका होता सूत्र कहैं हैं;—

आकाशे नित्येऽप्यस्य निश्चयात् ॥ ३२ ॥

याका अर्थ—अस्य कहिये या हेतुको नित्य आकाश जो है ताकै विषै निश्चय है यातैं ॥ ३२ ॥

आगैं शंकितविपक्षवृत्तिकूं उदाहरणरूप कहैं हैं;—

शंकितवृत्तिस्तु नास्ति सर्वज्ञो वक्तृत्वात् ॥ ३३ ॥

याका अर्थ—सर्वज्ञ नांही है जातैं जाकै वक्तापणां है । इहां वक्तापणां हेतु शंकितविपक्षवृत्ति अनैकान्तिक है ॥ ३३ ॥

आगैं याकै भी विपक्षविषै शंकितविपक्षवृत्ति कैसैं है? ऐसी आशंका करि कहैं हैं;—

सर्वज्ञत्वेन वक्तृत्वाविरोधात् ॥ ३४ ॥

याका अर्थ—जातैं सर्वज्ञपणांकरि वक्तृपणांकैं अविरोध है । इहां अविरोध यहु—जो ज्ञानका उत्कर्ष होतैं वचननिका अपकर्ष नांही देखिये है, बहुत ज्ञान होय तब वचन स्पष्ट नीसरै है यह निरूपण पहलैं किया है । तातैं वक्तापणां हेतु है सो विपक्ष जो सर्वज्ञका सद्भाव है तहां शंकित है संदेहरूप है, वक्तापणां होतैं सर्वज्ञपणां होय भी है नांही भी होय है । तातैं शंकितविपक्षवृत्ति अनैकान्तिक हेत्वाभास भया ३४

आगैं अकिंचित्कर हेत्वाभासका स्वरूप कहैं हैं;—

सिद्धे प्रत्यक्षादिबाधिते च साध्ये हेतुरकिंचित्करः ॥ ३५ ॥

याका अर्थ—जहां साध्य सिद्ध होय तथा प्रत्यक्ष आदि प्रमाणकरि बाधित होय तहां हेतु अकिंचित्कर है ॥ ३५ ॥

आगैं इनिकूं उदाहरणरूप कहैं हैं;—

सिद्धः श्रावणः शब्दः शब्दत्वात् ॥ ३६ ॥

याका अर्थ—जैसैं शब्द है सो श्रावण है श्रवण इन्द्रियका गोचर है यातैं श्रावण कहिये है जातैं याकै शब्दपणां है। इहां शब्दपणां हेतु है सो श्रावणपणां साध्य है सो तौ पहले ही सिद्ध है हेतु तौ किछू साध्या नांही तातैं अकिंचित्कर है ॥ ३६ ॥

आगैं याकैं अकिंचित्करपणां कैसैं है सो कहिये है;—

किंचिदकरणात् ॥ ३७ ॥

याका अर्थ—इस हेतुनैं किछू किया नांही तातैं अकिंचित्कर है सो हेत्वाभास है ॥ ३७ ॥

आगैं दूसरा भेद प्रत्यक्षादिबाधित जाका साध्य होय ताकूं पहला भेदका दृष्टान्तरूप करनेंका द्वारही करि उदाहरणरूप करैं हैं;—

यथाऽनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वादित्यादौ किंचित्कर्तुमशक्यत्वात् ॥ ३८ ॥

याका अर्थ—जैसैं अग्नि है सो अनुष्ण है जातैं याकै द्रव्यपणां है। इहां अग्नि उष्ण है, अर अनुष्ण कह्या सो साध्य स्पर्शनप्रत्यक्षकरि बाधित है तातैं इस द्रव्यपणां हेतुकै अकिंचित्करपणां है जातैं इहां किछू किया नांही, जैसैं इहां किछू किया नांही तैसैं ही पूर्व सूत्रमैं जाननां ॥ ३८ ॥

बहुरि यह अकिंचित्करपणां दोष हेतुका लक्षणके विचारका अवसर विषैं ही अर वादकाल विषैं नांही है ऐसैं प्रकट करते संते कहैं हैं;—

लक्षण एवासौ दोषो व्युत्पन्नप्रयोगस्य पक्षदोषेणैव दुष्टत्वात् ॥ ३९ ॥

याका अर्थ—यहु अकिंचित्करपणां हेतुका दोष है सो लक्षण कहिये शास्त्रविषैं ही है, वाद विषैं व्युत्पन्नका प्रयोग है सो पक्षके

दोषहीकरि दूषित है हेतुका दोष प्रधान नांही । व्युत्पन्न ऐसा पक्षका प्रयोग ही न करै अर करै तौ तहां पक्षाभास कहनां, जो सिद्ध साध्य कहै तौ सिद्ध पक्षाभास कहनां, बाधित साध्य कहै तौ बाधित पक्षाभास कहनां । अकिंचित्कर हेत्वाभासका कहनां शास्त्रमैं ही प्रधान है, वादमैं नांही ॥ ३९ ॥

आगैं दृष्टान्त है सो अन्वय व्यतिरेकके भेदतैं दोय प्रकार कह्या है तातैं आभास भी दोय प्रकार ही है, तहां अन्वयदृष्टान्ताभासकूं कहैं हैं;—

दृष्टान्ताभासा अन्वयेऽसिद्धसाध्यसाधनोभयाः ॥४०॥

याका अर्थ—दृष्टान्ताभास है ते अन्वयविषैं तौ तीन है; असिद्ध साध्य, असिद्धसाधन, असिद्धसाध्यसाधन ऐसैं । अर इनिका अर्थ ऐसा—असिद्ध है साध्य जा विषैं सो असिद्ध साध्य अन्वयदृष्टांन्ताभास कहिये, इत्यादि जाननां ॥ ४० ॥

आगैं इनि तीननिके उदाहरण एक ही अनुमानके प्रयोग विषैं दिखावैं हैं;—

अपौरुषेयः शब्दोऽमूर्त्तत्वादिन्द्रियसुखपरमाणुघटवत् ॥ ४१ ॥

याका अर्थ—शब्द है सो अपौरुषेय है पुरुषका किया नांही जातैं अमूर्त्तीक है, इहां तीन दृष्टांत हैं ते आभास हैं; इन्द्रिय सुखकी ज्यों, परमाणुकी ज्यों, घटकी ज्यों । तहां इन्द्रियसुखकी ज्यों, यह तौ असिद्धसाध्य है, इहां इंद्रियसुख पौरुषेय दृष्टांत है अर अपौरुषेयपणां साध्य है सो इंद्रियसुखमैं असिद्ध है तातैं असिद्ध साध्य भया । परमाणुकी ज्यों, यह असिद्धसाधन है—इहां साधन अमूर्त्तीकपणां है, सो परमाणु तौ मूर्त्तीक

है, परमाणुदृष्टान्तमैं अमूर्त्तपणां साधन असिद्ध है तातैं असिद्धसाधन भया। बहुरि घटकी ज्यों, यह असिद्धसाध्यसाधन है, घट पौरुषेय भी है अर मूर्त्तीक भी है अर इहां साध्य अपौरुषेय है साधन अमूर्त्तीकपणां है तातैं दोऊ घटमैं असिद्ध भये ॥ ४१ ॥

आगैं कहैं हैं साध्यतैं व्याप्त साधन दिखावनां ऐसैं अन्वय दृष्टान्तका अवसरमैं कह्या था सो जहां इसतैं विपरीत उलटा कहै सो भी दृष्टान्ताभास है;—

विपरीतान्वयश्च यदपौरुषेयं तदमूर्त्तम् ॥ ४२ ॥

याका अर्थ—जहां अन्वय विपरीत कहै जैसैं जो अपौरुषेय है सो अमूर्त्तीक है। इहां जो अमूर्त्तीक है सो अपौरुषेय है ऐसैं अन्वय कहनां था सो उलटा कह्या तातैं यह भी दृष्टान्ताभास है ॥ ४२ ॥

आगैं याकै दृष्टान्ताभासता कैसैं है सो कहैं हैं;—

विद्युदादिनातिप्रसङ्गात् ॥ ४३ ॥

याका अर्थ—विद्युत् कहिये बीजली आदिकरि अतिप्रसंगतैं दृष्टान्ताभास है जातैं उलटा अन्वय कहे बीजलीकै भी अमूर्त्तपणांकी प्राप्ति आवै है, बीजली अपौरुषेय तौ है परन्तु मूर्त्तीक है ॥ ४३ ॥

आगैं व्यतिरेक उदाहरणाभासकूं कहैं हैं;—

व्यतिरेके सिद्धतद्व्यतिरेकाः परमाण्विन्द्रियसुखाकाशवत् ॥ ४४ ॥

याका अर्थ—पहले प्रयोगमैं ही लगाइये है—शब्द है सो अपौरुषेय है जातैं याकै अमूर्त्तीकपणां है जो अपौरुषेय नांही सो अमूर्त्तीक नाहीं; जैसैं परमाणु है; इन्द्रियसुख है, आकाश है। ये व्यतिरेक दृष्टान्ताभास हैं, इनिविषैं साध्य साधन उभय तीनूंनिका व्यतिरेक असिद्ध है। तहां

परमाणु तौ अपौरुषेय है तातैं यह तौ असिद्धसाध्य व्यतिरेक भया जातैं इहां व्यतिरेक ऐसैं है जो अपौरुषेय न होय सो अमूर्त्तीक नांही जैसैं परमाणु, सो परमाणुकै अपौरुषेयपणां साध्यतैं व्यतिरेक न भया। बहुरि इन्द्रियसुख है सो असिद्धसाधन व्यतिरेक है जातैं यह अमूर्त्तीक है, सो अमूर्त्तीकपणां साधनतैं व्यतिरेक नांही भया। बहुरि आकाश है सो असिद्धसाध्यसाधन व्यतिरेक है जातैं यह अमूर्त्तीक भी है अर अपौरुषेय भी है साध्य साधन दोऊतैं व्यतिरेक नांही भया। ऐसैं तीन व्यतिरेकदृष्टान्ताभास कहे ॥ ४४ ॥

आगैं साध्यका अभाव होतैं साधनका अभाव है ऐसैं व्यतिरेक उदाहरणके अवसरमैं कह्या था ताविषैं तिसतैं विपरीत कहै सो भी दृष्टान्ताभास है, यह दिखावैं हैं;—

विपरीतव्यतिरेकश्च यन्नामूर्त्तं तन्नापौरुषेयम् ॥४५॥

याका अर्थ—जो अमूर्त्तीक नांही सो अपौरुषेय नांही ऐसैं कहनां सो विपरीतव्यतिरेक है। इहां जो अपौरुषेय नांही सो अमूर्त्तीक नांही ऐसैं कहनांथा सो उलटा कह्या तातैं विपरीतव्यतिरेक दृष्टान्ताभास ही है॥ ऐसैं दृष्टान्ताभास कहे ॥ ४५ ॥

आगैं बालव्युत्पत्तिकै अर्थि उदाहरण उपनय निगमन ये तीन अवयव कहे थे सो अब बाल अल्पज्ञानीकूं तिनितैं घाटि कहै तौ प्रयोगाभास कहिये, ऐसैं कहैं हैं;—

बालप्रयोगाभासः पंचावयवेषु कियद्धीनता ॥ ४६ ॥

याका अर्थ—अनुमानके पांच अवयव अल्पज्ञकूं कहनें, तिनिमैं घाटि कहै सो बालप्रयोगाभास है ॥ ४६ ॥

आगैं याका उदाहरण कहैं हैं;—

अग्निमानयं प्रदेशो धूमवत्त्वाद्यदित्थं तदित्थं यथा महानसः ॥ ४७ ॥

याका अर्थ—यह प्रदेश अग्निसहित है जातैं याकै धूम सहितपणां है, जो ऐसैं होय (धूमसहित होय) सो अग्निसहित होय जैसैं महानस कहिये रसोई घर। इहां तीन ही अवयव कहे तातैं बालप्रयोगाभास है ॥ ४७ ॥

आगै च्यार अवयवका प्रयोग होतैं प्रयोगाभास कहैं हैं;—

धूमवाँश्चायम् ॥ ४८ ॥

याका अर्थ—धूमवान् यह है। इहां तीन अवयव तौ पहले सूत्रके लेणें अर एक यह कहे ऐसैं च्यार अवयव कहै सो भी बालप्रयोगाभास है ॥ ४८ ॥

आगैं अवयवनिकूं विपर्ययकरि क्रमहीन कहै तौऊ प्रयोगाभास कहिये, ऐसैं कहैं है;—

तस्मादग्निमान् धूमवाँश्चायम् ॥ ४९ ॥

याका अर्थ—तातैं अग्निमान् है बहुरि यह धूमवान् है। इहां निगमनकूं पहलैं कह्या उपनयकूं पीछैं कह्या तातैं क्रमभंग भया, तातैं प्रयोगभास है ॥ ४९ ॥

आगैं यह प्रयोगाभास कैसैं ? ताका हेतु कहैं हैं,—

स्पष्टतया प्रकृतप्रतिपत्तेरयोगात् ॥ ५० ॥

याका अर्थ—जातैं क्रमहीन अनुमानका अयोग करै तहां स्पष्टपणांकरि प्रकृत अर्थकी प्रतिपत्तिका अयोग है। शिष्यकैं स्पष्ट ज्ञान होय नांही तातैं प्रयोगाभास है ॥ ५० ॥

आगैं अब आगमाभासकूं कहैं हैं;—

रागद्वेषमोहाक्रान्तपुरुषवचनाज्जातमागमाभासम् ५१

याका अर्थ—रागद्वेष मोहकरि सहित जो पुरुष ताका वचनकरि जो ज्ञान होय सो आगमाभास है ॥ ५१ ॥

आगैं याका उदाहरण कहैं हैं;—

यथा नद्यास्तीरे मोदकराशयः संति धावध्वं माणवकाः ॥ ५२ ॥

याका अर्थ—जैसैं, नदीके तीर लाडूनिकी राशि है सो हे बालक हो ! दौडो ल्यो। इहां कोई पुरुषकूं बालकनिकरि व्याकुल करि राख्या था तब तिनिकूं अपनां लार छुडावनेंकूं बहकावनेंके वाक्य कहता भया कि—नदीकै तीर लाडूनिके ढेर हैं सो हे बालक हो ! तुम तहां जाय ल्यो, ऐसैं कहि तिनिकूं नदीके तीर चलाये। ऐसैं अपणां प्रयोजन साधनेकूं कछू कहै सो आप्तका वचन नांही तातैं आगमाभास है ॥ ५२ ॥

आगैं इस उदाहरणमात्रकरि संतुष्ट न होते अन्य उदाहरण कहैं हैं;—

अंगुल्यग्रे हस्तियूथशतमास्ते इति च ॥ ५३ ॥

याका अर्थ—बहुरि यह उदाहरण जाननां—जो अंगुलीका अग्रभागविषैं हस्तीनिका समूहका सैकडा तिष्ठै है। इहां सांख्यमती अपने आगमकी वासनामैं लीन है चित्त जाका सो प्रत्यक्ष अनुमानकरि विरुद्ध सर्वही सर्व जायगां विद्यमान है (सर्वं सर्वत्र विद्यते) ऐसैं मानता संता ऐसे वचन कहै है तातैं यह अनाप्तके वचनपणांतैं आगमाभास है ॥ ५३ ॥

आगैं इनि दोऊ वचननिकैं आगमाभासपणां कैसैं है ताका हेतु कहैं हैं;—

विसंवादात् ॥ ५४ ॥

याका अर्थ—जातैं ऐसे वचनके अर्थविषैं विसंवाद है। तातैं अविसंवादरूप जो प्रमाणका लक्षण ताके अभावतैं ऐसे वचन आगमाभास हैं ॥ ५४ ॥

आगैं संख्याभासकूं कहैं हैं;—

प्रत्यक्षमेवैकं प्रमाणमित्यादि संख्याभासम् ॥ ५५ ॥

याका अर्थ—जो एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण है इत्यादि कहै सो संख्याभास है। प्रमाण प्रत्यक्ष परोक्षके भेदकरि दोय कहे तहां तिसतैं विपरीतपणांकरि कहै—एक प्रत्यक्ष प्रमाण ही है तथा प्रत्यक्ष अरु अनुमान ऐसैं दोय हैं इत्यादि नियम करै सो संख्याभास है ॥ ५५ ॥

आगैं प्रत्यक्ष ही एक प्रमाण है ऐसैं कहनां कैसैं संख्याभास है ऐसैं पूछे सूत्र कहैं हैं;—

लौकायतिकस्य प्रत्यक्षतः परलोकादिनिषेधस्य परबुद्ध्यादेश्चासिद्धेरतद्विषयत्वात् ॥ ५६ ॥

याका अर्थ—एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण माननेंवाला जो लौकायतिक कहिये चार्वाकमती ताकैं परलोक आदिका निषेधकी अर परकी बुद्धि आदिकी अनुमान आदि प्रमाण विना प्रत्यक्षहीतैं असिद्धि है जातैं ये परलोक आदिका निषेध परबुद्धि आदि प्रत्यक्षका विषय नांही॥ याका विस्तार पहले संख्याका निरूपणविषैं कीया ही है सो इहां नाहीं कहिये है ॥ ५६ ॥

आगैं और वादीनिकी प्रमाणकी संख्याका नियम भी बिगड़ै है ऐसैं चार्वाकमतके दृष्टान्तके द्वारकरि तिनिके मतविषैं भी संख्याभास है, ऐसैं दिखावैं हैं;—

सौगतसांख्ययौगप्राभाकरजैमिनीयानां प्रत्यक्षानुमानागमोपमानार्थापत्त्यभावैरेकैकाधिकैर्व्याप्तिवत् ५७

याका अर्थ—जैसैं बौद्ध, सांख्य, नैयायिक, प्राभाकर, जैमिनीय कहिये मीमांसक इनिमैं; बौद्धकैं प्रत्यक्ष अनुमानतैं दोय, सांख्यकैं प्रत्यक्ष अनुमान आगम ये तीन, यौगकैं प्रत्यक्ष अनुमान आगम उपमान ये च्यार, प्राभाकरकैं प्रत्यक्ष अनुमान आगम उपमान अर्थापत्ति ये पांच, बहुरि जैमिनीयकैं अभावसहित ये ही छह, ऐसा संख्याका नियम है सो इनिका व्याप्ति विषय नाही यातैं व्याप्तिका ग्रहण करनेवाला तर्क प्रमाण वधै तब संख्या विगडै तैसैं चार्वाककी भी संख्या परकी बुद्धि आदि प्रत्यक्ष विषय नांही ताकूं ग्रहण करनहारा अनुमान आदि वधै तब ताकी संख्या विगडै है। भावार्थ—जैसैं सौगतादिक प्रत्यक्ष अनुमान आदि एक एक वधता प्रमाणकरि व्याप्तिकूं तर्क विना ग्रहण न करि सकै है तैसैं चार्वाक भी प्रत्यक्ष करि परबुद्धि आदिकूं ग्रहण न करि सकै, ऐसा अर्थ है ॥ ५७ ॥

आगैं चार्वाक आदि कहै—जो परबुद्ध्यादिकी प्रतिपत्ति प्रत्यक्षकरि मति होहु अन्यतैं होसी, ऐसी आशंकाकरि कहैं हैं;—

अनुमानादेस्तद्विषयत्वे प्रमाणान्तरत्वम् ॥ ५८ ॥

याका अर्थ—अनुमान आदिकरि परबुद्धिका ग्रहण मानिये है तौ अन्य प्रमाणपणां आया। इहां तत् शब्द करि परबुद्ध्यादिकपणां है यातैं अनुमानादिककैं परबुद्ध्यादिक विषयपणां होतैं प्रत्यक्ष एक प्रमाण है ऐसा वादकी हानि होय है ॥ ५८ ॥

आगैं इहां उदाहरण कहैं है;—

तर्कस्येव व्याप्तिगोचरत्वे प्रमाणान्तरत्वं, अप्रमाणस्याव्यवस्थापकत्वात् ॥ ५९ ॥

याका अर्थ—जैसैं तर्ककै व्याप्तिविषयपणां होतैं अन्य प्रमाणपणां है बौद्धादिककैं अन्य प्रमाण आवै है तैसैं ही परबुद्ध्यादि अनुमानका विषय मानिये तब अन्य प्रमाणपणां आवै है, अर जो कहै तर्क अप्रमाण है तौ अप्रमाणकैं व्याप्तिका व्यवस्थापकपणां नांही है। इहां ऐसा विशेष—जो एक प्रत्यक्ष ही प्रमाणका वादी चार्वाक है ताकरि बहुरि प्रत्यक्ष आदिमें एक एक अधिक प्रमाणका वादी बौद्धादिक है तिनिकरि स्वसंवेदन प्रत्यक्ष इन्द्रियप्रत्यक्ष ऐसै तौ प्रत्यक्षके भेद अर प्रत्यक्ष अनुमान आदि भेदप्रतिभासका भेदकरि ही प्रमाणका भेद वक्तव्य है अन्य किछू गति नांही है। सो प्रतिभासका भेद चार्वाक प्रति तौ प्रत्यक्ष अनुमानविषैं है अर बौद्धादिककैं व्याप्तिज्ञान जो तर्क अर प्रत्यक्षादिप्रमाण इनिविषैं है, तातैं सर्वहीकी प्रमाणसंख्या विगड़ै है ॥ ५९॥

सो ही दिखावैं हैं;—

प्रतिभासभेदस्य च भेदकत्वात् ॥ ६० ॥

याका अर्थ—जातैं प्रतिभास भेदकैं ही प्रमाणका भेदकपणां है तातैं सर्वकी संख्या विगड़ै है। चार्वाककै तौ अनुमान विगाड़ै है जातैं प्रत्यक्षतैं अनुमानका प्रतिभास जुदा है। अर बौद्धादिककै तर्क विगाड़ै है जातैं प्रत्यक्ष अनुमानादिकतैं तर्कका प्रतिभास जुदा है ॥ ६० ॥

आगैं अब विषयाभासकूं दिखावनेंकूं कहैं हैं;—

विषयाभासः सामान्यं विशेषो द्वयं वा स्वतंत्रम्॥६१

याका अर्थ—प्रमाणका विषय सामान्यही एक कहै अथवा विशेषही एक कहै अथवा दोऊही स्वाधीन कहै तौ विषयाभास है ॥६१॥

आगैं पूछै है कि इनिकैं विषयाभासपणां कैसैं है तहां कहैं हैं;—

तथाऽप्रतिभासनात्कार्याकरणाच्च ॥ ६२ ॥

याका अर्थ—जातैं जैसैं सामान्यमात्र विशेषमात्र दोऊ मात्र कह्या तैसैं प्रतिभासै नांही है बहुरि यह कार्य कारणहारा नांही है ॥ ६२ ॥

आगैं इहां आचार्य अन्यवादीकूं पूछैं हैं—जो सामान्य आदि एकान्तस्वरूप कार्यकूं करै सो आप समर्थ होय करै है कि असमर्थ होय करै है? तहां समर्थ पक्षमैं दूषण कहैं हैं;—

समर्थस्य करणे सर्वदोत्पत्तिरनपेक्षत्वात्॥ ६३ ॥

याका अर्थ—जो कहै सामान्य आदि समर्थ होय कार्य करै है तौ कार्यकी सर्वकाल उत्पत्ति चाहिये जातैं अन्यकी अपेक्षारहितपणां है ६३

बहुरि कहै सहकारीकी सापेक्षतैं कार्य करै है यातैं सर्वकाल उत्पत्ति नाहीं है तौ तहां कहैं हैं;—

परापेक्षणे परिणामित्वमन्यथा तदभावात् ॥ ६४ ॥

याका अर्थ—जो परकी अपेक्षा करै तौ ताकैं परिणामीपणां आवै पहलैं न किया सहकारी आया तब किया तब सामर्थ्य नवीन आया तातैं परिणामी भया अर जो ऐसैं न मानिये तौ कार्य होनेंका अभाव है। भावार्थ—सहकारिरहित अवस्थाविषैं तौ कार्य न करै अर सहकारीका संबंध भये कार्य करै तब पहला आकार छोड्या उत्तर आकार ग्रह्या दोऊमैं आप स्थित रह्या, ऐसे परिणामकी प्राप्ति होतैं परिणामीपणां आया, बहुरि ऐसैं न मानिये तौ जैसैं पहले अभाव अवस्थाविषैं कार्य करनेंका अभाव है तैसैं ही उत्तर अवस्थाविषैं अभाव है ॥६४॥

आगैं दूसरा पक्षमैं दोष कहैं हैं;—

स्वयमसमर्थस्याकारकत्वात्पूर्ववत् ॥६५॥

• याका अर्थ—आप असमर्थ होय तौ कार्य करनेंवाला नांही है जैसैं पहले सहकारी विना कार्य करणहारा न था तैसैं अब भी नांही ॥६५॥

आगैं फलाभासकूं प्रकाशता संता कहैं हैं;—

फलाभासः प्रमाणादभिन्नं भिन्नमेव वा ॥६६॥

याका अर्थ—प्रमाणतैं फल अभिन्न ही कहै अथवा भिन्न ही कहै सो फलाभास है ॥ ६६ ॥

आगैं इनि दोऊ पक्षमैं फलाभासता कैसैं ? ऐसी आशंका होतैं आद्य पक्ष जो प्रमाणतैं फल अभिन्न ही है ऐसी ताकै फलाभासताविषैं हेतु कहैं हैं;—

अभेदे तद्व्यवहारानुपपत्तेः ॥ ६७ ॥

याका अर्थ—जो प्रमाणतैं फल अभेद ही कहिये तौ प्रमाण फलका व्यवहार बणैं नांही, कै तौ प्रमाण ही ठहरै कै फल ही ठहरै जातैं दूसरा पदार्थ ही नांही ॥ ६७ ॥

आगैं कहै—संवृत्ति कहिये उपचार है नाम जाका ऐसी जो व्यावृत्ति कहिये जुदायगी अवस्तुरूपताकरि प्रमाणफलकी कल्पना होइ, ऐसैं कहें उत्तर कहैं हैं;—

व्यावृत्त्याऽपि न तत्कल्पना फलान्तराद्व्यावृत्त्याऽफलत्वप्रसंगात् ॥ ६८ ॥

याका अर्थ—जो व्यावृत्ति कहिये अवस्तुरूप जुदायगी ताकरि भी फलकी कल्पना नाही युक्त है जातैं अन्यफलतैं व्यावृत्ति कहिये जुदायगी ताकरि अफलपणांका प्रसंग आवै है। इहां यह अर्थ है—जैसैं विजातीय फल जो अप्रमिति तिसतैं व्यावृत्ति कहिये जुदायगीकरि फलका व्यवहार है तैसैं अन्यप्रमितिरूप जो सजातीय फल तिसतैं भी जुदायगी है, ऐसैं अफलपणां ही आया ॥ ६८ ॥

अब इहां ही अभेदपक्षविषैं दृष्टान्त कहैं हैं;—

प्रमाणान्तराद्व्यावृत्त्येवाप्रमाणत्वस्य ॥ ६९ ॥

याका अर्थ—जैसैं अन्य प्रमाण करि व्यावृत्ति कहिये जुदायगी करि अन्य प्रमाणकैं अप्रमाणपणांका प्रसंग आवै है तैसैं ही फलकैं जाननां। इहां भी पहले फलमैं प्रक्रिया कही सो ही जोड़ि लेणीं। भावार्थ—जैसैं प्रमाण ऐसैं कहे अप्रमाणकी व्यावृत्ति है तौ अन्य प्रमाणतैं व्यावृत्त प्रमाण है सो भी अप्रमाण ठहरै तब ऐसे कहै ताके मनमैं प्रमाण न ठहरै तैसैं ही विजातीय फलतैं व्यावृत्त फल प्रमिति है सो ही सजातीय फल जो अन्य प्रमिति तिसतैं भी व्यावृत्त है ऐसैं अफल ही ठहरै ॥ ६९ ॥

आगैं अभेद पक्षकूं निराकरण करि आचार्य इस कथनकूं संकोचैं हैं;—

तस्माद्वास्तवो भेदः ॥ ७० ॥

याका अर्थ—तातैं भेद है सो वस्तुभूत है, प्रमाण फलकैं एकान्त करि अभेद ही नांही है ॥ ७० ॥

आगैं भेद पक्षकूं दूपता संताकहैं हैं;—

भेदे त्वात्मान्तरवत्तदनुपपत्तेः ॥ ७१ ॥

याका अर्थ—प्रमाणकै अर फलकै सर्वथा भेद ही होतैं अन्य आत्माकी ज्यों यह याका फल है ऐसैं कहनां न बनै ॥ ७१ ॥

आगैं वादी कहै—जो जिस आत्मविषै प्रमाण समवायरूप है तिस ही विषै फल भी है ऐसैं समवाय संबंध करि प्रमाण फलकी व्यवस्था है तातैं अन्य आत्मा विषैं ताका प्रसंग नांही, सो ऐसैं कहनां समीचीन नांही ऐसैं कहै हैं;—

---

(१) मुद्रित संस्कृतटीका प्रतिमें 'प्रमाणान्तरात्' इसके स्थानमें 'प्रमाणात्' इतनाही पाठ है (२) मुद्रित संस्कृतटीका प्रतिमें "तस्माद्वास्तवोऽभेदः" ऐसा पाठ है।

समवायेऽतिप्रसङ्ग ॥ ७२ ॥

याका अर्थ—समवाय संबंध होतैं अतिप्रसंग आवै है। भावार्थ–समवाय तौ नित्य है अर एक है व्यापक है सर्व आत्माकैं समवाय तौ समान धर्म है तातैं यह इसहीका समवाय है ऐसा प्रतिनियम नाही तातैं अतिप्रसंग आवै है ॥ ७२ ॥

आगैं स्वपरपक्षका साधन दूषणकी व्यवस्था दिखावैं हैं;—

प्रमाणतदाभासौ दुष्टतयोद्भावितौ परिहृतापरिहृतदोषौ वादिनः साधनतदाभासौ प्रतिवादिनो दूषणभूषणे च ॥ ७३ ॥

याका अर्थ—वादीनैं प्रमाण अर प्रमाणाभास स्थापे तिनिकूं प्रतिवादी दूषणसहित किये अर फेरि वादी ताका दोषका परिहार किया तथा परिहार न किया तौ ते दोऊ वादीकै साधन अर साधनाभास हैं अर प्रतिवादीकै दूषण अर भूषण दोऊ हैं। इहां ऐसा अर्थ है—वादी प्रमाण स्थाप्या प्रतिवादी ताकूं दूषण दिया फेरि वादी तिस दोषका परिहार किया तौ सोही वादीकैं साधन है अर प्रतिवादीकैं दूषण है। बहुरि जो वादी प्रमाणाभास कह्या अर प्रतिवादी ताकूं प्रमाणाभास दिखाया फेरि वादी ताकूं स्थाप्या नांही प्रतिवादीका वचनका परिहार न किया तौ तिस वादीकैं सो साधनाभास है अर प्रतिवादीकै सो ही भूषण है ॥ ७३ ॥

आगैं कह्या प्रकारकरि समस्त विप्रतिपत्तिका निराकरणद्वार करि पूर्वैं प्रमाणतत्व कहनेंकी प्रतिज्ञा करी थी ताकी परीक्षा करि अब नय आदिका स्वरूप अन्य शास्त्रमैं प्रसिद्ध है सो तहांतैं विचारनां, ऐसैं दिखावता संता सूत्र कहैं हैं;—

संभवदन्यद्विचारणीयम् ॥ ७४ ॥

याका अर्थ—प्रमाणके स्वरूपतैं अन्यत् कहिये और संभवता होय सो विचारनां । संभवत् कहिये विद्यमान अन्यत् कहिये प्रमाणके रूपतैं और जो नयका स्वरूप सो अन्य शास्त्रविषैं प्रसिद्ध है सो विचारनां, इहां युक्तिकरि जाननां । तहां मूल नय तौ दोय हैं; द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक भेदतैं । तहां द्रव्यार्थिक तीन प्रकार हैं; नैगम, संग्रह, व्यवहार भेदतैं । बहुरि पर्यायार्थिक च्यार प्रकार है; ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवंभूत भेदतैं । तहां परस्पर गौण प्रधानभूत जो भेदाभेद तिनिका है प्ररूपण जामैं सो तौ नैगम है " नैकं गमो नैगमः " ऐसी निरुक्तितैं, भावार्थ—यह नय एक हीं धर्मविषैं नांही वर्त्तै है, विधि निषेधरूप सर्वही धर्मनिमैं एककूं मुख्यकरि अन्यकूं गौणकरि संकल्पमैं ले वर्त्तै है । बहुरि सर्वथा भेदहींकूं कहै सो नैगमाभास है । बहुरि प्रतिपक्षकी अपेक्षारहित सत्तामात्र सामान्यका ग्रहण करनहारा सो संग्रह है । सर्वथा सत्तामात्र कहै ऐसा ब्रह्मवाद सो संग्रहाभास है । बहुरि संग्रहकरि ग्रह्या ताका भेद करनहारा व्यवहार है । कल्पनामात्र कहै सो व्यवहाराभास है । शुद्धपर्यायग्राही प्रतिपक्षीकी अपेक्षा सहित होय सो ऋजुसूत्र है । क्षणिक एकान्त नय है सो ऋजुसूत्राभास है । बहुरि काल कारक लिंगनि आदिका भेदतैं शब्दकै कथंचित् अर्थभेद कहै सो शब्दनय है । अर्थभेद विना शब्दनिहीकै नानापणांका एकान्त कहै सो शब्दाभास है । बहुरि पर्यायके भेदतैं अर्थकै नानापणां कहै सो समभिरूढ है । पर्यायका नानापणां विनाही इन्द्रादिक शब्दानिकै भेद कहै सो समभिरूढाभास है । बुहुरि क्रियाके आश्रयकरि भेदका प्ररूपण करै 'याही प्रकार है' ऐसा नियम कहै सो एवंभूत है । क्रियाकी अपेक्षारहित क्रियाके वाचक शब्दनिविषैं कल्पनारूप व्यवहार करै सो एवंभूतनयाभास है ।

ऐसैं नय तदाभासका लक्षण संक्षेपकरि कह्या। विस्तारकरि नयचक्र ग्रंथतैं तथा तत्वार्थसूत्रकी टीकातैं जाननां। अथवा 'संभवत्' कहिये विद्यमान संभवता अन्य वादका लक्षण अर पत्रका लक्षण अन्य शास्त्रमैं कह्या है सो इहां जाननां, तैसैं कह्या है—"समर्थवचनं वादः" याका अर्थ—जहां वादी प्रतिवादीकैं अथवा आचार्य शिष्यकैं पक्ष प्रतिपक्षका ग्रहणतैं समर्थ वचनकी प्रवृत्ति होय सो वाद कहिये, जो हेतु दृष्टान्त आदि करि निर्बाध वचन होय सो समर्थवचन कहिये। बहुरि पत्रका लक्षण कह्या है, ताका श्लोकका अर्थ—जो प्रसिद्ध जे पांच अनुमानके अवयव ते जामैं पाइये बहुरि अपनां इष्ट अर्थका साधक होय बहुरि निर्दोष गूढ जे पद ते जामैं बाहुल्यपणैं होय ऐसा वाक्य होय सो निर्दोष पत्र कहिये ॥ ७४ ॥

आगैं अब आचार्य प्रारंभ किया ताका निर्वाह अर अपनां उद्धतपणांका परिहार दिखावता संता कहैं हैं;—

श्लोक—**परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्त्वयोः ।**
संविदे मादृशो बालः परीक्षादक्षवद्व्यधाम् ॥

याका अर्थ—मैं मंदबुद्धी परीक्षामुख नाम प्रकरण किया है, कैसा है यह—हेय उपादेय तत्वका दिखावनेंकूं आरसा सारिखा है, कौनकी ज्यौं किया है—जैसैं परीक्षाविषैं चतुर होय करै तैसैं किया है, बहुरि कौन आर्थि किया है—मो सारिखे मन्दबुद्धीनिकै ज्ञानकै आर्थि किया है। इहां बाल ऐसा पद कह्या तहां तौ उद्धतताका परिहारका वचन है। बहुरि शास्त्रका प्रारंभ करि निर्वाह करनेंतैं तत्वज्ञपणां निश्चय होय ही

---

(१) पत्रलक्षणम्—

प्रसिद्धावयवं वाक्यं स्वेष्टस्यार्थस्य साधकम् ।
साधुगूढपदप्रायं पत्रमाहुरनाकुलम् ॥ १ ॥

है । बहुरि आरसाकी उपमा है सो जैसैं आपका अलंकार आदिकरि मंडित सुन्दरपणां अथवा विरूपपणां अरसामैं दीखै तैसैं यामैं हेय उपादेय तत्व साधन दूषण द्वार करि दीखैं हैं । बहुरि परीक्षादक्षकी ज्यों कह्या सो जैसैं परीक्षावान् अपनां प्रारंभ्या शास्त्रकूं निर्वाहै तैसैं मैं भी निर्वाह किया है । ऐसा अर्थ है ॥

आगैं टीकाकारकृत श्लोक है:—

अकलंकशशाङ्कैर्यत्प्रकटीकृतमखिलमाननिभनिकरम्।
तत्संक्षिप्तं सूरिभिरुरुमतिभिर्व्यक्तमेतेन ॥ १ ॥

याका अर्थ—जो अकलंक आचार्य रूप चंद्रमाकरि प्रमाण अर प्रमाणभासका समूह समस्त प्रगट किया सो माणिकनंदि आचार्यनैं संक्षेपकरि कह्या, कैसे हैं आचार्य—बड़ी है बुद्धि जिनकी, बहुरि सो ही मैं अनंतवीर्य आचार्य व्यक्त (प्रगट) किया है ॥ १ ॥

ऐसैं परीक्षामुखनाम प्रमाणप्रकरणकी लघुवृत्ति-
की वचनिकाविषैं प्रमाणआदिका
आभासका समुद्देशनामा छठा
परिच्छेद समाप्त
भया ॥

आगैं टीकाकार इस टीकाकी उत्पत्तिके समाचार कहैं हैं;—

श्लोक—**श्रीमान् वैजेयनामाऽभूदग्रणीर्गुणशालिनाम् ।**
बदरीपालवंशालिव्योमद्युमणिरूर्जितः ॥१॥

याका अर्थ—श्रीमान् कहिये लक्ष्मीवान् वैजेयनामा गुणनिकरि शोभायमाननिविषैं मुख्य होता भया, कैसा है—बदरीपालका वंशकी जो आलि कहिये पंक्ति परिपाटी सोही भया आकाश ताविषैं सूर्यसमान महान् होता भया ॥ १ ॥

बहुरि श्लोकः—

तदीयपत्नी भुवि विश्रुताऽऽसीत्
नाणांबनामा गुणशीलधीर्या[1]।
यां रेवतीति प्रथिताम्बिकेति
प्रभावतीति प्रवदन्ति सन्तः ॥ २ ॥

याका अर्थ—तिस वैजेयकी स्त्री पृथिवीविषैं प्रसिद्ध नाणांब ऐसा है नाम जाका ऐसी होती भई, सो कैसी है—गुणनि करि शोभायमान बुद्धि अर लक्ष्मी जाकैं पाइये, बहुरि जाकूं रेवती ऐसा भी नाम प्रगट कहैं हैं तथा अंबिका ऐसा भी नाम कहैं हैं तथा सत्पुरुष प्रभावती ऐसा भी नाम कहैं हैं ॥ २ ॥

बहुरि श्लोक;—

तस्यामभूद्विश्वजनीनवृत्ति-
र्दानाम्बुवाहो भुवि हीरपाख्यः ।
स्वगोत्रविस्तारनभोंऽशुमाली
सम्यक्त्वरत्नाभरणार्चिताङ्गः ॥३॥

याका अर्थ—तिस वैजेयकी नाणांबनामा स्त्रीविषैं हीरपनामा पुत्र होता भया, समस्त लोककूं हितकारी है वृत्ति जाकी, बहुरि दान देनेकूं पृथ्वीविषैं मेघसारिखा है बहुरि अपनां गोत्रका विस्तार सो ही भया आकाश ताविषैं सूर्यसमान है, बहुरि सम्यक्त्वस्वरूप रत्नका आभरणकरि शोभित है अंग जाका ऐसा होता भया ॥ ३ ॥

बहुरि श्लोक;—

तस्योपरोधवशतो विशदोरुकीर्त्ते-
र्माणिक्यनंदिकृतशास्त्रमगाधबोधम् ।

(१) मुद्रित संस्कृत टीका प्रतिमें 'गुणशीलसीमा' ऐसा पाठ है।

स्पष्टीकृतं कतिपयैर्वचनैरुदारै-
र्बालप्रबोधकरमेतदनन्तवीर्यैः ॥ ४ ॥

याका अर्थ—तिस हीरपके आग्रहके वशतैं मैं सत्य आचार्य अनंतवीर्य माणिक्यनंदिकृत अगाधबोधरूप जो शास्त्र ताहि केई विस्तार रूप वचननि करि यह स्पृष्ट किया है, कैसा किया है-बाल जे मंदबुद्धी तिनिकैं प्रकृष्ट ज्ञानका करन हारा है, बहुरि हीरप कैसा है—निर्मल है बड़ी कीर्त्ति जाकी ॥ ४ ॥

ऐसैं परीक्षामुख प्रकरणकी लघुवृत्ति प्रमेय-
रत्नमाला है दूसरा नाम जाका
सो समाप्त भई ॥

छप्पय।

कह्यो प्रमाण स्वरूप, बहुरि संख्याविधि नीकी,
फुनि तसु विषय विचार, सार फल विधि हू लीकी।
तदाभास विस्तार कियो, परमत निषेध कर
सुनि भवि लखै यथा स्वरूप, निज परमत जिम वर ॥
मुनिराज बड़ो उपकार यह, कियो परीक्षामुखकथन।
तसु देश वचनिका शुभ वर्नी, सुगम पढन सुनना मथन[1] ॥

आगैं या वचनिका होनेंके समाचार लिखिये हैं;—

(दोहा)

ग्रंथ परीक्षामुखतनीं, वर्नीं वचनिका येह।
समाचार ताके कहूं, सुनों भव्य जुतनेह ॥ १ ॥

(चौपई)

देश दुढाहर जयपुर जहां, सुवस वसैं नहिं दुःखी तहां।
नृप जगतेश नीतिबलवान, ताकै बड़े बड़े परधान ॥ २ ॥

१ मनन.

प्रजा सुखी तिनिकैं परताप, काहूकैं न वृथा संताप ।
अपनें अपनें मत सब चलैं, जैनधर्महू अधिको भलैं ॥ ३ ॥
तामैं तेरहपंथ सुपंथ, शैली बडी गुनी गुनग्रंथ ।
तामैं मैं जयचन्द्र सुनाम, वैश्य छावडा कहै सुगाम ॥ ४ ॥
मैं तो आतम द्रव्य विशुद्ध, जाति नाम कुल सबै विरुद्ध ।
तौऊ कर्मतणें संयोग, है विभाव परिणतिको भोग ॥ ५ ॥
अशुभ मंदतें शुभ अनुराग, धर्मबुद्धि जागी धनि भाग ।
तब विचार यह भयो सुसार, जैन ग्रंथ पढ़ि करि निरधारि ॥६॥
पढ़ते सुनतें भयो सुबोध, न्याय ग्रंथको भी कछु शोध ।
स्याद्वाद जिनमतमें न्याय, ताकी रीति लखी कछु पाय ॥ ७ ॥
तबैं विचारी इस कलिकाल, जैनन्याय बुध विरले भाल ।
प्रकरण देश वचनिकारूप, लघु सो होय करूं जु अनूप ॥ ८ ॥
तब यह लख्यौ न्यायको द्वार, कियो वचनिकारूप उदार ।
भव्य पढ़ौ मन लाय अशेष, न्याय देशमें करो प्रवेश ॥ ९ ॥
निज परमतको जानों भेद, मिटै विपर्यय बुधिको भेद ।
स्वपरतत्त्वकों जानि विचार, तजो विभाव रहो अविकार॥१०॥
रत्नत्रय मारग लगि ताम, पहुचो मुक्तिपुरी सुखधाम ।
यह उपदेश जिनेश्वरदेव, भाँष्यो ग्रहो करो तिनि सेव ॥११॥
पंडितजनसूं यह अरदासि, करूं परोक्ष मान मद नासि ।
हीनाधिक जो यामैं होय, मूल ग्रंथ लखि सोधो सोय ॥१२॥

(दोहा)

बालबुद्धि लखि संतजन, हसै न कोप कराय ।
इहै रीति पंडित गहै, धर्मबुद्धि इम भाय ॥ १३ ॥

(छप्पय)

नमूं पंचगुरुचरन सदा मंगलके दाता,
वंदूं जिनवरवानि सुनैं पावै सुख साता ।
वीतरागता धर्म नमूं जो कर्मनाशकर,
चैत्यधाम अरु चैत्य नमूं सम्यकप्रकाशपर ॥
ए नव वंदन योग्य हैं जिनमारगमैं नित्य ही,
मैं ग्रंथ अंतमंगल निमित करी वंदना सत्य ही १४

(दोहा)

अष्टादश शत साठि त्रय, विक्रम संवत माहिं ।
सुकल असाढ सुचाथि बुध, पूरण करी सुचाहि ॥ १५ ॥
लिखी यहै जयचंदनै, सोधी सुत नंदलाल
बुध लखि भूलि जु शुद्धकरि, वांचौ सिखवौ बाल ॥ १६ ॥

इति श्रीपरीक्षामुख जैनन्यायप्रकरणकी
लघुवृत्ति प्रमेयरत्नमालाकी
श्री जयचंदजीछावड़ाकृत
देशभाषामय वचनिका
सम्पूर्ण ।